ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ,

कांगड़ी शब्द-संग्रह

भाषा विभाग, पंजाब

KANGRI SHABD SANGRAH *(In Hindi)*
LANGUAGE DEPARTMENT, PUNJAB

कांगड़ी शब्द संग्रह
भाषा विभाग, पंजाब

प्रथम संस्करण – 1964
द्वितीय संस्करण – 2002
प्रतियाँ – 2000
मूल्य : 67 रुपये 00 पैसे

0220 वे. डे. ड्रि. ब्रा. वे. - 1356

प्रकाशक : निदेशक, भाषा विभाग, पंजाब,
मुद्रक : तरुण आर्ट प्रैस, लाडो वाली रोड नजदीक प्रताप बाग, जालंधर
द्वारा : कंट्रोलर, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी विभाग, पंजाब

दो शब्द

किसी भी भाषा के सम्पूर्ण एवं सर्वपक्षीय विकास में शब्दकोश महत्त्वपूर्ण योगदान डालते हैं। अत: किसी भी भाषा को सम्पन्न बनाने के लिए उसकी बोलियों का लेखा-जोखा लेना अनिवार्य होता है। आज जबकि शिक्षा एवं प्रसारण माध्यमों के अत्यधिक प्रसार से लोक बोलियां प्राय: विलुप्त हो रही हैं । विद्वानों एवं शोध-कर्त्ताओं के लिए इन बोलियों का लिखित रिकार्ड रखना और भी महत्वपूर्ण हो गया है। यद्यपि इस दिशा में भाषा विभाग पहले ही इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उप-भाषाओं से सम्बन्धित पोठोहारी, पुआधी, जटकी, मुल्तानी आदि बोलियों के सन्दर्भ में उल्लेखनीय कार्य कर चुका है तथा इन बोलियों से सम्बन्धित शब्द कोश भी प्रकाशित किए हैं तथापि यह हमारा विनम्र प्रयास रहा है कि अधिक से अधिक लोग अपने राज्य की प्रमुख बोलियों के विषय में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिए तत्पर रहें।

प्रस्तुत -"कांगड़ी शब्द संग्रह" मुख्यत: पहाड़ी बोलियों में से एक बोली कांगड़ी पर केन्द्रित है। कांगड़ी बोली की स्थिति सीमा-बोली की है। यह एक तरफ पश्चिमी पहाड़ी की मंडियाली और चम्बाली बोलियों की मध्यवर्तिनी है तो दूसरी तरफ डोगरी पंजाबी की जालन्धर दोआबी बोलियों से प्रभावित है। सीमा-बोली होने के नाते इस बोली का अलग ही महत्त्व है क्योंकि इसमें विभिन्न बोलियों के प्रभावों की रेखाएं लक्षित होती हैं।

प्रस्तुत संग्रह में "कांगड़ी" से सम्बन्धित लगभग तीन हज़ार शब्द, तीस लोक गीत एवं कुछ लोक कथाएं शामिल हैं। लोक-गीत एवं लोक-कथाएं कांगड़ी भाषा की शब्द-सम्पदा को व्यक्त करती हैं। इससे कांगड़ा जनपद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बोध होता है। यह कांगड़ी बोली के संक्षिप्त व्याकरण से हमारा साक्षात्कार भी करवाती है।

इस पुस्तक का पहला संस्करण सन् 1964 में प्रकाशित किया गया था। पाठकों की मांग पर इसका द्वितीय संस्करण भेंट करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता अनुभव हो रही है। आशा है विद्वान, पाठक, एवं जिज्ञासु इसका भव्य स्वागत करेंगे।

डा. मदन लाल हसीजा
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब

सम्पादन समिति

प्रथम संस्करण

1964

विषय सूची

१. डा० परमानन्द,
निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब ।

२. श्री प्रेमप्रकाश सिंह,
सहायक निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब ।

३. श्री त्रिलोकी नाथ 'रंजन',
सहायक निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब ।

४. श्री हरिचन्द पाराशर,
अनुवाद अधिकारी, हिन्दी विभाग, पंजाब ।

५. श्री मोलू राम ठाकुर,
अनुवादक, हिन्दी विभाग, पंजाब ।

दो शब्द (प्रथम संस्करण)

पंजाब राज्य का हिन्दी विभाग जहां राजकीय कामकाज में हिन्दी के प्रचलन के निमित्त कार्य कर रहा है, वहां पंजाब की हिन्दी के प्रादेशिक रूप में अनुसन्धान का कार्य भी कर रहा है । पंजाब में हिन्दी प्रदेश के दो भाग हैं—मैदानी भाग जिसमें जिला अम्बाला (आंशिक), करनाल, रोहतक, गुड़गांव, महेन्द्रगढ़ और हिसार (आंशिक) शामिल हैं । पहाड़ी भाग—जिसमें शिमला, कांगड़ा और लाहुल-स्पिति शामिल हैं । इन दो भागों में विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं, जिन्हें पंजाब सरकार ने हिन्दी की बोलियां माना है ।

प्रस्तुत संकलन

प्रस्तुत संकलन—कांगड़ी शब्द-संग्रह तथा लोक साहित्य—मुख्यतया जिला कांगड़ा की एक बोली 'कांगड़ी' से सम्बन्धित है । जिला कांगड़ा में उप-भाषात्मक दृष्टि से 'कांगड़ी' और 'कुल्लूकी' दो उप-भाषाएं हैं, दोनों ही संस्कृत परिवार की हैं । 'कांगड़ी' निकटवर्ती पंजाबी की मैदानी बोलियों से प्रभावित है और कुल्लूकी बोली अभी अपभ्रंश अवस्था की याद-सी दिलाती है । कांगड़ी बोली के भी—विशेषतया शब्द-संग्रह के दृष्टिकोण से—कई रूप हैं, पूर्वी हमीरपुर और पालमपुर की बोलियों और दक्षिणी देहरा-गोपीपुर और पश्चिमी नूरपुर की बोलियों में कुछ अन्तर है परन्तु इन में परस्पर बोधगम्यता है, इसी आधार पर उन्हें कांगड़ी उप-भाषा की संज्ञा दी जाती है ।

चूंकि कांगड़ी उप-भाषा का लिखित साहित्य बहुत ही कम है, इसलिए प्रस्तुत संकलन में दी गई सामग्री अधिकांशतः उस भाषा के बोलने वालों के उच्चारण से ही एकत्र की गई है । वैज्ञानिक दृष्टि से कथ्य बोलियों के किसी संकलन को पूर्ण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उस में अनुसन्धाता और कायिक की अपनी अपनी सीमाएं होती हैं । परन्तु इतना अवश्य है कि इस संकलन को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का यत्न किया गया है । अभी इसे प्रथम उपहार के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है । पाठकों से सुझाव आने पर इस का पुनरीक्षित तथा सम्बर्द्धित संस्करण बाद में प्रकाशित किया जाएगा ।

कांगड़ा प्रदेश की सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि के बाद कांगड़ी उप-भाषा का संक्षिप्त व्याकरण दिया गया है । व्याकरण में यथासम्भव कांगड़ी उदाहरणों की तुलना में हिन्दी के उदाहरण भी दिए गए हैं । इसके अध्ययन से हिन्दी का सामान्य ज्ञान रखने वाले पाठक आसानी से ही कांगड़ी उप-भाषा का चलता ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । शब्द-संग्रह में भले ही वस्तुगत शब्दों की अधिकता है, परन्तु उनकी व्याख्या से भी कांगड़ा जीवन-शैली की कई प्रक्रियाएं अभिव्यक्त होती हैं, तथा कुछ शब्दों से भाषा-वैज्ञानिक 'Onomatology और Onomatapoeia' की दिशा में भी सहायता मिल सकती है । जड़ी-बूटियों से सम्बन्धित बहुत से शब्द हमारे आयुर्वेदिक विद्वानों को अनुसंधान की प्रेरणा दे सकते हैं ।

इस संकलन की एक अन्य विशेषता ग्राम-साहित्य का संकलन है । साहित्य के लोक-वार्तावादी सिद्धान्त के अनुसार ग्राम-साहित्य को ग्रंथ-साहित्य का आदिम रूप कहा गया है । एक विद्वान ने साहित्य की परिभाषा करते हुए कहा है, "Animated gossip is the literature in the law", ग्राम-जीवन से उद्भूत ऐसी सजीव गल्प जिसका विकासशील प्रयोग साथ वाले गांवों में प्रचार पा रहा हो, और जिसका प्रयोजन मनोरंजन भी हो और ज्ञानवर्द्धन भी, ग्राम-साहित्य कहलाता है । भारत की विविधता में एकता लाने के लिए लोक संस्कृति का अनुसन्धान आवश्यक है, और इस अनुसन्धान की पहली आवश्यकता है, ग्राम-साहित्य का संकलन । यह कार्य बहुत कठिन है, यह इसलिए कि ग्राम-निवासी ऐसे संकलन का कार्य करने के लिए यथेष्ट रूप में प्रशिक्षित नहीं होते, और नगर-निवासी साधारणतया इन धूलि-धूसरित रत्नों को 'बेकार' कह कर उपेक्षित कर देते हैं । उनकी मानसिकता का इस दिशा में झुकाव नहीं होता ।

यह संयोग की बात है कि प्रस्तुत कथ्य भाषा और ग्राम-साहित्य का संकलन करने वाले श्री हरि चन्द पराशर, एम० ए० (हिन्दी, पंजाबी और फिलासफी), साहित्य रत्न जहां भाषा के विद्वान हैं, वहां महात्मा गांधी द्वारा प्रचलित बेसिक शिक्षा के शिक्षा-शास्त्र में स्नातक भी हैं । उसी स्नातकत्व का यह परिणाम है कि श्री पाराशर ने सम्बन्धित इलाके में काफी पद-यात्रा करके मेलों, त्योहारों, संस्कारों आदि में भाग लेकर यह संकलन

तैयार किया है, गांव में रहकर ग्राम-जीवन में विकसित लोकोक्तियों का प्रत्यक्ष अनुभव किया है, ग्राम-मानस की प्रत्येक भावना-कामना का आदर करते हुए लोक-अभिव्यक्ति के संकलन का प्रयत्न किया है ।

लोक-गंगा से जन-जन को पवित्र करने का यह प्रयत्न यदि लोक मानस की आधार-भूत एकता की कुछ भी तुष्टि कर सका, तो हम इस पुण्य कार्य को सफल समझेंगे ।

मुझे प्रसन्नता है कि योग्य तथा अनुभवी लेखक श्री हरि चन्द पाराशर ने उस विषय पर लेखनी उठाई है जो अभी तक विद्वानों की दृष्टि से उपेक्षित रहा है, और इन्होंने श्री प्रेमप्रकाश सिंह, भूतपूर्व सहायक निदेशक (कोश) के कुशल अधीक्षण में यह कार्य बड़े सुचारु ढंग से सम्पन्न किया है । श्री प्रेम प्रकाश सिंह जी के विभाग से चले जाने के अनन्तर श्री त्रिलोकी नाथ जी 'रञ्जन' कोश अनुभाग के अध्यक्ष नियत हुए । इन की योग्यता तथा सुदीर्घ अनुभव से इस अनुभाग को विशेष शक्ति मिली है । संस्कृत, हिन्दी और पंजाबी में इनकी योग्यता प्रशस्य है । कोश अनुभाग की कुछ योजनाएं जो विलुप्त-सी पड़ी थीं उनमें पुनर्जीवन लाना इनका कार्य है । इनकी विशिष्ट देख-रेख में इस शब्द-संग्रह ने भी बल प्राप्त किया है । अतः इनके प्रति भी आभार प्रदर्शन करना अपना कर्तव्य बन जाता है । मैं इन सभी विद्वानों को हिन्दी विभाग की ओर से बधाई देता हूं, और आशा रखता हूं कि इस विषय का वृहत् ग्रंथ भी हिन्दी विभाग प्रकाशित करने में शीघ्र समर्थ होगा । इस विशेष कार्य में श्री मोलू राम ठाकुर की सहायता भी उल्लेखनीय है । इनके अतिरिक्त प्रूफों को संशोधित करने तथा इस कोष को अलंकृत करने में श्री सत्य प्रकाश दत्त तथा श्री प्यारे लाल चावला ने जो श्लाघ्य प्रयत्न किया है उसके लिए वे भी बधाई के पात्र हैं ।

महानिदेशक श्री लाल सिंह जी भी अत्यन्त धन्यवाद के पात्र हैं । उनके प्रेमपूर्ण संरक्षण में यह विभाग प्रति दिन प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है ।

पटियाला
२६-१०-६३

(डा०) परमानन्द,
निदेशक, हिन्दी विभाग,
पंजाब ।

विषय सूची

संकेत सूची

कां.	कांगड़ी
कु.	कुल्लुकी
गा.	गादी
गु	गुजरी
पं.	पंजाबी
पु.	पुलिंग
स्त्री.	स्त्री-लिंग
वि.	विशेषण
अ	अव्यय
क्रि.	क्रिया
सर्व.	सर्वनाम

कांगड़ा : संस्कृति और भाषा

(पहला भाग)

कांगड़ा : भौगोलिक और ऐतिहासिक परिचय

प्राचीन समय के पाणिनिकालीन इतिहास में जिस भूखण्ड को त्रिगर्त नाम दिया गया है उसी का एक भाग आज कुल्लू-कांगड़ा कहा जाता है । त्रिगर्त प्रदेश लुधियाना, जालन्धर और अमृतसर के मैदानों से उत्तर की ओर तिब्बत और चीन तक फैला हुआ एक विशाल भू-भाग था । इस प्रदेश की मुख्य राजधानी कोटगढ़ थी । यही 'कोटगढ़' शब्द अपभ्रंश आदि की अवस्थाओं से होता हुआ खड़ी बोली हिन्दी में कांगड़ा बना है । इस मुख्य एवं केन्द्रीय राजधानी के अतिरिक्त इसमें कुछेक अन्य छोटे राज्य भी थे जिनमें कुल्लू (कुलत), चम्बा (चम्पा), मण्डी (मण्डमती), सुकेत (सुकट्टु) आदि प्रख्यात हैं । महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' में इस प्रदेश की किन्नर जाति का वर्णन किया गया है । बैजनाथ (कीरग्राम) के आसपास के इलाके को प्राचीन समय में 'गन्धिका' कहा गया है, इस प्रदेश में आज भी गद्दी लोग ही अधिकांश हैं । इसी लिए 'गन्धिका' शब्द का अभिप्राय गद्दियों की भूमि ही रहा होगा । इस भूखण्ड को प्राचीन समय में त्रिगर्त इस लिए कहा गया होगा क्योंकि यह इलाका सतलुज, ब्यास और रावी इन तीन नदियों का पहाड़ी प्रदेश है । पर्वतीय प्रदेश में नदी का मार्ग तंग होता है और वेग तीव्र, जिस से नदी का रूप सरिता सा न होकर गर्त (गढ़े) सा होता है । सम्भवतः इसीलिये उपर्युक्त तीन नदियों की उपत्यकाओं को त्रिगर्त कहा गया होगा ।

आज के कांगड़ा-कुल्लू की भौगोलिक स्थिति दक्षिण में शिवालक की पहाड़ियों से आरम्भ होती है । ये पहाड़ियां ब्यास के किनारे हाजीपुर (होशियारपुर) से लेकर सतलुज के किनारे रोपड़ तक फैली हुई हैं । शिवालक की यह शैलमाला दोआबा के मैदानों (दोआबा जिला जालन्धर) को पहाड़ी इलाके से पृथक करती हुई कंटीली झाड़ियों वाली एक पठार बनाती है जिसे जसवां दून (होशियारपुर की तहसील ऊना) कहा जाता है । इस के साथ ही उत्तर में चिन्तपुर्णी की धार है जोकि होशियारपुर और कांगड़ा की मिलन-रेखा है । उत्तर-पूर्व में मध्य हिमालय की पीर-पंजाल की शृंखलायें कुल्लू को लाहौल और स्पिति से अलग करती हैं । पीरपंजाल की ही एक शाखा धौलाधार उत्तर-पश्चिमी दिशा में फैली हुई है ।

पंजाब के पूर्व-उत्तरी भाग में मध्य हिमालय की बर्फीली धौलाधार की गोदी में शिवालक की सुरम्य नीली पहाड़ियां हैं । भूगर्भीय विकास एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से हिमालय की शिमला, कुल्लू और धौलाधार पहाड़ियां पुरानी हैं, मण्डी धर्मशाला और कांगड़ा की पहाड़ियां अपेक्षाकृत नई हैं और शिवालक की पहाड़ियां तो बहुत बाद में अस्तित्व में आई हैं । भारत की भू-रचना के प्राकृतिक इतिहास पर विचार करने वाले भू-शास्त्रियों का कहना है कि भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग (पंजाब, राजस्थान और सिंध) में मायोसीन नाम का एक समुद्र था जोकि टेथिस (यूरेशियाई महार्णव) का एक हिस्सा था । टेथिस महासागर उस सारे भू-खण्ड में व्याप्त था, जिसे आजकल मध्य-यूरोप से ले कर लघु एशिया उत्तरी भारत और बर्मा कहा जाता है, इसी महार्णव में से हिमालय का विकास हुआ है । डा० राधाकुमार मुकर्जी ने बैरल के साथ सहमति प्रकट करते हुए लिखा है:—

> "बैरल ने सब से पहले यह सुझाव दिया था कि मध्य ऊषाकालीन युग के लगभग अन्त में, दस लाख वर्ष पहले, मानव और हिमालय एक साथ ही अस्तित्व में आए ।"
>
> (हिन्दू सभ्यता, पृ० ६)

भू-शास्त्रियों का ऐसा भी विचार है कि लगभग दस लाख वर्ष पहले ब्रह्मपुत्र, गंगा और सिंध इन तीन नदियों का पानी एक ही महान् नदी में बहा करता था जो मायोसीन सागर (पंजाब, सिंध, राजस्थान में व्याप्त) में गिरती थी । यही महानदी शिवालक महानदी थी जिससे आजकल शिवालक पहाड़ियां उभरी हैं । इस प्रसंग में श्री महेन्द्रसिंह रंधावा का विचार उपयुक्त है:—

> "इसलिए शिवालक की पहाड़ियां जिन का रेत होशियारपुर के किसानों को मुसीबत बना हुआ है किसी जमाने में एक दरिया का तल थीं ।"

शिवालक दरिया से शिवालक पहाड़ियां कब बनीं, इस विषय में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता इतना अवश्य है कि भूगर्भीय विकास की ओर संकेत करते हुए कुछेक हवाले पौराणिक गाथाओं में मिलते हैं। पद्म पुराण के एक प्रसंग में जालन्धर के इलाके को समुद्र कहा गया है। एक और प्रसंग में जालन्धर को एक दानव के रूप में चित्रित किया गया है जोकि सागर का पुत्र है और जिसे शिवजी पराजित करते हैं। रंधावा महोदय के विचारानुसार इस आलंकारिक वर्णन में जालन्धर दानव का पराजित होना सागर का पीछे हटना और शिवजी की विजय पर्वतमाल का उभरना है। रामायण में भी एक ऐसा प्रसंग आता है जिस में राम के बाण के भय से उत्तरपथ की दो नदियां विलुप्त होकर राजस्थान की मरुभूमि के नीचे होती हुई सागर में मिलने लगी थीं। जालन्धर शब्द के शब्दार्थ में भी जल विद्यमान है। काव्यशैली में लिखे हुए पौराणिक प्रसंगों में से ऐतिहासिक सूचनाओं को आलंकारिक घटाटोप से पृथक कर सकना बहुत कठिन है, फिर भी इतना अवश्य है कि पौराणिक गाथाओं में सांस्कृतिक भूगोल की बहुत महत्वपूर्ण सूचनाएं वर्तमान हैं।

शिवालक पहाड़ियां बन जाने के पश्चात् यहां का प्राकृतिक इतिहास आरंभ होता है। भू-शास्त्रियों का अनुमान है कि पोठोहार की पठार और शिवालक की पहाड़ियों का प्राकृतिक इतिहास लगभग एक ही युग में आरंभ हुआ। शिवालक की पहाड़ियों में पथराई हुई जानवरों की हड्डियों से अनुमान लगाया जाता है कि जैविक विकास की दृष्टि से अनेक प्रकार के जानवर इन पहाड़ियों में रहा करते थे। कहा जाता है कि बनमानस (मनुष्यों की तरह चलते-फिरते बानर) इन पहाड़ियों में अधिकांश थे। यह असम्भव नहीं कि मनुष्य के विकास में हिमालय की इस सब से छोटी शैलमाला का सब से अधिक हिस्सा हो। कारण यह कि जैविक विकास के लिए सागर के समतल के साथ न्यूनतम ऊंचाई की भूमि का अधिकतर समय के लिए निकट रहना अनिवार्य है। हिन्दू गाथा-विज्ञान का समुद्र-मंथन जैविक विकास की ओर संकेत करता ही है, रूस का आधुनिक जीव-रसायन विज्ञान (Biochemistry) इसी निष्कर्ष पर पहुंचा है। इस प्रकार का भूगर्भीय एवं जैविक विकास हो चुकने के बाद मानव की निष्पत्ति (उत्पत्ति नहीं) हुई जिस ने सांस्कृतिक इतिहास का सूत्रपात किया।

शिवालक के गोलमटोल पत्थर-गीटे यों ही गोल नहीं बन गए।

सांस्कृतिक भूगोल की दृष्टि से शिवालक पहाड़ियों में कांगड़ा के कुछ भाग एवं होशियारपुर और गुरदासपुर का पहाड़ी इलाका सम्मिलित समझा जाता है। धार्मिक, सम्याचारिक और कलात्मक दृष्टिकोण से ज्वालामुखी, चिन्तपुरणी, डमटाल का आश्रम, हरिपुरगुलेर और नूरपुर विशेष प्रसिद्ध हैं। कांगड़ा की चित्रकला, जो स्त्रीसुलभ सौम्यता, सुन्दरता और प्यार के संतुलित एवं सजीव चित्रण के कारण भारतीय और इतर भारतीय कला-पारखियों की प्रशंसा से विश्व-विख्यात है, का जन्म-स्थान हरिपुर गुलेर है। रीतिकाल के नायिका-भेद विलास रहित हो कर राजपूती जीवन की सौम्यता, ब्राह्मण-सुलभ सरसता और गद्दियों के जीवन की स्वाभाविकता के साथ कांगड़ा की चित्रकला में साकार हो उठे हैं। ज्वालामुखी का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व पांडवों, सम्राट् अकबर और महाराजा रणजीत सिंह जैसे महानुभावों की ज्वालामुखी यात्राओं से स्पष्ट है। कांगड़ा-शासक महाराजा संसारचन्द और महाराजा रणजीत सिंह ने इसी पवित्र स्थान पर ज्वालाओं की साक्षी में सन्धि की थी। कहा जाता है कि महाराजा रणजीत सिंह रण यात्रा के अवसर ज्वालामुखी देवी को स्मरण किया करते थे। अफगानों को पराजित करने के पश्चात् देवी की मनौत पूरा करने के लिए उन्होंने मन्दिर की छत को सुनहरा बनवाया था। कंवर खड़क सिंह ने चान्दी के दरवाजे देवी के मन्दिर में चढ़ाए थे। नूरपुर का महत्व राजनीतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण से है। सम्राट् जहांगीर का समकालीन राजपूत राजा जगत सिंह पहाड़ी प्रदेश की स्वतन्त्रता का प्रतीक था। आजकल भी कई लोक-गीतों में इसे श्रद्धांजलि दी जाती है—

> "जगता राजा भगता राजा बासदेव का जाया, सिंघ मारे सागर भारे हिमालय डेरा लाया। आकाश को झरणां किया तब जगता कहाया।"

इसी भांति राजा बीर सिंह की राजपूती आन और राम सिंह पठानियां का स्वदेश-प्रेम और शौर्य नूरपुर का गौरव है। शिवालक की लोकवार्ता की विशिष्टता यहां के सांस्कृतिक भूगोल के अनुरूप है। मन्दिरों में देवियों (सर्वदेवमयी भगवती पुराणेषु प्रतिपादिता) और विष्णु (भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, लक्ष्मीनारायण) के मन्दिर अधिक हैं। ऐसे मन्दिर भी कम नहीं जहां भगवान् कृष्ण, भगवान शिव, भगवती दुर्गा, गणेश और हनुमान सब की मूर्तियां विद्यमान होती हैं। छोटे ग्रामों में देवी-देवताओं के सम्बन्ध में परिस्थिति कुछ ऐसी रही है कि एक ग्राम और एक ग्राम-देवता। ग्राम-देवता को रिझाने के लिए ग्राम-निवासियों की समस्त मानसिक शक्तियां गीतों में प्रवाहित हो उठती हैं। ऐसे गीत ही धीरे-धीरे लोकगाथा का रूप धारण कर लेते हैं। लोकवार्ता (फोकलोर) का विकास लोकगाथा (फोकमाइथालोजी) से कुछ भिन्न रूप में होता है। सैद्धान्तिक दृष्टि से कहा जाए, तो लोकाचार से लोकाख्यान

का और इससे लोकवार्ता का विकास होता है, लोकाचार की कच्ची सामग्री सामयिकी है और लोकवार्ता की परिष्कृत रूपज ग्रन्थ साहित्य है। लोकवार्ता और ग्रन्थ साहित्य की मध्यस्थ शृंखला लोक-साहित्य है। इस विकासक्रम से देखा जाए तो शिवालक के आधुनिक जीवन की परिणति अभी ग्रंथ साहित्य में नहीं हो पाई है। यहां के जीवन का रूपान्तर लोकवार्ता में ही अधिकांश और लोक-साहित्य में अल्पांश हुआ है। लोकवार्ता का उदाहरण यहां के स्थानीय विवाह-गीत, संस्कार-गीत, अन्य स्त्रीगीत, परम्परा से आ रही लोककथाएं, लोक-नाच आदि हैं। लोक-साहित्य का उदाहरण स्वर्गीय पहाड़ी गांधी पंडित काशीराम जी द्वारा पहाड़ी लोक-गीतों की लय और स्थानीय बोली में बनाए गए राष्ट्रीय भावना के गीत हैं।

कांगड़ा ज़िले की विभिन्न बोलियां

कांगड़ा ज़िले के सांस्कृतिक और भाषिक दृष्टिकोण से दो स्पष्ट भेद हैं :—

(१) कांगड़ा वादी और कांगड़ा-कण्डी का इलाका, और

(२) कुल्लू सब-डिवीज़न का इलाका जिसमें कुल्लूवादी और सिराज का इलाका शामिल है।

कांगड़ावादी और कांगड़ा कण्डी के इलाके की बोली मोटे रूप से कांगड़ी है। इसके कुछेक स्थानीय भेद हैं। ये स्थानीय भेद कुल्लू सब-डिवीज़न को छोड़ कर शेष कांगड़ा ज़िला की तहसीलों के अनुसार ही हैं। तहसील नूरपुर की बोली में कर्म और सम्प्रदान कारक के लिए 'की' परसर्ग का प्रयोग होता है जब कि पालमपुर तहसील की परिनिष्ठित कांगड़ी में 'जो' परसर्ग है। उदाहरण के लिए :—

हिन्दी	कांगड़ी	
	पालमपुर की	नूरपुर की
मुझको (मुझे)	मिञो	मेंकी
उसको (उसे)	तिसजो	उसकी
तुझको (तुझे)	तिज्जो	तैंकी

इसके अलावा हिमालय की पीर पंजाल शाखा की कांगड़ा स्थित शैलमाला 'धौलाधार' के निवासी गादियों और गुर्जरों की दो बोलियां गादी और गुर्जरी हैं। ये कबीलागत बोलियां हैं। इनके एक अलग कोश की आवश्यकता है। डा. ग्रियर्सन ने गादी बोली को पश्चिमी पहाड़ी के चम्बाली ग्रुप के अन्तर्गत गिना है और गुर्जरी बोलियों को अलग गिना है।

कुल्लू सब-डिवीजन में स्पष्ट रूप से दो बोलियां हैं—कुल्लुकी और सिराजी। कुल्लुकी और सिराजी बोलियों को भाषा वैज्ञानिकों ने पश्चिमी पहाड़ी के "कुल्लू ग्रुप" के अन्तर्गत गिना है। भाषिक तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं। कुल्लुकी बोली कुल्लू तहसील में और कांगड़ा जिले की पालमपुर तहसील के बंघाल इलाके में बोली जाती है। सिराजी बोली के स्थानीय रूप से दो भेद हैं, सैंजी और बाह्य सिराजी। बाह्य सिराजी क्योंथली (शिमला पहाड़ी) उप-भाषा की बोली शिमला-सिराजी (कोटगढ़ के आसपास की बोली) के निकट है। कुल्लुकी और सिराजी (सैंजी और बाह्य सिराजी) बोलियां शब्द भण्डार और व्याकरण दोनों दृष्टिकोणों से बहुत महत्वपूर्ण बोलियां हैं और कांगड़ी बोली से काफी भिन्न हैं। इन बोलियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन अपभ्रंश भाषा और पुरानी हिन्दी के लिए महत्वपूर्ण हैं।

हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं और कांगड़ी बोलियां

पर्वतीय और उत्तरापथ की बोलियों का सम्बन्ध पश्चिमी अपभ्रंश से है। डा. भोलाशंकर व्यास के मतानुसार पश्चिमी अपभ्रंश को ही नागर अपभ्रंश कहते हैं। नागर अपभ्रंश का आदिम साहित्यिक रूप विक्रमोर्वशीय के अपभ्रंश पदों में उपलब्ध है और परिनिष्ठित साहित्यिक रूप हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत दोहों में। इस नागर अपभ्रंश के तीन रूप बताए जाते हैं, गुर्जर, पश्चिम और शौरसेनी। हमें ऐसा लगता है कि अपभ्रंश के शौरसेनी और गुर्जर रूपों के मेल-जोल से पश्चिमी पहाड़ी बोलियों का विकास सम्भव हुआ है। यह बात इस तथ्य से भी पुष्ट होती है कि पहाड़ी बोलियों का राजस्थानी के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। पहाड़ी बोलियों और राजस्थानी के घनिष्ट सम्बन्ध का डा० ग्रियर्सन और डा० राजबली पांडेय ने भी संकेत किया है। इस सम्बन्ध में डा० राजबली पांडेय के ये शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं :—

> 'राजस्थानी स्वयं बांगरू और पंजाबी को काटती
> हुई हिमालय की शृंखलाओं में पहुंच जाती है।'
>
> (हिन्दी साहित्य की पीठिका)

राजस्थानी और पहाड़ी बोलियों के सम्बन्ध की पृष्ठभूमि में यह ऐतिहासिक सचाई है कि सपादलक्ष (शिवालिक) की शैलमालाओं के रास्ते से खशों-गुर्जरों आदि कबीलों का राजस्थान में आगमन हुआ। इस प्रसंग में यह भी असंगत नहीं होगा कि अफगानिस्तान के स्वात इलाके के गुर्जरों की बोली राजस्थान की मेवाती बोली के साथ मिलती जुलती है। राजस्थान की इसी मेवाती बोली के साथ हमारी पहाड़ी बोलियां समानता रखती हैं। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन भी उत्तरापथ और पर्वतीय बोलियों और उनके लोक साहित्य को हिन्दी प्रादेशीय बोलियों और लोक-साहित्य के अन्तर्गत मानते हैं। डैनज़िल इब्बेटसन ने भी कांगड़ी बोली को हिन्दीमयी पहाड़ी कहा है।

उपर्युक्त विचार धारा की दृष्टि में रखते हुए हम कह सकते हैं कि राजस्थानी की मेवाती बोली का जो सम्बन्ध हिन्दी प्रादेशीय बोलियों के साथ है, वैसा ही सम्बन्ध मूल में पहाड़ी बोलियों का हिन्दी प्रादेशीय बोलियों के साथ रहा है। परन्तु धीरे धीरे पहाड़ की बोलियों पर सामने के मैदानी इलाके की बोलियों का असर पड़ता रहा। इस तरह कांगड़ा बोलियों (कुल्लू सुप की बोलियों को छोड़ कर) पर पंजाब के जालन्धर द्वाब की द्वाबी का प्रभाव दीखता है। और साथ ही शब्दावली में कुछ प्रभाव काश्मीर की शीना आदि बोलियों का भी है। कुछ लोगों ने कांगड़ी बोली को जम्मू की डोगरी का विस्तार मात्र माना है। ऐसे लोग कांगड़ी बोली की नूरपुरी उप-बोली पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। यदि तहसील पालमपुर की बोली को परिनिष्ठित कांगड़ी समझा जाए तो कहना होगा कि कांगड़ी बोली की स्थिति पश्चिमी पहाड़ी की मंडियाली और चम्बियाली बोली की मध्यवर्ती है। हिन्दी खड़ी बोली और कांगड़ी बोली के आपसी सम्बन्ध को दिखाने के लिए हम यहां दोनों बोलियों के कुछ उदाहरण देते हैं :—

कांगड़ी बोली	हिन्दी (खड़ी बोली)
१ सै जलंधर गेया था	वह जालंधर गया था।
२ शीला रोटी पकाई	शीला ने रोटी पकाई।
३. मिजो पढ़ने जो इक कताब देआ	मुझे पढ़ने को एक किताब दीजिए।
४. मैं परसों तिज्जो इक चिट्ठी लिखी थी	मैंने परसों तुझे एक चिट्ठी लिखी थी।
५. तिनी दुध पीता कने फिरि सई गया	उसने दूध पिया और फिर सो गया।
६. जे मैं दिल्ली जा जांगा तां तुमाजो इक घड़ी लई औंगा	यदि मैं दिल्ली जाऊंगा तो तुम्हारे लिए एक घड़ी ले आऊंगा
७. कम समाप्त करी सैला जो चलगे	काम समाप्त करके सैर को चलेंगे।
८. मेरा इक बहाई (भाई) दिल्ली-च रहदा है	मेरा एक भाई दिल्ली रहता है।
९. तेस-दी बैहण शिमले ते कल आई	उस की बहिन शिमला से कल आई।
१०. जिस बेलें कोई थोड़ी-भारी पवै मिजो याद करना	जब कोई विपत्ति आए, मुझे याद करें।

उपर्युक्त वाक्यों में कांगड़ी बोली के पद-विचार और वाक्य-विचार की खड़ी बोली के पद-विचार और वाक्य विचार से तुलना से यह प्रकट है कि कांगड़ी बोली और खड़ी बोली में पर्याप्त समानता है। इस घनिष्ट सम्बन्ध के दो कारण हैं, एक तो यह खड़ी बोली और कांगड़ी बोली दोनों का मूल स्रोत एक ही शौरसेनी अपभ्रंश है जिसमें मेवाती का काफी प्रभाव है, दूसरा यह कि कांगड़ा जनपद में शेष उत्तरापथ की भांति शिक्षा का माध्यम उर्दू (खड़ी बोली) रहा है। परन्तु यह कहना असंगत नहीं होगा कि पंजाब के जालन्धर दोआब की बोली का इस पर काफी प्रभाव है। वास्तव में जालन्धर दोआब और कांगड़ा आदि पहाड़ी इलाके की प्राचीन काल से एक ही प्रशासनिक इकाई रही है, जिसे त्रिगर्त कहते थे। त्रिगर्त का वर्णन महाभारत प्रभृति प्राचीन ग्रंथों में कई बार आया है।

लोक वार्ता और लोक साहित्य

लोक वार्ता (फोकलोर) से वैज्ञानिक अध्ययन का विकास लोकतन्त्र की विचारधारा के साथ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिम के लिए संस्कृत का आविष्कार हो जाने के कारण तुलनात्मक भाषा विज्ञान और तुलना धर्मगाथा विज्ञान (माइथोलोजी) से लोकवार्ता के अध्ययन को प्रगति मिली। तत्पश्चात् ऐसी धारणा बनी कि नृ-विज्ञान (एनथ्रोपोलोजी) में मानव के शारीरिक और मानसिक निर्माण तंतुओं के ऐतिहासिक विकास की खोज निकालने के लिए लोकवार्ता से पर्याप्त सहायता ली जा सकती है। इन परिस्थितियों के ऐसे संपुट में लोक वार्ता की ओर विशेष ध्यान गया फलतः इसका वैज्ञानिक अध्ययन आरंभ हुआ तथा लोक वार्ता का स्वरूप, सीमाएं और तत्व निर्धारित हो गए। 'लोक वार्ता' शब्द 'लोक साहित्य' से अधिक विस्तृत है। लोक साहित्य में धर्मगाथा का समावेश नहीं होता, परन्तु लोक वार्ता में धर्मगाथा, लोक गाथा, ग्रामी-गीत, नगरों में प्रचलित लोक कथाएं आदि सभी कुछ सम्मिलित है। साधारणतया लोक वार्ता के दो भाग किए जा सकते हैं। एक गाथा और दूसरा साधारण लोक साहित्य। गाथा में मानव की कोई न कोई आदिम परम्परा किसी न किसी रूप में सुरक्षित रहती है जिस से मानव के बौद्धिक एवं सामाजिक विकास को आंकने में कोई न कोई सम्बन्ध सूत्र मिल सकता है।

साधारण लोक साहित्य की परम्परा गाथा साहित्य की भांति विशेष प्राचीन नहीं होती। साधारण लोक साहित्य का कुछ अंश तो बिल्कुल नवीन विषयों को लेकर रचा गया होता है। परन्तु फिर भी लोक साहित्य और अन्य लिखित साहित्य में विभाजक रेखा खींची जा सकती है। लोक साहित्य लोक मानव की सहज और अकृत्रिम अभिव्यक्ति होता है, इस की परम्परा मौखिक रहती है, इस के सृजन में अध्ययन, अभ्यास और परिश्रम सिद्धि का समावेश बिल्कुल नहीं होता। लोक साहित्य में जनमन की अबोध उमंगें होती हैं परन्तु लिखित साहित्य में मननशील मनुष्यों की संस्कारी चेतना में अंगड़ाइयां लेने वाली संश्लिष्ट भावनाएं। लोकवार्ता का स्वरूप साधारण लोक साहित्य की अपेक्षा विशाल है क्योंकि इसमें लोक साहित्य सुलभ जनमन के उन्मुक्त स्पन्दन भी होते हैं और साहित्य में दुर्लभ ऐतिहासिक सामग्री भी विद्यमान रहती है। इसी दृष्टिकोण से लोकवार्ता के दो भाग किए जाते हैं, एक गाथा साहित्य और दूसरा साधारण लोक साहित्य। गाथा साहित्य के दो रूप हैं, धर्मगाथा और लोक गाथा तथा साधारण लोक साहित्य के तीन रूप हैं, लोक कथा, लोक कहावतें। लोक वार्ता के इन सभी रूपों की कला में लोकमानस की दीर्घ परम्परा का विकास होता है अर्थात् समय के अनुकूल लोकमानस की मूल प्रवृत्तियों में जो जो विकास जैसे जैसे आता जाता है, उसी के अनुरूप लोकवार्ता की कला अभिव्यक्ति में निखार आता है। अभिप्राय यह कि लोक वार्ता की कला लोकमानस की आन्तरिक आवश्यकताओं के अनुकूल बदलती है, लिखित साहित्य की कला की भांति बाह्य आवश्यकताओं की मांग के अनुरूप नहीं बदलती। जिस भांति जीवन के स्पन्दन स्वाभाविक होते हैं उसी भांति लोकवार्ता की कला स्वाभाविक रहती है क्योंकि लोकवार्ता का जीवन के साथ सहज सम्बन्ध है। फिर भी लोक वार्ता के विभिन्न रूपों में कला की विभिन्नता दृष्टिगोचर होगी।

कांगड़ा की लोक वार्ता

इतने संक्षिप्त परिचय के पश्चात् कांगड़ा-कुल्लू की लोक वार्ता का अध्ययन समीचीन दीखता है। लोक वार्ता का गाथा वाला भाग कुल्लू में अपेक्षाकृत अधिक है और लोक वार्ता का साधारण लोक साहित्य वाला रूप कांगड़ा में। कुल्लू की धर्मगाथा (माइथालोजी) और लोकगाथा के सूक्ष्म अध्ययन से वहां के हिन्दू धर्म के विभिन्न तन्तुओं ब्रह्मणवाद, देवतावाद, दानववाद आदि को ठीक समझने में पर्याप्त सहायता मिलती है। प्राचीन हिन्दू विचारों ने कुल्लू को कुलांत भी कहा है। ऐसा लगता है कि वे कुल्लू को पृथ्वी का अन्तिम सिरा समझते होंगे। इतिहासकारों का ऐसा अनुमान है कि प्राचीन समय में जब आर्यों ने कुल्लू घाटी में प्रवेश किया तब कुछेक आर्य ऋषियों ने कुल्लू की सुन्दर प्राकृतिकवादी में अपना स्थायी निवास कर लिया। इन ऋषियों के श्रेष्ठ आचरण से प्रभावित हो कर कुल्लू के आदि वासियों ने इन्हें देवता का दर्जा दिया। इस लिए कुल्लू का देवभूमि नाम प्रचलित हुआ होगा। कुल्लू में प्रचलित कुछेक गाथायें इस ओर संकेत भी करती हैं। मनाली नाम के प्रसिद्ध नगर का सम्बन्ध आर्य ऋषि मनु से बताया जाता है जिसकी स्मृति में वहां एक मन्दिर भी बना हुआ है। कुल्लू की प्रसिद्ध देवी हिडम्बा को पांडव पुत्र भीम की पत्नी कहा जाता है। मलाना नामक वादी का प्रसिद्ध देवता जमलू भी कुछेक गाथाओं के अनुसार आर्य-ऋषि जमदग्नि ही है। ऐसी भी दन्त कथा है कि पांडवों के बनवास समय अर्जुन ने कुल्लू के बिजली महादेव के मन्दिर में शिवजी की उपासना की थी। इस प्रकार की गाथाओं से इतना स्पष्ट है कि लगभग महाभारत काल में कुछेक आर्य ऋषियों ने कुल्लू में निवास किया था। चीनी यात्री ह्यूनस्यांग के यात्रा वर्णन के अनुसार सम्राट् अशोक ने कुल्लू वादी में महात्मा बुद्ध का स्तूप बनवाया था तथा वह स्तूप उपर्युक्त यात्रा वर्णन के अनुसार ह्यूनस्यांग के समय तक वर्तमान था। व्यासवादी के उत्तरी भाग में तिब्बत के लामों का राज्य भी कुछ समय के लिए रहा है, परन्तु स्थायी न हो सका था क्योंकि तिब्बती लोग आठ हज़ार फुट से कम ऊंचाई वाले स्थान पर अपनी सहज प्रकृति के अनुसार नहीं रह सकते। कुल्लू के लोकगीत इस प्रकार की धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक परिवर्तनों को अपने अन्दर छिपाए हुए हैं। इन्हीं परिस्थितियों के कारण वहां के आदि वासियों में देश-प्रेम की भावना सर्वव प्रबल रही। एक प्रसिद्ध लोकगीत की पंक्तियां हैं —

देशा देशा न सोभला,
देश कुल्लू रा प्यारा।
धार्सें सी एइर्दे तितरू चाकरू,
ए बगीचड़ू म्हारा।

अर्थात् कुल्लू सब देशों से सुन्दर देश है, यह हमारा उद्यान है और हम इसके पक्षी हैं। पक्षियों का अपने घोंसले के साथ प्यार काव्य जगत में देश प्रेम का उपमान समझा जाता है। इस भावना को लोक-गीत की कला ने सहज में ही अभिव्यक्त कर दिया है। इसी प्रकार कांगड़ा में भी देश-प्रेम का गीत प्रचलित है—

नी मेरा देश कांगड़ा न्यारा,
डूग्गी डूग्गी नदियां थक सैली सैलो धारां।
थो सैली सैली धारां॥
छैले छैले गबरू थक बांकियां नारां,
थो बांकियां नारां।

पंचनद की पहाड़ियों में स्थित कांगड़ा जन-पद भारत मां का गौरव-सीमा-मंडितभाल ही है। यह जन-पद देव भूमि है, तपो भूमि है, वीर भूमि है। पुराणों ने इसकी महिमा के गीत गाए हैं। महाभारत ने इस जनपद के वीरों की वीरता को सराहा है।

प्रकृति की अनुपम छटा, चित्र लिखित से मनोहारी दृश्य, रंग-बिरंगे पुष्प चित्रकार बनने की प्रेरणा देते हैं। यहां प्रकृति की ऐसी मनमोहनी छटा है कि संवेदनशील हृदयों में कवि सुलभ भावों का स्फुरण होने लगता है। यहां की नद नद करती नदियां, छल छल करती धाराएं और झर झर करते झरने यहां के निवासियों को संगीत सुनाते हैं।

कांगड़ा लोक गीतों की निजी विशेषता है कि इन में सांस्कारिक गीतों की प्रधानता है। अधिकतर संख्या स्त्रियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों की ही है। जन्म के गीत 'हसणू खेलणू' कहलाते हैं। इन गीतों में बालकृष्ण, यशोदा और नन्द तथा बालकराम कौशल्या और दशरथ को प्रतीकरूप में रखा जाता है।

अन्य शुभ संस्कारों अन्न प्राशन, मुण्डन, यज्ञोपवीत और विवाह के अवसर पर स्त्रियां गीत गाती हैं। भजन तो सभी मांगलिक कार्यों में गाये जाते हैं। अवसरोचित सभी गीतों को जानने वाली स्त्री अन्य स्त्रियों से उचित सम्मान भी पाती है।

इस के अतिरिक्त मेलों में जाती हुई, किसी देवी-देवता की यात्रा पर जाती हुई, खेतों में काम करती स्त्रियां भी गीत गाती हैं।

कुमारी कन्याएं चैत्र मास में शंकर पार्वती का पूजन करती हैं। उनके अपने गीत होते हैं।

कांगड़ा-कला—एक अनमोल रत्न

श्री आनंद कुमार स्वामी ने कांगड़ा चित्रकला की बहुत महिमा गाई है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "राजस्थानी पेंटिंग" में कांगड़ा चित्रकला को राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत रखा है। आजकल इसे हिमाचल चित्रशैली के नाम से भी पुकारा जाता है।

कुमार स्वामी की हो परख का परिणाम है कि कांगड़ा चित्रशैली के आनन्द और रस से भारत हो नहीं विश्व परिचित हुआ है, नहीं तो यह अनमोल रत्न अनजाना ही पड़ा रहता।

हिमालय की गोदी में पली रंग और रेखा के सहारे मन के भावों को साकार बनाने वाली यह सुकुमार कांगड़ा सचमुच मोहिनी है जो हमारे मनों को हर लेती है और दूर ले जाती है किसी कांतिमय जगत में। इसकी मिठास और इसकी सुनाई मन में कुछ ऐसा जादू चलाती है कि इसकी तस्वीर हटाए नहीं हटती। यह मोहिनी आज ब्रिटिश म्यूज़ियम में बैठी कितने ही कला पारखियों के रसात्मक हृदयों को तरंगित करती है। तस्वीरें देखते जी अघाता नहीं, ऐसा लगता है कि हमारा अपना मन ही सहज रूप में उभड़कर कागज पर बिखर गया हो। यह निष्कपट है इसमें बनावट नहीं।

इसकी प्रत्येक रेखा में नारी है, उसके अन्तर्यामी भाव, उसका बारहमासी जीवन, उस के मन का माधुर्य, उसके मुख की कांति, और उसके शरीर का लावण्य। नारी की सुषमा के ऐसे मुंह बोलते चित्र किसी और शैली में शायद नहीं मिलते होंगे। इसका समूचा प्रभाव भी कुछ ऐसा है कि पुरुषों का अस्तित्व ही नारी को निखारने, उसे विकसित करने, उसे सिंगारने संवारने और उसकी रक्षा करने के लिए है, नारी जीवन की चांदनी है इसके बिना पुरुष के जीवन की धूप उसे झुलसा दे। इस चांदनी और धूप के मेल का नाम ही प्यार है: प्यार से जीवन में विचित्रता आती है। आधी मुस्कान के चारों ओर लिपटी आहों और आंसुओं की भीड़भड़क्के वाली जिंदगी की मुसीबतें इसी विचित्रता के सहारे झेली जाती हैं। कांगड़ा कला में ये सब भाव साकार हैं।

सूर, बिहारी, मतिराम और पद्माकर सब की नायिकाएं यहां चित्रलिखित हैं। राधा-कृष्ण की उपमान-योजना के माध्यम से ही प्यार के सामान्य भावों को व्यक्त किया गया है। राधा-कृष्ण लीला के अतिरिक्त कांगड़ा चित्रशैली में रामायण, महाभारत, सावित्री-सत्यवान और नल-दमयंती आदि कथाओं पर आधारित चित्र भी उपलब्ध होते हैं।

कांगड़ा चित्रकला का आरंभ बसौली चित्रकला से १७वीं-१८वीं सदी में हुआ था। बसौली, कांगड़ा और चम्बा के मध्य रावी के किनारे एक नगर था, जो आज कल एक गांव मात्र ही रह गया है। बसौली कलम में कुछ रूखापन, कुछ जोश था, कुछ ग्रामीणता थी, सीधी-सादी दौड़ती हुई रेखाओं में फड़कते हुए सादे रंग हैं। यही कला कांगड़ा के महाराजा संसार चन्द (१७७४-१८२३) के राज्यकाल में आकर अपनी चरमसीमा को पहुंची।

"कांगड़ा चित्रशैली भारत में कलात्मक
सौंदर्य सृष्टि की अनुपम निधि है।"

[डा० अग्रवाल]

"कांगड़े की कला एक बड़े भारी आत्मिक उत्थान का परिणाम है। कांगड़े की कला का उत्तर भारत के जीवन के साथ बड़ा गहरा सम्बन्ध है। यह हिन्दू धर्म के आत्मिक और साहित्यिक पुनर्जन्म की प्रतीक है"।

[डा० महेन्द्र सिंह रंधावा]

कांगड़ी उपभाषा का व्याकरण

संज्ञा

खड़ी बोली (हिन्दी) की तरह ही कांगड़ी बोली में भी दो प्रकार के संज्ञा शब्द हैं, पदार्थ वाचक और भाव वाचक ।

पदार्थ वाचक संज्ञा शब्द ..	संसार चन्द, मा:णू (मनुष्य)
	भागसू (स्थान विशेष)
	ग्रां (ग्राम), सोइना (सोना), टोली आदि आदि ।
भाव वाचक संज्ञा शब्द ..	भले-आई (भलाई)
	बुरे-आई (बुराई)
	जलनी-चपनी (क्रोध)
	आदि आदि ।

२. पदार्थ वाचक संज्ञा शब्दों में वचन, लिंग और कारक तीन कारणों से रूपांतर होता है और भाव वाचक संज्ञा शब्दों में वचन और कारक दो कारणों से ।

पदार्थवाचक संज्ञा शब्दों में रूपांतर :—

(क) आकारांत :—

१—घोड़ा दोड़ेआ	घोड़ा दौड़ा ।
२—घोड़े दोड़े	घोड़े दौड़े ।
३—घोड़े जो दौड़ना चाहिदा	घोड़े को दौड़ना चाहिए ।
४—घोड़ेआ जो दौड़ना चाहिदा	घोड़ों को दौड़ना चाहिए ।

(ख) अन्य पुलिंग :—

१—हाथी आया	हिन्दी में भी बिल्कुल यही रूप है
२—हाथी आए	(हिन्दी में भी बिल्कुल यही रूप है)
३—हाथी-ए पुर राजा बैठे-ए-ओ	हाथियों पर राजे बैठे हुए हैं ।

(ग) ईकारांत स्त्री लिंग :—

१—बकरी गई	बकरी गई ।
२—बकरीयां गईयां	बकरियां गईं ।
३—बकरीआ जो बन्ह्	बकरी को बांध ।
४—बकरीआं जो बन्ह्	बकरियों को बांध ।

(घ) अन्य स्त्रीलिंग :—

१—रात न्हेरी ऐ	रात अन्धेरी है ।
२—रातां न्हेरियां न	रातें अन्धेरी हैं ।
३—राती-जो भ्रौणा	रात को घूमना ।
४—न्हेरीआं रातां च नी चलना चाहिदा	अन्धेरी रातों में नहीं चलना चाहिए ।

हिन्दी भाषा की तरह ही कांगड़ी उप-भाषा में भी दो प्रकार के लिंग हैं—स्त्रीलिंग और पुलिंग । साधारणतः स्त्री जाति से सम्बन्धित संज्ञा-स्त्रीलिंग की द्योतक हैं और पुरुष-जाति से सम्बन्धित पुलिंग की । प्रायः आकारांत और उकारांत शब्द पुरुष वाचक हैं तथा ईकारांत स्त्री-वाचक :—

पुलिंग	स्त्री लिंग
ओबरा (कमरा)	ओबरी
जवरा (बूढ़ा)	जवरी

बिट्टा (बेटा)	बिट्टी
मुन्नू (बच्चा)	मुन्नी
घरोटू (पतीला)	घरोटी
बच्चू (लड़का)	बच्ची

जहां पुलिंग ईकारांत हो वहां स्त्री लिंग प्रायः ई को हटा कर 'न' या 'नी' लगाने से बनाते हैं ।

तेली	तेलन
धोबी	धोबन
डागी (अनुसूचित जाति का एक वर्ग)	डागन
माली	मालन

वचन

हिन्दी की तरह ही कांगड़ी में दो वचन हैं:—
एक वचन और बहु-वचन ।

पुलिंग शब्दों के वचन

एकवचन		बहु वचन	
प्रथमा	सामान्य	प्रथमा	सामान्य
घोड़ा	घोड़ें	घोड़े	घोड़ेयां
घर	घरे	घर	घरां
डंगू	डगूंए	डंगू	डंगूए
बच्चा	बच्चे	बच्चा	बच्चां

स्त्रीलिंग शब्दों के वचन

एक वचन		बहुवचन	
प्रथमा	सामान्य	प्रथमा	सामान्य
बिट्टी	बिट्टीआ	बिट्टीआं	बिट्टीआं
जुणास	जुणासा	जुणासां	जुणासां
माऊ	माऊआ	माऊआं	माऊआं
खड्ड	खड्डा	खड्डां	खड्डां
रात	राती	राता	रातां
हत्थ	हत्थी	हत्थीं	हत्थीं
बहन	बहनी	बहनीं	बहनीं
पिट्ठ	पिट्ठी	पिट्ठीं	पिट्ठीं
बख	बखी	बखीं	बखीं

कारक, विभक्ति और परसर्ग

१- कारक:

'कारक' की परिभाषा के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं । कुछ विद्वानों का कहना है कि क्रिया के साथ जिस का सम्बन्ध हो, उसे ही कारक कहते हैं । परन्तु कामता प्रसाद गुरु और डा० धीरेन्द्र वर्मा इस मत को नहीं मानते, उनका कहना है संज्ञा (या सर्वनाम) के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है, उस रूप को कारक कहते हैं (कभी-कभी उस सम्बन्ध को भी कारक कह देते हैं) ।

२. कारकों द्वारा व्यक्त किए जाने वाले व्याकरणिक सम्बन्ध कई प्रकार के हैं । संस्कृत वैयाकरणों ने उनके आठ प्रकार गिनाए हैं, इस लिए संस्कृत व्याकरण में आठ कारक हैं, कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन ।

३. संस्कृत एक रूपांतरशील भाषा है इसलिए संस्कृत में कारक और विभक्ति को एक माना गया है । परन्तु हिन्दी आदि वियोगात्मक (Complex mixed Rational Fusional Analytic) भाषाओं में कारक और विभक्ति को अलग अलग माना गया है । यहां आकर कारक का अर्थ 'अन्य शब्द के साथ संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध हो गया है, और उस सम्बन्ध को प्रकाशित करने वाले संज्ञा के रूपांतर को विभक्ति कहते हैं ।

४. चूंकि एक विभक्ति एक से अधिक कारकों में इस्तेमाल होती रही, इसलिए संज्ञा के विभिन्न कारकों में प्रयुक्त रूपों का बोध कराने के लिए संज्ञाओं के उपरांत अलग से कुछ विभक्त्यार्थक शब्द जोड़ने पड़े । इन्हें ही परसर्ग कहा जाता है ।

५. रूप के अनुसार कांगड़ी में निम्नलिखित विभक्तियां पाई जाती हैं:—

१. प्रथमा उद्देश्यबोधक
२. द्वितीया कर्मबोधक
३. सामान्य तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, और सप्तमी ।
४. सम्बोधन बुलाने के लिए ।

उदाहरण:—

प्रथमा	घोड़ा दौड़ेगा	घोड़ा दौड़ा ।
द्वितीय	तुसां कताबा पढ़ायं	आप किताब (को) पढ़िये ।

सामान्य:—

१. रामें सौगी सीता बनवासे-श्रो गई	राम के साथ सीता बनवास के लिए गई ।
२. सीता ताईं रामें रावणे जो मारेआ	सीता के लिए राम ने रावण को मारा ।
३. सुगरीव बालिये ते 'लग होई गेआ	सुग्रीव बाली से अलग हो गया ।
४. रामे रा (दा) भाई लछमन बड़ा वीर था	राम का भाई लक्षमन बड़ा वीर था ।
५. कताबा मेजे पुर रखिदे	किताब मेज पर रख दे ।

सम्बोधन:—

जागतो, म्हारियां वातां सुनो .. बच्चो, हमारी बातें सुनो ।

६. उद्देश्य और कर्तृपद :—

उद्देश्य की सदा प्रथमा विभक्ति होती है, परन्तु कर्तृपद के लिए यह आवश्यक नहीं, उदाहरण:—

उद्देश्य (प्रथमा में):—लाड़ी झूंड कढदी ऐ	बहू घूंघट निकालती है ।
कर्तृपद (द्वितीया में):—लाड़िया जेठे ते झूंड कढेआ	बहू ने जेठ से घूंघट निकाला ।
कर्तृपद (चतुर्थी में):—तुसां जो दान करना चाहीदा	आप को दान करना चाहिए ।
कर्तृपद (षष्ठी में):—एह सारे पठंग मेरे कीते ओं न	ये सारे उल्ट फेर मेरे किए हुए हैं ।
कर्तृपद (कर्तृबोधक वाक्यांश के रूप में):—किसनीश्रा ब्याह कराइ लेआ	कृष्णा ने विवाह करवा लिया ।

(विशेष:—किसनीश्रा (कृष्णा ने) प्रथमा नहीं, कर्तृबोधक है)

कर्तृपद (तृतीया में):—सुभाषे ते एह कम्म नीं हूणा — सुभाष से यह काम नहीं होगा ।

७. कुछेक अवस्थाओं में कांगड़ी में हिन्दी की तरह ही प्रथमा तथा द्वितीया के रूप समान हो गए हैं,

उदाहरण:—

	प्रथमा	द्वितीया
कांगड़ी	पढ़ना इक गुण ऐ	मैं पढ़ना सिखान्दा ।
हिन्दी	पढ़ना एक गुण है	मैं पढ़ना सीख रहा हूं ।
कांगड़ी	तिसा दी जीभ कैंचिया साईं चलदी ऐ	तुसां तां तिसा री जीभ पकड़ि लई ।
हिन्दी	उसकी ज़बान कैंची के समान चलती है	आपने तो उसकी ज़बान पकड़ ली है ।

८. कांगड़ी के परसर्ग—:

(क) भूतकालिक कृदन्त में कर्तृबोधक 'ने' का प्रयोग कांगड़ी में नहीं होता। कर्तृपद दिखाने के लिए संज्ञा में ही विभक्ति हो जाती है, जैसे:—

रामें चिट्ठी लिखो—राम ने चिट्ठी लिखी।

(ख) हिन्दी 'को' के स्थान पर कांगड़ी में 'जो' का प्रयोग होता है, जैसे:—

बिट्टिया जो बुखार है	बेटी को बुखार है।
मुंडूआं जो पढ़नां चाईदा	लड़कों को पढ़ना चाहिए।
एह कागद सुलोचना जो दई देंओं	यह कागज सुलोचना को दे देना।
कताबां जो गंदा मत करा	किताबों को गंदा मत कीजिए।

(ग) हिन्दी 'के साथ' के स्थान पर कांगड़ी में 'कनैं' का प्रयोग होता है (कनैं का प्रयोग "और" के लिए भी होता है) उदाहरण:—

तेरे कनैं कुण था.	तेरे साथ कौन था।

(घ) 'कनैं' (के साथ) के अर्थ में 'सौगी' का प्रयोग भी होता है, जैसे:—

मेरिया सौगी चैल	मेरे साथ चल।

(ङ) हिन्दी 'से' के स्थान पर कांगड़ी में 'तें' का प्रयोग होता है, जैसे:—

सीला ते नीं चलींना	शीला से नहीं चला जाएगा।

(च) हिन्दी के तुलनात्मक 'से' के स्थान पर कांगड़ी में 'ते' के अतिरिक्त 'कन्नों' का प्रयोग भी होता है, जैसे:—

सरला कन्नो ऊसा खरी ऐ	सरला से उषा अच्छी है।

(छ) हिन्दी 'में' के स्थान पर कांगड़ी में 'च' का प्रयोग होता है, जैसे:—

मेरा डेरा शहरे 'च ऐ	मेरा मकान शहर में है।
ए' सबक मैं तिनां दिनां' च लिखया	यह पाठ मैंने तीन दिनों में लिखा।

(ज) हिन्दी 'पर' के स्थान पर कांगड़ी में 'पुर' का प्रयोग होता है, जैसे:—

रुक्खे पुर कुण चढ़ै	वृक्ष पर कौन चढ़े।
मूर्ता जो छाला पुर टुंगी दे	तस्वीर को दीवार पर लटका दे।

(झ) हिन्दी, 'का' के स्थान पर कांगड़ी में दो शब्दों का प्रयोग होता है, पूर्वी कांगड़ी में 'रा' का और पश्चिमी में 'दा' का। उदाहरण:—

पूर्वी कांगड़ी	तिस-रा भाई	उस का भाई।
पश्चिमी कांगड़ी	तिस दा भाई	उस का भाई।

नोट :—इन परसर्गों के अतिरिक्त कुछेक परसर्ग क्रियाविशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं. उनका उल्लेख हम उसी प्रसंग में करेंगे।

सर्वनाम

कांगड़ी में निम्नलिखित सर्वनाम हैं :—

१. पुरुष वाचक .. हौं, मैं, असां, तूं , तुसां, सैः, एह, ओह ।
२. निजवाचक .. अपूं ।
३. निश्चय वाचक .. सैः, एह, ओह ।
४. अनिश्चय वाचक .. कोई, कुना ।
५. सम्बन्ध वाचक .. जो, सो ।
६. प्रश्न वाचक .. कुण, क्या ।

(1) पुरुष वाचक सर्वनामों में हिन्दी की तरह ही लिंग के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसे :—

(कांगड़ी)

मैं गया	(पुलिंग)
मैं गई	(स्त्रीलिंग)
तू गया	(पुलिंग)
तू गई	(स्त्रीलिंग)
सैः गया	(पुलिंग)
सैः गई	(स्त्रीलिंग)

सर्वनाम के पुलिंग या स्त्रीलिंग होने का निश्चय क्रिया के रूप से ही होता है।

कांगड़ी सर्वनामों में विभक्ति जुड़ने पर वह अलग नहीं रहती, जैसे :—

कर्तृ कारक कांगड़ी—मैं (हौं ने), तैं (तू ने), तिनी (सैः ने) ।

हिन्दी—मैं ने, तू ने, उस ने

कर्म और सम्प्रदान कारक कांगड़ी—मिजो (मैं जो), तिज्जो (तू जो), तिहजो (सैः जो) ।

हिन्दी—मुझ को, मुझे, मेरे लिए, तुझको, तेरे लिए, उसको, उसे, उसके लिए ।

सम्बन्ध कारक कांगड़ी—मेरा, म्हारा, तेरा, तुहांरा (तुम्हारा), तेसरा, तिनारा ।

हिन्दी—मेरा, हमारा, तेरा, तुम्हारा, उसका, उनका ।

विशेष :—१. कांगड़ी बोलियों में अन्य पुरुष के एक से अधिक रूप प्रचलित हैं, इसलिए इसके विकारी रूप एक से अधिक हैं, जैसे, कर्म और सम्प्रदान कारक में उहजो, उसजो तिहजो, तिसजो, उन्हांजो, न्हजो, तिनाजो, सम्बन्ध कारक में 'उसरा', 'तेसरा', 'तिसरा', परन्तु बहुवचन में केवल 'तिनारा' है।

२. सम्बन्ध कारक की विभक्ति 'रा रे', री, के अलावा दा, दे, दी और ड़ा, ड़े, ड़ी भी है, परन्तु उत्तम पुरुष एक वचन और मध्यम पुरुष एक वचन में ये विभक्तियां नहीं लगतीं। इस प्रकार के कुछ उदाहरण :—

निम्न कांगड़ी में—१. म्हाड़ा, साड़ा (हमारा) तुहाड़ा (तुम्हारा)

इन शब्दों का 'ड़' राजस्थानी उच्चारण वाला है और 'र' का ही मूर्धन्यीकृत रूप है। इनका उच्चारण पंजाबी के इन शब्दों के 'ड़' से बहुत अलग है।

२. इसी तरह असांदा, तुसांदा, तिसदा, उसदा आदि सर्वनाम भी निम्नकांगड़ी में प्रचलित हैं।

विशेषण

विशेषण शब्दों का रूपांतर इस तरह से होता है।

१. आकारांत—

खरा बिट्टा	.. (अच्छा बेटा)
खरे बिटे जो	.. (अच्छे बेटे को)
खरे बिट्टे	.. (अच्छे बेटे)
खरेआं बिट्टेआ जो	.. (अच्छे बेटों को)

२. ईकारांत

खरी बिट्टी	..	(अच्छी बेटी)
खरीआं बिट्टीआं जो	..	(अच्छी बेटी को)
खरीआं बिट्टीआं	..	(अच्छी बेटियां)
खरीआं बिट्टीआं जो ?	..	(अच्छी बेटियों को)

३. नियम रूप से यह कहा जा सकता है कि आकारांत विशेषण शब्दों का रूपांतर आकारांत पुलिंग संज्ञा शब्दों की तरह होता है और ईकारांत विशेषण शब्दों का ईकारांत संज्ञा शब्दों की तरह तथा ये दोनों प्रकार के विशेषण शब्द विशेष्य शब्दों के लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं।

४. शेष विशेषण शब्दों में रूपांतर नहीं होता, जैसे लाल घोड़ा, लाल घोड़े, लाल घोड़ी, लाल घोड़ियां।

क्रिया

कांगड़ी में क्रिया धातु के दो रूप हैं—मूलधातु और यौगिक धातु।

मूलधातु अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होती है, उसमें प्रत्यय आदि लगाने की आवश्यकता नहीं होती। कांगड़ी मूल धातुओं के उदाहरण :—

खा, पी, उठ, चल, कर।

यौगिक धातु के तीन भेद हैं :—

(क) मूलधातु के साथ प्रत्यय जोड़कर बनने वाली क्रिया है, जैसे प्रेरणार्थक क्रियाएं।

उदाहरण :—

खाणा से खुआणा

पीणा से पिआणा

रोणा से रूआणा

(ख) संज्ञा शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बनने वाली क्रियाएं, जैसे :—

सुधार से सुधरना

डर से डरना

(ग) एक धातु से दूसरा धातु जोड़ कर बनने वाली संयुक्त क्रिया, जैसे :—

सिखिलैणा—सीख लेना

पढ़िलैणा—पढ़ लेना

चलि जाणा—चले जाना

ढेई पौणा—गिर पड़ना

काल रचना

हिन्दी की तरह कांगड़ी में भी तीन काल और उनके अलग अलग भेद हैं :—

वर्तमान काल

(क) सामान्य वर्तमान :—

सैः पढ़दा ऐ—वह पढ़ता है।

सैः पढ़दे न—वे पढ़ते हैं।

मैं करदा दा—मैं करता हूं।

तूं लिखदें—तू लिखता है।

(ख) तात्कालिक वर्तमान :—

सैः करा दा—वह कर रहा है।

मैं करादा—मैं कर रहा हूं।

तूं क्या करादा—तू क्या कर रहा है।

(ग) संदिग्ध वर्तमान :—

सैः करदा हुना—वह करता होगा।

सैः डाः च पढ़दा हुना—वह इस समय पढ़ता होगा।

भूतकाल

सामान्य भूत

सै: आया	वह आया ।
तिनो पत्र पढ़ेआ	उस ने पत्र पढ़ा ।
मैं कताब लिखी	मैंने किताब लिखी ।
तैं एह् गलती कैं कीती	तू ने यह गल्ती क्यों की ।

आसन्न भूत :—

सै : आया ऐ	वह आया है ।
सै : आए् आ	वह आया हुआ है ।
सै: गेआ 'ऐ	वह गया है ।
सै: गे 'आ	वह गया हुआ है ।
दुद्ध कुणी पीतो ऐ?	दूध किस ने पिया है ?

संदिग्ध भूत :—

सै: आया हुना	वह आया होगा ।
सै: आए ' आ हुना	वह आया हुआ होगा ।
तिनी चिट्ठी पढ़ी हुनी ऐं	उसने चिट्ठी पढ़ी होगी ।

पूर्णभूत :—

शीला आई थी	शीला आई थी ।
तिनी गलेआ हा	उस ने कहा था ।
बरसाती मतीमारी बरखा पई थी	बरसात में बहुत वर्षा हुई थी ।

अपूर्णभूत :—

मैं आंदा हा, कम्म करदा हा	मैं आता था, काम करता था ।
तूं चिट्ठियां लिखदा हा	तूं चिट्ठियां लिखता था ।
सै: टैप करदी थी	वह टाइप करती थी ।
इसी चाला टैम बीति जांदा हा	इसी तरह टाइम बीत जाता था ।

हेतुहेतुमद्भूत :—

जे तूं पढ़दा तां पास होई जांदा	यदि तूं पढ़ता तो पास हो जाता ।
जे स्याणेआं दी गलाई मनदा तां जत्तुआं ना भनादा	यदि स्यानों का कहा मानता तो जूते न तुड़वाता ।

भविष्यत् काल

सामान्य भविष्यत् :—

सै: पढ़गा	वह पढ़ेगा ।
हौं जांगो	मैं जाऊंगा ।
तेरा कम्म हौंकरगा	तेरा काम मैं करूंगा ।
सै: हुश्यारपुरे तै कनक लैंऊंगा	वह होशियारपुर से गेहूं लाएगा ।

सम्भाव्य भविष्य :—

जे सै आओएता तिस जो गलाणा	यदि वह आए, तो उसे कहना ।
जे तुसां आओ आ तां मिजो कताब लई आनेओं	यदि आप आएं, तो मेरे लिए किताब ले आएं ।

कृदन्त और निरपेक्ष

कृदन्त

वर्तमान कालिक कृदन्त :—

खिलदे फुल्ल मत तोड़ा	खिलते फूल मत तोड़िए ।
बगदा पानी साफ हुंदा ऐ	बहता पानी साफ होता है ।
चलदिया मोटरैं पुर ना चढ़	चलती बस पर न चढ़ ।
तिनी चलदे चलदे गलेआ ।	उसने चलते ए कहा ।

भूतकालिक कृदन्त

पढ़े-ओ लिखे-ओ जो कुण समझै-ए	पढ़ेलिखे को कौन समझाए ।
मैं इक मोए-आ बाघ दिखे-आ	मैंने एक मरा हुआ चीता देखा ।
हौं तंग आइ गेआ बैठा बैठा	मैं तंग आ गया हूं बैठा बैठा ।

निरपेक्ष

दिखि करी चल	देख कर चल ।
रोटी खाई कै चलगे	रोटी खाकर चलेंगे ।
दौड़ी नैं आ	दौड़कर आ ।

संयुक्त क्रियापद

हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की तरह कांगड़ी में भी क्रियापदों के साथ संज्ञा और कृदन्तीय पदों के मेल से संयुक्त क्रियापद बनाए जाते हैं जिन्हें संयुक्त क्रियापद कहते हैं। संयुक्त क्रियापद मिलकर एक ही अर्थ का प्रकाशन करते हैं। क्रियापद सहायक होता है, वह संज्ञा और कृदन्तीय पद की विशेषता आदि द्योतित करता है। संयुक्त क्रियापदों से भाषाओं में एक नई शक्ति और स्फूर्ति आती है।

संयुक्त क्रियापदों के कुछ उदाहरणों का वर्गीकरण करके इस तरह लिखा जा सकता है :—

१. प्रारम्भिकता बोधक—

सैः बोलन लगेआ	वह बोलने लगा ।

२. इच्छाबोधक—

हौं जाना चाहंदा	मैं जाना चाहता हूं ।

३. सामर्थ्य बोधक—

सैः इस कम्मे करि सकदा ऐ	वह इस काम को कर सकता है ।

४. अनुमोदन बोधक—

तिसजो जाना देआ	उसे जाने दें ।

५. निशदता बोधक—

सैः इक सेर नाज खाइगेआ	वह एक सेर अनाज खा गया ।

पदक्रियाविशेषण

सामान्य क्रिया-विशेषण शब्द हैं :—

- इब, हुण (अब के लिए)
- जाहलू, जाहल, जद् (जब के लिए)
- काहलू, काहल, कद् (कब क लिए)
- कदीं (कभी)
- इत्थू, इत्थी (यहां के लिए)
- कुत्थू, कित्थी (कहां „ „)
- जित्थू, जित्थी (जहां „ „)
- तित्थू, तित्थी (तहां „ „)
- इत्हां, (इधर „ „)
- कित्हां, कुत्हां (किधर „ „)
- जित्हां (जिधर „ „)
- किआं (किस तरह, कैसे)
- जिआं (जिस तरह, जैसे)
- कैं (क्यों)

(२) समय बोधक क्रिया-विशेषण—

अज, कल, परसूं, नित (प्रतिदिन) भाद, म्यागा (सवेरे)

दोषी (सवेरे), तड़के (तड़के), भिरी (फिर), मती बरीं (प्रायः)

(३) स्थान बोधक क्रिया-विशेषण शब्द—

ग्हां-पखां (आगे-पीछे)। नेड़ै (निकट)। परेडै (दूर)

दोंएं-बौंएं (दहिने-बाएं)। सज्जें-खबें (दहिने-बाएं)

गास (ऊपर), मुन्ह (नीचे), परां: (उस पार) रोआं: (इस पार)

(४) रीतिबोधक क्रिया-विशेषण-शब्द

चानचक (अचानक), छौहें-छौंहें (जल्दी-जल्दी)

कांगड़ी उपभाषा की भाषा-शास्त्रीय विशेषताएं।

पहले पृष्ठों में किए गए विवेचन के आधार पर कुछ बातों का स्पष्ट उल्लेख इस तरह किया जा सकता है :—

कांगड़ी उपभाषा की स्थिति पश्चिमी पहाड़ी के मंडियाली पुर और चम्बियाली गुप के मध्य में है। इस पर सामने के मैदानी इलाके जालंधर द्वाब की पंजाबी बोली का काफी प्रभाव है। इसके अतिरिक्त इसे राजस्थान की पूर्वी बोलियों विशेषतया मेवाती से भी प्रभावित माना जाता है। दोनों में स्थान की दूरी भले ही है, परन्तु किन्हीं ऐतिहासिक कारणों से (आबादी के स्थानांतरण से) यह प्रभाव घटित हुआ होगा।

यह उकार-बहुला भाषा है। प्राचीन साहित्य में उकार-बहुला अपभ्रंश का उल्लेख आता है, जिसका स्थान निश्चित नहीं हो पाया है, परन्तु इतना अनुमान लगाया गया है कि यह अपभ्रंश उत्तरापथ—सतलुज और सिंधु घाटियों के मध्य ही था।

अंग्रेजी साम्राज्य तक इस उप-भाषा की लिपि टाकरी रही है, जिसे पहाड़ी महाजनी भी कहा जाता है, परन्तु आजकल नागरी लिपि का प्रयोग आम हो रहा है।

इस की स्वर ध्वनियां हिन्दी की स्वर ध्वनियों की तरह ही हैं, परन्तु व्यंजन ध्वनियों में से सघोष महाप्राण ध्वनियां हिन्दी और पंजाबी दोनों से ही पृथक् है, अर्थात् घ, झ, ढ, ध और भ का उच्चारण संघोष तो अवश्य है परन्तु उन में महाप्राणता नाम मात्र की है, ऐसी महाप्राणता को कुछ भाषा वैज्ञानिकों ने केवल संगीतात्मक स्वराघात कहा है।

इसी तरह 'ह' के कांगड़ी उच्चारण में महाप्राणता नाम मात्र की है। कांगड़ी में 'हरि' शब्द का उच्चारण हिन्दी "हरि" और "अरि" के मध्य का सा होता है। तिब्बत की भोटी भाषा की लिपि में इस प्रकार की ध्वनि के लिए एक अलग वर्ण है।

राजस्थानी की भांति दन्त्य 'न' की बजाए मूर्धन्य 'ण' का प्रयोग अधिक होता है।

तालव्य संघर्षी नासिक्य (Palatal Fricative Nasal)

(यं) के स्थान तालव्य स्पर्शी नासिक्य (Palatal Stop Nasal

(ञ) का प्रयोग अधिक होता है।

सर्वनाम शब्दों की दृष्टि से कांगड़ी में भाषासीमाओं की विभिन्न रेखाएं हैं, पालमपुर की बोली में सर्वनाम शब्द हिन्दी नुमा है और देहरा की तहसील में पंजाबी नुमा।

भूतकालिक सहायक क्रिया हिन्दी की तरह था, थे, थी है पंजाबी की तरह सी, सन नहीं।

भूतकालिक कृदंत बनाते समय हरियाणवी अथवा दक्खनी हिन्दी की तरह ही कांगड़ी में 'आ' लगाने से पहले 'ए' का आगम होता है, जैसे लिख धातु से हिन्दी लिखा बनेगा, परन्तु कांगड़ी में लिख्—आ लिखेआ, उच्चारण में 'ए' का उच्चारण ह्रस्व हो जाता है।

हरिचन्द पाराशर

शब्द-संग्रह

(दूसरा भाग)

शब्द	व्याकरण		अर्थ
			अ
अंग	पु०	(कां)	सम्बन्ध (कुल्लुकी में आँग-बाजू) (सगे सम्बंधी के लिए प्रयुक्त होता है) प्रयोग— बड़कें बोलयेआ, तू मेरा अंग ऐं, बक्ख होइ कन्ने क्या लैणा । बड़े भाई ने कहा, तू मेरा सगा सम्बन्धी है, अलग हो कर क्या लाभ ।
अंग-मलावा	क्रि०	(कां)	आलिंगन, शरीर के अंगों का मिलना । प्रयोग—प्रीत नैन-मलावे ने पौंदी ऐ, कनै अंग-मलावे ने मुकि जांदी ए । प्यार आंखों के चार होने के साथ आरम्भ होता है और संभोग के साथ समाप्त हो जाता है ।
अंगी	अ०	(का)	अलग, जुदा । प्रयोग—मुन्नुएं गलाया मैं अंगी होई रहणा । बच्चे ने कहा मैं अलग ही हो रहूँगा ।
अंगसाक	पु०	(कां)	सम्बन्धी, रिश्तेदार ।
अंगुलट्टूक	पु०	(कां)	एक कीट विशेष जो बरसात में निकलता है और पांव की अंगुलियों में डंक मारता है ।
अंगू	पु०	(कां)	पहाड़ में प्रचलित एक पुराने किस्म की कमीज ।
अंजना	क्रि०	(कां)	दो विभिन्न अनाजों के दानों को अलग करने की प्रक्रिया ।
अंडा	पु०	(कां)	मिट्टी का बरतन, मुर्गी का अंडा ।
अंडला	पु०	(कां)	अंजुलि भर ।
अन्दाड़	पु०	(कां)	पांच छः मकानों के अन्दर का खाली आंगन । पांच-छः घरों के मुहल्ले का सांझा आंगन ।
अन्दाड़ी	स्त्री०	(कां)	रिहायशी मकान के पार्श्व में चारा और ईंधन आदि रखने के लिए बनाई गई जगह ।
अन्देरा	पु०	(कां)	विवाहित दम्पति का मुहूर्त के अनुसार गृह प्रवेश । प्रयोग—अन्देरे रा म्हूर्त संझेरे नौ बजे ऐं । वधू-प्रवेश का मुहूर्त सायंकाल नौ बजे का है ।
अन्द्रोन	पु०	(कां)	राजपूत घराने में पर्दे की पुरानी प्रथा जिसके अनुसार राजपूत रमणियां पालकी के बिना कभी घर से बाहर नहीं निकलती थीं ।
अंबर	पु०	(कां)	आकाश, वर्षा । प्रयोग—इबकी बरसाती मता भारी अंबर पेआ । इस बरसात में बहुत वर्षा हुई ।
अंबरी	स्त्री०	(कां)	वह भूमि जो वर्षा पर निर्भर हो ।
अंबाड़ा	पु०	(का)	एक वृक्ष विशेष ।
अंबें दाहड़ी बाणा	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में आम और दाड़िम वृक्षों की पूजा सम्बन्धी संस्कार ।
अ, आ	अ०	(का)	हां, हांजी ।
अऊतर	पु०	(कां)	यंत्र-मंत्र का कवच जो किसी संपुट के भीतर रख कर भूतप्रेतों के निवारणार्थ पहना जाए । प्रयोग—उस मुन्नुए अपनी बांह्रीं पुर अऊतर लाया ऐ । उस बच्चे ने अपने बाजू में यन्त्र-मन्त्र का कवच पहना है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
अखरी	सं० स्त्री०	(कां)	छत की दो परतों के दरम्यान का हिस्सा ।
अक्करी	स्त्री०	(कां)	सख्त जमीन जिसमें बड़ी कठिनता से हल चलाया जा सके ।
अक्खे बक्खे	अ०	(कां)	इधर उधर । प्रयोग—अक्खें बक्खें देखी के चल, डिगेआं कुतकी चौंदा । इधर उधर देख के चल, देखना कहीं गिर न जाना ।
अगोका	अ०	(कां)	इस वर्ष का ।
अगांह	अ०	(कां)	आगे की ओर ।
अगरोला	पु०	(कां)	बात करने में आगे रहने वाला । प्रयोग—तुहां सारा जागत बड़ा अगरोला ऐं । आप का बच्चा बड़ा बातूनी है ।
अगुआड़ा	पु०	(कां)	घर के साथ की वाटिका, घर के सामने की जमीन ।
अगेैं	अ०	(कां)	ओर, आगे, सामने ।
अगोर	सं०	(कां)	मकान का फर्श, अथवा सब से नीचे वाली मंजिल ।
अगोल	स्त्री०	(कां)	दरवाजे के साथ लगी हुई लकड़ी की सुलाख । प्रयोग—तिनि भित अगोला कने बन्द करी ती । उस ने दरवाजा लकड़ी की सुलाख लगा कर बन्द कर दिया ।
अछना	क्रि०	(कां)	होना । प्रयोग—शराब पिये बगैर दिल साफ्फीं अछता ।
अज	अ०	(कां)	आज (कुल्लूकी औज)
अजनों	अ०	(कां)	अब तक
अजकनी	अ०	(गा, का)	केवल आजकी (कुल्लूकी औजकणी) प्रयोग—अजकनी राती रहो मेरे मित्रा । मित्र अधिक नहीं तो आज की रात रहो ।
अजां	अ०		अभी तक । प्रयोग—अजें मैं रोटी नीं खादी ओ । अभी तक मैं ने रोटी नहीं खाई है ।
अजांताई (अजेंताई)	अ०	(कां)	अभी तक ।
अठोरू	सं०	(कां)	ऐसा मुजारा जो जमीन मालिक से पैदावार का आठवां हिस्सा स्वयं रखता हो ।
अड़िजंग	वि०	(कां)	जिद्दी आदमी, कीनाखोर । शत्रुता की थाह रखने वाला आदमी ।
अड़ीखोर	वि०	(कां)	जिद्दी ।
अड़ेआ	सम्बोधन	(कां)	सम्बोधन, अनी के अर्थ में प्रयुक्त (स्त्री० अड़िये)
अड़ौती	वि०	(कां)	बाधा, रुकावट, अड़ने का भाव ।
अट्टल	पु०		विचार, तर्क ।
अदेआ	अ०	(कां)	ऐसा, इस तरह का । प्रयोग—मिजो अदे, आ कम खरा नी लगदा । मुझे ऐसा काम अच्छा नहीं लगता ।
अधसाली	सं०	(कां)	काश्तकार और गैर काश्तकार में जमीन की काश्त के लिए की गई हिस्सों की बांट ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
अधीतू	अ०	(कां)	एक प्रकार का मौरूसी जो पैदावार का आधा हिस्सा मालिक को देता है।
अधेक	अ० पु०	(कां)	एक प्रकार का मौरूसी मुजारा।
अधेमां	वि०	(कां)	आधा बीघा, किसी भी जमीन के टुकड़े का आधा हिस्सा।
अनन्द	अ०	(कां)	आनन्द।
अनी	सं०	(कां)	धर्मपत्नी के लिए सम्बोधन।
अपूं	अ०	(कां)	अपने आप, स्वयं।
अपणा अपणा कमल् कर्नं अपणा अपणा समस्		(कां)	अपना अपना बिस्तर और अपना अपना भोजन।
अपन	अ०	(कां)	परन्तु।
अपर	अ०	(कां)	परन्तु।
अपरान्त	अ०	(कां)	उपरान्त।
अपेणा	क्रि०	(कां)	विवाह के समय अथवा उस समय जब कोई व्यक्ति बहुत दिनों के बाद घर आए, सिर पर न्योछावर करके एक दो पैसे नाई अथवा किसी अन्य कमीन को देने की क्रिया।
अयाणा	पु०	(कां)	अनजान, बच्चा।
अजरन	पु०	(कां)	वृक्ष विशेष।
अरल	स्त्री०	(कां)	१–कूल्ह में से निकाल कर जमा किए गए पानी की 'आल'। २–आल में से निकाली गई छोटी कूल्ह। ३–घटिया किस्म की सिंचित भूमि।
अरग्ह (अर्ह)	पु०	(कां)	निहाई, लोहे का एक बड़ा ब्लाक जिस पर रख कर लोहार बन रही चीज पर चोट करता है।
अरा	सं०	(कां)	मित्र के लिए सम्बोधन। हिन्दी 'यार'
अरनी	क्रि०	(कां)	सिंचाई की कमी से अनाज के सिट्टों का मुरझा जाना।
अरलर	पु०	(कां)	कंटीली झाड़ियों से बना हुआ एक 'गेट' विशेष।
अरोकड़	वि०	(कां)	नकद भुगतान।
अलबेला	वि०	(कां)	घूमने फिरने का शौकीन।
अलकी	वि०	(कां)	लापरवाह।
अलगरजी	वि०	(कां)	स्वार्थी।
अलताण	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
अलाः	पु०	(कां)	पलास का वृक्ष।
अलिया	पु०	(कां)	कानियार, एक वृक्ष विशेष। पशुओं की 'डिम' नाम बीमारी में इसकी फलियों का काढ़ा बना कर देते हैं।
अली	स्त्री०	(कां)	कन्यार, एक वृक्ष विशेष।
अल्ली	वि०	(कां)	आधी सूखी, आधी हरी।
अवो	सं०		अरे, सम्बोधन।
अवोगौण	पु०	(कां)	आवागमन।
असकाल्, असकल्	पु०	(कां)	चावल के आटे की रोटी।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
असगाह	पु०	(कां)	लकड़ी की सीढ़ी । (कुल्लुवी संगाह) ।
असां	सर्वनाम	(कां)	हम, उत्तम पुरुष बहुवचन । कर्ता और करण कारक में ।
असांरा	सर्वनाम	(कां)	हमारा ।
असकूला	पु०	(कां)	देखें 'असकालू' ।
असू	पु०	(कां)	असूज मास, वि० सं० का सातवां मास ।
अहर	पु०	(कां)	पानी की कूल्ह ।
अहां	पु०	(कां)	देखें (असां)
अहांरा	सर्व०	(कां)	हमारा, 'असांरा'
			आ
आकंठी	स्त्री०	(कां)	अंगूठी ।
आंजा	स्त्री०	(कु)	आंतड़ी प्रयोग—कराहड़ी साथा तेंईए रीछे री आंजा कोढ़ी । कुल्हाड़े से उस ने रीछ की अंतड़ियां निकाल दीं ।
आऊ	संबोधन	(कां)	हां ।
आर्क	स्त्री०	(कां)	कोहनी ।
आखण	पु०	(कां)	कांटेदार झाड़ी जिस पर आखा नामक खाद्य फल लगता है ।
आखा	पु०	(कां)	आखण पौधे का फल विशेष जो गर्मियों में लगता है और गर्म तासीर का होता है ।
आगमना	क्रि०	(गा)	आना ।
आछा	स्त्री०	(कां)	रसभरी का रस ।
आठवां बारहवां होना	क्रि० (मुहावरा)	(कां)	शत्रुता होना ।
आडी	स्त्री०	(कां)	घराट की टोकरी जिसमें दाने डाले जाते हैं । २—दोस्ती, मित्रता, सजातीयता, आर्य वंश का सहगामी ।
आणना	क्रि०	(कु, कां)	लाना । प्रयोग—की आणू । क्या लाया ।
आथरी	स्त्री०	(कां)	कुम्हार का एक उपकरण जिससे वह बरतन बनाते समय बरतन को ठापने का कार्य करता है ।
आद	स्त्री०	(कां)	याद, स्मरण । प्रयोग—मिजो याद भुल्ली गई । मुझे याद भूल गई ।
आद्धा	वि०	(कां)	आधा ।
आधे	पु०	(कां)	रात का अन्धकार ।
आपदा	स्त्री०	(कां)	आफत, आपत्ति ।
आपना	सं०	(कां)	गेहूं के आटे से अथवा गोलू मिट्टी से बनाया गया एक गोलाकार निशान जो देवी देवता की यात्रा पर जा रही स्त्रियां रास्ते में पत्थर आदि पर लगाती हैं ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
आमल	सं०	(कां)	आमले का वृक्ष ।
आमला	क्रि०	(कां)	आना ।
आरन	सं०	(कां)	देसी अनार का पौधा ।
आरसा	पु०	(कु)	दर्पण, शीशा ।
			प्रयोग—आरसा न आपणा मूंह भाल ।
			शीशे में अपना मुंह देख ।
आरसी	स्त्री०	(कां)	चांदी का बना हुआ एक आभूषण जिस में शीशा जड़ा होता है इसे विवाह के समय लड़कियां कलाई में पहनती हैं ।
आस	पु०	(कां)	हल का डेढ़ हाथ लम्बा ऊपर वाला हिस्सा ।
आल	पु०	(कां)	एक प्रकार की लकड़ी ।
आल	स्त्री०	(कां)	किसी खड्ड में साथ वाले खेतों की सिंचाई के लिए बनाया गया पानी का तालाब जिसमें खड्ड के बहते पानी को रोक कर सिंचाई के लिए इकट्ठा किया जाता है ।
आला, आ:ला	सं०	(कां)	मकान की दीवार में बनाई गई छोटी सी अलमारी ।
आलहणा	पु०	(कां)	घौंसला ।
आ:ण	सं०	(कां)	ओले ।
आहण	स्त्री०	(कां)	एक बूटी विशेष, बिच्छू बूटी ।
			इ
इंगरना	क्रि०	(कां)	क्रुद्ध होकर लड़ाई के लिए तैयार होना ।
इंडरा	सं०	(कां)	मटर के आटे की रोटी ।
इंदा	सर्व०	(गा)	मेरा, हमारा ।
			प्रयोग—इंदा बालक दुबहला हा ।
			हमारा बालक दुर्बल है ।
इयरा	सर्व०	(गा)	इनका ।
			प्रयोग—इंयरा बैल्द दूबला हा ।
			इनका बैल दुर्बल है ।
इंची/इणाची	अ०	(कां)	इस रास्ते से, इधर से ।
इखड़	सं०	(कां)	गन्ने की एक किस्म ।
इज	स्त्री०	(सि०)	मां ।
इजां	वि०	(गा)	इस तरह ।
इजे	स्त्री०	(गा)	मां, मां के लिए संबोधन ।
इटसिट	सं०	(कां)	एक जड़ी बूटी, जिसे वैद्य में पुनर्वा कहते हैं, यह कई दवाइयों में काम आती है । कान में दर्द हो तो इसका पानी डालने से आराम आ जाता है ।
इतखा	अ०	(कां)	इस ओर, इधर ।
इबका	वि०	(कां)	अबका, इस वर्ष का ।
इब्बा	अ०	(कां)	अब ।
इबे	अ०	(कां)	इस समय ।
इयाणी	स्त्री०	(कां)	अनजान, अज्ञात यौवना (अयाणा का स्त्री-लिंग)
इरखा	वि०	(कां)	शर्म, पंजाबी 'अणख' ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
इल्लूकण (इल्ल)	स्त्री०	(कु)	चील पक्षी (कां. इल्ल)।
इक	सं०	(कां)	पोस्त के खेत में अधिक बर्फबारी के कारण हुआ नुकसान।
ईसैं	अ०	(कु)	इस तरफ, इधर।
			ई
ईणा	क्रि०	(गाद्दी)	आना
			उ
उंजल	सं०	(कां)	अंजलि का आधा भाग, उतनी वस्तु जो अंजलि के आधे भाग में आ सकती है।
उंढ़ाड़	सं०	(कां)	पड़ोस।
उंधे	वि०	(कां)	नीचे, उल्टे यथा—उंधे मुहू उल्टे मुख।
उंबर	सं०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिस पर चीकू की जाति के फल लगते हैं।
उंबा	पु०	(कां)	भुना हुआ अन्न।
उआंस	स्त्री०	(कां)	अमावस।
उआन	पु०	(कां)	घर के मकान का बाहर वाला कमरा, "ओसान"।
उआर	वि०	(कु)	इस तरफ।
उआर पार	वि०	(कु, कां)	इस ओर पर और उस ओर पर (आर-पार)।
उकलना	क्रि०	(कु)	चढ़ना।
उक्वाल	पु०	(कु, कां)	१—ओखली। २—मूर्ख आदमी।
उखणना	क्रि०	(कां)	खोदना।
उगती	स्त्री०	(कां)	बधाई।
उगण	पु०	(कां)	हल का एक पुर्जा विशेष।
उघाड़ना	क्रि०	(कां)	नंगा करना।
उघाड़ना	वि०	(कां)	नंगा।
उघसुध	पु०	(कां)	पता ठिकाना।
उजड़ू	स्त्री०	(कां, कु)	एक प्रकार का पौधा, एक पंछी विशेष।
उजार	पु०	(कां)	धीरे-धीरे कुतरने वाला औजार, आरी।
उचाना	क्रि०	(कां)	उठाना।
उचेड़ना	क्रि०	(कां)	वृक्ष की छाल अथवा पशु की खाल उधेड़ना।
उचैणा	क्रि०	(कां)	उचाट होना।
उच्चा गिट्टी	सं०	(कां)	पत्थर की पांच गोलमटोल कंकरों (गीटियों) से खेली जाने वाली खेल विशेष।
उच्छे	वि०	(कु)	ऊपर।
उटकंडा	सं०	(कां)	एक जड़ी बूटी विशेष।
उटकना	क्रि०	(कु, कां)	उछलना, कूदना।
उटकणी	स्त्री०	(कां)	'काहरण' का एक उपकरण विशेष जो ताने के धागों को ऊपर खींचता है ताकि काहरण की खट्टल आसानी से चल सके।
उड़	पु०	(कां)	बुर्ज के रूप में खड़ा करके गाड़ा हुआ पत्थर जो दो खेतों के बीच सीमा का काम देता है।
उड़ना	क्रि०	(कां)	१—अस्तगत सूर्य, सूर्य अस्त होना। २—पश्चिम दिशा।
उंधमुखा	पु०	(कां)	घूमर।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
उतां:	अ०	(कां)	उस तरफ ।
उता:ड़	स्त्री०	(कां)	उल्टी, कै ।
उल्कड़	पु०	(कां)	जमीन का निश्चत मालिया जिसका कुछ हिस्सा नक़दी में दिया जाता है और कुछ हिस्सा वस्तु रूपेण दिया जाता है ।
उभल	पु०	(कां)	उतनी वस्तु जितनी एक अंजलि में आ सकती है "उंजल" ।
उना:जो	सर्व०	(कां)	उनको ।
उपनैणा	सं०	(कां)	यज्ञोपवीत पहनने के समय का संस्कार । उपनयन संस्कार ।
उब्बल पेटे	अ०	(कां)	अचानक, सहज रूप में ।
उरां:	अ०	(कां)	इस तरफ ।
उरली	स्त्री०	(कां)	मछलियां पकड़ने की एक टोकरी विशेष ।
उरनू	पु०	(कां)	कटी हुई धान की फसल की एक मन की गड्डी ।
उरी	स्त्री०	(कां)	धान की नर्सरी पौधें (कुल्हकी ओरी) ।
उल छेकना	क्रि०	(कां)	खेतों में सिचाई करने से पहले चूहों के बिलों को बन्द करना ।
उवी	स्त्री०	(कां)	गुफा, कंदरा ।
उल्ह	पु०	(कु, कां)	गाय-भैंस के थनों का ऊपर वाला हिस्सा ।
उसजो	सर्व०	(कां)	उसको ।
उसणा	क्रि०	(कां)	चढ़ाई उतरना ।
उसा:ल	पु०	(कां)	उतराई, सन्तान, हक़दार, उत्तराधिकारी ।
उ ना	सर्व०	(कां)	उसको ।

ऊ

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ऊवण	स्त्री०	(कु)	मकान की दूसरी मंजिल ।
ऊजड	वि०	(कां)	बंजर (जमीन) ।
[illegible]	पु०	(कां)	एक बूटी विशेष ।
ऊन	वि०	(कां)	मूर्ख ।
ऊथड़ा	पु०	(कां)	सूअर ।
ऊतमुला	पु०	(कां)	सूअर ।
ऊर लगाना	क्रि०	(कां)	धानों की नर्सरी वाटिका से उखाड़ कर धान लगाने की क्रिया ।
ऊल्ली	स्त्री०	(कां)	हवा और नमी के कारण बरसात में किसी वस्तु पर चढ़ने वाली झिल्ली ।
ऊलू	पु०	(कु, कां)	पक्षी विशेष ।
ऊहर	सं०	(कां)	धानों की ऊरी नर्सरी वाटिका में धानों के नन्हें पौधे जो वहां से उखाड़ कर अन्यत्र लगाए जाते हैं ।

ए

शब्द	व्याकरण		अर्थ
एंकर	पु०	(कां)	जमीन का उभरा हुआ हिस्सा ।
एंकलू	पु०	(कां)	चावल के आटे के पकौड़े जो पत्थर के तवे पर बनाए जाते हैं ।
एंओला	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष ।
एंआ	अ०	(कु)	इस तरह, ऐसा ।
एअर	पु०	(कां)	एक प्रकार की खड्डी ।
एकाड़	पु०	(कां)	एक प्रकार का गन्ना ।
एकल	पु०	(कां)	अकेला रहने वाला सूअर ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
एर्ब्बां	स्त्री	(कां) लज्जा ।
एजना	क्रि०	(कु) आना ।
एढक	स्त्री	(कां) कोहनी ।
एणा	क्रि०	(कु) आना, "एजना" ।
		प्रयोग—मौरा न औ कैबे एणा,
		घर से तू ने कब आना ।
एतकी	अ०	(कां) इस बार, इस समय, अब ।
एतकरू	पु०	(कां) ऐसे मुजारे जो सामूहिक उपज के आधार पर इकमुश्त लगान देते हैं । (उटकरू)
एब	अ०	(कां) अब, एबें (कु) ।
एबर	अ०	(कु) अब ।
एरा	अ०	(गादी) इस रास्ते में, इधर से ।
		प्रयोग—एरा गाहणा ।
		इधर से जाना ।
एलू	पु०	(कु) एक प्रकार के जौ जो कुल्लू में लाहुल से लाकर बीजे जाते हैं ।
एलोआं	पु०	(कां) एक छोटा पौधा जिस के पत्तों को पशु नहीं खाते, परन्तु फलियों का आचार बनाया जाता है जो खून को साफ करता है ।
एसू	अ०	(कु) इस वर्ष ।
एहड़ा	अ०	(कां) इस प्रकार का (मण्डयाली शब्द जो हमीरपुर तहसील में बोला जाता है) ।
		प्रयोग—एहड़ा कम किहां करी रा तैं ।
		इस प्रकार का काम कैसे किया तू ने ।

ओ

शब्द	व्याकरण	अर्थ
ओंगला	पु०	(कां) फसल की जुताई के समय हल और बैलों के मालिक को दिया जाने वाला फसल का हिस्सा ।
ओअस	स्त्री	(कां) अमावस 'उआस' ।
ओआग	पु०	(गादी) कांगड़ी 'उग्ग' ।
ओआड़ना	क्रि०	(कां) अप्राप्य वस्तु को प्राप्त करने का कहीं से प्रबन्ध करना ।
ओआन	पु०	(कां) घर का बड़ा कमरा, "उआन" ।
ओआर	अ०	(कु., कां) इस ओर 'उआर' ।
ओई	स्त्री०	(कां) एक वृक्ष विशेष जिस की लकड़ी इमारती कामों में काम आती है, इस लकड़ी के शहतीर, कांजें और गधा बहुत अच्छे समझे जाते हैं ।
ओग	पु०	(कु) कांगड़ी "उग्ग" ।
ओगल	पु०	(कां) गुलाबी रंग के फूलों वाली गेहूं ।
ओधाड़ करना	क्रि०	(कां) ऊंजर ज़मीन पर पहली बार हल चलाना ।
ओछड़ी	स्त्री०	(कां) नर्सरी क्यारी जिस में धानों की पनीरी बोई जाती है और जहां से उखाड़ कर उसे धान के खेतों में लगाया जाता है ।
ओछपाक	वि०	(कां) निकृष्ट व्यक्ति, कमीना आदमी ।
ओट	स्त्री	(कां) आंखों से ओझल स्थान ।
ओंदड़	पु०	(कां) ऐसी ज़मीन जहां वर्षा के पानी से ही उपज होती है ।
ओंडी	स्त्री०	(गादी) भेड़ बकरियों को रात के समय इकट्ठा रखने के लिए बनाया गया बाड़ा ।
ओकण	पु०	(कां) पहनने के कपड़े ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ओढणी	स्त्री०	(कां)	स्त्रियों के ओढ़ने का दोपट्टा ।
ओचला	वि०	(कां)	ऊंचा स्थान (कुलूकी उचड़ा) ।
ओन्हेरना	क्रि०	(कां)	उण्डेलना, एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना । प्रयोग—धानां जो कोठड़ू च ओन्हेरी देआ । धान को कोठड़ी (लकड़ी का सन्दूक) में उण्डेल दे ।
ओपरा	वि०	(कां)	पराया, अन्य, दूसरे गांव से आया हुआ व्यक्ति ।
		(कु)	भूत-प्रेत ।
ओपात	पु०	(कां)	फसल की उपज का कुछ हिस्सा, जो मुजारे को दिया जाता है ।
ओबां	पु०	(कां)	'टौर' के पत्तों का छाता जो बरसात में सामान्यत: गडरियों और किसानों द्वारा ओढ़ा जाता है ।
ओबरा	पु०	(कां)	बड़ा कमरा ।
ओबरी	स्त्री०	(कां)	पार्श्व कमरा, जिसका दरवाजा बड़े कमरे में खुलता है, साधारणत: यह कमरा घर की बहुमूल्य वस्तुओं को संभाल कर रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और इस में कोई खिड़की दिया नहीं होती ।
ओरटा पोरटा	अ०	(कां)	जहां तहां (कुलूकी ओरिए-पोरिए) ।
ओरू	स०	(कां)	जमींदार द्वारा कारदार से लिया जाने वाला टैक्स ।
ओलड़ू	पु०	(कां)	गाय-भैंस, बकरी आदि के स्तन ।
ओलना	क्रि०	(कां)	खाने से पहले पकी हुई दाल और भात को मिलाना ।
ओलै	सं०	(कां)	विस्मय बोधक शब्द ।
ओवना	क्रि०	(कु, कां)	उतरना, सन्तान ।

औ

शब्द	व्याकरण		अर्थ
औड़ना	क्रि०	(कां)	स्फुरण में कोई विचार सूझना ।
औतर	स्त्री०	(कां)	औरत, बांझ स्त्री ।
औधा	वि०	(कु)	आधा ।
औदला	पु०	(कां)	१—लकड़ी का ऐसा टुकड़ा जिस में से मकान की दो कड़ियां निकल सकें । २—मूर्ख ।
औकत	स्त्री०	(कां)	औषध, दवाई ।
औखी	स्त्री०	(कां)	विपत्ति, कष्ट, मुसीबत, कठिनता ।
औलें	अ०	(कु)	यहां ।
औग	स्त्री०	(कु)	आग ।
औग छिपणा	क्रि०	(कु)	आग तापना ।
औच्छी	स्त्री०	(कु, कां)	आंख ।
औज	अ०	(कु)	आज ।
औरी	स्त्री०	(कां)	राई ।
औरुई	स्त्री०	(कां)	राजाओं के काल में जमीन के मालिक की रसीदें लिखने के निमित्त लिया जाने वाला टैक्स ।
औला	पुं०	(कां)	एक बाजू के फैलाव में जितनी चीज आ सकती हो, उतनी चीज ढेर । प्रयोग—मैंइक खिल्लां रा औला था रखिया, जि जो कोई लई गेआ । मैंने कांटों की झाड़ियों का ढेर रखा था जिसे कोई ले गया ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
औशटना	क्रि०	(कां)	विकृत होना, खराब होना ।
			प्रयोग—रातीं मेरी निंद औशटो गई, ।
			रात को मेरी नींद खराब हो गई ।

क

शब्द	व्याकरण		अर्थ
कंखा	स्त्री०	(कां)	आकांक्षा, अभिलाषा ।
कंगनी-काऊणी	स्त्री०	(कां)	बाजरे की जाति का एक अनाज विशेष ।
कंगणू, कंकणू, कांगणू	पु०	(कां,कु)	बच्चों और स्त्रियों की कलाई में पहनाए जाने वाले चांदी के आभूषण ।
कंगर	वि०	(कां)	पथरीली (ज़मीन) ।
कंगिमांरी	स्त्री०	(कां)	केसर डालने का लकड़ी या मिट्टी का बरतन ।
कंघी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की छोटी मछली जो आमोद को डंक भी मारती है ।
कंची	स्त्री०	(कां)	कमर का आभूषण जिसे साधारणतया स्त्रियां पहनती हैं । "मेखला"
कजम्	पु०	(कां)	काजल ।
कूंट	स्त्री०	(कां)	दिशा ।
कंठेला	पु०	(कां)	खेतों के मिट्टी के ढेले तोड़ने का उपकरण विशेष ।
कण्डल	पु०	(कां)	तीतर पक्षी ।
कण्डली	स्त्री०	(कां)	सरसों का तेल ।
कंडी, कंढा	वि०	(कां)	पर्वत के दामन की भूमि 'कढा'
कंडू	पु०	(कां)	ऊन रखने की एक टोकरी विशेष, (कु) कोढ़ ।
कण्डू	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।
कंड़ेहा	पु०	(कां)	लकड़ी का एक द्विशाखित डंडा जो कंटीली कटी हुई सूखी झाड़ियों को इकट्ठा करके एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए उठाने में काम आता है ।
कन्दल्	पु०	(गा)	कन्त, पति ।
			प्रयोग—तिसरा कंदल् परदेस ऐ ।
			उस का पति घर से दूर बाहर गया है ।
कं	अ०	(कां)	किंवा, अथवा ।
कउसल	वि०	(कां)	होशियार, दक्ष, कुशल ।
ककड़	पु०	(कां)	दाल से बने हुए छोटे भल्ले ।
ककड़े	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
कक्कड़	पु०	(कां)	बकरी और हिरण के सदृश एक जंगली पशु विशेष जो पहाड़ों में पाया जाता है ।
ककाकड़ोखी	स्त्री०	(कां)	कक्कड़ हिरण की चमड़ी ।
कांकियाड़्	वि०	(कां)	स्त्रियों से अधिक मिलने जुलने वाला व्यक्ति ।
ककोड़ा	पु०	(कां)	कांटों वाले फल विशेष ।
कखयाड़	पु०	(कां)	चोकर, अनाज के छिलके आदि जो दूध देने वाली गाय भैंसों को दूध बढ़ाने के लिए दिए जाते हैं ।
कचक	पु०	(कां)	१—चलेरू के पकौड़े ।
			२—आलू आदि खाद्य पदार्थों के छोटे टुकड़े ।
कचालू	पु०	(कां)	आलू की जाति का एक खाद्य पदार्थ, अर्बी ।
कचेड़ा	पु०	(कु,कां)	खमीर ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
कच्छ	पु०	(कां)	कक्ष, साथ, बगल, छाती के दोनों किनारों का भाग, पार्श्व।
			प्रयोग—मिजो बी लई चल कच्छ बो।
			मुझे भी अपने साथ ले चलो।
कजरौटी	स्त्री०	(कां)	काजल रखने की पोटली।
कजाई	वि०	(कां)	झगड़ा पैदा करने वाला।
कजिया	पु०	(कु,कां)	झगड़ा, टंटा।
कटर	पु०	(कां)	दोपहर का समय।
कटारधार	स्त्री०	(कां)	हाजी पुर-रोपड़ वाली शिवालिक की धार (पर्वत माला) जो अमृतसर-सरहिन्द के मैदानों को त्रिगोटी त्रिगर्त इलाके से जुदा करती है।
कटियाई	स्त्री०	(कां)	छः छटांक भर अनाज का लकड़ी या मिट्टी का बरतन।
कटोई जाणा	क्रि०	(कां)	कट जाना।
कट्ठमन	पु०	(कां)	जामन की जाति का एक वृक्ष विशेष।
कठाड़ी	स्त्री०	(कां)	धानों की एक घटिया किस्म।
कठेरा	पु०	(कां)	कच्चे चमड़े को पक्का करने का अड्डा।
कठेला	पु०	(कां)	खेतों में मिट्टी के ढेलों को तोड़ने वाला एक उपकरण।
कठेर	पु०	(कां)	बेरी की जाति का एक वृक्ष विशेष।
कठेरल	स्त्री०	(कां)	'कठेर' वृक्ष की लाख।
कठोहल	स्त्री०	(कु)	तरतीब में रखा गया लकड़ियों का ढेर।
कड़काना	क्रि०	(कां)	अनाज को भूसे से अलगाना।
कड़ी	स्त्री०	(कां)	मकान की छत बनाने के लिए शहतीरों के दर्मियान रखा जाने वाला डंडा।
			(पंजाबी—कड़ी, बाला)
कड़ियां	स्त्री०	(कां)	पांवों के टखनों में पहने जाने वाले चांदी के बने हुए आभूषण।
कड़ुआ	पु०	(कां)	कानों का एक आभूषण विशेष, कड़वा।
कड़ौंक	पु०	(कां)	कमीन जाति का ग्राम-चौकीदार।
कणक	स्त्री०	(कु०, कां)	गेहूं।
कणकी	स्त्री०	(कां)	गेहूं का भूसा।
कणक कमांदी संबंधी मुहावरा झांगो डांग कपाह रजाई की बुक्कल मारी के छल्लियों निचों जा		(कां)	गेहूं और गन्ने की खेती घनी होनी चाहिए तथा कपास और मकई की विरल होनी चाहिए।
कणेर	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, कणियार (पं० 'कनेर')।
कतीरा	पु०	(कु)	चिमटा।
		(कां)	नशास्ता।
कदाली	स्त्री.	(कां)	नलाई करने का एक औजार।
कन	पु०	(कां)	खड़ी फसल के अनाज का निर्धारण।
कनचौड़ी	स्त्री०	(कु)	कान का निचला हिस्सा।
			कान की पिपली।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कनवालू	पु०	(कां, कु) कान का एक आभूषण विशेष ।
कन्हू	पु०	(कां) बैल का कंधा (कुल्लू की—कोहूधा) ।
कन्ना	पु०	(कां) छोटा लड़का ।
कन्नी	स्त्री०	(कां) भेड़ों का झुंड ।
कन्नैं	परसर्ग	(कां) के साथ, के पास ।
		प्रयोग—मेरे कन्नैं चला ।
		मेरे साथ चलिए ।
कनार	पु०	(कां) अमलतास का वृक्ष ।
कनाली	स्त्री०	(कां) बड़े साइज का मिट्टी का बरतन जो कड़ाही जैसा होता है ।
कनियार	पु०	(कां) वृक्ष विशेष ।
कनियार फूली	स्त्री०	(कां) कनयार वृक्ष की कोंपल ।
कनियावड़ी	स्त्री०	(कां) बांस की बनी हुई छोटी रंगदार टोकरी ।
कनेड़ा	पु०	(कां) करघा (देसी खड्डी) के ताने में मांड डालने के लिए एक उपकरण विशेष ।
कनेरू	पु०	(कां) मिट्टी का छोटा बरतन, छोटा कूजा ।
कपढ़	वि०	(कां) अनपढ़ व्यक्ति ।
कप्पणा	क्रि०	(कां) बनाना, रचना करना, निर्माण करना ।
कप्फल	पु०	(कां) जामुन की जाति का एक वृक्ष जिसके फल "कट्ठम्बल" जैसे होते हैं ।
कपासी	स्त्री०	(कां) काले पंखों वाली चील (पक्षी) ।
कपु	स्त्री०	(कां) कोंपल ।
कफी	वि०	(कां) ऐसी चीज जिसे एकदम आग लग जाती है यथा सूखी लकड़ी, सूखा घास-तृण ।
कबेला	अ०	(कां) अन्धेरा, बे-वक्त, कुबेला ।
कमणा	क्रि०	(कां) कांपना, थरथराना । जाड़े अथवा भय के कारण शरीर के अंगों–उपांगों का हिलना ।
		प्रयोग—रीछ जो देखीके मुन्नू कम्पणा लगी पिया ।
		रीछ को देख के बालक कांपने लग पड़ा ।
कम्मणी	स्त्री०	(का) कांपने का भाव, कंपकपी ।
		प्रयोग—ठंडे पाणियैं न्हाई करि कम्मणि छुटि पई ।
		ठंडे पानी से नहा कर कंपकपी लग गई ।
कामल	पु०	(कां) ऊनी चादर ।
कमलोआ	पु०	(कां) बगला, कपोत जाति का एक पक्षी विशेष ।
कमार्गी, कुमार्गी	पु०	(कां) दुराचारी, बुरे रास्ते पर चलने वाला ।
कमाना-बनाना	क्रि०	(कां) कोई रचनात्मक कार्य करना, काज संवारना।
कमीला	पु०	(कां) कामल वृक्ष के बीजों को कूट कर बनाई हुई एक औषधि विशेष जो पशुओं के पेट के कीड़ों को साफ करती है ।
कमेरना	क्रि०	(कां) काम करना, 'कमोणा', कमाना ।
कमोणा	क्रि०	(कां) काम का किया जाना, काम करना ।
		प्रयोग—मैंते नीं कमोंदा ।
		मुझ से नहीं किया जाता ।
करंडी	स्त्री०	(कां) पत्थर की कूंडी जिस में बटाई आदि रखते हैं ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
करौंदा	पु०	(कां)	गहंना, एक कंटीली झाड़ी, जिस पर काले रंग के छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं ।
कर	पु०	(कां)	भूमि का लगान ।
कर्कैरा	पु०	(कां)	एक बूटी विशेष जिसका फूल दंधियार जहर (दांत की दर्द) को दूर करता है ।
कर्पा	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक उपकरण विशेष ।
कर्जनी	स्त्री	(कां)	घरेलू चीजों को रखने की बांस की एक छोटी सी टोकरी ।
करड़ा	वि०	(कां)	कड़ा, कठोर, सख्त ।
			प्रयोग--सै माहृणू बड़ा करड़ा ए ।
			वह आदमी बड़ा सख्त है ।
करतू	पु०	(कां)	लगान का वह भाग जो राजा के कर्मचारी लिया करते थे ।
करजी	स्त्री०	(कां)	देखो 'कर्जनी' ।
करनूं	पु०	(कां)	एक प्रकार की टोकरी जिस के साथ बांस का एक लम्बा डंडा बांध कर आम वृक्ष से आम तोड़े जाते हैं ।
कर्मक	पु०	(कां)	सरींह की जाति का एक वृक्ष विशेष ।
करबानी	स्त्री०	(कां)	काश्त की गई भूमि ।
करा	पु०	(कां)	घास अथवा फसल आदि काटने के हँसुआ में कुन्द होने पर पड़ने वाला कटाव ।
करा था	क्रि०	(कां)	कर रहा ।
			प्रयोग--जिस वेले मैं तित्थु गिआ, सै इस कम्मे कराथा था ।
			जब मैं वहां गया, तो वह यह काम कर रहा था ।
कराना	क्रि०	(कां)	कर रहा हूं ।
			प्रयोग—मैं सैं कम्म करा ना ।
			मैं वह काम कर रहा हूं ।
करास	पु०	(कां)	कचनार का वृक्ष ।
करासा	स्त्री०	(कां)	शहद की मक्खियों का छाता ।
कराहड़ू	पु०	(कां, कु)	कुल्हाड़ी ।
करि फिरि	वि०		उसके पश्चात् । यह पद एक पादपूरक की तरह प्रयुक्त किया जाता है ।
करी	अ०	(गा)	किधर ।
करीड़ी	स्त्री०	(कां)	दस बारह साल के लड़कों की एक खेल ।
करूह (करूआ)	पु०	(कां)	दो मकानों की सांझी छत का मिलान ।
करौत	पु०	(कां)	देखो 'कराथ' ।
करोग बरोग	पु०	(कां)	पशुओं के खुर-मुंह की बीमारी ।
करोह्	क्रि०	(कां)	गाहन, अनाज को भूसे से अलगाने की प्रक्रिया ।
करौशा	पु०	(कां)	छत की कांत ।
करोहीं	स्त्री०	(कां)	बकरे का मांस जो विवाह के उत्सव पर कोठी के नेगी को भेंट के रूप में दिया जाता था ।
कत्ना	क्रि०	(कां)	काटना ।
कलह्	पु०	(कां)	क्लेश, साधारण झगड़ा ।
कलत्तन	स्त्री०	(कां)	स्त्री, भार्या (सं०कलत्र) ।
कलबेला	पु०	(कां)	सूर्यास्त और अंधेरा छाने के मध्य का थोड़ा सा समय, सन्ध्या, 'कुवेला' ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
कल्लड़	वि०	(कां)	ऐसी ज़मीन जिसमें रेत और कंकर मिला हुआ हो और जहां खेती की उपज कम हो। (पं० कल्लर)
कलार	स्त्री०	(कु)	दोपहर ।
कलारी (कलार)	स्त्री०	(कु)	दोपहर का खाना ।
कलास (कइलास)	पु०	(कां)	कैलाश पर्वत ।
कली	स्त्री०	(कु, कां)	पीतल का हुक्का विशेष ।
कलीदी	स्त्री०	(कां)	एक पक्षी विशेष ।
कलीरा	पु०	(कां)	१–एक प्रकार की जड़ी बूटी जिसके बीज चूर्ण में प्रयुक्त होते हैं। २–लाल रंग के धागे से आबद्ध कौड़ियों और नारियल की ठूठियों से युक्त एक हार विशेष जो विवाहोत्सव में कन्या की कलाइयों में पहनाया जाता है (पं० कलीरा) ।
कलूणा	पु०	(कां)	घटिया प्रकार के धान विशेष जो ऐसी ज़मीन में बोए जाते हैं जिस में सिंचाई न होती हो ।
कलो	पु०	(कां)	एक प्रकार का अनाज ।
कलो (कलाऊ)	पु०	(कां)	आदत, स्वभाव ।
कलौंटी	पु०	(कां)	काला रीछ ।
कस	पु०	(कां)	धानों की सूखी घास का विन्यास ।
कसमल	पु०	(कां)	एक जड़ी बूटी विशेष ।
कसमलू	पु०	(कां)	रसौंत का पौधा ।
कसरी	वि०	(कां)	बीमार, रोगी ।
कसलाना	क्रि०	(कां)	अनाज जमा करना ।
कसाकड़ा	पु०	(कां)	खेतों में वर्षा के कारण चिकनी मिट्टी का बना हुआ ढेला ।
कसार	पु०	(कां)	घी में भुना हुआ सूखा आटा जो पूर्णमाशी के दिन सत्य नारायण के व्रत के उत्सव में प्रसाद के रूप में बांटा जाता है ।
कसराल	वि०	(कां)	नर्म, सुकुमार ।
कसरालू पत्थर	पु०	(कां)	रेतीला पत्थर ।
कसी	पु०	(कां)	एक अंजुलि भर अनाज ।
कसुम्बा	पु०	(कां)	एक प्रकार का फूल विशेष ।
कहूव	पु०	(कां)	बिना दूध के चाय ।
कशाम्बल	स्त्री०	(कु)	एक कांटेदार जंगली झाड़ी जिस पर काले रंग के छोटे छोटे खाद्य फल लगते हैं ।
काफी	अ०	(कु)	काफी, पर्याप्त ।
काफी करना	क्रि०	(कां)	बाट चढ़ा कर धागा बनाना ।
		(कु)	'काफी बनाना' ।
कांऊं	अ०	(कां)	क्यों ।
कांग	पु०	(कां)	१–एक विशेष वृक्ष । २–पथरीली ज़मीन ।
		(कु)	३–कंघी ।
कांटग	पु०	(कां)	कण्टक, कांटा ।
कांडा	पु०	(कां)	कांटा, (कु) 'कोंडा' ।
कांढा	पु०	(कां)	पहाड़ी दर्रा ।
कांत	स्त्री०	(कां)	मकान की ऊपर के छत के बांस अथवा मजबूत लकड़ी के वे डंडे जो छत के ऊपर के सलेटों अथवा टीन आदि को स्थिर रखने के लिए फिट किए जाते हैं ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कांती	स्त्री०	(कां) कांता, सुन्दर स्त्री, खूबसूरत औरत ।
कांदलू	पु०	(कां) एक मछली विशेष ।
काम्बल	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष ।
का	सर्व:	(कां) क्या ? प्रयोग—का बात ऐ ? क्या बात है ?
का	पु०	कौवा (पं०—कां) ।
काईका	पु०	(कु) एक उत्सव विशेष, यह उत्सव चार या अधिक सालों के बाद कोठी के (छः सात गांवों के समूह) के लोगों द्वारा प्रीति भोज से मनाया जाता है ।
काऊणी	स्त्री०	(कु) एक अनाज विशेष ।
काएको	अ०	(कां) किस वास्ते । प्रयोग—यां काए को आए । यहां किस वास्ते आए ।
काक	पु०	(कु,गा) चाचा, पिता का भाई ।
काका	पु०	(गा) चाचा ।
काकू	पु०	(गा) पिता–चाचा की आयु का अपने गांव का कोई व्यक्ति ।
काकड़ सिंही	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष, इसके फल खांसी की दवाई बनाने में काम आते हैं (कक्कड़ सिंगी) ।
काकड़ू	पु०	(कां) छोटी काकड़ी ।
काकल	पु०	(कां) कागज ।
काछ	पु०	(कु) छोटा जांघिया (पं० कच्छ)
काजो, कज्जो	अ०	(कां) किस वास्ते । प्रयोग—सै इत्थू काजो आया । वह यहां किस लिए आया ।
काट करना	क्रि०	(कां) प्रभाव डालना, निग्रह करना ।
काठा	वि०	(कां) कठोर, कठिन । (काठा आदमी, काठा बेर) ।
काठू	पु०	(कु) गेहूं की एक विशेष किस्म, अन्न विशेष ।
काडा	पु०	(कां) कांटा ।
काढ	स्त्री०	(कां) चरखे की पिछली पटड़ी जिस पर चरखे के पिछले खूण्टे फिट किए जाते हैं ।
कात	स्त्री०	(कु,गा) एक बड़ी कैंची जिससे भेड़ की ऊन काटी जाती है ।
कात, काती	स्त्री०	(कां,कु) इमारती लकड़ी की एक लम्बी कांत, लकड़ी की बारीक शहतीरियां ।
कामदा	पु०	(कां) विवाहोत्सव पर घर की दीवारों पर लाल अथवा गुलाबी रंग से की जाने वाली चित्रकारी ।
कामदा लिखना	क्रि०	(कां) विवाहोत्सव में कमरे की दीवारों पर लाल और गुलाबी रंग से विशेष ढंग के चित्र बनाना ।
कामलड़ी	स्त्री०	(कां) ऊनी चादर (पं० कम्बलड़ी, कम्बली)
कामाठ	पु०	(कां) धान की एक किस्म विशेष ।
कायफल	पु०	(कां) 'कट्ठमल' की जाति का एक विशेष फल जो विशेषतः पालमपुर के पूर्वी भागों में जंगली वृक्षों में लगता है ।
कायम	स्त्री०	(कु) वृक्ष विशेष ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कार	पु०	(कां) कर, टैक्स, अनाज का वह थोड़ा सा हिस्सा जो मुजारा अथवा मालिक गांव के ग्राम देवता अथवा ठाकुरद्वारे को देता है।
कार चढ़ाना	क्रि०	(कु, कां) किसी ग्रामदेवता के स्थान पर अपनी फसल का कुछ अंश अर्पित करना।
कार देना	क्रि०	(कु, कां) किसी वस्तु के चारों तरफ एक लकीर खींचना जिसके अन्दर उस वस्तु विशेष की पवित्रता सुरक्षित रह सके। (पं० कार)
काकू	पु०	(कां) पानी में उगने वाली तीन पत्तों वाली घह बूटी विशेष, जिसके पत्तों को जला कर जख्म पर लगाने से आराम आता है।
कार्थ आना	क्रि०	(कां) सख्त जरूरत के वक्त किसी वस्तु का काम आना।
काल	पु०	(कु, कां) अकाल (पं० काल), दुर्भिक्ष।
कालवेला	पु०	(कां) सूर्यास्त और रात का गहरा अन्धेरा पड़ने के मध्य का समय। "तरकाल"
काला महीना	पु०	(कु, कां) भादों का महीना जब रातें बहुत अन्धेरी होती हैं।
कालीधार	स्त्री०	(कां) कांगड़ा जनपद में एक पर्वतमाला।
कालू	पु०	(कां) एक प्रकार का पिछेतर धान जो पीछे से बोया जाता है और पीछे से ही काटा जाता है।
कासजो	अ०	(कां) किसको, किस वस्तु को। "काहुजो"
कासनी	स्त्री०	(कां) एक प्रकार की जड़ी बूटी (पं० काशनी)।
कासरा	स्त्री०	(कां) चरखे के चक्र की रस्सी।
काहुजो	सर्व०	(कां) देखो "कासजो"।
काहरण	पु०	(कां) देसी सड्डी। कर्षी।
काहु	पु०	(कां) चौकीदार अथवा किसी अन्य गांव के कमीन नौकर को फसल की कटाई के समय दिया जाने वाला हिस्सा।
काह्लू	अ०	(कां) किस समय, कब। प्रयोग—तुस्सां जलंधर काह्लू जाणा। आप जालन्धर कब जाएंगे।
काहल	पु०	(कां) जल्दी, शीघ्रता (पं० काहल) प्रयोग—काहल च कम बिगड़ी जांदा ऐ। शीघ्रता में काम बिगड़ जाता है।
किछ	अ०	(कु, कां) कुछ।
किड़ा	पु०	(कां) बांस को "दोण" की बनी हुई अस्थायी दीवार जिस पर मिट्टी थाप ली जाती है।
कितड़ी	वि०	(कां) कितनी। प्रयोग—तिसादी कितड़ी उमर है। उस की कितनी उमर है।
किताबड़	पु०	(कु, कां) छोटी किताब (पं० किताबड़ी)
किवाड़ी, कधाड़ी	वि०	(कां) किस दिन (पं० किस दिहाड़ी)
किमू	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष, इस पर गर्मियों के मौसम में छोटे छोटे स्याह फल लगते हैं।
किव्हें	वि०	(कां) किस समय, कब।
किमूं	पु०	(कां) रौंगी की किस्म की एक दाल विशेष।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
किरऊट	पु०	(कां)	तीन चार वर्षों के बाद मकान के छत से उतारा हुआ पुराना सरकड़ नामक घास।
किरकिटी	स्त्री०	(कु)	सात तारों का समूह, इन्हें स्थानीय विश्वास के अनुसार सप्त ऋषि कहते हैं।
किड़ु	पु०	(कां)	बांस के "दोण" का बना हुआ बोतलनुमा एक उपकरण जिसे छोटे पौधे पर औढ़ाया जाता है ताकि वह पशुओं आदि से सुरक्षित रहे।
किड़ू	पु०	(कां)	एक टोकरी विशेष, जिस में पीठ पर उठाने के लिए बोझा रखते हैं, विशेषकर गोबर उठाने के लिए।
किर्साण	पु०	(कां)	किसान, कृषक (किरसान)।
किलनी	स्त्री०	(कु, कां)	कृषि का एक उपकरण विशेष।
किली	स्त्री०	(कु, कां)	हल का एक उपकरण।
किलेस	पु०	(कां)	क्लेश, झगड़ा, मानसिक अशान्ति।
किल्टा	पु०	(कां)	एक टोकरी विशेष जिस में पीठ पर उठाने के लिए बोझ रखते हैं।
किर्से 'न	अ०	(कु)	किधर से।
किहिरा	वि०	(गा)	किस का। प्रयोग—किहिरा दबू। किस का लड़का।
की	प्र०	(कां)	कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह। प्रयोग—रामे की गलाई दे। राम को कह दो।
की	वि०	(कु)	क्या। प्रयोग—की लोड़ी। क्या चाहिए।
कीहां	वि०	(कु)	कैसे, किस तरह। प्रयोग—कीहां कीहां गल्ल निभी, सारा हाल सुणा। कैसे कैसे बात निपटी, सारा हाल सुनाइए।
कीहां केरि	वि०	(कु)	किस तरह से।
कीड़ा	पु०	(कु कां)	सांप, लम्बे आकार का रींग कर चलने वाला कीट (पं० कीड़ा)।
कीलुआ	पु०	(कां)	कीला, लकड़ी का बना हुआ एक छोटा सा उपकरण। यह घराट के ऊपर वाले पाट पर टिक टिक करता रहता है ताकि घराटी (घराट चलाने वाले) को पता लगता रहे कि घराट ठीक चल रहा है।
कूना	पु०	(कां)	कोना।
कुंगरेल	पु०	(कां)	दोपहर से पहले का समय।
कुंगू	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा जिस के पत्ते पशुओं की आंख का फोला फुटाने के काम आता है।
		(कु)	सिंधूर।
कुंगला	वि०	(कां)	कोमल, नर्म।
कुंख	स्त्री०	(कां)	कुक्षि, कोख, गर्भाशय।
कुंजलाट	सं०	(कां)	कोयल की जाति का एक पक्षी विशेष, छोटी कूंज। (सं० क्रौंच) (प० कूंज)
कुंजा	पु०	(कां)	किनारा (पं० खुंजा)।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
कुंडी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की दाल ।
		(कु)	कड़ाही ।
कुंडी	स्त्री०	(कां)	चमड़े का काम करने में काम आने वाला एक खरोसिया विशेष जिसके साथ चमार जूतियां सीने का काम करता है।
कुंडी-जाल	सं०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक उपकरण विशेष ।
कुडांली	स्त्री०	(कां)	धान के पराल के गट्ठे।
कुआं	पु०	(कां)	कोट, गौन की शकल का ऊनी लम्बा सा कोट।
कुंड	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक उपकरण।
कुंदी	सं०	(कां)	दालों की एक किस्म, इस की बेल कुल्थ की शक्ल की होती है।
कुआई	स्त्री०		चर्मकारी में काम आने वाला लोहे का गड्ढा।
कुआणा	क्रि०	(कां)	बुलाना, बात करने के लिए आमंत्रित करना । (पं० कुवाणा ।)
कुआ मारना	क्रि०	(कां)	आवाज देना। प्रयोग—आहलू घरेतां रे आंहगे, तां मिजो कुआ मारि लैनियो। जब आप पड़ोसियों के घर जाएं तो मुझे आवाज मार लीजिए।
कुआर घाट	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष (कुआर गंदल की जाति का)
कुआर गंदल	सं०	(कां)	एक प्रकार की जड़ी बूटी जो दवाइयों में डाली जाती है। (पं० कुआर गंदल) ।
कुआज	पु०	(कां)	बाज की जाति का एक पक्षी विशेष।
कुआरेओं	स्त्री०	(कां)	घी कुआर ।
कुआल	पु०	(कां)	पहाड़ की चोटी पर चढ़ने का अलग मार्ग अर्थात् सरल रास्ता। चढ़ाई।
कुआली	स्त्री०	(कां)	चढ़ाई।
कुकू	पु०	(कां)	केले के वृक्ष के वे कोमल किसलय जिन में केले की फलियां लिपटी रहती हैं।
कुक्कू	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष। इस की चहचहाने में "सीता गुआची कुतू तोपां" शब्दावली का अर्थापन किया जाता है। प्रयोग—भाभी कुक्कू कियां बोलदा। भाभी कुक्कू कैसे बोलता है।
कुकड़ियाला	पु०	(कां)	मकई के पौधों के डंठल जिन से मकई के बाल उतार लिए गए हों।
कुकड़ेले रा ढाड़	पु०	(कां)	मकई के बालों का ढेर।
कुकड़ी	स्त्री०	(कां)	मकई के पौधे का भुट्टा।
		(कु)	मुर्गी।
कुचरी	स्त्री०	(कां)	सिंचाई के लिए बनाया हुआ छोटा सा बांद।
कुज्जे	पु०	(कां)	एक प्रकार के फूल जोकि गुलकन्द के समान कब्जकुशा होते हैं।
कुट	पु०	(कां)	ब्याज, सूद (पं० कूड़) ।
कुटकाट	पु०	(कां)	वह भूमि जिस पर तीन चार वर्ष बाद फसल बोने के लिए हल चलाया गया हो ।
कुट भरना	क्रि०	(कां)	ब्याज देना।
कुठियाला	पु०	(कां)	सरकारी अनाज का भण्डारी।
कुड़	पु०	(कां)	कन्दरा, गुहा ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कुड़ना	क्रि०	(कां) ज़मीन से पानी फूट कर निकलना।
कुड़	पु०	(कां) एक अस्थायी झोंपड़ी।
कुड़ी	स्त्री०	(कां) कुटिया, झोंपड़ी। लड़की।
कुड़ी	स्त्री०	(कां) लकड़ी का बना हुआ एक हथियार विशेष। यह खलिहान में काम आता है।
कुड़माई	स्त्री०	(कां) सगाई, विवाह के लिए कन्या पक्ष और वर पक्ष की आपस में पक्की बात चीत। (पं० कुड़माई)
कुब	पु०	(कां) आबादी से बाहर के खेतों में पशुओं को बांधने के लिए बनायी गयी छोटी सी झोंपड़ी।
कुढाणी	पु०	(कां) ऐसा पानी जो ज़मीन की निचली तह से निकले अर्थात् जो वर्षा का न हो।
कुण	वि०	(कु, कां) कौन।
कुण्णी	स्त्री०	(कां) एक मछली विशेष जिसका रंग काला, होंठ मोटे और शरीर गुदगुदा होता है।
कुण्हाब	वि०	(कां) ऐसी गाय अथवा भैंस जो तीन चार महीने दूध देकर नये दूध हो जाए।
कुतकी	अ०	(कां) किसी जगह, कहीं।
कुतांची	अ०	(कां) देखो कण्ची-"कुणाची"।
कुथांह	अ०	(कां) कहां, किस तरफ (पं० किधे)।
कुतार	पु०	(कां) आवारा कुत्ता।
कुदाल	पु०	(कु, कां) कृषि का एक उपकरण विशेष।
कुप्पू	पु०	(कां) सूखी और काटी हुई घास को सुरक्षित रखने के लिए उसका बनाया हुआ एक गोलाकार विन्यास (पं० कुप्पू)।
कुंनला	पु०	(कां) कटी हुई घास का ढेर।
कुनलू	पु०	(कां) गेहूं भूसे को आरक्षित रखने के लिए बनाया गया एक अस्थायी गुदाम।
कुनली	स्त्री०	(कां) छोटा "कुप्पू"।
कुनालू	पु०	(कां) कनाली।
कुनेर	स्त्री०	(कां) धान के भूसे का 'कुन्नू'।
कुन्या	पु०	(कां) मोर का बच्चा।
कुफ	पु०	(कां) पानी का छोटा तालाब, जिस में सिर्फ बरसात के दिनों में ही पानी इकट्ठा रहता है।
कुमली	स्त्री०	(कां) नाक का अगला हिस्सा।
कुमूर्ख	वि०	(कां) बदमाश।
कुम्हारली	स्त्री०	(कां) कुम्हारों का मुहल्ला।
कुरका	स्त्री०	(कां) काले रंग की छोटी सी मछली जो अधिक से अधिक दो छटांक होती है।
कुरती	स्त्री०	(कु, कां) कमीज। (पं० कुड़ती)।
कुर्तू	पु०	(कां) कुर्ता, कमीज।
कुरमक	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष।
कुराक	स्त्री०	(कां) एक बूटी विशेष जिस के पत्तों के शरीर के साथ छूने पर जलन पैदा होती है।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कुराड़ा	वि०	(कां) सख्त, पका हुआ (फल), पं० कौरड़ू । प्रयोग—ए काकड़ू कुराड़ा ऐ । यह ककड़ी पकी हुई है ।
कुरियाल	सं०	(कां) वृक्ष विशेष । इस की टाटें (लम्बे २ फल) टौर वृक्ष की टाटों की तरह होती हैं ।
कुलच	सं०	(कां) हल के लोहालू को फिट करने की नाली ।
कुलफी	स्त्री०	(कां) हुक्के की नली में लगने वाली पीतल की टूटी ।
कुलबिल	अ०	(कां) बिल्कुल ।
कुलांग	सं०	(कां) पक्षी विशेष जो तिब्बत से आया माना जाता है ।
कुलारी	स्त्री०	(कां) नाश्ता, प्रातः काल का खाना ।
कुली	स्त्री०	(गा) कुमारी लड़की, कुल की भावी जननी (पं० कुड़ी) ।
कुलीसा	पु०	(कां) जंगली मुर्गे की किस्म का एक पक्षी विशेष ।
कुसकना	क्रि०	फुसफुसाना, धीरे से बोलना ।
कुसी	सर्व०	(कां) किसी ।
कुसकै	सर्व०	(कां) किस के पास ।
कुसूता	वि०	(कां) अनियंत्रित, काबू रहित ।
कुसदे	सर्व०	(कां) किस के । (पं० किसदे) ।
कुहर	स्त्री०	(कां) वह भूमि जिस में सावनी फसल बोई गई हो ।
कुहल	स्त्री०	(कु, कां) पानी की नाली, छोटी नहर ।
कुहदे	सर्व०	(कां) 'कुसदे', किस के ।
कूथी, कुथांची	अ०	(कां) किस रास्ते से ।
कूरी	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का पौधा जिसके फूल कपड़े में फंस जाते हैं ।
कैंकी	वि०	(कां) एकाकी, अकेला, अलग ।
कैंतर	अ०	(कु) किस तरह, कैसे ।
केलू	पु०	(कु) एक वृक्ष विशेष जिसकी इमारती लकड़ी बहुत कीमती होती है । इस के पत्ते सुई जैसे होते हैं ।
केस	पु०	(कां) केश (पं० केस) ।
केह	पु०	(कां) छोटे पत्थरों और कंकरों से ढकी हुई जगह ।
केंठा (कांठा)	पु०	(कां) गले का आभूषण विशेष ।
कैंथ	पु०	(कां) एक कांटेदार पौधा, कपित्थ।
कैंथल	वि०	(कां) पथरीला और रेतीला स्थान जो पहाड़ी दरिया के नीचे से दरिया के बहाव बदलने पर निकला हो ।
कैंह	अ०	(कां) क्यों, किस लिए । प्रयोग—से इत्थू कैंह आया । यह यहां क्यों आया ।
कैं	अ०	(कां) के पास । प्रयोग—मैं उसकैं गया । मैं उसके पास गया ।
कैंत	वि०	(कां) राजाओं के समय का गांव का लेखापाल, पटवारी ।
कैंत	क्रि०	(कां) किस काम से । किस लिए, कहां । प्रयोग—तू तित्थू कैंत गया था । तू वहां किस काम से गया था ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
कैमल	सं०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
कैल–काइल	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिस के पत्ते सुई जैसे होते हैं ।
कैलू	पु०	(कां)	नूरपुर में एक नाग देवता ।
कैसजो	अ०	(कां)	किस वास्ते, किस लिए । प्रयोग—मै इत्थू कैस-जो आया । वह यहां किस लिए आया ।
कैहजो	अ०	(कां)	किस लिए , किस वास्ते 'कैस-जो" ।
कैरोडी	सं०	(कां)	विपत्ति के दिन, बदकिस्मती ।
कोऊंला	वि०	(कु)	कोमल, नर्म ।
कोआणा	क्रि०	(कां)	कूणा क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, बुलाना ।
कोकड़ा	पु०	(कां)	कपोत जाति का एक पक्षी विशेष ।
कोकड़ा	पु०	(कां)	पटसन की किस्म का एक पौधा जिसके छिलके से तंतु निकलते हैं जिनकी बढ़िया रस्सियां बनती हैं ।
कोकी	सर्व०	(कां)	कोई व्यक्ति । प्रयोग—कोकी आया था । कोई व्यक्ति आया था ।
कोचबो	स्त्री०	(कां)	मछलियां पकड़ने के लिए एक उपकरण विशेष ।
कोटन	पु०	(कां)	एक प्रकार का पत्थर ।
कोटला	पु०	(कां)	मिट्टी के ढेलों को तोड़ने वाला लकड़ी का एक हथोड़ा ।
कोटाली	स्त्री०	(कां)	दो गांव के मध्य का सीमा बुर्ज ।
कोठड़ी	स्त्री०	(कां)	लकड़ी का बड़ा संदूक जिस में अनाज आदि रखते हैं ।
कोठड़	पु०		सिचाई के लिए बनाया गया कुहरी से बड़ा बांध । एक छोटी कोठड़ी ।
कोठरू	पु०	(कां)	किसी ग्राम अथवा धार्मिक संस्था का मुखिया ।
कोठला	पु०	(कां)	खेतों की मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए लकड़ी का बना हुआ एक हथियार ।
कोठी	स्त्री०	(कु)	मौजा, वर्जीरी का एक छोटा हिस्सा जो कि माल बंदोबस्त के लिए किया जाता है ।
कोणक	स्त्री०	(कु)	गेहूं ।
कोतना	क्रि०	(कु)	खोदना । प्रयोग—सो खेत कोतदा लागी रा । वह खेत खोद रहा है ।
कोदरा, कोदला	पु०	(कां, कु)	एक अनाज विशेष । काले रंग का अनाज जिस के दाने बहुत बारीक होते हैं ।
कोम	पु०	(कु)	काम । प्रयोग—तुसा अपणा कोम केरा जी । आप अपना काम करें ।
कोम केरना	क्रि०	(कु)	काम काज करना ।
कोयली	स्त्री०	(कां)	कुम्हार के चक की छोटी कीली जिसमें चक को घुमाते समय कुम्हार लाठी का सहारा लगाता है ।
कोर	अ०	(कां)	ऊपर ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
कोला	पु०	(कां) १—छोटा सा नाला जिसमें साल भर पानी रहता है । २—आठ दस बीघों की जमीन का ऐसा टुकड़ा जहां धान बोए जाते हों और जिसमें सिंचाई के लिए पानी लगता हो । ३—ऐसी जमीन जिसका कोई दावेदार न हो ।
कोली	पु०	(कु, कां) डागी जाति की एक उप-जाति ।
कोल्हू	पु०	(कु) घोंसला ।
कोशू	पु०	(कु, कां) मक्खन डालने का मिट्टी का छोटा सा बरतन 'कोरू' ।
कोशू	पु०	(कां, कु) नमकीन पानी डालने के लिए एक विशेष काठ का बरतन ।
कोल्थ	पु०	(कु, कां) एक अनाज विशेष ।
कोहल	पु०	(कु, कां) एक अनाज विशेष ।
कौं	पु०	(कां) एक पौधा विशेष ।
कौआं	पु०	(कां) कपोती की जाति का पक्षी विशेष, फाख्ता । (पं० घुग्गी) ।
कौखी	स्त्री०	(कां) कुक्षि, कोख, गर्भाशय ।
कौंडा	पु०	(कु) कांटा ।
कौहदा	पु०	(कु) पशु के कंधे पर उठा हुआ भाग, ककुद ।
कोकड़ी	स्त्री	(कु) हृदय, दिल ।
कौड़	पु०	(कां) एक प्रकार की घास जो जनवरी फरवरी के महीनों में गेहूं के खेतों में पैदा होती है ।
कौड़ख्री	स्त्री०	(कु) कड़छी ।
कौथी	अ०	(कु) कब । प्रयोग—तुसा घौरा-ने कौथी एणा । आप ने घर कब आना ।
कोन्हेणा	वि०	(कां) १—झगड़ालू व्यक्ति । २—ग्वालों की एक जाति विशेष ।
	ग.	
कौवा रूक्ख	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और इमारती कामों में अच्छी समझी जाती है । इसे घुन नहीं लगता ।
कौहरा	पु०	(कां) कम्बा रुमाल, चम्बा फैशन के अनुसार कशीदाकारी वाला एक रुमाल विशेष जो विवाह उत्सव पर इस्तेमाल किया जाता है ।
क्याड़ी	स्त्री०	(कां, कु) गरदन । ग्रीवा ।
क्याड़	पु०	(कां) गरदन की नाड़ी के अपने ठिकाने से हिलने से एक दर्द विशेष (पं० नाड़ोल)
क्यार	पु०	(कु, कां) पहाड़ी खेतों में पानी देने के लिए बटबन्दी करके खेतों के बनाए गए छोटे छोटे हिस्से ।
क्योड़	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष ।
क्योंर्फी	स्त्री०	(कां) कान का आभूषण ।
क्राड़	पु०	(कु, कां) ऋण देकर उसके ब्याज पर निर्वाह करने वाला महाजन वर्ग । साधारणतः इससे दुर्भावना का द्योतन होता है । (पं० कराड़) । कुल्लुकी में अर्थ दुकानदार से है ।
क्राथ	पु०	(कां) राजाओं के शासन काल में खेतीबाड़ी की पैदावार में से मजारों का हिस्सा ।

ख

शब्द	व्याकरण	अर्थ
खंगणा	क्रि०	(कां) खांसना, कुल्लु की में शब्द 'खुंगण' है ।
खंघ	स्त्री०	(कां) खांसी, कु० 'खुंग' ।
खंडा	पु०	(कां) भेड़ बकरियों का समूह ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
खंदा	पु०	(कां)	खुड ।
खंगार मारना	क्रि०	(कां)	किसी को सावधान करने के लिए बनावटी खांसी करना ।
खक्क	पु०	(कां)	कंधा, (कु० खोग्रा) ।
खक्खर	पु०	(कां)	भिड़ों का छत्ता ।
खखैरू	पु०	(कां)	एक मछली विशेष, महांशेर ।
खख्यार	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
खख्यार	पु०	(कां)	एक प्रकार की मछली ।
खगट्ट	पु०	(कां)	लकड़ी का टुकड़ा ।
खटना	पु०	(कां)	गोका चमड़े की बनी हुई एक मशक विशेष जिसके सहारे नौका अथवा पुल के अभाव नदी पार करते हैं ।
खटनाऊ	पु०	(कां)	पहाड़ी नदी को पार करने का एक उपकरण ।
खटनाल्लू	पु०	(कां)	एक प्रकार का खाद्य फल । मोतिया फूल ।
खड्ड	पु०	(कां)	पहाड़ी नाला ।
खड़	पु०	(कां)	मकई के खेतों में अपने आप उगी हुई घास । (पं० खड़ । खड खावहि अमृत देह गुरु-ग्रंथ साहिब ।)
खडक	पु०	(कां)	'काहरग' में लाने को ऊंचा करने के लिए और सन्तुलन ठीक करने का उपकरण ।
खड़नूं-आ	पु०	(कां)	खड़ घास का "कुनल" ।
खड़पा	पु०	(कां)	काले रंग का सांप जो फन उठाकर चलता है ।
खड़म्ब	पु०	(कां)	एक विशेष वृक्ष ।
खड्डू	पु०	(कां)	खस्सी किया गया भेडू ।
खड़ेतर	पु०	(कां)	घास उगाने का खेत अथवा पहाड़ी ।
खड़ोते ओ	क्रि०	(कां)	खड़े हैं ।
			प्रयोग—तुसां क्यों इत्थु खड़ोते ओ ? आप क्यों यहां खड़े हैं ?
खड़ोदी	स्त्री०	(कां)	घास काटने वालों का ग्रोह ।
खता, खटा	पु०	(कां)	दही ।
खनाज	पु०	(कां)	गेहूं का आटा ।
खनेर	स्त्री०	(कां)	किसी नदी का ऊंचा किनारा ।
खनोड़	पु०	(कां)	विवाह के प्रसंग में दोनों पक्षों में बात चीत कराने वाला ।
खपड़ा,	वि०	(कां)	बूढ़ा ।
खपरा	वि०	(कु)	बूढ़ा ।
खपरा	पु०	(कां)	पकाई हुई मिट्टी के सलेट जो मकानों की छत पर डाले जाते हैं ।
खबरै	अ०	(कां)	शायद, न जाने ।
खब्बल	सं०	(कां)	दूब घास (पं० खब्बल) ।
खमब्बी	सं०	(कां)	गन्ने की एक किस्म ।
खमरू	पु०	(कां)	छोटा "खपरा" ।
खरक	पु०	(कां)	'काहरग' के "खुडल" में फिट किया हुआ डंडा जो डाने बाने को स्थापित रखता है ।
खरकड़ी	वि०	(कां)	तेज बहाव वाली खड़ खड़ करके बहने वाली ।
			प्रयोग—माण खड्ड बहुत खरकड़ी ऐ ।
			माण नदी बहुत तेज बहाव वाली है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
खरत	पु०	(कां)	पशु हानि ।
खरा	वि०	(कु, कां)	अच्छा ।
खराड़ी	पु०	(कां)	डागी जाति की एक विशेष शाखा ।
खरूद	स्त्री०	(कां)	शरारत, छेड़ छाड़ (पं० खरूद), बीमारी
खरूदी	वि०	(कां)	शरारती (पं० खरूदी)
खरेड़ना	क्रि०	(कां)	खड़ा करना । प्रयोग—घड़ी भर खरेड़ इस जो । घड़ीभर के लिए इसे खड़ा कर ।
खरेहूरे	क्रि०	(कां)	खड़े किए हुए हैं ।
खरोड़ना	क्रि०	(कां)	झाड़ी अथवा डंगी से भूसे को इकट्ठा करना ।
		(कु)	खोदना
खल	स्त्री०	(कां)	चमड़ा ।
खल	स्त्री०	(कां)	कोल्हू में सरसों अथवा तिलों में से तेल निकाल लेने के बाद सरसों अथवा तिलों के ढेले ।
खलई	स्त्री०	(कां)	पतंगा, शलभ ।
खलडू	पु०	(कु, कां)	बकरी की खाल जिसमें आटा डालते हैं ।
खलवरा	पु०	(कां)	चील वृक्ष का बिरोजा ।
खलड़ी	स्त्री०	(कु, कां)	खाल । 'खलडू'
खशाला	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
खलाफत	स्त्री०	(कां)	खिलाफत, विरोध
खली	स्त्री०	(कां)	घास का आयताकार 'कुनलू'
खलीतड़ी	स्त्री०	(कां)	कशीदाकारी का सूई धागा रखने का कपड़े का बना हुआ एक बटुआ विशेष ।
खलोटी	स्त्री०	(कां)	एक अनाज विशेष ।
खसौधा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते कचोड़ की तरह होते हैं ।
खल्हे	वि०	(कां)	नीचे ।
खाखरा	पु०	(कां)	एक विशेष वृक्ष जिसके पत्ते खुरदरे होते हैं ।
खाख	स्त्री०	(कु)	मुंह । प्रयोग—एंढा बोलदया तेरी खाखनी फूटी । ऐसा कहते हुए तेरा मुंह न फटा ।
		(कां)	रुखसार, गाल । प्रयोग—तेरे खाखां जो क्या होइग्या । तेरे गालों को क्या हो गया ।
खाखडू	पु०	(कां)	बच्चों के गाल, रुखसार । (कु) छोटा मुंह (विशेषत: बच्चे का) ।
खाड़ना	क्रि०	(गा)	खेलना ।
खाड्डा	वि०	(कां)	अधिक चौड़ा ।
खाडू	पु०	(गा)	भेड़ का बच्चा ।
खाड़	पु०	(कां)	'सारफड़' ।
खाती	स्त्री०	(कां)	पानी की कमी वाले हलकों में (यथा ऊटपुर आदि) वर्षा के पानी को इकट्ठा करने के लिए बनाया गया कृत्रिम कुआं ।
खापरा	वि०	(कु)	बूढ़ा आदमी । "खपरा"
खार	वि०		द्रोही बुद्धि, ईर्ष्या ।
खारी	स्त्री०		टोकरी ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
खारियां बदलना	क्रि०	(कां)	पराया हो जाना, दूसरे को सौंप देना, विवाहोत्सव में एक संस्कार विशेष जब विवाहित हो रहे लड़का और लड़की आपस में स्थान बदलते हैं ।
खाल	पु०	(कां)	किसी खड्ड अथवा नाले में पानी के बहाव के कारण बना हुआ गहरा सा गढ़ा ।
खालसा	पु०	(कां)	किले के साथ सम्बद्ध ज़मीन ।
खाड़ा	पु०	(कां)	मल्लयुद्ध करने का स्थान ।
खिखर	स्त्री०	(कु, कां)	तेज़ नुकीला पत्थर ।
खिंजना	क्रि०	(कां)	खींचना ।
खिड़ना	क्रि०	(कां)	पलग होना ।
खिंद	स्त्री०	(कु, कां)	बिस्तर में ओढ़ने या बिछाने का कपड़ा, लिहाफ़ जिस में रुई के स्थान पर पुराने कपड़ों की टाकियां चीथड़े आदि भरे होते हैं ।
खिखना	क्रि०	(गां, कां)	सन्तुष्ट होना ।
खिखरना	क्रि०	(गा)	पढ़ना, सीखना ।
खिखारना	क्रि०	(गा)	सिखाना, पढ़ाना ।
खिट्ट	स्त्री०	(गां, कु)	दौड़ ।
खिट्ट मारनी	क्रि०	(गा, कु)	दौड़ लगाना ।
खिड़क	स्त्री०	(कु, कां)	एक वृक्ष विशेष, जिसके रस और पत्ते कड़वे होते हैं ।
खिधी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की बेल जिसकी जड़ों को गीदड़ उखाड़ कर खाते हैं ।
खिमा	स्त्री०	(कां)	क्षमा ।
खियाणा	क्रि०	(कु, कां)	खिलाना । प्रयोग—तू मुंडुए जो क्या खियाणे लगी ओ । तू बालक को क्या खिला रही है ।
खिल	पु०	(कां)	फूल, सामान्य पुष्प । आग में पक कर खिला हुआ मकई का दाना अथवा फटकड़ी का टुकड़ा । (पं० खिल्ल)
खिलतमिलत	वि०	(कां)	अस्तव्यस्त ।
खिल्ली	वि०	(कु, कां)	खाली जमीन, वह ज़मीन जिसमें फसल न बोई गई हो ।
खिलसार (खिलसाल)	पु०	(कां)	बंजर भूमि का लगान ।
खींघर	पु०	(कां)	टूटा हुआ तीखा बड़ा पत्थर ।
खींखना	क्रि०	(गा)	सीखना, सिखाना ।
खीत	स्त्री०	(गा)	शीत, सर्दी, ठंड ।
खीमण	पु०	(कां)	मकई आदि के खेतों से पक्षियों को उड़ाने के निमित्त पत्थर फैंकने के लिए बनाया गया रस्सी का एक उपकरण । (पं० गोपीआ) ।
खुंग	पु०	(कां)	खांसी "खंघ" ।
खुंगाना	क्रि०	(कां)	खांसना ।
खुंघणी	स्त्री०	(कां)	भिगोई हुई दालों को पीस कर और सुखा कर बनाए गए कच्चे पकौड़े, 'बड़ियाँ' ।
खुंडलू	पु०	(कां)	वे छोटे-छोटे खूण्डे जिनके सहारे 'काहृल' नामक देशी खड्डी फिट की जाती है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
खुंडी	स्त्री०	(कु)	कान के गोलाकार और बारीक गहने जो साधारणतः चांदी या सोने के बने होते हैं ।
खुंडू	पु०	(कां)	चरखे का एक उपकरण विशेष ।
खुख	पु०	(कां)	रबड़ की गेंद जिसमें हवा भरी हो ।
खुखा	पु०	(गा)	सूखा ।
खुणे पुर		(कां)	कुएं के ऊपर ।
खुजूरस	पु०	(कां)	खजूर के फलों की मिठास से बनाया गया गुड़ ।
खुहकू	पु०	(कां)	पहाड़ पर १०-१५ कदमों की चढ़ाई "कुआल" यह शब्द नूरपुर तहसील में बहुतायत से प्रयुक्त होता है। कुल्लूकी में इस का अर्थ शरीर के जोड़ है ।
खुड़	पु०	(कां, कु)	पशु बांधने का कमरा ।
खुड़	पु०	(कां)	शत्रुता (पं० खुड)
खुणणा	क्रि०	(गा)	सुनना ।
खणाणा	क्रि०	(गा)	सुनाना ।
खुणुआ	पु०	(कां)	दालें भिगोकर उन्हें पीसकर और सुखाकर बनाए गए कच्चे सूखे पकौड़े जो किसी भी समय पका कर सब्जी के रूप में बनाए जाते हैं।
खुत	सं०	(कां)	बन्दोबस्त माल के उद्देश्यों के लिए जमीन को बांटने का पुराना तरीका ।
खुभी	स्त्री	(कां)	एक प्रकार की मछली ।
खुम्ब	पु०	(कां)	टटमोर, एक अधभुज वर्ग की वनस्पति (पं० खुम्ब)
खुराट	पु०	(कां)	वह स्थान जहां बरसात में घास उगाया जाता है।
खुलणा	क्रि०	(गा)	बाहर ले जाना, फेंकना ।
खुलासी	स्त्री०	(कां)	खलासी (Liberation) ।
खुआट	वि०	(कां)	"खुराट" ।
खुआड़ा	पु०	(कु, कां)	खलिहान भेड़ों के रखने का खेत ।
खुआका	पु०	(कां)	मकान की मरम्मत आदि के लिए मिट्टी उखाड़ने का गढ़ा ।
खुर्क	स्त्री०	(कु, कां)	खारिश, खुजली (पं० खुर्क) ।
खुर बनाना	क्रि०	(कां)	बच्चों का एक खेल जिसमें बच्चे रेत पर हाथी, घोड़े, भेड़िए, सूअर, गाय, भैंस आदि जानवरों के खुरों (पांवों) के निशान बनाते मिटाते हैं।
खुरमूंही	स्त्री	(कां)	पशुओं की एक बीमारी विशेष । पातुरा ।
खूरेखू	पु०	(कां)	एक प्रकार का पशु रोग ।
खुवां	पु०	(कु, कां)	पशुओं का पांव, खुर, सुम ।
खे			कर्म और सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिन्ह ।
खेंदया पाई लैणा	क्रि०	(कां)	अपने स्वभाव से परिचित करा कर अपने साथ मिला लेना।
खेड़पट्टा	पु०	(कां)	"नार सिंह परियों" आदि पहाड़ी देवताओं के चिन्ह स्वरूप बनाए गए चांदी के आभूषण, इन आभूषणों को ऐसी स्त्रियां पहनती हैं जिन में सम्बन्धित देवताओं की चेतना प्रवेश करती हो।
खेंदना	क्रि०	(कां)	पशुओं को हांकना । प्रयोग—गोरुआं जो खेंदी दिन्नयो । जरा पशुओं को हांक देना।
खेणी	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, यह वृक्ष पिपाड़ा नहियाण के जंगलों में बहुतायत से होता है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
खेतू	पु०	(कां)	खेत, छोटा सा खेत।
खेला	पु०	(कां)	बूढ़ा।
खैंखर	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष।
खैर	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, जिस के तने से कत्था निकलता है।
खैहस	स्त्री०	(कां)	ख्वाहिश, इच्छा।
खैंहणा	पु०	(कां)	झगड़ना (पं० खहिणा)।
खोघाड़ा	पु०	(कां)	वह जगह जहां से मकान लेपने के लिए मिट्टी खोद कर निकाली जाती है।
खोए	पु०	(कां)	कम्बल। "खाऊ"
खोल	पु०	(कां)	कमरपट्टे के साथ रखी हुई जेबनुमा जगह।
खोट	पु०	(कु०, कां)	किसी देवते का अभिशाप।
खोड़	पु०	(कु०, कां)	अखरोट।
खोणना	क्रि०	(कु)	खोदना। "खूनना"।
खोना	क्रि०	(कां)	स्वाद खिलारना, खाया जाना। प्रयोग—इतना भत मेते नी खोना। इतना भात मेरे से नहीं खाया जाएगा।
खोनाई	स्त्री०	(कां)	जमीन की खुदाई।
खोपा	पु०	(कां)	घराट की मोडी का निचला हिस्सा।
खोरू	पु०	(कु कां)	मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें मक्खन रखते हैं।
खोहणा	क्रि०	(कां)	छीनना (पं० खोहणा)।
खौढ़ा	वि०	(कां)	बहुत बूढ़ा।
खौंद	पु०	(कां)	खाविन्द, पति।
खौरू	पु०	(कां)	जुकाम नजला आदि की सूरत में घड़े की ठीकरी तथा चौराहे के कंकर ले कर बनाया गया एक दुशांदा विशेष। २—पांवों से कुरेद कर बनाई गई जगह (पं० खौरू)।
खौरा	पु०	(गा)	श्वसुर।
खौल	पु०	(कु)	खलिहान, खल।
खौल फेरना	क्रि०	(कु)	गेहूं आदि अनाज को गाहना।

ग

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गंबक	पु०	(कां)	स्त्री के स्तन।
गगल	पु०	(कां)	ढेर।
गगर	स्त्री०	(कां)	कंकरीली भूमि।
गगारना	क्रि०	(कां)	खाना और पीना।
गच्छला	वि०	(कां)	खाली।
गज	पु०	(कां)	देखो 'कात'। २. छत्तीस इंच का एक माप विशेष।
गजर	वि०		अन्धेरा।
गंडियालो	स्त्री०	(कां)	अर्बी आलू की जाति का एक खाद्य पदार्थ।
गंढीबा	स्त्री०	(कां)	हल और गंड़ को मजबूती से जोड़ने के लिए लकड़ी की कीलें।
गद्दी	स्त्री०	(कां)	१. चावल, गेंहू, मकई का गट्ठा। २. रेलगाड़ी।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गड़प्ना	क्रि०	(कां)	निगलना, किसी वस्तु को शीघ्रता से खा लेने की क्रिया।
			प्रयोग—तूं तां सारा पानी गड़प्पी गिया।
			तू तो सारा पानी पी गया।
गड़ाका	पु०	(कां)	बादल की गर्ज।
गड़ोई	पु०	(कां)	गन्ने के रस से गुड़ अथवा शक्कर बनाने वाला व्यक्ति।
गड़ोजू	पु०	(गा)	बांसुरी की प्रकार का एक वाद्य यंत्र।
गड़बिल्ली	स्त्री०	(कां)	सिर को जमीन के साथ लगा कर सारे शरीर को सिर के बल उलटने की क्रिया।
गढू	पु०	(का)	मिट्टी का ऐसा बरतन जिस में दही का मथन करके छाछ बनाई जाती है।
गती सती	स्त्री०	(का)	अन्त्येष्टि क्रिया।
गथ (गत)	स्त्री०	(कां)	गति, मारपीट।
गदाई बकरी	स्त्री०	(गा)	ऐसी बकरी जो जगल में चरते समय बहुत दूर चली जाती हो।
गनलाड़ी	स्त्री०	(कां)	एक उपकरण, गन्नों को काटने का टोका।
गबर	पु०		रात का अन्तिम पहर।
गबला	वि०	(कां)	मध्य का (प० गभला)।
गबी	स्त्री०	(गा)	भेड़।
		(कु)	गभो—भेड़ की बच्ची।
गबू	पु०	(गा)	भेड़ का बच्चा।
गब्भें	अ०	(कां)	मध्य में (पं० गब्भे)।
गम्मना (गालिब जाना)	क्रि०	(कां)	अच्छा लगना, किसी चीज पर फिदा होना।
			प्रयोग—मिञो तुसारा नचना गम्मि गिया।
			मुझे आप का नाच पसन्द आ गया।
गम्हीर (घम्हीर)	पु०	(कां)	गलगल की जाति का वृक्ष।
गरओड़	पु०	(कां)	पशु को बांधने के लिए बनाए गए रस्से के जोड़ में लगाई जाने वाली गांठ विशेष।
गरजू	स्त्री०	(का)	बिजली की गरज।
गरड	पु०	(का)	घराट का एक लकड़ी का बना हुआ चक्राकार उपकरण।
गर्भन्ती	स्त्री०	(कां)	गर्भवती स्त्री।
गरासू (घरालू)	स्त्री०	(कां)	पशुशाला।
गरासनी	पु०	(कां)	ग्रामदेवता।
गरेंठ	स्त्री०	(कु)	तर्जनी अंगुली और अंगूठे के मध्य का अधिकतम फासला।
			प्रयोग—गरेंठ एक शोहरू ता गला कुण।
			गरेंठ (जितनी लम्बाई) भर का लड़का बातें कमाल की।
गरेली खड्ड	स्त्री०	(का)	नूरपुर में चक्की नदी की एक सहायक खड्ड।
गरोई	पु०	(कां)	एक कीट विशेष।
गन्हेल		(का)	गन्हें के तने का तेल।
गलना	क्रि०	(कां)	मुरझा जाना। गल-सड़ जाना।
गलफथ	स्त्री०	(कां)	गफलत, लापरवाही।
गलमा	स्त्री०	(कां)	एक छोटा सा पौधा जिस के पत्तों का पानी कुएं के पत्तों के पानी से मिला कर पशुओं की आंख के फोले के लिए दवाई के रूप में प्रयुक्त होता है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गला	स्त्री०	(कां) (कु)	मकड़ी। बात।
गलाण	पु०	(कां)	कथन।
गलाणा	क्रि०	(कां)	कहना, बात करना।
गलाल	पु०	(कां)	एक प्रकार का पौधा जिस के पत्ते गंड फोड़े को फुटाने के लिए लाभकारी होते हैं।
गली	स्त्री०	(कां)	पशुओं की एक बीमारी।
गली	स्त्री०	(कां)	वर्षा के कारण क्षरित हुई नंगी जमीन।
गलू	पु०	(कां)	छोटा और तंग रास्ता, गली।
गलू	पु०	(कु०कां)	सुराख, छेद, चक्की के ऊपर वाले पाट का छेद जिस में दाने आदि डालते हैं।
गलोटू	पु०	(कां)	चरखे से काते गए सूत का एक भुट्टा।
गलेलू (बलेलू)	पु०	(कां)	एक छोटा सा पौधा, पेट दर्द के बीमार इस के पत्तों की चटनी खाते हैं, किसी भी प्रकार की दर्द के लिए इस के पत्तों का लेप बनाया जाता है, इस के फलों का तेल बनता है जो दर्द के लिए अकसीर समझा जाता है।
गलोई जाना	क्रि०	(कां)	न चाहते हुए किसी बात का प्रकट हो जाना। प्रयोग—चांहदा ता नईं था, पर गलोई गिया मेते। चाहता तो नहीं था परन्तु बोला गया मुझ से।
गलोड़	पु०	(कां)	अधिक बातें करने वाला।
गही	स्त्री०	(कां)	दीवार में छोटी सी अलमारी।
गहुर्नांठ	पु०	(कां)	"गहुर्नां" नामक पुरानी झाड़ी का तना और जड़। इस की आग में बहुत ताप होता है और बड़ी देर तक रहती है।
गःर्णा	पु०	(कां)	एक कांटेदार पौधा। सर्दियों में इस पर काले खाद्य फल लगते हैं।
गांगलू	स्त्री०	(कां)	चौड़ी गन्दल वाली "लूं" या थूहर।
गागरू	पु०	(कां)	गागर, घड़ा।
गां:दला	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष, इस की कोंपलें माह की दाल के कोड़कू को गला देती हैं।
गांधला	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा। इस के फलों की चटनी बनती है।
गाई	स्त्री०	(कु)	गौ।
गाची	स्त्री०	(कु०गा)	कमर में बांधने वाला एक वस्त्र विशेष।
गाजल बेल	स्त्री०	(कां)	एक लता विशेष, इस के पत्ते अथवा फल शरीर के साथ लगने से ही शरीर में बहुत खारिश हो जाती है।
गाज	स्त्री०	(कां)	ब्यास की एक सहायक नदी, यह उपनदी धर्मशाला के हिमवान पर्वतों से निकल कर तहसील कांगड़ा और देहरा में बहती हुई देहरा आदि खड्डों को साथ लेकर ब्यास में मिलती है। इस खड्ड से सिंचाई का काम भी लिया जाता है।
गाटी	स्त्री०	(कां)	मित्रता, दोस्ती। प्रयोग—अजकल सतपाले री परगासे कने गाटी ऐ। आजकल सत्यपाल की प्रकाश के साथ मित्रता है।
गाडी	स्त्री०	(कां)	कटी हुई फसल के बीस पूलों का भार जो एक आदमी उठा सके।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गड्डा	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की मक्की जो ६० दिन में तैयार होती है।
गादूबंड	स्त्री०	(कां)	प्रत्येक खेत की विभिन्न हिस्सों में तकसीम, जिस में हर हिस्सादार हर प्रकार के खेत का हिस्सा ले सके।
गाधा	पु०	(कां)	गधा।
गार्ड सम्रण	स्त्री०	(कां)	एक छोटा वृक्ष जिस के पत्ते खुशबूदार होते हैं और जिसकी लकड़ी चारपाई के पावें बनाने के लिए अच्छी समझी जाती है।
गारड	पु०	(कां)	चरखे के चक्के के बीच लकड़ी का मोटा टुकड़ा जिसके साथ चक्का फिट किया जाता है।
गावरू	पु०	(गा०कां)	अठारह-उन्नीस वर्ष का युवक।
			प्रयोग—हुण ता तू गावरू होई गिया तुओ बाहर जाना चाहिदा।
			अब तो आप नौजवान हो गये हैं बाहर (दूर देश कमाने के लिए) जाना चाहिए।
गारू	पु०	(कां)	चर्मकारी में काम आने वाली एक नस्तर विशेष।
गाल	सं०	(कां)	गीत, गले से निकली मधुर ध्वनि।
गाला	पु०	(कां)	१—हिस्सा, एक गाला पानी।
			२—ग्रास, एक गाला ग्रास।
गाश	पु०	(कु)	वर्षा।
गाशी	अ०	(कां)	ऊपर।
गासे	अ०	(कां)	ऊपर।
			प्रयोग—ऐ अम्ब बड़े गासे लगे हो राड़ी नी सकदे।
			ये आम बहुत ऊपर लगे हैं उतार नहीं सकते।
गासबेल	स्त्री०	(कां)	अमरबेलि, हाथ पांवों में सोजश आने पर इस का पानी मलने पर आराम आता है। "अक्कर बेल"।
गाहना	क्रि०	(कां)	गेहूं की सूखी फसल को काट कर खलिहान में खिलार कर उस से अनाज अलग करने के लिए उसे बैलों के पैरों से कुचलवाने की प्रक्रिया।
गाहल	पु०	(कां)	पथ, चौड़ा रास्ता, सड़क।
गाहल	स्त्री०	(कां)	तंग रास्ता जिसके दोनों तरफ छोटी और तंग झाड़ियां हों।
गाणा	क्रि०	(गा)	जाना।
गिची	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की मीठी रोटी।
गिझना (गिझि जाना)	क्रि०	(कां)	स्वभाव पड़ना, आदत पड़ना।
गिड	स्त्री०	(कां)	एक मछली विशेष जिसका रंग हरा और "कांटे" कम होते हैं। यह मछली मांस नहीं खाती इस लिए इसे ब्राह्मण मछली कहते हैं।
गिडली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की मछली।
गिलासड़ू	पु०	(कां)	छोटा गिलास।
गिश	अ०	(कां)	देखो "गाशी"।
गिहाना	पु०	(कु०कां)	पवित्र प्रज्वलित अग्नि।
गी-ओ	स्त्री०	(कु)	अमरूद।
गीता लाणी	क्रि०	(कु)	राग गाना, गीत गाना।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गुंतर	पु०	(कां)	घी, दही, दूध, गंगाजल और गाय के मूत्र इन पांच चीजों का मिश्रण जो सूतक के दिनों में शुद्धि के निमित्त प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है।
गुआची जाणा	क्रि०	(कां)	गुम हो जाना।
गुआड़ा	पु०	(कां)	देखो "अगुआड़ा"।
गुआणा	क्रि०	(कां)	१—गीत गाना। प्रयोग—मुन्नू ऐ रे जन्म दिनां जो गीत गुआणेन। बच्चे के जन्म दिन को गीत गाते हैं। २—गुम कर देना, बिगाड़ना। प्रयोग—१(कु) १—गोहरू की जें आऊ टोपी गुआइया। लड़का कहीं टोपी गुम कर आया। प्रयोग—२(कु)—एई नीति ऐ तैं बोण हुंदा कोम गुआऊ। इस नीयत से तूने बना बनाया काम बिगाड़ दिया।
गुआलू	पु०	(कु०का)	१—पशु चराने वाला, ग्वाला।
		(कां)	२—एक बारीक रस्सी जिस से हल की "जोत" को बांधते हैं।
गुगल	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की जड़ी बूटी।
गुज्ज	स्त्री०	(कां)	चरखे का उपकरण विशेष (पं० गुज्झ)।
गुज्जर पंछी	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष, जिस की रट में "डी औम", "डी औम" का अर्थापन किया जाता है।
गुजराना	पु०	(कां)	आजीविका, रोजी।
गुटकारी	स्त्री०	(कां)	छोटे बच्चे की हंसी। प्रयोग—मुन्नु गुटकारी मारा'दा। बच्चा हंस रहा है।
गुटि	स्त्री०	(कां)	अखरोट की गिरी।
गूठा	पु०	(कां)	नौका का पिछला हिस्सा। अंगूठा।
गूठी	स्त्री०	(कां)	अंगूठी।
		(कु)	अंगुली।
गुठ्ठू	पु०	(कु०, कां)	अंगुली, छोटे बच्चे की उंगली।
गुड़-गुड़ी	स्त्री०	(कां)	हुक्का।
गुड्डमा	सं०	(कां)	पाजामा।
गुड़मू	पुं०	(कां)	बसन्त ऋतु में आम के पत्तों पर कीटों द्वारा जमा किया गया एक चिपचिपा सा पदार्थ।
गुड़ला	पु०	(कां)	मीठा, मिठाई।
गुड़ी	स्त्री०	(कां)	शक्कर बनाने के लिए गर्म किए जा रहे रस की ऐसी मैल जो "मलही" के बाद "कड़ाही" के किनारों में लग जाती है।
गुणे खेलना	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में एक विशेष क्रीडा जिस में ससुराल में आई दुलहन ससुराल के परिजनों के साथ परिचित होते समय उन के हाथों में मिठाई देती है और वे उस के हाथों में मिठाई देते हैं।
गुती	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का फल।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
गुना	पु०	(कां) एक प्रकार का कमल।
गुनी, गुणी	पु०	(कु) भूरे रंग का वानर।
गुरमुर	स्त्री०	(कां) एक मछली विशेष जिस के "चाने" सुनहरी होते है।
गुराल	पु०	(कां) पशु आदि बांधने का स्थान।
गुलमुली	स्त्री०	(कां) एक प्रकार की मछली।
गुलदा:ण	स्त्री०	(कां) भेड़-बकरियों का चारा विशेष।
गुलबासु	पु०	(कां) एक पौधा विशेष।
गुलाह	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष।
गुलियाट		(कां) गन्ने के पौधे के सिरे वाला हिस्सा।
गुलुआणा	कि०	(कां) "गलाणा" से प्रेरणार्थक क्रिया।
गुल्लु	पु०	(कां) मकई का बाल जिससे मकई के दाने उतार लिए हों।
गुहाड़ना	कि०	(कु०, कां) खोलना। उघाड़ना। प्रयोग—भित्तां गुहाड़ी देणा। दरवाजा खोल दो।
गून	पु०	(कां) एक प्रकार का वृक्ष।
गूलै	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का जंगली पौधा।
गे-ओ		(कां) जा चुके हैं, गए हैं।
गेली	स्त्री०	(कु०कां) इमारती लकड़ी का टुकड़ा।
गो:आ	पु०	(कां) गोबर।
गोका	वि०	(कां) गाय का।
गोखडू	पु०	(कु) कान का एक आभूषण विशेष। जो साधारणतः चांदी या सोने का होता है।
गोजि:णा	कि०	(कु) छुप जाना।
गोजी	स्त्री०	(कां) गेहूं और जौ की मिली जुली फसल।
गोझड़ा	पु०	(कां) सिर का टोप या कपड़ा। पशु बांधने का स्थान।
गोटना	कि०	(कु) रोकना। प्रयोग—पानी मता गोटदे। पानी मत रोको।
गोठ	स्त्री०	(कां) पशु बांधने का स्थान।
गोड़ा	पु०	(कां) (चढ़ियार के इलाके में) टखना।
गोड़ा	पु०	(कां) धुनी हुई रूई का एक गोला जिस से कातने के लिए पूणियां बनाई जाती हैं। (कु) गोडू।
गोड़ी	स्त्री०	(कां) घराट का एक उपकरण, लकड़ी की छोटी सी कीली जो घराट के ऊपर वाले बट पर टिक-टिक करती रहती है।
गो:णा	कि०	(कां) चढ़ाई चढ़ना।
गोत (गोत्र)	पु०	(कां) संस्कृत 'गोत्र'।
गोता	पु०	(कां) अगेती बिजाई।
गोद	स्त्री०	(कां) एक मछली विशेष जिस का मुंह सांप की तरह होता है। इस की पीठ के मध्य और सिर पर कांटा होता है और रंग काला होता है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
गोबन माला	स्त्री०	(कां)	बगड़ की रस्सी में पिरोई हुई आम्रपत्रों की माला जो पशुशाला के द्वार पर लटकाई जाती है जिस से पशुधन हर प्रकार की बीमारी से बचा रहे ।
गोनणी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का पौधा जिस के फूल कच्चकुशा होते हैं।
गोरू	पु०	(कां)	पशु, डंगर, माल।
गोली बा:णा	क्रि०	(कु०,कां)	बंदूक चलाना ।
गोलू	पु०	(कां)	एक प्रकार की सफेद मिट्टी जो चूने की तरह दीवारों पर लगाई जाती है।
गोलेना	पु०	(कां)	सफेद रंग की मिट्टी ।
गोसर	पु०	(कां)	पहाड़ी रास्ता जिस में से पहाड़ी पशु आसानी से आ जा सकें।
गोह	स्त्री०	(कां)	एक जानवर विशेष। इसकी पूंछ बहुत लम्बी और मजबूत होती है, यह अपने शत्रु जानवरों को पूंछ से ही मारती है ।
गोहट्टु	पु०	(कां)	गोबर की छोटी पाथी।
गोहर	स्त्री०	(कु०,कां)	रास्ता।
		(कां)	प्रयोग—डंगरा जो गोहरा बानी पानी जो लेई जाया। पशुओं को पानी पिलाने के लिए रास्ते से ले जाओ।
		(कु)	गोहर चूटी। रास्ता टूट गया।
गोरण	सं०	(कां)	पशु बाड़ने का स्थान।
ग्होना	क्रि०	(कां)	टट्टी हो जाना । प्रयोग—मुन्नुए ते पजामें च ग्होई गया। बच्चे की पाजामे में ही टट्टी हो गई।
गौड़	स्त्री	(कां)	एक प्रकार की मछली।
गौष	पु०	(कु०,गा)	भेड़ का छोटा सा बच्चा।
गौषी	स्त्री	(कु०,गा)	भेड़ की छोटी बच्ची।
गौल केरनी	क्रि०	(कु)	बात करना ।
गौलू	पु०	(कु)	घराट के पाट का छेद।
गौला	पु०	(कां)	चूल्हे का अगला प्रमुख भाग जहां आग की पूरी लपट आती है।
घड़ोंची	स्त्री	(कां)	भीड़ीतोरी। (पालमपुर की तरफ आम होती है)।

घ

शब्द	व्याकरण		अर्थ
घंडाड़ा	पु०	(कां)	मकान के खण्डहर ।
घचोल	पु०	(कां)	अव्यवस्था ।
घटि	उपसर्ग	(कां)	बिना, कम, न्यून।
घट्टी	स्त्री०	(कां)	किसी पहाड़ी पर जाने का वह चढ़ाई का रास्ता जो "घड़ु" की तरह खड़ा और सीधा न हो अपितु अपेक्षाकृत सरल हो ।
घड़ु	पु०	(कां)	खड़ी और सीधी पहाड़ी।
घड़ेतण	स्त्री०	(कां)	पानी के घड़ों को रखने के लिए लकड़ी का स्टैण्ड ।
घड़ेला	पु०	(कां)	गढ़ा जिस में कि काहूरा को फिट किया जाता है ।
घड़ोत	पु०	(कां)	जन्म के शीघ्र पश्चात् बच्चों को पिलाया जाने वाला दूध मिला पानी।
घड़ोलू	पु०	(कु,०कां)	छोटा घड़ा।
घण	पु०	(कु०,कां)	बड़ा हथौड़ा ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
घणचाल	पु०	(कां)	ग्वालों की एक खेल विशेष, जिसे पत्थर के छोटे-छोटे कंकरों से खेलते हैं।
घतना	क्रि०	(कां)	ऋणदाता के यहां काम करके ऋण चुकाना।
घमाए थां		(कां)	बधाई, मुबारिक हो, क्षमा करें। बातचीत के प्रसंग में किसी देवता का नाम आने पर उस देवता की समृद्धि के निमित्त कहा गया शब्द। प्रयोग—गुगए जो रोट चढ़ाई करें उन्हें घमाएआं मंगी। गुगे (देवते) को रोट चढ़ा कर उसने उससे क्षमा मांगी।
घर	पु०	(कां)	वस्तुरूपेण दिया गया किराया।
घरे के चोरे दी सरोआं के मोरे दी राखी भी हुंदी	लोकोक्ति	(कां)	घर का भेदी लंका ढाए।
घरनाड़ी	पु०	(कां)	घर में पालतू शहद की मक्खियों का छाता।
घरसोड़	पु०	(कां)	एक छोटा सा मकान, कुटिया।
घरसेर	सं०	(कां)	ऐसे खेत जो घर के आसपास हों, जिन में अच्छी खाद पड़ती हो और अच्छी उपज होती हो।
घराट	पु०	(कु०,कां)	पानी से चलने वाली आटे की चक्की।
घराटी	पु०	(कु०,कां)	घराट चलाने वाला व्यक्ति विशेष।
घराल	स्त्री०	(कां)	अस्थायी झोंपड़ी।
घरिण्ड	स्त्री०	(कां)	भेड़ की काठी, पहाड़ की दुश्वार घाटियों में भार के वहन का कार्य भेड़ों द्वारा किया जाता है।
घरिस्त	स्त्री०	(कां)	गृहस्थ।
घरोणी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का पक्षी जो बोतलनुमा घोंसला बनाता है।
घरूक	पु०	(कां)	रस्सियों का पुल।
घरू	पु०	(कां)	मालबन्दोबस्त की ऐसी मुजारागिरी जिसके अनुसार जमींदार वैयक्तिक रूप में प्रत्येक खेत की उपज का कुछ हिस्सा लगान के तौर पर लेता है।
घरैत	पु०	(कां)	सम्बन्धी।
घरोना	क्रि०	(कां)	सूर्यास्त होना, सूरज का गुरूब होना। प्रयोग—ध्याड़ा घरोई गिया। दिन अस्त हो गया।
घलांदर	पु०	(कां)	वानर की जाति का एक जानवर जिस का मुंह काला होता है।
घलियारना	पु०	(कां)	'काहूरा' देसी खड्डी के दस्ते के ऊपर का सन्तुलन ठीक रखने वाला डंडानुमा उपकरण विशेष।
घशीटना	क्रि०	(कु०,कां)	घसीटना।
घांगड़ी	स्त्री०	(कु)	एक प्रकार का चावल।
घाड़	पु०	(कां)	वर्षा के कारण गिरा हुआ पहाड़ का तोदा।
घाड़की	पु०	(कां)	दूसरे की वस्तु जबरदस्ती उठाने वाला।
घाड़ू	सं०	(कां)	पत्थर घड़ने वाला।
घाण	पु०	(कां)	गन्नों का उतना समूह जितना गन्ने के बेलने में एक बार आ सकता है।
घाम	पु०	(कु)	गर्मी।
घाल	पु०	(कां)	दूध वाले बरतन को थोड़े से पानी से धोकर दूध को गर्म करते समय उस में डालना ताकि उबलते समय दूध कम जले।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
घाल	स्त्री०	(कां) इमारती लकड़ी को जंगलों से काटकर नदी के बहाव में डालकर दूसरे स्थान पर ले जाने का भाव ।
घालकी	पु०	(कां) सहायता देने वाला ।
घालना	क्रि०	(कां) सहायता देना ।
घियाणा	पु०	(कां) एक पौधा विशेष, इस की टहनियां पौनू घास की तरह होती हैं परन्तु पत्ते बांस वृक्ष के पत्तों की तरह ।
		(कु) कुल्लू में बच्चे को टट्टी करवाना ।
घुंघणियां	स्त्री०	(कां) गेहू के उबाले हुए दाने ।
घुभाड़ा	पु०	(कां) सूखी घास को काट कर सुरक्षित रखने के लिए उसी घास के पूलों का विशेष विन्यास ।
घुघू	पु०	(कु०,कां) कबूतर ।
घुटारी	स्त्री०	(कां) एक पक्षी विशेष ।
		(कु) 'घियारी' ।
घुमाटा	पु०	(कां) सिर में चक्कर आने की बीमारी
घुर गढ़	स्त्री०	(कां) बागड़ घास की जाति की एक घास विशेष जो घोड़ों के लिए मन भाता चारा होती है ।
घेसला	वि०	(कां) मन की बात न बताने वाला (पं० मचला) ।
घोटा	पु०	(कां) पटसन के पत्तों से बनाई गई मदिरा जिस में धीमा सा नशा होता है ।
घोड़ल	पु०	(गा, कां) बकरी के गले के अतिरिक्त स्तन जिन में दूध नहीं होता ।
घोड़ीना	क्रि०	(कु) लाठी से लड़ाई करना ।
		"च"
चंगेड़ु	पु०	(कां) छोटी चंगेर ।
चंगेर	स्त्री०	(कां) बांस की गोलाकार टोकरी जो ऊंची तो केवल आध फुट होती है परन्तु घेरा बहुत अधिक होता है। इसमें खमीर वाले कच्चे भटोरे रखे जाते हैं ।
चन्दरा	वि०	(कां) सूम, कंजूस, अनिष्ट ।
		(कु) चालाक ।
चन्द्रौली	स्त्री०	(कु) कृष्ण-गोपियों की रासलीला का स्वांग ।
चम्बा	पु०	(कां) चम्पा । एक फूल विशेष ।
चक	पु०	(कां) चरखें का चक्र विशेष ।
चक	पु०	(कां) सिर का आभूषण जो विवाहित स्त्रियां पहना करती हैं ।
चकली	स्त्री०	(कां) गन्ना पीड़ने के लिए लकड़ी के बेलने का छोटा चक्र ।
चक्कमनका	पु०	(कां) विवाहोत्सव में पहने जाने वाले "डोरकने" के साथ लगे चांदी के छोटे छोटे पत्र ।
चकीर	स्त्री०	(कां) दो अलग अलग मालिकों के खेतों के मध्य में विभाजन रेखा ।
चक्की	स्त्री०	(कां) व्यास की एक सहायक नदी ।
चकोला	पु०	(कां) वर्गाकार ।
चकौता	पु०	(कां) माल बन्दोबस्त में मालिक द्वारा मुजारे से लिया जाने वाला निश्चित दर जिसका कुछ हिस्सा वस्तुरूप में होता है और कुछ हिस्सा नकदी रूप में ।
चघेड़	पु०	(कां) चारों तरफ से घिरा हुआ स्थान, चक्रव्यूह ।
चटड़ा	पु०	(कां) सिंचाई के लिए खेतों में बनाई गई छोटी सी कूल्ह ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
चटंड	स्त्री०	(कां)	किसी कुएं पर पशुओं को पानी पिलाने के लिए पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई नाद अथवा डोणी ।
चटूआ	पु०	(कां)	बड़ा चमचा, डोई, कड़छी ।
चण	स्त्री०	(कां)	गन्ने की किस्म, इसका पौधा पतला होता है और उस पर फूल नहीं आता आड कम होता है परन्तु रस मीठा और स्वास्थ्यवर्धक होता है ।
चताड़	पु०	(कां)	जंभीर जाति का एक फल विशेष जिस के कांटे नहीं होते ।
चतरेंड़	पु०	(कां)	एक मछली विशेष ।
चतुर्थी न	म०	(कां)	चतुर्थी हवन, विवाहोत्सव के चौथे दिन नवविवाहित वधू से भोजन आदि तैयार करवाना।
चतन्दू	पु०	(कां)	चार तन्तुओं वाला, चारपाई बुनने का एक ढंग जिस में चार चार रस्सियां इकट्ठी चलाई जाती हैं ।
चनक	स्त्री०	(कां)	झनझनाहट ।
चनराल	पु०	(कां)	पिछले वर्ष से पिछला साल ।
चनाट	पु०	(कां)	पत्थरों से चिन कर बनाया गया रास्ता ।
चनात	पु०	(कां)	"कुनाल" पहाड़ की चोटी तक जाने के लिए पत्थरों से पक्का बनाया हुआ रास्ता ।
चनाहूर	पु०	(कु)	पिछला चौथा वर्ष ।
चन्ना	पु०	(कां)	मकान का पार्श्व ।
चनू	पु०	(कां)	खेत के एक किनारे पर किया गया छोटा छेद जिसके द्वारा खेत का पानी नीचे बह कर बाहर निकल जाए ।
चपना	क्रि०	(कां)	गुस्से होना ।
चपलियां	स्त्री०	(कां)	चप्पल ।
चपेरना	क्रि०	(कां)	नाराज करना, गुस्सा दिलाना ।
चाबंदना	क्रि०	(कां)	प्रात: काल मुंह जूठा करना । प्रात: काल सबसे पहले कुछ खाना ।
चबूदा	पु०	(कां)	[illegible] ।
चमकार	पु०	(कां)	चमड़े का पाजामा जो कि लड़ाई के समय राजपूत लोग पहनते थे ।
चमड़ा	पु०	(कां)	पशुओं का चर्म ।
चमड़ी	स्त्री०	(कां)	मानव चर्म ।
चमण	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष ।
चमरख	स्त्री०	(कां)	चरखे का एक उपकरण ।
चमाई	पु०	(कां)	एक प्रकार का छोटा वृक्ष, जिसके पत्तों की 'पाथी' बनती है, और इसकी लकड़ी के जरायती औजार बनाए जाते हैं ।
चमशा	पु०	(कां)	सफेद रंग की धातु का बना हुआ बर्तन ।
चर	स्त्री०	(कां)	देखो 'चीण' ।
चरज	पु०	(कां)	आश्चर्य ।
चरणदासी	स्त्री०	(कां)	जूती ।
चमंस	स्त्री०	(कां)	चम्मच ।
चरांद	स्त्री०	(कु०, कां)	वह शामलाट जो पशुचारण के लिए खुली छोड़ी हुई हो ।
चराई	स्त्री०	(कां)	एक "धार" का नाम ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
चरागी	स्त्री०	(कां)	नदीपार करने वाले मल्लाहों को दिया जाने वाला पुरस्कार, खुशीनामा ।
चराटी	स्त्री०	(कां)	मूमी, हिल्ली अंग्रेजी, हाइंड ।
चरेतर	स्त्री०	(कां)	घर के आंगन का वह भाग जहां जलाने की लकड़ी जमा रखी जाती है ।
चरेता	पु०	(कां)	एक प्रकार की जड़ी बूटी जो मलेरिया बुखार के लिए अक्सीर समझी जाती है ।
चरोटी	स्त्री०	(का)	पीतल का वह बड़ा बर्तन जिसमें किसी प्रीतिभोज अथवा धाम के लिए चावल पकाए जाते हैं ।
चरोटू	पु०	(कां)	पीतल के बड़े बर्तन जिनमें भोजन आदि पकाया जाता है ।
चल-चुक	स्त्री०	(का)	हेरा फेरी ।
चल्लट	पु०	(कां)	मकई के टांडे ।
चल्टी	स्त्री०	(कां)	मिट्टी का एक बड़ा बर्तन जिसमें दही बिलो कर छाछ बनाई जाती है ।
चलाण्	पु०	(का)	'चनाहड़' चीड़ वृक्ष के सूखे पत्तों के टुकड़े ।
चलीथ	पु०	(का)	चावल का आटा ।
चलूना	पु०	(का)	चिनार का वृक्ष ।
चलेतू	पु०	(कां)	फल काट लेने के बाद पौधे की डंडी ।
चलेरा	पु०	(कां)	एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके पत्तों का शाक बनता है ।
चलोतड़ा बूड़ा	पु०	(कां)	एक प्रकार का अंजीर का वृक्ष जिसके पत्ते फटे हुए होते हैं ।
चांजरा	वि०	(कां)	अच्छा ।
चांद	पु०	(कां)	विवाह उत्सव पर महिमानों को बुलाने के लिए भेजा गया व्यक्ति ।
चांप	स्त्री०	(कां)	कंघी की तरह की एक मछली विशेष जो कंघी से अधिक लम्बी होती है ।
चाम्प फेरना	क्रि०	(कां)	चापलूसी करना
चाम्ब	स्त्री०	(का)	दरिया के किनारे अथवा पर्वत की चोटी का उच्चतम स्थान ।
चांवड़ू	पु०	(कु)	पतीला ।
चांश	स्त्री०	(कां)	गन्ने के खेत में नलाई करने का एक औजार विशेष ।
चांस	स्त्री०	(कां)	देखो 'चंच' ।
चा:	स्त्री०	(कां)	इच्छा ।
चाकटी	स्त्री०	(कु)	चावल या जौ से बनी हुई मदिरा ।
चाकरी	स्त्री	(कु०, कां)	देवता की नौकरी ।
चाकू	पु०	(कु०,कां)	एक वृक्ष जिसकी टहनियों की टोकरियां बनाई जाती हैं ।
चाचा	पु०	(कां)	लकड़ी का एक हैंडल जो कुल्लियों के रस्से के साथ बंधा रहता है । इससे वे बोझ उठाते समय भार को बराबर करते हैं ।
चाची (चौंची)	स्त्री०	(कां)	लकड़ी की आठ 'कान्त' का सैट जो मकान की चारों दीवारों और छत को स्थिर रखता है । लकड़ी की एक कान्त दीवार के अन्दर होती है और एक बाहर ।
चाचु	पु०	(कां)	चाचा, सम्बोधन में पिता के लिए भी प्रयुक्त होता है ।
चाठ	स्त्री०	(कां)	गन्ने के रस से गुड़ शक्कर बनाने के लिए बनाई गई मिट्टी की परात विशेष ।
चाड़ पाणा	क्रि०	(कां)	चीते और भेड़िए आदि का शिकार करने के लिए घेरा डालना ।
चाण	स्त्री०	(कां)	गन्ने की एक किस्म ।
चातर	वि०	(कां)	चतुर ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
चानकनी	स्त्री०	(कां) चीने का भूसा ।
चान्ना	पु०	(कां) मछलियों की त्वचा पर पाए जाने वाले छोटे छोटे दाने ।
		(कु) त्वचा का छोटा सा टुकड़ा ।
चानी	पु०	(कां) वह व्यक्ति जो खेत में पक्षियों और पशुओं से फसलों की रक्षा के लिए नियुक्त हो ।
चान्नी	पु०	(कां) एक प्रकार का पत्थर जिसकी बनावट चिट्टान जैसी होती है ।
चाब	सं०	(कां) चाह ।
चाबल	स्त्री०	(कां) परचून की दुकान का उधार ।
चाहड़	पु०	(कां०, कु) बहुत बड़ा पत्थर ।
चालनी	स्त्री०	(कां) चलनी, एक प्रकार का उपकरण जिस की सतह में छेद होते हैं और जिसमें मोटे अनाज को छोटे अनाज से जुदा किया जाता है ।
चाह् न	स्त्री०	(कां) एक मछली विशेष ।
चाह् न चाहूल	स्त्री०	(कां) चहल पहल, रौनक ।
चिड़	स्त्री०	(कु०) घृणा ।
चिड़ आणणा	क्रि०	(कु) घृणा होना ।
चितना	क्रि०	(कां) सोचना, विचार करना, हिन्दी चिन्तना ।
चिठली	स्त्री०	(कां) 'थोई' नामक वृक्ष ।
		(कु०) तवे के ऊपर तेल या घी लगाने के लिए घास का छोटा गुच्छ
चिठली लाना	क्रि०	(कु०) तवे के ऊपर तेल या घी लगना
चिमोकुना	क्रि०	(कां) देखो 'चीड़ना' ।
चिक	स्त्री०	(कां) मिट्टी, खेत, भूमि ।
चिकरी रा मैहा	पु०	(कु०) ऐसा व्यक्ति जो भैंसे की तरह गंदा रहता हो ।
चिचड़े आलू	सं०	(कु०) कचालू ।
चिट्टिल	स्त्री०	(कां) सफेद रंग का चील पक्षी ।
चिड़	पु०	(कां) एक प्रकार का कीट जो पशुओं के शरीर में चिपका रहता है ।
चिड़	पु०	(कु०,कां) पक्षी । चिड़िया का बच्चा ।
चिड़ मुड़	पु०	(कां) जलाने वाली लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े जो आग सुलगाने के काम आते हैं ।
चितारना	क्रि०	(कां) याद करना ।
चितेरना	क्रि०	(कां) ढील देना ।
चिनणा	क्रि०	(कां) तरतीब में रखना । (घर) बनाना ।
चिना	पु०	(कां) एक प्रकार का छोटा पौधा, इस के पत्ते फोड़े को फुटाने के लिए तेल लगा कर गर्म करके बांधने से लाभदायक होते हैं । रंग-बिरंगे ।
चितेहा	पु०	(कां) चित्रकार, चित्रकार जाति का व्यक्ति ।
चिप	पु०	(कां) मछलियां पकड़ने का एक जाल ।
चिकना	वि०	(कु०,कां) फिसलने वाला (रास्ता) ।
चिमारी	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का गेहूं ।
चिमकटी	वि०	(कां) दुर्बल ।
चिमटा	पु०	(गा) ऊंची जगह ।
चिरंडी	पु०	(कां) एक प्रकार का वृक्ष ।
चिरोटी	स्त्री०	(कां) धातु का एक बरतन ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
चिलक	स्त्री०	(कु)	किरण।
			प्रयोग—सूर्ए री चिलक लग्गी।
			सूर्य की किरण निकल आई।
चिलुआ	पु०	(कां)	एक प्रकार की छोटी मछली।
चिल्ला	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
चिल्ला मरोला	पु०	(कां)	आम दाड़िम की पूजा के अवसर पर गीत गाने के लिए आई स्त्रियों को बांटे जाने वाले पीले चावल।
चिस	सं०	(सि)	प्यास।
			प्रयोग—मू लायी चिस।
			मुझे प्यास लगी है।
चीचू (चूचू)	सं०	(कां०कु)	स्तन का अगला भाग।
चीठा	वि०	(कु)	काला।
चीड़नी चीड़नू	स्त्री०	(कां)	आसाढ़ मास के मासान्त का त्योहार जब चीड़नुओं को पशुओं के शरीर से उतार कर गूंधे हुए आटे के पेड़ों में रोपकर रखा जाता है। और फिर उन्हें आग में जला दिया जाता है।
चीणी	स्त्री०	(कु)	चावल की किस्म का अनाज, जिस के दाने बारीक और सफेद होते हैं।
चुंचल	पु०	(कां)	एक प्रकार का काले रंग का पक्षी।
चुंधी	सं०	(कां)	चोटी।
चुंडा	पु०	(कु)	जूड़ा।
चुआड़ी	स्त्री०	(कां)	छोटा पतला बांस।
चुआलू	पु०	(कां)	मिट्टी का बर्तन जिस में चावल पकाए जाते हैं।
चुकना	क्रि०	(कां)	समाप्त होना, उठाना।
चुकड़ मुकड़	सं०	(कां)	छोटे मोटे टुकड़े।
			प्रयोग—अग्ग बालने जो थोड़े दए चुकड़ मुकड़ कट्ठे करा।
			आग जलाने के लिए लकड़ी के थोड़े से टुकड़े इकट्ठा करें।
चुगना	क्रि०	(कां)	१—चुनना।
			प्रयोग—चिड़ियां सारे चौल चुगी गइयां।
			चिड़ियां सारे चावल चुग गईं।
चुगीर	पु०	(कु० कां)	एक पक्षी विशेष इस के चहचहाने में "चौल रिन्नां क खिचड़ी" शब्दावली का अर्थाभास किया जाता है।
चुनिक	स्त्री०	(कां)	सफेद मिट्टी, जिस से दीवार पर सफेदी की जाती है।
चुटकी	स्त्री०	(कां)	नाक का आभूषण।
चुटला	पु०	(कां)	महीने के अन्तिम दिन।
चुटना	क्रि०	(कां)	समाप्त करना।
		(कु)	टूट जाना।
चुड़ाल	पु०	(कां)	चावलों से बना हुआ एक प्रकार का पलाव।
चुड़ैल	स्त्री०	(कां)	भूतप्रेत, विनाशकारी चेतना जो किसी शरीर में प्रवेश करके उस से अनिष्ट कार्य करवाती है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
चुग्गू	पु०	(कां)	गहूंने के पौधे की जाति का एक पौधा जिस में कांटे नहीं होते हैं अथवा बहुत नर्म होते हैं।
चुनौट	पु०	(कां)	पत्थर लगा कर पक्का किया हुआ रास्ता।
चुपंजी	पु०	(कां)	अनाज पर २५ प्रतिशत वार्षिक दर।
चुल्हा	पु०	(कां)	गुड़ शक्कर आदि बनाने के लिए गन्ने के रस को ताप देने के लिए बनाई गई एक बड़ी भट्ठी जो गन्ने के बेलने के साथ ही बनाई हुई होती है।
चुबार	पु०	(कां)	मकान की ऊपर वाली मंजिल।
चुरली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का गेहूं।
चुरस्ता	पु०	(कां)	चौराहा।
चूला	पु०	(कां)	खेत।
चूली	स्त्री०	(कां)	चुल्लुभर चुल्लुभर।
चुली	सं०	(कु)	नाक का अगला भाग।
चुली पांडा	सं०	(चि)	रसोई घर। प्रयोग—भो दज्जे बाऊ ऐ लाई लेरा लाई चिश चुल्ली पांडे दके। भो मां! भो मां! छोटा बच्चा रो रहा है और मुझे प्यास लगी है, शीघ्र ही रसोई घर में आ जाओ।
चुल्हू	पु०	*(कां)*	*छोटा सा खेत।*
चेई	सं०	(कां)	जड़।
चेटी	स्त्री०	(कां)	ब्राह्मणी जात की जमीन, जिस का लगान माफ होता है।
चेली	स्त्री०	(कां)	चील वृक्षों का जंगल।
चेतु	पु०	(कां)	छोटे मोटे साधारण पक्षी।
चोग्रा	पु०	(कां)	पशुओं के मूत्र को राख में से बूंद बूंद चुआ कर तैयार किया गया एक द्रव्य विशेष जो कपड़े साफ करने के काम आता है।
चोई	स्त्री०	(कां)	छोटा बरसाती नाला।
चोखा	वि०	(कां)	प्रसन्न।
		(कु)	सफाई, शुद्धता।
चोड़ना	क्रि०	(कु)	छिलका, छाल या खाल उतारना। तोड़ना।
चोपड़	पु०	(कु०कां)	मक्खन।
चोयी	स्त्री०	(कां)	गहूंने आदि जंगली फलों को तोड़ कर इकट्ठा रखने के लिए हरे पत्तों का बनाया हुआ गलासनुमा पात्र।
चोब	पु०	(कां)	शामियाने का डंडा।
चोब	स्त्री०	(कां)	ढोल अथवा डमरू बजाने के लिए घड़ कर बनाई गई लकड़ियां।
चोबक्	पु०	(कां)	मकान की दूसरी मंजिल में छोटा सा दरवाजा जिसके द्वारा नीचे की सीढ़ी से चढ़ कर मकान की दूसरी मंजिल में पहुंचते हैं।
चोबी	स्त्री०	(कां)	घराट के नीचे की पानी की बड़ी कूल्ह।
चोभ्	सं०	(कां)	मकान की दूसरी मंजिल में छोटा सा द्वार जहां नीचे की सीढ़ियां खुलती हैं।
चौर	सं०	(कु)	एक प्रकार का वृक्ष जिस के पत्ते भेड़ों के लिए अच्छे समझे जाते हैं और जिस की लकड़ी जलाने के काम आती है।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
चोरिया	निर्पेक्ष कृदन्त	(कां) गुप्त रूप में। चोरी करके। चुपके से। प्रयोग—सै इत्थु चोरिया आया। वह यहां चुपके से आया।
चोलर	सं०	(कां) तीन लड़कियों के पश्चात् पैदा हुआ लड़का अथवा तीन लड़कों के पश्चात् पैदा हुई लड़की।
चोलियालू	पु०	(कां) रसोई घर, वह कमरा जिस में खाना बनाने के लिए चुल्हा बनाया हुआ हो।
चोली	स्त्री०	(कु०कां) अंगी।
चौंकू	पु०	(कां) चांदी का आभूषण जो सिर पर बालों के साथ नत्थी करके पहना जाता है।
चौंकली	स्त्री०	(कां) गले में पहनने का चांदी का आभूषण।
चौकंद	पु०	(कां) पिता की मृत्यु के पश्चात् पैदा हुआ पुत्र।
चौकाली	स्त्री०	(कां) गन्ने पीड़ने के लकड़ी के बेलने का छोटा चकरा।
चौच	पु०	(कु०कां) पुरुष, मर्द।
चौथेगू	पु०	(कां) वह मुजारा जो खेत की उपज का तीन चौथाई मालिक को देकर स्वयं एक चौथाई लेता है।
चौंधर	अ०	चारों तरफ।
चौर	पु०	(कां) एक प्रकार का पत्थर।
		छ
छंजराड़ा	पु०	(कां) विधवा विवाह।
छंडना	क्रि०	(कां) देखो "छंजना"।
छन्दें	स्त्री०	(कां) मिन्नत।
छई	स्त्री०	(कां) विवाह उत्सव के लिए लकड़ी, काटी हुई लकड़ी।
छक्का पंजा	पु०	(कां) काम काज।
छक्कू	पु०	(कां) देखो "टोप्की"।
छट्टी	स्त्री०	(कां) हल के फाल और कूंडे के मध्य में लकड़ी का पुर्जा।
छड़	स्त्री०	(कां) एक टोकरी विशेष जो विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर दिए गए प्रीति भोजों में भात परोसने के काम में आती है और विवाह आदि उत्सवों के समय खाने पीने की वस्तुएं रखी जाती हैं।
छड़ी	स्त्री०	(कां) लकड़ी, छड़।
छड़ोला	पु०	(कां) खेत के चारों ओर बाड़ लगाने के बाद एक स्थान पर मनुष्यों के अन्दर जाने के लिए परन्तु पशुओं को रोकने के लिए बनाया गया "प्रवेश द्वार" जोकि साधारणतया लकड़ी की लठों को कर्ण रेखावत रख कर बनाया जाता है।
छड़ोली	स्त्री०	(कां) छोटी छड़।
छड़ोलू	पु०	(कां) बच्चों के पैरों के आभूषण।
छणाली	स्त्री०	(कां) मिट्टी का खुला बड़ा बर्तन।
छत्तणु	पु०	(कां) रसोई घर में दीवार के साथ बनाई गई छोटी सी छत जिस पर बर्तन अथवा खाद्य पदार्थ रखे जाते हैं।
छतरोड़ा	पु०	(कां) टौर के पत्तों और भोज पत्रों का छाता।
छतोड़	पु०	(कां) टौर के पत्तों की एक बड़ी छतरी।
छतोड़ू	पु०	(कां) छोटा "छतोड़ा"।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
छनार	स्त्री०	(कां) बूढ़ी औरत।
छनियार	स्त्री०	(कां) पहाड़ी मकानों की छत का बढ़ा हुआ हिस्सा, जिस से वर्षा के समय मकान की दीवार सुरक्षित रहती है।
छरमर	पु०	(कां) एक प्रकार का छोटा सा पौधा। आंखें आने पर इसके पत्तों का लेप किया जाता है।
छल	पु०	(कां) पानी की लहर।
छल	पु०	(कां) १—भूत प्रेत। २—धोखा।
छल्ल	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष जिस की लकड़ी इमारती कामों में काम आती है।
छल्ली	स्त्री०	(कां) मकई ।
छलाकी	स्त्री०	(कां) पकी हुई खट्टी दाख।
छलियाटू	पु०	(कां) खेत में से मकई की फसल काट लेने के बाद खेत में रहा मकई की टहनी का अवशिष्ट भाग।
छलियाड़ी	स्त्री०	(कां) मकई बीजने की भूमि, मकई की फसल काट लेने के पश्चात् सख्त जमीन।
छलियाड़ी पुटनी	क्रि०	(कां) छलियाड़ी वाले खेत में हल चलाना।
छलियाड़ी वाःणी	क्रि०	(कां) देखो "छलियाड़ी पुटनी"।
छलेड़ा	पु०	(कां) भूतप्रेत।
छलोई	पु०	(कां) गन्ने को छील तराश करके बेलने के योग्य बनाने वाला।
छांगणा	क्रि०	(कां) वृक्ष पर से घास काटना।
छांब	स्त्री०	(कां) उभरी हुई भूमि।
छाऊ	पु०	(कां) छोटी कुल्हाड़ी।
छाकू	पु०	(कां) बांस की छोटी टोकरी जिस में एक सेर भर अनाज आता हो।
छाटी	स्त्री०	(कां) देखो "छट्टी"।
छाडां	स्त्री०	(कां) किसी वस्तु के प्रवाह को पार करने के लिए बड़े मोटे मोटे पत्थर डाल कर बना हुआ रास्ता।
छानी	स्त्री०	(कां) शक्कर बनने से पूर्व गर्म और उबल रहे रस के द्रव्य से बनाया गया एक पदार्थ विशेष। उबल रहे रस के शक्कर गुड़ आदि बनने की सीमा तक पहुंचने के कुछ समय पहले एक थाली में कुछ घी लगा कर एवं बादाम और दाख आदि डाल कर उस में वह उबल रहा रस वाला पदार्थ भर लिया जाता है और उसे ठंडा होने दिया जाता है। ठण्डा होकर वह पदार्थ एक विशेष प्रकार के गुड़ में बदल जाता है उसे छानी कहते हैं।
छापर	पु०	(कां) मकान, छप्पर।
[illegible]	पु०	(कां) एक प्रकार की बूटी जिस के पत्तों का पानी आंखों में लगाने से आंखों में ठण्डक रहती है।
छाबड़ी	स्त्री०	(कां) बांस की बनी हुई छोटी टोकरी।
छाब्बा	पु०	(कां) तराजू का एक पलड़ा।
छाबी	स्त्री०	(कां) एक छोटी टोकरी जिस में रोटियां आदि रसोई की वस्तुए रखी जाती हैं।
छास	स्त्री०	(कां) छाछ।
छाह	स्त्री०	(कां) छाछ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
छिंज	स्त्री०	(कां)	ग्राम देवता के प्राङ्गण में पहलवानों के मल्ल युद्ध का उत्सव।
छिकड़ा	पु०	(कां)	रस्सियों अथवा बांस के "दीप" से निर्मित टोकरीनुमा छोटे छोटे उपकरण, जिन्हें हल चलाते समय बैलों के मुहों पर चढ़ाया जाता है ताकि बैल खेतों में उगी फसल आदि का नुकसान न कर सकें तथा चारा खाने की प्रवृत्ति रुकी रह सके।
छिक्का	पु०	(गा)	बोझा, भार।
			२—रस्सियों अथवा बांस को छील तराशकर बनाई गई छोटी छोटी छड़ियों से निर्मित छोटी सी टोकरी इसे छत में लटका कर खाद्य पदार्थ रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, ताकि वे बिल्लियों आदि जानवरों से सुरक्षित रहें।
छिक्की	स्त्री०	(कु०गा)	रस्सियों का बना हुआ बड़ा थैला।
छिचर	पु०	(कां)	टूटी वस्तुओं का ढेर।
छिट	स्त्री०	(कु)	पानी की बूंद।
		(कां)	चुलबुली औरत।
छिड़ी	सं०	(कु)	जलाने की लकड़ी।
छिणका	पु०	(कां)	घराट की नाल में पानी छान कर देने का एक उपकरण।
छितरी	स्त्री०	(कां)	स्त्रियों की जूतियां।
छितरखु	पु०	(कां)	एक विशेष प्रकार का वृक्ष जिसे ऊंट बड़े शौक से खाते है।
छिपणा	क्रि०	(कु)	तापना।
छिब्बर	पु०	(कां)	पशुओं के हाजमे की बीमारी जिस में पशुओं का गोबर बड़ा ढीला सा और अनियमित सा होता है।
छुंगना	क्रि०	(कां)	बिखरी चीजों को तरतीब देकर रखना, सिंगारना।
		(कु)	छूहना।
छुछरू	पु०	(कु)	एक वनस्पति विशेष, "गुच्छी"।
छुम्ब	पु०	(कां)	पशुओं के चारे के लिए रखे गए मकई के डांठों के गट्ठों का ढेर।
छुणाटू	पु०	(कां)	छू के पौधे का सूखा गट्ठा।
छुंछी	सं०	(कां)	केसर डालने का लकड़ी अथवा मिट्टी का एक बर्तन विशेष।
	वि०	(कु)	तंग बिल वाली।
छुड़ां	पु०	(कां)	भुने हुए चावल।
छुब्बा	पु०	(कां)	बगड़ आदि घास की बनी हुई वह रस्सी जिस के साथ घास आदि का गट्ठा बांधा जाता है।
छुरा	पु०	(कां)	एक प्रकार का घास जिस का शाक भी बनता है।
छुराल	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष जिस के पत्ते पशुओं की कब्ज को दूर करते हैं।
छुरूक	पु०	(कां)	देखो "कुआल"।
छुह	स्त्री०	(कां)	कैक्टस, एक प्रकार का पौधा जिस की डाल पानी चूस लेती है और पौधे को पानी देने का कार्य करती है।
छेकें छेकें	क्रि०	(कु)	जल्दी जल्दी।
			प्रयोग—छेकें छेकें चौला छेता बै कोम कमौंदे।
			जल्दी जल्दी चलो खेत को काम करने के लिए।
छेत	पु०	(कु)	खेत।
छेती	स्त्री०	(कु)	विवाहित स्त्री की निजी सम्पत्ति।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
छेंपी	सं०	(कां) मिट्टी का वह ढींमा जिस में घास भी उगी हो।
छेलडू	पु०	(गा) बकरी या भेड़ का बच्चा।
छेब्रू	पु०	(गा) भेड़ का बच्चा, सामान्य कांगड़ी में बकरी का बच्चा।
छैई	स्त्री०	(कां) पाली, वृक्षों की टहनियां जो खाद के रूप में खेतों में डाली जाती हैं।
छैणी	सं०	(कु०कां) मकान की छत की ढलान।
छैना	क्रि०	(कां) मकान की छत डालना।
छैर	स्त्री०	(कां) पहाड़ी।
छैल	वि०	(कां) सुन्दर बांका।
छोंदा लाणा	क्रि०	(कु) निमन्त्रित करना।
छो	पु०	(कु०कां) जलधारा।
छोकरू	पु०	(कां) देखो "छोह्रू"।
छोड़े	अ०	(कां) जल्दी शीघ्र। प्रयोग—छोड़ें आई जायां। जल्दी आ जाना।
छोपा	पु०	(कु०कां) टीका।
छोल	सं०	(कु०कां) आबशार, झरना।
छोह्रू	पु०	(कां) किशोर अवस्था, लड़का।
छोन	अं०	(कु) अवकाश, फुरसत का वक्त।
छौंकण	स्त्री०	(कां) शौक रखनेवाली।
छोड़ा	पु०	(कां) वह मोटी सी रस्सी जो दही रिड़कने समय मथानी और लकड़ी के खूंटे के साथ बांधी जाती है।
छौरा	पु०	(कां) छाया, साया।
		"ज"
[illegible]	पु०	(कां) इन्जैक्शन, टीका।
जंमसेरना	क्रि०	(कां) कृषि "आलिन्द" के किनारे को भूमि की अन्दर की तर्फ खोदना।
जंबरौन	पु०	(कां) किसी औरत को अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण करने के लिए दी जाने वाली रकम।
जंडी-मंजी	स्त्री०	(कां) पशुओं के देवता के उपलक्ष में मनाए गये त्यौहार।
जंदीड़ू	पु०	(कां) सूत को दोहरा करने वाला देसी जुलाहों के पास एक उपकरण विशेष।
[illegible]	पु०	(कां) बढ़ई में काष्ठ के दो पुर्जों के मिलने का स्थान।
जग	पु०	(कां) मेला, विवाहोत्सव का पहला दिन।
जगराता	पु०	(कां) किसी देवस्थान पर देवता की प्रसन्नता के लिए सारी रात जागते रहने की क्रिया। प्रयोग—अज रती गुगे दे मन्दर च जगराता था। आज रात गुगे (देवते) के मन्दिर में जगराता था।
जगसुन्दरी	स्त्री०	(कां) कांगड़ा सदर के पास एक 'धार' विशेष।
जटागल	स्त्री०	(गा) लम्बे बालों वाली बकरी।
जठाल	स्त्री०	(कां) देखो "जेठल"।
जठेरा	पु०	(कां) मलाना गांव में बादरी के झगड़ों के निपटाने के लिए नियुक्त किया गया व्यक्ति।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
जड़	स्त्री०	(कां)	जांघ, टांग।
जड़ी	स्त्री०	(कां)	दल दल।
जदोकना	अ०	(कां)	जिस/उस समय से लेकर।
जनदी	स्त्री०	(कां)	जननी, मां।
जनेतरू	पु०	(कां)	विवाह पर बरात के साथ जाने वाला व्यक्ति।
जपना	क्रि०	(गा)	गिनती करना। याद करना।
जप्पड़	स्त्री०	(कां)	अधिक सिंचाई के बाद सूखकर सख्त हुई जमीन।
जफलोटा	पु०	(कां)	१—जमाल गोटा। २—करोटन पौधा।
जफड़ू	पु०	(कां)	छोटा तालाब, छोटा जोहड़।
जब्बर खड्ड	स्त्री०	(कां)	नूरपुर में हाथीधार से निकल कर हरड़ खड्ड और चट्टर खड्ड को साथ लेकर "चक्की" नदी में मिलने वाली एक प्रसिद्ध खड्ड।
जबरा	पु०	(कां)	बूढ़ा।
जबारू	पु०	(कु)	देहात में किसी व्यक्ति द्वारा मकान बनाने, फसल का काम करने या घास आदि कटवाने के सिलसिले में नियुक्त किये गये व्यक्ति, जिन्हें केवल दो समय का खाना दिया जाता है।
जबालटा	पु०	(कां)	जमालगोटा, एक पौधा विशेष।
जमीत	स्त्री०	(कां)	कृत्रिम दीवार।
जमोते	पु०	(कां)	बिलकुल ही। प्रयोग—तिनी एह किताब मिंजो जमोते दई ती। उसने मुझे किताब हमेशा के लिए दे दी।
ज्यास्ती	पु०	(कां)	ज्यादती।
जर	पु०	(कां)	ज्वर, ताप।
जराड़फूकी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का विवाह जिसमें युवक-युवती सामाजिक प्रथाओं का विद्रोह करते हुए जंगल में किसी झाड़ की ओट में अग्नि जलाकर उसके चारों ओर परिक्रमण करके विवाह सम्पन्न कर लेते हैं।
जरिहुन्	स्त्री०	(कु)	साल भर स्थिर रहने वाली बर्फ और बर्फीली पहाड़ी।
जरी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की जड़ीबूटी जिससे खमीर बनता है।
जल्लहा	पु०	(कां)	गूंगा।
जलनी	स्त्री०	(कां)	क्रोध। प्रयोग—मिंजो बड़ी जलनी आई। मुझे बहुत क्रोध आया।
जलारा	पु०	(कां)	पौधों का एक रोग विशेष।
जलि गया पोटा	वाक्यांश	(कां)	इस पेट की खातिर।
जलौंगड़	पु०	(कां)	कम अकल, सुस्त व्यक्ति।
जलू			
जलोकी	स्त्री०	(कां)	मछली।
जलोधर	पु०	(का)	पानी के नीचे से निकला हुआ सख्त और पक्का पत्थर।
जलहरी भरना	क्रि०	(कां)	अनावृष्टि के कारण मन्दिर में पानी भरना जिस से देवता की इच्छा का पता लगाया जा सके। यह प्रथा गसोता (तहसील हमीरपुर) के मन्दिर में सम्पन्न की जाती है।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
जहोड़ना	क्रि॰	(कु) गिर जाना।
जांगली	सं॰	(कु) खेत का बाहर वाला भाग।
जाईरा	क्रि॰	(कां) जन्म दिया है। प्रयोग—म्हारिया म्हंई कट्ट जाई रा। हमारी भैंस ने बच्चा दिया है।
जागत	पु॰	(कां) छोटा लड़का।
जागरा	पु॰	(कु॰ कां) देवता के मन्दिर में दिया गया भोजन।
जांगरू	पु॰	(कां) विवाह के दूसरे दिन का उत्सव।
[illegible]	पु॰	(कु) मेले और त्यौहार।
जाजरी, जौजरी	स्त्री॰	(कु) औजार।
जाड़ी	स्त्री॰	(कु) पत्थरीली ज़मीन पर मक्की के खेत में नलाई करने के औज़ार विशेष का एक भाग। (कां) सारा उपकरण।
जाणकार	पु॰	(कु) बुद्धिमान।
जाणी-माणी	अ॰	(कां) हास परिहास।
[illegible]	सं॰	(कां) यात्रा, मेला।
जादा	वि॰	(कु॰कां) अधिक, ज्यादा।
जाद्दी	स्त्री॰	(कां) आज़ादी, स्वतन्त्रता।
जाहनू	पु॰	(कु) घुटना।
[illegible]	पु॰	(कु) झरना, चश्मा।
जारा, जौरा	स्त्री॰	(कु) जौ की छोटी कोंपल, जो अन्धेरे में उगाई जाती है जिस से उस का रंग पीला हो जाता है तथा फूल का काम देता है।
जा:र	अ॰	(कां) अच्छी तरह से, पूर्णतः।
जा:र	वि॰	(कां) हज़ार।
जाह्ल (जाह्ल)	अ॰	(कां) उस समय।
जिमती	स्त्री॰	(कां) कांगड़ा में नदौन के पास एक धार।
जिकना	क्रि॰	(कु॰कां) दबाना, थके हुए अंगों को सहलाना।
जिणुआं	पु॰	(कां) एक प्रकार का धान जिस के मुंह में काला छिलका होता है।
जिधाड़ी	अ॰	(कां) जिस दिन। प्रयोग—जिधाड़ी ते तुसां इत्थु ते गए कोई चिट्ठी नईं लिखी। जिस दिन से आप यहां से गए, कोई पत्र न डाला।
जिब्बल	स्त्री॰	(कां) एक प्रकार की मछली जो डसती है।
जिल	पु॰	(कां) कांटेदार झाड़ी की एक टहनी।
जिसजो	सर्व	(कां) जिस को, उसको।
जिसाजो	स्त्री॰	(का) (स्त्रीलिंग के लिए) उसको, जिस को।
जि:जो	सर्व	(का) देखो 'जिस जो'।
जीजू	पु॰	(कु॰कां) छोटा सा कीड़ा।
जीण	पु॰	(कु॰ कां) जीवन।
जू	वि॰	(कां) जो
जुंगला	पु॰	(कां) हल का वह भाग जिसके साथ बैल जोते जाते हैं।
जुआंडेआ	सम्बोधन	(कां) देखो 'अड़ेआ'

शब्द	व्याकरण		अर्थ
जुमाधिना	क्रि	(कु)	निद्रा में बुड़बड़ाना या बकना ।
जुमाणस	स्त्री०	(कां)	देखो 'जुणास' ।
जुआणी	सम्बोधन	(कां)	पत्नी के लिए सम्बोधन शब्द ।
जुआस	पु०	(कां)	एक प्रकार का घास ।
जुटकू	पु०	(कां)	बच्चे का जूता ।
		(कु)	कुल्लू में इस का अर्थ परान्दे से है ।
जुट्टर	पु०	(कां)	मर्द के जूते ।
जुट्टू	सं०	(कां)	धागों की डोरी जिससे स्नान के बाद सिर के केशों को बांधते हैं । परान्दा ।
जुठ्ठर	पु०	(कां)	ज्येष्ठ का लड़का ।
जुड़ी	स्त्री		तम्बाकू के सूखे पत्ते की एक बीड़ी ।
जुण	सर्व०	(कु)	जो ।
जुणास	स्त्री०	(कां)	स्त्री, पत्नी ।
जुत्तू	पु०	(कां)	बच्चों के जूते ।
जुमसना	क्रि०	(कां)	धीरे धीरे बोलना ।
जुलफू	पु०	(कां)	कविता का एक चरण । पद्यांश ।
जूट सैंन	पु०	(कां)	जूती ।
जूण	स्त्री	(कु)	(मनुष्य) योनि, जन्म ।
जूड़ी	स्त्री	(कां)	सगड़ का झाड़ ।
जेठबण्ड	स्त्री०	(कां)	पैतृक सम्पत्ति में से बड़े लड़के का अधिक हिस्सा ।
जेठस	स्त्री	(कां)	बड़ी साली ।
जेबरैं, जेबैं	अ०	(कु)	जब ।
जेह	स्त्री	(कां)	देखो, 'सल्ल' ।
जेल	स्त्री०	(कां)	खेत की फिर से जुताई ।
जेला	वि०	(कां)	शारीरिक बल वाला ।
जै जै	सम्बोधन	(कां)	प्रणाम अथवा नमस्ते का संबोधन ।
जैला	वि०	(कां)	सख्त, कठोर, सख्त भूमि को दूसरी बार हल चला कर नर्म करना । कुल्लुकी जाइला ।
जैल्टा	पु०	(कां)	वह व्यक्ति जिसकी बगार देने की बारी है ।
जो	पर:	(कां)	सम्प्रदान कारक का परसर्ग विभक्ति चिन्ह ।
जोई	स्त्री	(कु)	पत्नी ।
जोगनी	स्त्री०	(कु)	झरनें, पानी या वन की देवी ।
जोड़ा	पु०	(कां)	पशुओं को बांधने का रस्सा ।
जोड़ा	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान विशेष जो मोटा परन्तु बढ़िया होता है ।
जोड़ी	स्त्री०	(कु)	वन और मोहरू के पत्ते जिन्हें भेड़ बकरियों को खिलाते हैं ।
जोणा	क्रि०		जाया जाना । प्रयोग—मेते नीं जोणा । मुझ से नहीं जाया जाएगा ।
जोत	पु०	(कु)	दर्रा, पर्वत की चोटी ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
जोत कण्ठी	पु०	(कु)	मण्डी और कुल्लू के मध्य में एक जोत विशेष, कुल्लू के लोग इसे दिल चिमीक कहते हैं ।
जोत जलोड़ी	पु०	(कु)	कुल्लू से सिराज और शिमला जाते समय एक 'जोत' विशेष ।
जोत थम्बर	पु०	(कां)	पालमपुर में मुंगल के पास एक जोत ।
जोत बशलेऊ	पु०	(कु)	कुल्लू से सिराज और रामपुर बुशहर जाते समय रास्ते में एक जोत विशेष।
जोत रोहतांग	पु०	(कु)	मनाली से लाहुल के रास्ते में मनाली से चौदह मील १३,५०० फुट ऊंची जोत जो कुल्लू से लाहुल को जुदा करती है।
जोत सरी	पु०	(कु)	भंगाल और कुल्लू के मध्य में एक 'जोत' विशेष ।
जोत सलाहुतर	पु०	(कां)	पालमपुर में एक जोत का नाम ।
जोथ	पु०	(कु)	चन्द्रमा ।
जोल	पु०	(कु)	सुहागा, खेत के ढीमों को तोड़ने का चपटा बेलन ।
जोलका	पु०	(कां)	पहनने के कपड़े ।
जोला	पु०	(कां)	१—लम्बा चोगा ।
		(कु)	२—थैला ।
जौकणा	क्रि०	(कु)	मारना ।
जौखे	अ०	(कु)	जहाँ ।
जौचड़ी	पु०	(कु)	जौ-गेहूं के छोटे छोटे पौधे ।
जौमाला	स्त्री०	(कु)	गले का एक आभूषण विशेष ।
ज्वैन	स्त्री०	(कां)	अज्वायन ।
ज्योत	सं०	(कां)	ज्योति रखने का एक फ्रेम विशेष ।
ज्योला	पु०	(कां)	ऐसी जमीन जो सैनिकसेवा करने वाली जातियों को दी जाती है।
झ्होंख	स्त्री०	(कु)	चिन्ता, फिकर ।
			झ
झंझराड़ा	पु०	(कां)	विधवा विवाह ।
झंडीड़	पु०	(कां)	घास विशेष का फूल जो कपड़ों को लग जाता है।
झझोड़ी	स्त्री०	(कां)	एक पौधा।
झुगा	पु०	(कां)	घर, घर के झंझट ।
झख	स्त्री०	(कां)	झंझा, आंधी ।
झड़िछिना	क्रि०	(कु)	संतुलन खोना, चलते चलते ठोकर खाना, गिरते गिरते बचना ।
झसना	क्रि०	(कु)	बैल को खस्सी करना ।
झांऊंशा	सं०	(कु)	चढ़ाई ।
झाहना	स्त्री०	(कां)	कुदृष्टि । प्रयोग—मुञ्चुए जो कुसकी दी झाहन पई गई, राती जो लाल मिरचां छुआई कन्ने अग्गीच पाई दिनीयां । बच्चे को किसी की कुदृष्टि लग गई है रात को लाल मिर्च छूकर आग में डाल देना । २—(क्रि) खा रहे व्यक्ति को ललचाई नजरों से देखना ।
झागड़ू	पु०	(कां)	झगड़ा करने वाला ।
झनियारी	स्त्री०	(कां)	हमीरपुर तहसील में झम्यारी धार पर एक देवी विशेष जो शीतला आदि के रोगियों का तीर्थ स्थान है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
झनी	स्त्री०	(कां)	देखो 'झिल' ।
झफियाना	क्रि०	(कां)	पीटना ।
झबल्लना	क्रि०	(कां)	कपड़ों की मैल निकाल कर उन्हें ज्यादा खुले पानी में निकालना ।
झमूड़ा	पु०	(कां)	समूह, भीड़ ।
झमला	पु०	(कां)	बड़ा, 'तलाब' ।
झलकार	पु०	(कां)	बड़ा 'तलाब' ।
झसना	क्रि	(कां)	मालिश करना, (पं० झस्सना)
झ्यो	पु०	(कां)	एक माप विशेष, २॥ सेर कच्चा अनाज अथवा २ सेर चावल
झा:हुर	पु०	(कु)	झाड़ी ।
			प्रयोग—कौंडे रा झाहुर काटू ।
			कांटे की झाड़ी काट दी ।
झिट्टू	पु०	(कां)	कांटेदार झाड़ी की छोटी टहनी ।
झिड़ी	स्त्री०	(कु)	छोटा जंगल, झाड़ियां ।
झिल	पु०	(कां)	कंटीली झाड़ी की एक टहनी ।
झीकड़ू	पु०	(कु)	ऊनी कम्बल । पट्टू ।
झीया	स्त्री०	(कु)	प्रातः काल ।
झीहा	पु०	(कु)	बारीक आंतड़ियां, बारीक लम्बी रस्सियां ।
झुंगा	पु०	(कां)	घर, (पं० झुगा ।)
झुंगी	स्त्री०	(कु)	कुटिया, घटिया दर्जे का मकान ।
झुम्ब	पु०	(कां)	देखो "छुम्ब" ।
झुगाना	क्रि०	(कां)	१—नकल करना ।
			२—गाय के थनों से बच्चे को दूध पिलाने की क्रिया ।
झूड़ा	पु०	(कां)	एक प्रकार का बांस ।
झुड्डू	पु०	(कां)	स्त्रैण, पत्नी के त्रिया चरित में बन्धा पति, जने-मुरीद ।
झुमकू	पु०	(कु)	कान का एक आभूषण विशेष ।
झुलमुला	पु०	(कां)	सन्ध्या का समय, सूर्य के अस्त होने और पहला तारा निकलने का समय ।
झूरी	स्त्री०	(कु)	प्यार ।
झूरी लगना	क्रि०	(कु)	प्यार होना ।
झेड़ू	पु०	(कां)	मक्खन को गर्म करके उसमें से घी निकालते समय मक्खन से निकला हुआ फालतू पदार्थ ।
झोका	पु०	(कां)	गन्ने के रस को गर्म करने के लिए बनाई गई भट्टी में ईंधन डालने वाला व्यक्ति ।
झोजोबाड़ी	स्त्री०	(कां)	एक बाल क्रीड़ा स्त्रियां, सामान्यतः वृद्धाएं स्वयं पीठ के बल लेटकर बच्चों को पांवों पर बिठा कर पांवों को धीरे धीरे ऊपर उठाती हैं और फिर नीचे गिराती हैं ।
झोणा	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान, जो पानी में होता है तथा जिस के चावल लम्बे, सफेद और पतले होते हैं । पं० झोना ।
झोणा	क्रि	(कां)	छूना ।
			प्रयोग—गंदियां चीजां कने नी झोणा चाहिदा ।
			गन्दी चीज के साथ नहीं छूना चाहिए ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
झोत झात	पु०	(कां)	छूतछात । प्रयोग—सरकारा कनून पास करि नें झोत झात मुकाई दी । सरकार ने कानून पास करके छुतछात समाप्त कर दी ।
झोलना	क्रि	(कां)	पंखा करना, हवा करना । पं० झुलाना ।
झोलना	पु०	(कां)	पानी आदि डालने के लिए बनाई गई मिट्टी की किरमिची ।
झोलर	पु०	(कां)	बात चीत का सिलसिला ।
झौंटू	पु०	(कां)	छोटी कुल्हाड़ी ।
झौःफे	सम्बोधन	(कां)	भैंसों को पानी पिलाने के लिए सम्बोधन शब्द ।
			ट
टंगोना	क्रि०	(कां)	लटक जाना, लटका देना, चढ़ना । प्रयोग—तू रुक्खे पर कजो टंगोइया । तू वृक्ष पर क्यों लटका है (चढ़ा है)
टंडू	पु०	(कां)	'छलियाटू', पं० टांडा ।
टंडोरू	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान जो बड़ा मोटा और नर्म होता है ।
टकटोड़	पु०	(कां)	एक प्रकार का पक्षी विशेष ।
टटमोर	स्त्री०	(कां)	वर्षा ऋतु में जमीन से अपने आप उगनेवाली एक वन्दल विशेष जिसका आकार छाते की तरह होता है ।
टटीरी	स्त्री०	(कां)	एक पक्षी विशेष । पं० टटीहरी ।
टपना	क्रि०	(कां)	लांघना, पार करना । पं० टप्पणा ।
टप्पड़	पु०	(कां)	गाय, भैंस की खाल ।
टपरू	पु०	(कां)	आबादी से दूर वाले जंगल के खेतों में एक छोटा सा मकान ।
टपरा	पु०	(कां)	गडरिए की छोटी सी कुटिया ।
टपरी	स्त्री०	(कां)	खेतों में फसल की रक्षा के लिए बनाया हुआ एक मामूली सा लकड़ी का साधारण सा ढांचा जिस पर बैठ कर कोई पुरुष अथवा स्त्री पक्षियों अथवा जंगली जानवरों से फसल की रक्षा करती है । इसे तम्ब भी कहते हैं कुनुकी 'टापरी'
टपाली	स्त्री०	(कां)	खेत का ऊंचाई की तर्फ का किनारा जहां से पानी खेत में प्रवेश करता है ।
टबराल	स्त्री०	(कां)	बहते पानी में एक जगह बना हुआ गहरा जोहड़ ।
टबरी	स्त्री०	(कां)	टपरी में रहने वाली अर्थात् पत्नी ।
टपाना	क्रि०	(कां)	गुम कर देना, गिरा देना । प्रयोग—दिख्यां टपाई छोडी बाटा-ई । देखना, रास्ते में ही न गिरा देना ।
टल्लू	पु०	(कां)	पहनने के कपड़े ।
टांकरी	स्त्री०	(कां)	एक प्राचीन लिपि जिस में कांगड़ी और डोगरी भाषाएं लिखी जाती रही हैं, आजकल इस लिपि का स्थान देवनागरी लिपि ले रही है ।
टाक	पु०	(कु)	एक अन्न विशेष ।
टाट	पु०	(कां)	केले की फली ।
टाब्बर	पु०	(कां)	परिवार । पं० टब्बर ।
टाला	पु०	(कां)	टालना क्रिया से संज्ञा, पं० टाला ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
टाला	सं०	(कां)	मकान की सबसे ऊपर वाली मंजिल जिसमें अन्न आदि रखा जाता है ।
टाला	सं०	(कां, कु)	किसी बड़े वृक्ष के चारों ओर बनाया हुआ चबूतरा ।
टासना	क्रि०	(कु)	चुनना ।
टिंड	स्त्री०	(कां)	रहट वाले कुएं में से पानी निकालने वाला बरतन विशेष । पं० टिण्ड ।
टिक्कड़	स्त्री०	(कां)	एक फसली जमीन, जिस में अधिकांशतः कुल्थ और माश की उपज होती है और जो समतल नहीं होती ।
टिकड़ी	स्त्री०	(कु, कां)	चांदी के छोटे छोटे मनके जो किसी आभूषण के साथ लगे होते हैं ।
टिकलू बिन्दलू	पु०	(कां)	आभूषण । २— बकरियां । प्रयोग—घर घर टिकलू, घर घर बिन्दलू । घर घर में तरह तरह की बकरियां हैं ।
टिचकणी	स्त्री०	(कां)	चूहों को पकड़ने का पिंजरा, दरवाजे में लकड़ी की जंजीर ।
टिटला	सं०	(कु)	टिड्डी ।
टिपड़ा मिलाना	क्रि०	(कां)	विवाह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लड़के और लड़की की जन्मकुण्डली का मिलान करना ।
टिपना	क्रि०	(कु, कां)	मारना, मसल देना, गरम लोहे पर हथौड़ा मारना ।
टिरि जाणा	क्रि०	(कां)	किसी मेले आदि की भीड़ में किसी एक आदमी व साथी का जानबूझ कर अपने साथियों से अलग हो जाना ।
टिल्ला	पु०	(कां)	पहाड़ी की चोटी ।
टिल्ला चढ़ना	क्रि०	(कां)	आकाश पर बादल छा जाना ।
टिल्ला मोलवा	पु०	(कां)	कांगड़ा की एक धार विशेष का नाम ।
टीण्डे	पु०	(कां)	(व्यंग्यार्थ में) आंखें, कुलूकी टेंडे ।
टुगणू	पु०	(कु)	पीतल का क्लिप जिससे कुलू का किसान ऊनी चादर को अपने कन्धों के साथ नत्थी करता है ।
टुंडू	पु०	(कां)	काटकर किए हुए छोटे छोटे टुकड़े । पं० टुक्कणा ।
टुहक	पु०	(कु)	तरतीब में रखा हुआ घास का ढेर ।
टुकना	क्रि०	(कां)	काटकर छोटे छोटे टुकड़े कर देना । पं० टुक्कणा ।
टूशना	क्रि०	(कु)	साफ करना । प्रयोग—शीमा टूश । नाक साफ कर ।
टेंडा	पु०	(कु)	आंख ।
टेंडे टंडारिना	क्रि०	(कु)	प्रतीक्षा में आंखें थका देना ।
टेंडे मीटना	क्रि०	(कु)	आंखें बन्द होना, मर जाना ।
टेप	स्त्री०	(कां)	सीढ़ी, पौड़ी ।
टेपरा	वि०	(कु, कां)	भैंगी आंख वाला, तिरछी दृष्टि वाला ।
टेरका	पु०		लड़का ।
टेरन	पु०	(कां)	अटेरन, कताई का एक उपकरण ।
		(कु)	कुलूकी "टेरला" ।
टेरना	क्रि०	(कां)	अटेरना ।
टेरली	स्त्री०	(कां)	एक बेल विशेष जिसके फलों का दूध कई दवाइयों में काम आता है ।
टोकणा	क्रि०	(कु)	काटना । पं० टुक्कणा ।
टोका	पु०	(कां)	धानों की खेती का एक रोग । पं० टोका ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
टोका	पु०	(कां)	घास कुतरने का एक औजार । पं० टोका ।
टोके	पु०	(कु)	कलाइयों में पहने जाने वाले चांदी के आभूषण ।
टोटा	पु०	(कां)	गढ़ा, वह गढ़ा जिसमें बेलना फिट किया जाता है, टुकड़ा ।
टोपकी	स्त्री०	(कां)	बांस का बना हुआ छोटा सा पात्र जिस में लगभग एक सेर दाने आ सकते हों । पं० टोप्पा ।
टोल	पु०	(कु, कां)	घर ।
			प्रयोग—इस बेड़े च कितने टोल ने ।
			इस मुहल्ले में कितने घर हैं ।
टोल	पु०	(कां)	देखो 'नड़'
टौणा	वि०	(कां)	बहरा ।
		(कु)	"टोळणा" ।
टोल्हू	पु०	(कु)	पत्थर ।
टोर	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्तों के दूना और पत्तल बनाए जाते हैं । इस वृक्ष की लकड़ी की आग कई दिनों तक नहीं बुझती ।
ट्याऊ	पु०	(कां)	कच्ची ईंटें घड़ने का फ्रेम विशेष । अर्थात् लकड़ी का एक उपकरण विशेष ।

ठ

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ठंडू	वि०	(कां)	आलसी ।
ठक्कू	पु०	(कां)	बगार करने वाला व्यक्ति ।
ठाक	स्त्री०	(कां)	रुकावट ।
ठाक	स्त्री०	(कां)	रिज़र्व वन ।
ठाकणा	क्रि०	(कु, कां)	रोकना ।
			प्रयोग—पहर्ये जो चलूरी कुणी ठाकी ए ।
			मायके घर जा रही को किसने रोका है ।
ठाकना	क्रि०	(कां)	विवाह के लिए किसी लड़के अथवा लड़की को निश्चित कर लेना ।
ठापना	क्रि०	(कां)	कपड़े को थापना । थापना ।
ठाब	पु०	(कु)	वृक्ष के तने को खोद कर बक्स सा बनाया गया यन्त्र जिसमें कपड़े धोते हैं ।
ठार	स्त्री०	(कु)	पिंडली के ऊपर की हड्डी ।
ठाहर	पु०	(कां)	पशु ।
			प्रयोग—तुसारे कितने ठाहर माल ऐ ।
			आप के कितने पशु हैं ।
ठाहरि	सं०	(कां)	ठौर, स्थान ।
			प्रयोग—सारे इकसी ठाह रि बैठि गए ।
			सभी एक ही स्थान पर बैठ गए ।
ठिंबी, ठिंभी	स्त्री०	(कां)	आठ सेर कच्चे का माप ।
ठिणमिणी	स्त्री०	(कु)	घण्टी ।
ठिस	अ०	(कां)	धीरे धीरे चलने की अवस्था ।
		(कु)	मामूली सी आवाज़ ।
ठिसना	क्रि०	(कां)	धीरे धीरे चलना ।
ठींगर	स्त्री०	(कु)	वृक्ष की चोटी ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ठीकर	पु०	(कां)	मिट्टी के बरतन का सबसे नीचे वाला हिस्सा ।
		(कु)	मिट्टे के टूटे बरतन ।
ठूठ	सं०	(कां)	पशु के कंधे पर उठा हुआ भाग, ककुद ।
		(कु)	चिलम ।
ठूरडा	पु०	(कु)	टांग ।
ठूठी	स्त्री०	(कां)	नारियल के गोले का आधा भाग, पं० ठूठी ।
ठुल्ला	वि०	(कां)	स्थूल, मोटा ।
ठेडा	पु०	(कां)	सीमा बुर्ज ।
ठेरना	क्रि०	(कु)	घटेरना ।
ठेन्‌ू	पु०	(कां)	पानी की बड़ी कुहल में रखा लकड़ी का छोटा सा ठेला जिससे पानी छोटी कूहलों में एक जैसा तकसीम हो सके ।
ठेणा	स्त्री०	(कां)	जमा, अमानत ।
ठोकना	क्रि०	(कु)	भूमि में गाड़ना, ठूंसना ।
ठोठी	सं०	(कां)	हुक्के की चिलम जिसमें तम्बाकू भर कर आग रखी जाती है। "ठूठी"
ठोर	स्त्री०	(कु)	दौड़ । प्रयोग—तौथं ठोरा रा मकाबला थी । वहां दौड़ का मुकाबला था ।
ठोर मारना या देणा	स्त्री०	(कु)	दौड़ लगाना । प्रयोग—सो ठोर देइया घौरा बै न्हौठा । वह दौड़ कर घर को चला गया ।
ठोला	पु०	(कां)	मकई बीजने के छटे सातवें दिन मकई के खेत में की गई जताई ।
ठोड़	पु०	(कां)	बढ़ई, तरखान ।

ड

शब्द	व्याकरण		अर्थ
डंगू	पु०	(कां)	बिच्छू ।
डंड कीली	स्त्री०	(कां)	एक खेल विशेष—'डंडा गुली'
डब्बल	पु०	(कां)	१—पैसा । २—टका अर्थात् दो पैसे ।
डड़ाना	क्रि०	(कां)	चीखना चिल्लाना, अपनी दयनीय अवस्था दिखाना ।
डनालटी	स्त्री०	(कां)	धान बोने के बाद जमीन में अड़े घास को बाहर निकालने के लिए खेत में चलाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का औजार ।
डबोठन	स्त्री०	(कां)	लकड़ी का अड्डा जिस पर टोकरियां आदि बनाने वाले डूमने लोग बांसों को काटते, छीलते और चीरते हैं ।
डबोड़न	स्त्री	(कां)	कपड़े धोने के लिए लकड़ी का उपकरण ।
डयाणा	क्रि०	(कां)	खड़ाना, टीक बनाकर कोई चीज रखना । प्रयोग—द्वारे च कुर्सी डयाई थी। दरवाजे में कुर्सी खड़ी की ।
डरिंज	पु०	(कां)	कोहा फल ।
डरनी	सं०	(गा, कां)	भेड़ का मादा बच्चा ।
डरलू	सं०	(गा, कां)	भेड़ का नर बच्चा ।
डल्ल	स्त्री०	(कां)	१—बाढ़, तुगियानी ।
डल	स्त्री०	(कां)	२—बांस की बनी हुई बड़ी टोकरी ।
डल	स्त्री०	(का)	दलदल, तालाब ।
डलारा	पु०	(कां)	पके हुए चावल डालने के लिए एक बड़ी डल्ल (टोकरी)
डांग	स्त्री०	(कां)	मजबूत बांस की लम्बी सोटी, मकई की गुल्लियों से दाने अलग करने के लिए गुल्लियों पर चोट मारने के काम आती है ।
		(कु)	डंडा ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
डांडी	पु०	(कां)	गोठी और छड़ियों का वन-देवता ।
डा	पु०	(कां)	खेती बाड़ी का उपकारण विशेष जिससे जुती हुई जमीन को समतल करने का कार्य किया जाता है।
डाकू	पु०	(कां)	एक उपकरण जो काहृरण की दो तारों को आपस में उलझने से रोकता है ।
		(कु)	कुल्लू की 'डाकू' ।
डागी	पु०	(कु)	पहाड़ों में रहने वाली एक नीच कमीन जाति ।
डागरे चढ़ियारधार	पु०	(कां)	चढ़ियारधार में एक पौधा विशेष जिस के फलों को सब्जी के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और पत्तों को पशुओं के चारे के रूप में ।
डाटी	स्त्री०	(कां)	देखो 'द्राटी', 'डाची' ।
डाना	पु०	(कु)	घंडा ।
डानी	स्त्री०	(कां)	घिया की जाति का एक फल विशेष ।
डाप	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का जाल ।
डाबरा	सं०	(कु, कां)	परात की शक्ल का एक बरतन ।
डाबी	स्त्री०	(कु)	डब्बी ।
डारु	पु०	(कां)	१--दम्पत्ति, पति और पत्नि ।
			२--ऊनी चादर ।
डाल	स्त्री०	(कां)	वृक्ष की शाखा, टहनी ।
डाल	स्त्री०	(कु)	वृक्ष की शाखा, टहनी ।
डाह	पु०	(कां)	ईर्ष्या ।
डाहना	क्रि०	(कु)	रखना ।
डिकली	स्त्री०	(कु)	हिचकी ।
डिठूना	पु०	(कां)	लोगों की कुदृष्टि से बचाने के लिए छोटे बच्चे के मुंह पर लगाया जाने वाला काला तिलक ।
डिब्बू	पु०	(कु, कां)	मिट्टी का हुक्का सा बरतन ।
डिम	पु०	(कां)	पशुओं की बीमारी जिसमें वे जुगाली नहीं करते ।
डी	संबोधन	(कां)	भैंसे के लिए सम्बोधन शब्द ।
डी	स्त्री०	(गा)	एक ऊंची पहाड़ी ।
डी जाना	क्रि०	(गा)	ऊंची पहाड़ी के पार जाना ।
डीह्ना	पु०	(कां)	एक प्रकार का सांप ।
डुगरी	सं०	(कां)	नर भेड़ ।
डुगरु	पु०	(कु)	लकड़ी का प्याला जिस में दूध दुहते हैं ।
डुग्गी, डुघी	वि०	(कु, कां)	गहरी ।
डुलकणू	सं०	(कां)	कान का एक आभूषण विशेष जो साधारणत: चांदी का होता है ।
डुलह्ना	क्रि०	(कां)	पानी या किसी अन्य बहने वाले द्रव्य का भूमि पर गिर जाना ।
डुलि जाना	क्रि०	(कां)	किसी द्रव्य वस्तु का गिर पड़ना ।
डुड़क पु०	पु०	(कां)	कच्चे अथवा पक्के आम के मुंह से प्रथमत: निकलने वाला खट्टा सा पानी जो कि 'बालचर' नामक केश रोग के लिए अकसीर समझा जाता है
डेक	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष । इस पर कद्दू की किस्म का एक बड़ा खाद्य फल लगता है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
डेक	स्त्री०	(कां)	देखो 'दरेक'
डेणा, डोणा	क्रि०	(कु)	किसी पहाड़ी दर्रे, नदी आदि को पार करना । जाना।
डेरा	पु०	(कां)	रात रहने का स्थान ।
			शामियाना, अस्थायी निवास स्थान ।
डेरू	पु०	(कु)	नेगी या पटवारी का बेगारी नौकर ।
डेहरा	पु०	(कु)	एक छोटा मन्दिर ।
डेहल	स्त्री०	(कु)	द्वार की चौखट, दहलीज ।
डोई	स्त्री०	(कु, कां)	लकड़ी की कड़छी ।
डोरू	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक उपकरण विशेष ।
डोगी	वि०	(कां)	गहरी ।
		(कु)	'डुग्घी' ।
डोडन	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।
डोडनी	स्त्री०	(कां)	रीठड़े का वृक्ष ।
डोडा	पु०	(कां)	रीठड़े की गुठली ।
डोडे	पु०	(कां)	मांस, मांस के पपोटे ।
डोलना	क्रि०	(कां)	डालना, उंडेलना ।
डोल	अ०	(कां)	चुपके से, धीरे से, चुपचाप ।
			प्रयोग—डोल बही रह ।
			चुप चाप बैठा रह ।
डोली देना	क्रि०	(कां)	उण्डेल देना।
डोली	स्त्री०	(कु, कां)	पालकी ।
डोली आना	क्रि०	(कां)	किसी पूजक में देवता की पवन का प्रवेश करना ।
डोरकना	पु०	(कां)	आधा सेर सूत का लाल रंग का विशेष परांदा जो विवाहोत्सव में विवाहिता लड़की पहनती है ।
डोरी बैंसी	स्त्री०	(कां)	आमने सामने की बट्टे की कुड़माई ।
डोहरू	पु०	(कां)	एक ऊनी लोई ।
डौंका	पु०	(कां)	मछली की जाति का एक जल जन्तु विशेष जिसका मांस नहीं खाते ।
डौर	पु०	(कां)	साया ।
डौल	स्त्री०	(कां)	काले रंग की एक मछली विशेष ।
डौल	स्त्री०	(कां)	हाल चाल
			प्रयोग—क्या डौल ए।
			क्या हाल चाल है ।

"ढ"

ढक	पु०	(कां)	गन्ने के गुल्ल की छिटाई ।
ढकोई जाना	क्रि०	(कां)	आवृत्त हो जाना ।
ढग	पु०	(कु)	पहाड़ की एक छोटी शृंखला, पहाड़ ।
ढड्डु	स्त्री०	(कां)	देखो "कुम्हाल" ।
ढबा	सं०	(कां)	पैसा (पुराना) पं० ढब्बल ।
ढयाना	क्रि०	(कां)	गाय अथवा भैंस का नया दूध होने की इच्छा प्रकट करने के लिए रंभाना या अरड़ाना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ढमकी	सं०	(कु)	नमस्कार, प्रणाम ।
ढांक	स्त्री०	(कां)	किसी पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने के लिए सीधी ऊंचाई का रास्ता ।
ढांगू	पु०	(कां)	पटसन की रस्सियां कातने का एक उपकरण ।
ढाक	पु०	(कु)	कमर, कटि, कमर बांधने का कपड़ा या रस्सी ।
ढाकू	पु०	(कु)	बरामदे की छत की कड़ी ।
ढाई	क्रि०	(कां)	हटाकर ।
			प्रयोग—तिनी से कागद ढाई अंदा ।
			वह उस कागज को हटाकर ले आया ।
ढाल	सं०	(कु)	नीच जातियों द्वारा उच्च जातियों को किया गया नमस्कार ।
ढिचकी	स्त्री०	(कां)	हिचकी ।
ढिग	स्त्री०	(कां)	पहाड़ की चढ़ाई ।
ढिगन	पु०		दोपहर का खाना ।
		(कु)	"दोपहरी ।"
ढिम	पु०	(कां)	मिट्टी के ढेले ।
ढिली	वि०	(कां)	खुली ।
			प्रयोग—ए कुर्ती बड़ी ढिली एं ।
			यह कमीज बड़ी खुली है ।
ढींगा	पु०	(कां)	लकड़ी का छोटा सा डंडा जो लकड़ी के बेलने के चक्र के साथ फिट किया हुआ होता है ।
ढींगे	पु०	(कां)	"सरगस्त" के डंडे ।
ढींगर	स्त्री०	(कां)	अरहर, एक प्रकार की दाल ।
ढीसर	पु०	(कां)	पत्थर अथवा लकड़ी का खुरदरा टुकड़ा ।
ढीहर	सं०	(कु)	बड़ा फोड़ा ।
ढीसणा	क्रि०	(कु)	मारना ।
ढूणना	क्रि०	(कु)	बात करना ।
			प्रयोग—ते की बुन्दे लागी रे ।
			वे क्या बातें कर रहे हैं ।
ढेक	पु०	(कु)	खेत का अन्दर का किनारा ।
ढेरा	वि०	(कु, का)	टेढ़ा ।
ढोर	सं०	(कां)	१—समान्य पालतू पशु, बोझ ढोने वाले पशु, बैल ।
			२—सीधा सादा व्यक्ति ।
ढोलीढींगर	पु०	(कां)	बच्चे, बालबच्चे ।
ढोलरू	पु०	(कां)	वि० सं० के पहले मास चैत के आगमन की सूचनार्थ डूमों द्वारा गाये जाने वाला गीत ।
ढोया	सं०	(कां)	सिक्का ।

"त"

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तंगड़ी	स्त्री०	(कां)	रस्सियों का जाल विशेष । जिसमें कुम्हार बर्तन बांधता है ।
तंदीरा	पु०	(कां)	चांदी का एक गहना जो स्त्रियां गले में पहनती हैं ।
तकड़ा	वि०	(कु)	ठीक स्वस्थ, अच्छा-भला ।
तक्कड़ी	स्त्री०	(कां)	तराजू,
			कुल्लुकी में "तराकड़ी" ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तकला	पु०	(कां)	हरे रंग की एक मछली ।
तकली	स्त्री०	(कु)	ऊन कातने के एक लकड़ी का उपकरण ।
तकीरा	पु०	(कां)	निशास्ता ।
तड़का	पु०	(कां)	मकई की फसल की बीमारी विशेष ।
तड़का	पु०	(कां)	प्रातः काल, ब्रह्ममुहूर्त का समय ।
तत्ताड़	पु०	(कां)	मिट्टी का एक बरतन जिस में पानी गर्म किया जाता है।
ततीरा	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष ।
तदे-शा	अ०	(कां)	वैसा ही । प्रयोग—लुहाइयै तदे-शा पुकुआण पुकुआई ता । हलवाई ने वैसा ही पकवान पकवा दिया ।
तथोकना	अ०	(कां)	उस समय से लेकर ।
तन	पु०	(कां)	मचान, जंगली पशुओं से फसल की रक्षा के लिए खेत में किसी वृक्ष के साथ बनाया गया स्थान ।
तनोतनी		(कां)	क्रोध से । प्रयोग—मै: मिजो पुर चढ़ि गया तनोतनी । वह मेरे ऊपर यूंही क्रोधित हो गया ।
तनोसू	पु०	(कु)	लकड़ी का एक गोलाकार उपकरण जिस के ऊपर रख कर 'तकली' को घुमाया जाता है ।
तपसी	पु०	(कां)	तपस्वी ।
तम्होड़	स्त्री०	(कां)	भिड़, ततैया ।
तंगड़ी	स्त्री०	(कां)	बांस के डंडों, रस्सियों और लकड़ी के फट्टों का बना हुआ एक अस्थायी पुल जो खड्डों में पानी के प्रवाह के ऊपर बनाया जाता है।
तरकाल	स्त्री०	(कां)	त्रिकाल, सायंकाल ४ बजे से ७ बजे तक का समय ।
तर्क	पु०		(कां) तरक्षु, भेड़ बकरियों को खाने वाला कुत्ते की नस्ल का एक जंगली जानवर ।
तर्क	पु०	(कां)	तर्क, बहस विवाद ।
तरड़ी	स्त्री०	(कां)	एक जंगली लता जिसकी जड़ से मूली के प्रकार का एक खाद्य पदार्थ निकलता है ।
तरड़ी	स्त्री०	(कां)	तलड़ी ।
तरफण्डी	पु०	(कां)	वक्र स्वभाव का व्यक्ति ।
तर्पोड़ा	पु०	(कां)	रोष, क्रोध ।
तराकड़ी	स्त्री०	(कु)	तराजू ।
तरापड़ी	स्त्री०	(कु)	भेड़ की खाल, चमड़ी ।
तरोफला	पु०	(कां)	प्रत्येक खेत की विभिन्न हिस्सों में तकसीम, जिससे हर हिस्सेदार हर प्रकार के खेत का हिस्सा ले सके और किसी को किसी प्रकार की शिकायत न रहे ।
तरओड़ी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का गेहूं ।
तरखीन	पु०	(कां)	तीन गांवों की सीमा का सीमा बुर्ज ।
तरसीहा	पु०	(कां)	कष्ट, तकलीफ ।
तराड़	सं०	(कां)	जड़ (पं० वेड़,) तिड़ ।
तरैन साजा	पु०	(कु)	माघ महीने की आखरी तिथि ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तरोट	पु०	(कां)	जमीन में अथवा खेत में छिद्र जिसमें से होकर पानी उस जमीन अथवा खेत से बाहर निकल सके।
तरोट, टरोट	पु०	(कु, कां)	एक मछली विशेष ।
तरोड़ा	पु०	(कु)	जड़, वृक्ष आदि की जड़ें।
तलंग	पु०	(कां)	कांगड़ा में धनियारा के पास एक पर्वतमाला का नाम।
तल्लड़	स्त्री०	(कां)	लकड़ी आदि का सामान रखने के लिए बनाई गई अस्थायी छत ।
तलड़ी	स्त्री०	(कां)	पशुशाला में घास फूंस रखने के लिए बनाई गई अस्थायी छत ।
तलाट्	पु०	(कां)	छोटा तालाब ।
तलियाक	पु०	(कां)	तेल डालने का बरतन ।
तली	स्त्री०	(कु, कां)	घराट का नीचे वाला बड़ा पत्थर ।
तल्हेर	पु०	(कां)	एक प्रकार की छोटी मछली ।
तलैंडी	स्त्री०	(कां)	मिट्टी का छोटा सा बरतन जिस में सरसों का तेल रखा जाता है।
तलोथी	स्त्री०	(कु)	"तलैंडी" ।
तसीर	स्त्री०	(कां)	तासीर, प्रभाव ।
त्याई	स्त्री०	(कां)	मास का तीसरा दिन ।
त्यूण	सं०	(कां)	सुरंग ।
ता	अ०	(कां)	तो, फिर ।
ताईं	परसर्ग	(कु, कां)	के लिए, तक ।
तांह्	अ०	(कां)	इस ओर ।
ताऊ	पु०	(कां)	पिता का बड़ा भाई।
ताओ	पु०	(कां)	ताप, गर्मी ।
ताकी	स्त्री०	(कां)	१—दीवार में लगी हुई छोटी अलमारी । २—खिड़की ।
तागड़ा	वि०	(कां)	स्वस्थ, देखो "तकड़ा"
ताड़	पु०	(कां)	जोर पड़ना, तेजी से काम करना ।
ताड़का		(कां)	प्रातःकाल, 'तड़का'
तार्जा	पु०	(कां)	ब्याह् रण की तारों और राछ को पकड़कर सीधा रखने वाला उपकरण विशेष ।
तारूआ	पु०	(कां)	वह व्यक्ति जो नदी में तैर कर स्वयं पार होता है और दूसरों को पार ले जाता है ।
ताल	पु०	(कां)	तालाब, सरोवर ।
ताह्लू	अ०	(कां)	उस समय ।
तांबा	पु०	(कां, कु)	तांबा ।
तान	स्त्री०	(कां)	रक्षा, सहायता ।
तिगड़ू	पु०	(कां)	ईंधन के सूखे छोटे छोटे टुकड़े ।
तिजो	सर्व०	(कां)	तुझे ।
तिम्बड़ू	पु०	(कां)	देखो "तिगड़ू"
तिज्जों	सर्व०	(कां)	तुझे ।
तिहां	अ०	(कां)	उस तरह ।
तिबें	अ०	(कां)	उस समय, तिस समय ।
तिताम	स्त्री०	(कां)	वर्षा का अभाव ।
तित्थ	स्त्री०	(कां)	दिवस, त्यौहार, मेला ।
तिधाड़ी	अ०	(कां)	उस दिन ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तिन्हांवें	सर्व	(कु)	उन्हें, उन को ।
तिनाजो	सर्व०	(कां)	उनको ।
तिरैथी	स्त्री०	(कां)	विरासत में मिली जायदाद ।
तिलांजली	स्त्री०	(कां)	देहान्त संस्कार का एक हिस्सा जब निकट सम्बन्धी हथेली पर थोड़ा सा पानी लेकर अभिमंत्रित करके फैंक देता है जिससे मृत व्यक्ति के साथ सम्बन्ध तोड़ दिया जाता है ।
तिली	स्त्री०	(कु)	नाक का एक आभूषण ।
तिसरा	सर्वनाम	(कां)	उसका ।
तिहजो	सर्वनाम	(कां)	उस को ।
त्रिकड़	पु०	(कां)	कमर का पिछला हिस्सा जहां तीन प्रमुख हड्डियों का जोड़ है ।
त्रिखा	स्त्री०	(कां)	प्यास, तृष्णा ।
त्रिहला	पु०	(कां)	ऐसा मुजारा जो उपज का एक तिहाई हिस्सा प्राप्त करे ।
त्रिहाई	स्त्री०	(कां)	जंगल का ऐसा हिस्सा जो कुछ समय के लिए रिजर्व रखा जाए ।
त्रीड़ा	पु०	(कां)	मिट्टी का घड़ा रखने का स्टैण्ड ।
त्रुप्ति	स्त्री०	(कां)	तृप्ति ।
त्रौण	स्त्री०	(कां)	ब्याह शादी अथवा प्रीतिभोज या धाम के उत्सव पर बड़े पैमाने पर रसोई पकाने के लिए जमीन खोद कर बनाया गया अस्थायी चूल्हा ।
तीरी	स्त्री०	(कु, कां)	खिड़की ।
तुंदा	सर्वनाम	(कां)	तेरा ।
तुआर	पु०	(कां, कु)	रविवार, आदित्यवार ।
तुथाक	पु०	(कां)	वह थाली जिस में विवाह की पूजा सामग्री रखी जाती है ।
तुड़ियाल	पु०	(कां)	बिल्ली की नस्ल का एक मांस भक्षी जानवर ।
तुड़ना	क्रि०	(कां)	गिरना ।
तुम	सर्वनाम	(कां)	मध्यम पुरुष, एक वचन, प्रथम, चतुर्थी और षष्टी में आता है ।
तुम्हांजो	सर्वनाम	(कां)	तुम्हें ।
तुड़का	पु०	(कु)	तड़का ।
तुनकी	स्त्री०	(कु)	सिर का एक आभूषण जो चांदी का होता है ।
तुलांह	पु०	(कां)	लेखा साफ करने का कार्य ।
तुलीरी डाबी	स्त्री०	(कु)	दियासलाई की डब्बी ।
तुहांरा	सर्व०	(कां)	तुम्हारा ।
तुहार	स्त्री०	(कां)	भूमि की वह अवस्था जब वह धान बोये जाने के लिए तैयार की गई हो ।
त्रुंज	स्त्री०	(कां)	त्रिक्कड़ (कमर) की नाड़ में तनाव आने के कारण एक दर्द विशेष ।
त्रुटना	क्रि०	(कां)	टूटना ।
तुणा	क्रि०	(कां)	गाय भैंस का गर्भ गिर जाना । पं० तुणा ।
तुणक	वि०	(कां)	तनिक, थोड़ा सा ।
तूणी	स्त्री०	(कां)	घास का तिनका ।
तूण	पु०	(कां)	बांस का "दीण" ।
तूला	पु०	(कां)	बाल उखड़ने की बीमारी, बालचर ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तैड़ा	अ०	(कु)	उस तरह, वैसे।
तै	परसर्ग	(कां)	से।
तेईं-बैं	सर्व०	(कु)	उसे, उसको।
तेइरी तेइयें	सर्व०	(कु)	उस के लिए।
तेकी	सर्व०	(कां)	तुझे।
तेचार	पु०	(कां)	त्यौहार।
तेबें, तेबरे	अ०	(कु)	तब।
तुहरी ताइंयें/ तेइंये		(कु)	आप के लिए।
त्रेलर	वि०	(कां)	दो लड़कियों के बाद पैदा हुआ लड़का।
त्रेसी	स्त्री०	(कां)	"कारचे" में बुना हुआ कपड़ा लपेटने के लिए लकड़ी का एक उपकरण। तीसरा, तृतीया।
त्रेली	स्त्री०	(कां)	स्वेद, पसीना।
त्रेड़	पु०	(कां)	देखो तीड़ा। २—एक भोजन विशेष जिस में घी, चावल और मीठा बराबर का डाला गया हो।
त्रैंगुल	पु०	(कां)	लकड़ी का बना हुआ एक हथियार विशेष, जो खलिहान में काम आता है।
त्रंम्बुल	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिस पर चीकू की जाति के फल लगते हैं।
त्रै	वि०	(कां)	तीन।
तैली	वि०	(कां)	तृतीय, तीसरे स्थान पर।
तैल्हण	स्त्री०	(कां)	एक मछली विशेष।
तैस-तुलाई	स्त्री०	(कां)	वर पक्ष की ओर से बरात के साथ पुरोहित द्वारा लाया गया सरसों का तेल जो कन्या पक्ष वालों के तेल के साथ मिलाकर मापा किया जाता है।
तेसा, तोसर	पु०	(कां)	बढ़ई का एक औजार।
तेहाई	पु०	(कां)	दफा ३८ के अन्तर्गत आया हुआ जंगल जिस में पशु-चारण और लकड़ी काटना वर्जित हो।
तोकड़	स्त्री०	(कां)	ऐसी गाय भैंस जिसे दूध देते एक साल हो गया हो। (दे०) तोकड़।
तोड़ा	सं०	(कां)	गले या सिर का एक आभूषण।
तोड़े	पु०	(कां)	टखने के आभूषण।
तोप	स्त्री०	(कां)	तलाश। प्रयोग—अधी राती उस दी तोप पई गई। आधी रात को उस की तलाश हुई।
तोपना	क्रि०	(कां)	तलाश करना।
तोश, तोस	पुं०	(कु कां)	एक वृक्ष विशेष।
तोलू	पु०	(कां)	कान में पहनने की छोटी मुर्की।
तौंदी	स्त्री०	(कां)	गर्मियों की ऋतु।
तोशतू	स्त्री०	(कां)	"परतनू" तवे से रोटी बदलने की लोहे का उपकरण।
तौखे	अ०	(कु)	वहाँ।
तौबे	सर्व०	(कु)	तुझे।
तौखना	क्रि०	(कु)	काटना, खोलना।
तौड़ना	क्रि०	(कु)	फंस जाना।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
तौल	अ०	(कां)	शीघ्रता, जल्दी ।
तौला	अ०	(कां)	शीघ्र ।
तौली	स्त्री०	(कु)	घराट का निचला पाट ।
तौले-तौले	अ०	(कां)	शीघ्र-शीघ्र ।
			प्रयोग—तौले तौले चलवो नी ता गडी छुटी जांगी ।
			जल्दी जल्दी चलो नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी ।
तौहलना	क्रि०	(कु)	हिलना ।
			"थ"
थम्बली	स्त्री०	(कां)	१—लकड़ी का छोटा स्तम्भ ।
			२—नाक का आभूषण विशेष ।
			पं० थंमली ।
थंमणी	स्त्री०	(कां)	काहृरण का एक उपकरण विशेष ।
थम्मी	स्त्री०	(कां)	मकान की छत को सहारा देने के लिए लकड़ी का छोटा सा स्तम्भ ।
थटना	क्रि०	(कां)	बकरे अथवा भेडे का खस्सी करना ।
थफाक	पु०	(कां)	इत्तिफाक, मेल जोल, सहयोग ।
थरी	स्त्री०	(कां)	द्रांती आदि का दस्ता ।
थरार	पु०	(कां)	कंपकंपी ।
थाच	सं०	(कु)	घने वृक्षों के जंगल में खाली जगह, जो कम से कम बीस कनाल हो । यहां भेड़ों का गिरोह रखा जाता है ।
थाथला	वि०	(कु)	थथला कर बात करने वाला ।
थिगना	क्रि०	(कां)	अरुचि से धीरे धीरे भोजन आदि खाना ।
			प्रयोग—बोबी, तुसांदे निकें आणें तां रोटियां थिगणा लानदे 'न, खाणा नी ।
			बहिन आप के बच्चे तो अरुचि से भोजन खाते हैं ।
थिंदा	क्रि०	(कां)	चिकना ।
			प्रयोग—पटवारी री नौकरी बड़ी थिंदी हुंदी ऐ ।
			पटवारी की नौकरी बड़ी चिकनी होती है (खाने पीने को अच्छा मिलता है) ।
थी	पर०	(कां)	से ।
थलनी	स्त्री०	(कां)	खेत ।
थली	स्त्री०	(कां)	खेत, विश्राम करने के लिए पत्थरों का बनाया स्थान ।
थलैं	अ०	(कां)	नीचे, थल में ।
थिप्पू	पु०	(कु)	एक प्रकार का दुपट्टा ।
थुम्राट	सं०	(कां)	वह बकरा जिसे खस्सी न किया गया हो ।
थुम्हारा	सर्व०	(कां)	तुम्हारा ।
थुधा	पु०	(कां)	मकान के दूसरी मंजिल की दीवारों में बनाए गए मिट्टी के छोटे-छोटे स्तम्भ ।
थेई	स्त्री०	(कां)	जख आदि पशु देवता के निमित्त जंडी-गंजी के दिनों में दूध, दही और घी का वर्जन ।
थेक	स्त्री०	(कां)	गेहूं की गड्डी, खेत में काटी गई गेहूं का उतना बोझ जो एक आदमी उठा कर घर ला सके ।
थैणा	क्रि०	(कां)	रखना, स्थापित करना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
थैणा	पु०	(का)	जमा की गई पूंजी ।
थैणा थैणा	क्रि०	(कां)	पूंजी जमा करना ।
थोगना	क्रि०	(कु)	टटोलना, तलाश करना, हाथ से टटोलना, प्राप्त करना ।
थोटी	सं०	(कां)	हाथ की माला ।
थोड़ा	वि०	(कां)	थोथा, खोखला ।
थोथर	सं०	(कु)	कपोल, गाल, रूखसार ।
थोड़ी	स्त्री०	(कां)	ग्रामदेवता की पूजा के लिए पकाई गई छोटी सी रोटी ।
थौनी	स्त्री०	(कां)	देखो "थैणा" ।
			द
दंगोड़ी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का छोटा पौधा जिस की कोंपलों का पानी शरीर के जले अंग पर लगाने से आराम आता है ।
दंतारा	पु०	(कां)	एक वाद्य यंत्र ।
दंद	पु०	(कां)	दांत ।
दंद मारना	क्रि०	(कां)	दुश्मनी करना ।
दंदी	स्त्री०	(कां)	दुश्मनी ।
दंदकल्हा	स्त्री०	(कां)	झगड़ा, दन्त क्लेश ।
दंदराल	स्त्री०	(कां)	हैंगी, जिससे जोते हुए खेत को समतल किया जाता है ।
दंदल	स्त्री०	(कां)	हांसिया, घेहूं काटने का यंत्र ।
दंदालटी	स्त्री०	(कां)	कृषि का उपकरण विशेष जो "ढंड" वाली जमीन पर चलाया जाता है।
दआ	क्रि०	(कां)	दे दो ।
दगुला	पु०	(कां)	अंगूरी शराब ।
दड़ना	क्रि०	(कां)	छुपकर बैठना ।
दड़ूनी	स्त्री०	(कां)	दाड़िम का वृक्ष ।
दड़े	पु०	(कां)	एक छोटा सा पौधा, इसका चारा बकरियों के लिए दूध वर्धक होता है ।
दतियाल, दनाल	पु०	(कां)	नाश्ता, प्रातः काल का हल्का सा खाना ।
दबनू	पु०	(कां)	दूध उबालने के लिए बरतन जो अधिकांशतः मिट्टी का होता है ।
दबी	स्त्री०	(कां)	देवी, लड़की ।
दब्बू	पु०	(कां)	लड़का ।
दर्फाड़ू	पु०	(कां)	खुमानी, आड़ू, एक फल विशेष ।
दमकड़ा	पु०	(कां)	चरखे का एक उपकरण विशेष ।
दमलू	पु०	(कां)	जंगल में ऐसी जगह जहां वृक्ष आदि न हों ।
दया	स्त्री०	(का)	शत्रुता ।
दरघल	स्त्री०	(कां)	लकड़ी की कृत्रिम दीवार ।
दर्ड़ना	क्रि०	(कु, कां)	मोटा पीसना, दलना, मसल देना ।
दराट्टी	स्त्री०	(कां)	हांसिया, फसल काटने का यंत्र, दरांती ।
दरिंद	पु०	(कां)	दरवाजा ।
दरिखान	पु०	(कां)	देवता का दरबारी ।
दरिघड़ा	सं०	(कु)	चीथड़ा, फूटा हुआ कपड़ा ।
दरिया बसूटी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की 'बसूटी' जिसके पत्ते खा लेने से पशु मर जाते हैं ।
दरेंड़ू	पु०	(कां)	कांटेदार छोटा वृक्ष ।
दरेक	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
दरेतर	स्त्री०	(कां) फसल की कटाई के दिनों में गुजारे द्वारा जमीन मालिक के लिए की गई एक दिन की बेगार ।
दल्हूनी	स्त्री०	(कां) शहद की मक्खियों का छत्ता ।
द्रमण	स्त्री०	(कां) समतल खुली घास वाली जगह ।
द्रुबद्दू	पु०	(कां) लेखक, मुन्शी ।
द्रोबल	वि०	(कां०) दुर्बल ।
द्राक	पु०	(कां) खेत के पानी निकालने के लिए खेत के एक कोने में किया गया एक गहरा छिद्र ।
द्रात	पु०	(कां) घास आदि काटने के लिए लोहे का बना हुआ छोटा डाट ।
द्रिया	स्त्री०	(कां) स्त्री, त्रिया ।
द्रेकड़	पु०	(कां) ड्रेक के फलों का तेल जो जोड़ों के दर्द के लिए लाभकारी होता है ।
द्रोहत्ता	पु०	(कां) वृक्षों पर बैठने वाला पालतू शहद की मक्खियों का छत्ता ।
द्वारडकाई	स्त्री०	(कां) द्वार रोकना, विवाहोत्सव में दुलहन के घर में प्रवेश कर रहे दुल्हे को द्वार पर सालियों द्वारा रोकने की नाट्य करने की क्रिया ।
द्वारी	स्त्री०	(कां) छोटा दरवाजा ।
दांऊआ	सं०	(कां, कु) रस्सी, वह रस्सी जिस से किल्टे को बांध कर उठाते हैं। पशुओं को बांधने की रस्सी।
दांद	सं०	(कां) बैल ।
दांदी	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का छोटा पौधा, इस के पत्ते पेशाब रुकने की हालत में तेल लगाकर पेट के निचले हिस्से पर बांधने से लाभ होता है।
दांम	पु०	(कां) पशु अथवा पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल।
दाऊ	पु०	(कु) चीज, वस्तु ।
दाख	स्त्री०	(कां) जंगली अंगूर।
दागडू	पु०	(कां) वह व्यक्ति जो जंगल से इमारती लकड़ी लाने के लिए नियुक्त किया गया हो ।
दाग देना	क्रि०	(कां) मरघट में शव को आग लगाने की क्रिया।
दागूना	पु०	(कां) अंजीर का पौधा।
दाच	पु०	(कु) हंसिया।
दाची	स्त्री०	(कु) दराल्ली, दराट ।
दाज	पु०	(कु, कां), दहेज।
दाडू	पु०	(कु) देसी अनार।
दाढ़ू	पु०	(कु) ठोडी।
दानी	पु०	(कां) टैक्स की उगाही करने वाला।
दाफड़	पु०	(कां) शरीर पर रक्त विकार के कारण अथवा किसी चोट के कारण पड़ने वाला निशान विशेष।
दाम	पु०	(कां) छोटी उमर का बैल जो अभी हल में न जोता गया हो।
दयद्	स्त्री०	(कां) दीदी, बड़ी दीदी ।
दारू	पु०	(कां) दवाई ।
दाह	पु०	(गा) प्यार।
		(कां) ईर्ष्या।
		(कु) दर्द, पीड़ा।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
दाहुका	पु०	(कां)	घटिया किस्म के चावल।
दाहुनान	पु०	(कां)	२४ आसाढ़ से ४ श्रावण तक की अवधि।
दिग्रागना	क्रि०	(कां)	प्रतीक्षा करना।
दिखँ	अं०	(कां)	नहीं। मत। प्रयोग—अदेहा कम दिखँ फिर करदा। ऐसा काम फिर मत करना।
दिहागना	क्रि०	(कु)	निशाना लगाना।
दिहुख़		(कु)	थोड़ा।
दिहुख चेहां		(कु)	थोड़ा जैसा।
दिखना	क्रि०	(कां)	देखना।
दिड़े	पु०	(कां)	एक छोटा सा पौधा, इस के पत्ते कई दवाइयों में इस्तेमाल किए जाते हैं। उदाहरणार्थ कमर दर्द के बीमारों के लिए इस के पत्ते कुछ अन्य पौष्टिक पदार्थ मिला कर पिन्नियां बनाने में इस्तेमाल किए जाते हैं।
दिमलूना	क्रि०	(कां)	मुकर जाना।
दियार	पु०	(कां)	देवदार वृक्ष।
दियालख	स्त्री०	(कां)	दीवाली के उत्सव पर बेचने के लिए बनाए जाने वाले मिट्टी के बरतन अथवा लकड़ी के खिलौने आदि।
दिहाड़ा	पु०	(कां)	दिन, सूर्य।
दीण	पु०	(कां)	बांस को काटछील और चीरकर बनाये हुए छोटे-छोटे टुकड़े जिन से टोकरियाँ आदि बनाई जाती हैं।
दीणु	पु०	(कां)	टोकरियां आदि बनाने के लिए बांस को छील और तराशकर बनाई गई छोटी-छोटी छड़ियें।
दुघाटन	स्त्री०	(कां)	देहलीज।
दुग्राड़	पु०	(कां)	द्वार, दस बारह घरों का एक मुहल्ला जिसका एक ही प्रवेश द्वार होता है।
देवारचार	पु०	(कां)	दूसरे गांव से आया हुआ मुजारा।
दुग्रार साख	स्त्री०	(कां)	दरवाज़े की चौखट।
दुखना	पु०	(कु)	फोड़ा। प्रयोग—दुखना न दाहु लागो। फोड़े में दर्द हो रहा है।
दुडंग	पु०	(कां)	दिन में दो बार।
दुले	पु०	(कां)	आने वाले कल, अगला दिन, देखा "शुई"।
दुधापत्ती खेलना	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में "किसगुथन" के समय विवाहित हो रहे लड़के और लड़की के लिए एक क्रीड़ा विशेष। एक कटोरे में दही डालकर उसमें कुछ पैसे और एक नकद रुपया डाला जाता है, लड़के और लड़की की ओर से प्रयत्न यह रहता है कि रुपया उठाया जाए, जो रुपया उठाले, उसकी जीत मानी जाती है।
दूघार	स्त्री०	(कां)	आबादी के घर से काफी दूरी पर स्थित जमीन जिस में एक छोटी सी झोंपड़ी और पशुशाला बना ली जाती है, जिस से उस जमीन की रखवाली हो सके, पशुओं का गोबर खाद के रूप में उस जमीन में आसानी से डाला जा सके, और उस जमीन में उगे घास आदि का चारे के रूप में लाभ उठाया जा सके।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
दुधूर्नों	पु०	(कां) मिट्टी का बरतन जिस में दूध गर्म किया जाता है।
दुम्बा	पु०	(कां) झाड़ियों का एक घना समूह।
दुब्ब	स्त्री०	(कां) दूब, घास।
दुब्ब देना	क्रि०	(कां) बधाई देना, कांगड़ा जनपद में पुत्र-उत्सव आदि के शुभ अवसर पर बधाई देते समय दूब घास की तीन डालियां अर्पित की जाती हैं जिसका अभिप्राय यह रहता है कि जिस तरह दूब घास विकट से विकट परिस्थितियों में भी फलती फूलती रहती है उसी भांति वृद्धि होती रहे।
दुम	पु०	(कां) आंदोलन। २—तिलका, आदमी के शरीर पर छोटा सा काला दाग।
दुखी	वि०	(कां) चिपचिपा।
दुसना	क्रि०	(कां) दिखाई देना।
दुस्सि जाणा	क्रि०	किसी त्यौहार वाले दिन किसी निकट सम्बन्धी का देहान्त हो जाना।
दुना	पु०	(कां) दुम।
दूआ	वि०	(कां) दूसरा।
दूःसां	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का जंगली पौधा।
दे	अ०	(कां) अपादान कारक का विभक्ति चिन्ह।
देआ	आज्ञार्थक क्रिया	(कां) दे दो।
देऊ	सं०	(कु) देवता प्रयोग—देऊरी पूजा करनी। देवता की आरती करना।
देस	स्त्री०	(कां) सीमा, किनारा।
देहर खड्ड	स्त्री०	(कां) व्यास नदी की सहायक नदी, गाज उपनदी की एक शाखा उपनदी जो जिला चम्बा की पहाड़ियों से निकल कर कोटला के आस पास बहती हुई बहराल और भेई खड्ड को साथ लेकर गाज उपनदी में मिलती है। इस खड्ड से सिंचाई के लिए छोटी नहरें भी निकाली गई हैं।
देहरी	पु०	(कां) विवाहोत्सव में पुरोहित्य संस्कार में काम आने वाला एक विशेष प्रकार का लकड़ी का उपकरण।
देहरी	स्त्री०	(कां) सीमा बुर्ज।
देहल	स्त्री०	(कां) देखो "दुआठन"।
दोकम	स्त्री०	(का) एक फुट गहरा गढ़ा जिस में "देहल" फिट किया जाता है।
दोत	स्त्री०	(कु, कां) प्रातःकाल।
दोतरी	सं०	(कु, गा,) (कां) मादा भेड़।
दोसी	अ०	(कु) प्रातःकाल, कल सवेरे।
दोरीदेसी	स्त्री०	(कां) आमने सामने की सगाई।
दोली	वि०	(कु, कां) द्वितीय, दूसरे स्थान पर।
दोहडू	पु०	(कु, कां) ऊन की चादर।
दोहर	स्त्री०	(कां) दो फसली जमीन।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
दोहरू	पु०	(कां)	तेल अथवा घी डालने की कलछी।
दोसरी	स्त्री०	(कां)	गले का हार, चांदी का आभूषण जो गले में पहना जाता है।
दोसियां	स्त्री०	(कां)	दो इलाकों के मध्य में सीमा रेखा।
दौंद	पु०	(कु)	दांत, "दंद" ।
द्राम	पु०	(कु)	एक कच्चे सेर का तीसरा भाग जो लगभग दो छटांक के बराबर होता है।
			ध
धंजा	पु०	(कां)	विश्वास, भरोसा, यकीन।
धनी या धोणी	पु०	(कु)	डागी का कर्नल मालिक।
धनोंद	पु०	(कां)	एक प्रकार का पौधा जिस में टहनियां और पत्ते नहीं होते अपितु छड़े होते हैं इस के तन्तुओं की रस्सियां भी बनती हैं।
धमोंड	स्त्री०	(कां)	भिड़।
धरतीदा	पु०	(कां)	सांप।
धरन	स्त्री०	(कां)	चार सेर के बराबर वज़न।
धरमोड़		(कां)	देखो "धमोड़"।
धरियाड़ा	पु०	(कां)	मृत्यु के बाद दस दिन तक दीपक जलता रखने की प्रथा।
धरीड़ना	क्रि०	(कां)	खींचना।
धरो	पु०	(कां)	धोखा।
धरोई	पु०	(कां)	वह व्यक्ति जो गन्नों का एक मुट्ठा बेलने में देता है।
धाऊड़ा	वि०	(कु)	अधूरा।
धाओ	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिसके पत्तों से चमार चमड़ा रंगते हैं।
धाचना	क्रि०	(कु)	थामना।
धानकुटी	स्त्री०	(कां)	धान कूटने की मशीन।
धान चिड़ी	स्त्री०	(कां)	एक चिड़िया विशेष जो धान के खेतों में अपना बसेरा बनाती है।
धानून	स्त्री०	(कां)	वह ज़मीन जिस में धान बोये जाते हैं।
धामड़	स्त्री०	(कां)	एक सांप विशेष जो एक वृक्ष से छलांग लगा कर दूसरे वृक्ष पर पहुंच जाता है।
धामें	क्रि० वि०	(कु)	भूमि से अलग, ऊपर।
धाम	पु०	(कु, कां)	विवाह का प्रीति भोज।
धामक धामड़ू	पु०	(कु, कां)	विवाहोत्सव के पश्चात् चौथा दिन।
धार	स्त्री०	(कु, कां)	पर्वतमाला।
धार आसापुरी	स्त्री०	(कां)	पालमपुर में एक धार विशेष।
धार चिन्तपूर्णी	स्त्री०	(कां)	देहरा और जसवां के मध्य में एक धार विशेष।
धार चढ़ियार	स्त्री०	(कां)	जिला कांगड़ा में तहसील पालमपुर में एक धार विशेष।
धार चिनहारी	स्त्री०	(कां)	हमीरपुर में एक धार विशेष जिस पर चिनहारी देवी का मन्दिर है।
धार धरोट	स्त्री०	(कां)	पालमपुर में रखौने के पास एक धार का नाम।
धार निपाली	स्त्री०	(कां)	रानीताल और हरिपुर के मध्य में एक धार विशेष।
धार बर्मी	स्त्री०	(कां)	बैजनाथ में एक धार विशेष।
धार बंडयारा	स्त्री०	(कां)	पालमपुर में एक धार विशेष।
धार बरमन	स्त्री०	(कां)	पालमपुर में एक धार विशेष।
धार बौह कुवालु	स्त्री०	(कां)	कांगड़ा में लंज के पास एक धार विशेष।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
धार रामगढ	स्त्री०	(कां) सोहलसिगी के ठीक सामने वाली धार।
धार सिवेकी	स्त्री०	(कां) देहरा में डाडा सीबा के पास एक धार विशेष।
धार सोहलसिगी	स्त्री०	(कां) हमीरपुर में कुटलैड़ के इलाके में एक धार विशेष।
धारी	स्त्री०	(कां) मकान की दीवार के अन्दर की तर्फ लगभग आधफुट चौड़ी और चार पांच फुट लम्बी अलमारी।
धिऊ	स्त्री०	(कां, कु) बेटी, पुत्री, लड़की।
धीरे	अ०	(कु) दिशा, की ओर, की तर्फ। प्रयोग—सोंझा म्हारी धीरे एजो। शाम को हमारे यहां आना।
धी	स्त्री०	(कां, कु) दुहिता, पुत्री, लड़की।
धी-धियाणा	स्त्री०	(कु, कां) गोत्रजा, परिवार की पुत्री।
धीड़ना	क्रि०	(कां) देखो "धरीड़ना"।
धुम्रालकरू	पु०	(कां) वह व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति की धर्मपत्नी के साथ अपने गांव की हद से बाहर निकल जाए। पं० दुधालणा।
धुगलान	स्त्री०	(कां) खान पाण वाले जूठे बरतनों के धोवन का पानी जो दूध देने वाले पशुओं को दिया जाता है।
धुड़	स्त्री०	(कां) गन्तव्य स्थान।
धूपकल	पु०	(कां) धोबीघाट।
धुपला	पु०	(कां) ऐसी जमीन जिस पर सुबह की धूप पड़े।
धुपा	पु०	(कु) धूप। प्रयोग—मु छापरा धांवे जाना धूपा सिपदै। मैंने छत पर जाना धूप तापने के लिए।
धूड़	पु०	(कां) बांस की एक जाति।
धूड़ा	पु०	(कां) अंजीर का वृक्ष। धूड़े रंग का।
धूड़ा	पु०	(कां) सूखे आटे का पलेथन, जो गेहूं की चपाती पकाते समय गीले आटे के पेड़े के साथ लगाते हैं।
धैड़	स्त्री०	(कां) आयातकार कुदाल्।
धो	पु०	(कां) देखो "धुगलान"।
धौड़	पु०	(कां) बैल।
धोतरी	स्त्री०	(कु) बेटी की बेटी।
धोनिश	पु०	(कां) कपड़े धोने की जगह, धोबीघाट।
धोल	स्त्री०	(कां) कूल्ह के पानी का प्रयोग करने की बारी।
धौ	पु०	(कां) वृक्ष विशेष, जिस के पत्ते को भेड़-बकरियां बड़े चाव से खाती हैं।
धोज	स्त्री०	(कु) ध्वज, देवते के मन्दिर में बड़ा सारा स्तम्भ।
धौजो	स्त्री०	(कु) झंडी।
धौलाधार	स्त्री०	(कां) हिमालय की दोरसंबान शाखा की एक उपशाखा जो कांगड़ा को चम्बा से पृथक करती है।
धौलू	पु०	(कां) घास की जड़ जो रात को रेडियम के समान चमकती है।
ध्यालू	पु०	(कां) १—किसी ग्राम देवता के स्थान पर चढ़ाया जाने वाला गोरस। २—देखो "झेडू"।
ध्योड़ना	क्रि०	(कां) उधेड़ना, बाट उतारना।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
घ्योता, धोतरू	पु०	(कां)	पुत्री का पुत्र ।
घ्यालू	पु०	(कां)	मिट्टी का छोटा सा बरतन जिस में किसी, सम्बन्धी अथवा, मित्र के यहां दूध दही आदि ले जाया जाता है ।
घ्योचारा	पु०	(कां)	स्वागत-विशेष ।
			जब बरात कन्या पक्ष वालों की तर्फ से व्यवस्थित डेरे में पहुंच जाती है, तो कन्यापक्ष वाले वर के लिए कपड़ा, टिक्कर और कुछ मिष्टान्न भेजते हैं, इस स्वागत को घ्योचारा कहते हैं ।
			न
नंती	सं०	(कां)	कान का एक आभूषण विशेष ।
नंद	क्रि०	(कां)	आनन्द ।
नआं	अ०	(कां)	नहीं ।
नई	स्त्री०	(गा)	नदी ।
		(कु)	"नौई" ।
नकांड़ा	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान जो बादामी रंग का तथा लम्बा और पतला होता है ।
नकांडी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का धान जो नकांडा से भी पतला होता है, इसके चावल खुशबूदार होते हैं और बासमती की तरह बढ़िया समझा जाता है ।
नकल घोंड़ा	वाक्यांश	(कु)	घोड़ा जैसा ।
नकटू	पु०	(कां)	चूहा ।
नकढो	पु०	(कां)	खेत में से पानी के प्रवाह का मार्ग ।
नकेल	स्त्री०	(कां)	१—बैलों और भैंसों को काबू में रखने के लिए उनके नाक में डाली गई रस्सी ।
			२—बेलने के दोनों की कीलें ।
नकोरज	अ०	(कां)	व्यतीत चौथा दिन ।
नगर	पु०	(कां)	नगर, कस्बा ।
नग	पु०	(कां)	वस्तुओं का एक बण्डल ।
नचरोही	अ०	(गा)	आने वाला चौथा दिन ।
नड्ड	स्त्री०	(कां)	दल-दल वाली जमीन ।
नड़	पु०	(कां)	एक प्रकार की घास ।
नड़	पु०	(गा)	पत्थर, एक प्रकार की जाति ।
नड़ाई	स्त्री०	(कां)	नलाई, फसल के खेत से छांटकर घास फूस निकालने का कार्य ।
नड़ा जाल	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक जाल विशेष ।
नड़ावा	पु०	(कां)	नलाई करने वाला उपकरण, फसल में से घास फूस को छांटकर निकालने वाला उपकरण ।
नड़ू	पु०	(कां)	'नड़' नामक पौधे की टहनियां ।
नथ	स्त्री०	(कां)	एक आभूषण विशेष, जिसे स्त्रियां नाक में पहनती हैं ।
नथा	स्त्री०	(कां)	सगाई ।
नथो	अ०	(कां)	नहीं तो ।
ननौत्तर	पु०	(कां)	पति की बहिन का लड़का ।
नबीलना	क्रि०	(कां)	दबाकर निचोड़ना ।
नलपणी	स्त्री०	(कां)	देखो "नली" ।
नली	स्त्री०	(कां)	"काहरग" की गट्ठल की अन्दर की खाली जगह ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
नली	स्त्री०	(कां)	एक बूटी विशेष जिसकी डाली प्याज के पत्ते की नली के समान होती है परन्तु यह बूटी प्याज की भुक्की अपेक्षा बहुत लम्बी होती है इसकी मध्यमान ऊंचाई चार फुट है। भेड़ बकरियों की हड्डी टूट जाने पर इसकी गोली देने से हड्डी जुड़ जाती है।
नरेल	पु०	(कां)	नारियल।
		(कु)	हुक्का।
नराशा	पु०	(कां)	जिसे कोई आशा न हो।
नसेट	वि०	(कां)	निश्चेष्ट।
नसोंज	वि०	(कां)	शुद्ध खालिस।
नों	पु०	(कां)	नाम।
नाऊं जेहा	अ०	(कु)	नाम मात्र, थोड़ा सा। (पं० नांजिहा)
नांका	पु०	(कु)	गूंगा।
नांती	स्त्री०	(कां)	मर्दों के कानों के सोने के बने हुए आभूषण।
नाऊ	पु०	(कां)	मकान पर "खड़" नामक घास की छत डालते समय लम्बे बांस का डंडा जो छत पर पांव रखने के लिए काम आता है।
नाचार	पु०	(कां)	एक खेत से दूसरे में पानी का प्रवाह।
नाटी	स्त्री०	(कु)	नृत्य, नाच।
नात्यां-गोत्यां	पु०	(कां)	सम्बन्धी, रिश्तेदार।
		(कु)	'नाती पोती'।
नाबत	वि०	(कां)	न्यूनता।
नाय्दी	वि०	(कां)	किसी और स्थान।
नारस	वि०	(कां)	जाति से अलग किया हुआ व्यक्ति।
नाल	पु०	(का)	छोटा नाला, वे खेत जो नाले जैसी किसी नीची भूमि के सूखने पर बनाए गए हों।
नाल	स्त्री०	(कां)	खोखला बांस।
नाल	स्त्री०	(कां)	एक नाली विशेष जिसमें घराट चलाने के लिए पानी आता हो।
नाल	पु०	(कां)	खड्ड, खड्ड के किनारे वाले खेत।
नाल	स्त्री०	(कां)	काहरण की शहतूत।
नालू	पु०	(कां)	एक प्रकार का 'खपरा' जो मकान की छत बनाते समय सामान्य खपरे के ऊपर डाला जाता है। नलका।
नालू	पु०	(कां)	पशुओं की एक बीमारी विशेष।
नाहन	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का बांस।
नाहलू	पु०	(कु)	नाभि।
निकना	क्रि०	(कु)	नलाई करना।
निबल	पु०	(कु)	अनावृष्टि, साफ आसमान।
नियारा	वि०	(कां)	विलक्षण, अनोखा।
निकम सिद्धि	वाक्यांश	(कु)	मनघड़ंत बात, झूठी कथा, अकारण। प्रयोग–तेइऐ मू चांवें निकम सिद्धि ऐ दोष लाऊ। उस ने मेरे ऊपर अकारण दोष लगाया।
निकलदा	पु०	(कां)	पूर्व की दिशा, सूरज निकलने की दिशा, निकलना।
निपिछला	अ०	(कां)	पीछे वाले से अगला।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
निभना	क्रि०	(कु. कां)	समाप्त होना, निपट जाना। (प० निभणा)।
निभली	स्त्री०	(कां)	जमीन का सख्त टुकड़ा।
नियारा	पु०	(कां)	देखो 'नीह'/झनोला।
नियासा	पु०	(कां)	अभिशाप। कुल्की में निहासा।
नियुगल खड्ड	स्त्री०	(कां)	यह पालमपुर के उत्तरीय भाग के हिम वाले पर्वतों से निकल कर तहसील के बहुत सारे भाग को सींचती हुई टीरा सुजानपुर के स्थान पर व्यास नदी से मिलती है।
निरगला, नरिगला	अ०	(कु)	अगले से अगला वर्ष का।
निशानी	स्त्री०	(कां)	सिंचाई नहर से छोटी सी कूल्ह काट कर खेतों की सिंचाई।
निस्सरणा	क्रि०	(कां)	किसी पौधे में से नई कोंपलें निकलना।
निहारा	पु०	(कु)	सवेरे।
निहालना	क्रि०	(कु)	प्रतीक्षा करना।
नींदर	स्त्री०	(कां)	निद्रा।
नीज	स०	(कु)	नींद, निद्रा।
नीणा, नैणा	क्रि०	(कां)	ले जाना।
नीर	पु०	(कां)	मन्दिर के साथ रखा हुआ घड़ा जिसमें लोग हाथ-पांव धोया करते हैं।
नीह	पु०	(कां)	मनुष्य अथवा पशु का छोटा बच्चा जिसका हाजमा कमजोर हो।
नीलड़ी	स्त्री०	(कां)	नीलकंठ पक्षी।
नीलसरा	पु०	(कां)	एक जंगली चौपाया जिसका सिर घोड़े के सिर की भांति होता है।
नीलाडंगू	पु०	(कां)	एक जहरीला बिच्छू जो जिस पत्थर को दो तीन बार काटता है वह पत्थर नीला हो जाता है। ऐसा पत्थर कई दवाइयों में इस्तेमाल होता है।
नीहल	पु०	(कु. कां)	मैदान।
नीहुला	वि०	(कु. कां)	नीचे का।
नुहारी	स्त्री०	(कु. कां)	प्रातः काल का हल्का सा खाना।
नुकसार	पु०	(कां)	नुकसान।
नेयोड़ा	पु०	(कां)	पकाई हुई सब्ज़ी भाजी जिसके साथ रोटी खाई जाती है। शिकार का रस।
नेड़ै	अ०	(कु. का)	नजदीक, निकट।
नेत्री	स्त्री०	(कां)	दही बिलोने के लिए रस्सी विशेष।
नेरना कालजा		(कां)	(निर-अन्न) खाली पेट, बिना कुछ खाए।
नेहा	अ०	(कां)	इस तरह।
नैसा	पु०	(कां)	शाप, अभिशाप।
नोआहे	पु०	(कां)	गत्ते अथवा लकड़ी के बने हुए जूतों के माप।
नोहारी	सं०	(कु)	प्रातःकाल का खाना, नाश्ता।
नौईन्हेली	स्त्री०	(कु)	नव विवाहिता।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
नौआबाद	पु०	(कां)	देखो "नौतर", वह पट्टा जिसके अनुसार रिहायशी मकान बनाने का अधिकार दिया जाता है।
नौई	स्त्री०	(कु)	नदी।
नौखी, नोखी	वि०	(कां)	अनोखी।
नौतर	पु०	(कां)	एक प्रकार का पट्टा जिसके अनुसार रिहायशी मकान बनाने का अधिकार दिया जाता है।
नौतर	पु०	(कां)	बंजर जमीन जो पहली बार काश्त के योग्य बनाई गई हो।
नौण	पु०	(कां)	पक्का तालाब जिसमें नहाने के लिए पानी जमा किया जाता है।
नौबत	स्त्री०	(कां)	शहनाई।
नौली	स्त्री०	(कां)	सद्य विवाहिता।
नौली	स्त्री०	(कां)	घास विशेष।
नौल्हीणा	क्रि०	(कु)	हाथापाई करना।
नौशना	क्रि०	(कु)	जाना।
नौहणा	क्रि०	(कु)	जाना।
न्यंगणा	क्रि०	(कां)	ड्यूटी पर भेजना।
न्याऊरूह	पु०	(कां)	ऐसा व्यक्ति जो दूसरे की पत्नी के साथ भाग जाए परन्तु उसके पति को यथेष्ट रुपया देकर मामले को रफा-दफा करा दे और अपने गांव को छोड़ने पर मजबूर न हो।
न्यातर	पु०	(कां)	देखो 'झोलना'।
न्याही	स्त्री०	(कु, कां)	खरीफ फसल।
न्यूंदा देना	क्रि०	(कां)	निमंत्रण देना, भोजन के लिए बुलाना।
न्योड़ा	पु०	(कां)	भोज्य पदार्थ जिसके साथ चपातियां खाई जाती हैं।
न्हजों	सर्व०	(कां)	उनको।
न्हंदा	सर्व०	(कां)	इनका।
न्हेरना	पु०	(कां)	नाखून उतारने का औजार।
न्हेरा	पु०	(कां)	अन्धेरा।
न्हयाली	स्त्री०	(कां)	लोहार की धौंकनी।
न्हिन	पु०	(कां)	नीचे, मैदानी शहर आदि।
न्हियारा, निहारा	पु०	(कां)	अन्धेरा।
न्हियालणा	क्रि०	(कां)	प्रतीक्षा करना।
न्हिलिया	पु०	(कां)	मैदानों का रहने वाला।

प

पंगा	पु०	(कां)	छोटी पहाड़ी का टीला।
पंगा	पु०	(कां)	ढलान वाली जमीन।
पंगु	पु०	(कां)	वृक्ष की छोटी टहनी।
पंजल	पु०	(कां)	होश्यारपुर और कांगड़ा के सीमान्त पर एक इलाका विशेष, यह इलाका चिन्तपूर्णी की धार के दोनों तरफ स्वआं नदी और व्यास नदी के मध्य समझा जाता है।
पंजाप	पु०	(कां)	पुत्रोत्सव पर सूतक से शुद्धिकरण वाले दिन पुरोहित्य संस्कार और उस दिन बादरी से गीत गाने के लिए आई हुई स्त्रियों में शक्कर और भिगोए चने बांटने की प्रथा।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पण्ड	स्त्री०	(कां)	बोझा।
पण्ड	स्त्री०	(कां)	घर की सबसे ऊपर वाली छत।
पण्डबगार	स्त्री०	(कां)	भारी प्रकार की बेगार।
पंद	स्त्री०	(कां)	चटाई।
पंधालू	पु०	(कां)	किसी ग्राम देवता के यात्री अथवा उसके पूजक।
पक्खू	पु०	(कां)	चरखे का भाग विशेष।
पकड़ाऊ	पु०	(कां)	पकड़ कर लाए हुए अपनी बिरादरी से बाहर के आदमी।
पकनाली	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
पखरूआ	पु०	(कां)	सामान्य पक्षी।
पखरू	पु०	(कां)	पक्षी।
पक्षव	पु०	(कां)	मकान की बाहरी छत का एक पक्ष।
पखला	वि०	(कु, कां)	अजनबी, परदेसी, जिसे पहचाना न जा सके।
पखोलू	पु०	(कां)	मोटी पटसन के पौधे।
पच्छना	क्रि०	(कां)	कुल्हाड़े से लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े करना।
पचाणना	क्रि०	(कां)	पहचानना।
पचाशण	क्रि०	(कु)	धान के खेत की उरी लगाने के लिए दूसरी बार हल चलाना।
पचियाली	स्त्री०	(कां)	मकान के पिछली तरफ, मकान का पिछला बरामदा।
पची	सं०	(कां)	मृत्यु से तेरहवें दिन का संस्कार।
पचोतरी	स्त्री०	(कां)	पालम के इलाके में मालिक द्वारा मुजारे से लिया जाने वाला एक प्रकार का टैक्स।
पचौला	पु०	(कां)	चूल्हे के पीछे छोटा चूल्हा।
पछांह,	अ०	(कां)	पीछे।
पछैणणा, पछियाणणा	क्रि०	(कु, कां)	पहचानना।
पछौहरी	वि०	(कु)	पछेती बिजाई, मौसम की समाप्ति पर बोई गयी फसल।
पजना, पोजना	क्रि०	(कां, कु)	जमीन से उगना।
पज्जा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, इसका फल चरी जैसा होता है।
पट्टा बंध	स्त्री०	(कां)	देखो "गाडू बंध"।
पट्टी	स्त्री०	(कां)	देखो "धर्ती"।
पट्ठे	पु०	(कां)	देखो "दौण"।
पटड़ियां	स्त्री०	(कां)	टखनों में पहनने के चांदी के आभूषण।
पटलोई जाना	क्रि०	(कां)	भूल जाना।
पटानी	स्त्री०	(कां)	तितली।
पटाकना	क्रि०	(कां)	किसी चीज को विशेषतः किसी अनाज को छाज से साफ करना।
पटिकना	क्रि०	(कु)	उछलना, कूदना।
पटूहरू	पु०	(कु)	खमीर वाली बड़ी सी रोटी।
पटोरा	पु०	(गा)	मैदान।
पट्ठ	स्त्री०	(कां)	डेढ़ वर्ष की बकरी।
पठ	पु०	(कां)	एक माप।
पठल्	सं०	(कु, कां)	बकरी।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पड़गाई	स्त्री०	(कां)	स्वागत विशेष। जब बारात कन्या पक्ष वालों के घर के निकट पहुंच जाए तो कन्या पक्ष के कहार आकर वर पक्ष के कहारों से वर की पालकी ले लेते हैं, इस स्वागत विशेष को पड़गाई कहते हैं।
पड़ा	पु०	(कां)	छोटा हिरन।
पड़्गा	पु०	(कां)	नव विवाहित दम्पति को गोत्र या बिरादरी के साथ भोजन खिलाना।
पणक	स्त्री०	(कां)	काहरगा का एक उपकरण विशेष, जो बुने हुए कपड़े को खोलकर और तान कर रखे रखता है।
पणगेहड़ी	स्त्री०	(कां)	पण्डितों (ब्राह्मणों) का मुहल्ला।
पणमार	स्त्री०	(कां)	"काहरग" (करघा) का एक उपकरण विशेष जो "रछ" को गति देकर सन्तुलन में रखता है।
पणा	पु०	(कां)	दरिया के पानी के साथ आई मिट्टी आदि जो किसी खेत आदि में सट कर लग जाती है।
पणियाला	पु०	(कु, कां)	चेचक।
पणमी	स्त्री०	(कां)	देखो "पाखड़ी"।
पणोई	पु०	(कां)	खेत में से गन्ने की कटाई करने वाला व्यक्ति।
पणोडी	स्त्री०	(कां)	खलिहान में काम आने वाली एक टोकरी विशेष जो अनाज को भूसे से जुदा करते समय काम आती है।
पतडू	पु०	(कां)	गुलाबी पत्तों वाला एक वृक्ष।
पत्थर	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान, पत्थर।
पत्थू	पु०	(कां)	चक्की के ऊपर वाले पाट के सुराख में लगा हुआ लकड़ी का उपकरण।
पत्राहूना	क्रि०	(कां)	नंगे पांव चलना।
पत्तराह	पु०	(कां)	पशुओं का चारा, वृक्षों की छोटी छोटी पत्तों वाली टहनियां जो अधिकांशतः दुधारू पशुओं को चारे के रूप में दी जाती हैं।
पतरीड़न	स्त्री०	(कां)	सोटी।
पतरेर-ई	पु०	(कां)	पिता के छोटे भाई के बच्चे।
पत-रोड़	पु०	(कां)	पहाड़ी समोसा।
पतरोला	पु०	(कां)	तमाचा।
पताजी	सं०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
पता-थी	पु०	(कां)	पता ठिकाना।
पतियाना	क्रि०	(कां)	रूठे को मनाना।
पतुरा	पु०	(कां)	गाय बैल का जुकाम जिसमें मामूली बुखार भी होता है।
पतै जी	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
पतौहरी	स्त्री०	(कु)	३-४ बजे शाम का खाना।
पथ पथा	पु०	(कु, कां)	चार सेर कच्चे का माप विशेष।
पथूई	स्त्री०	(कु)	वास्कट।
पदीधन	पु०	(कां)	पुदीना और धनिया को सम-मात्रा में मिलाकर बनाया गया एक पदार्थ विशेष जिसके खाने से हिचकी दूर हो जाती है।
पदोड़ा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
पधाड़ी जाणा	क्रि०	(कां)	किसी देवता की यात्रा के लिए जाना।
पनियापड़ा	पु०	(कां)	कुम्हार का पोचा जिसे वह बरतन बनाते समय इस्तेमाल करता है।
पनियार	पु०	(कां)	नदी के किनारे या किसी खड्ड में पीने के पानी का चश्मा।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पनियाली	स्त्री०	(कु, कां)	भेड़ बकरियों की बीमारी। ऐसी जमीन जिस में नहरी पानी से सिंचाई होती है।
परगड़ा	पु०	(कां)	प्रकाश, रोशनी, कथाकाल।
परगना	पु०	(कां)	माल बन्दोबस्त के लिए किया गया ज़िले के बराबर की एक प्रशासनिक इकाई।
पर्ज	अ०	(गा)	व्यतीत काल से पिछला दिन "फर्ज"।
परतनी	स्त्री०	(कां)	कमरबन्द "गाची"।
परदेसी	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
परबथ	पु०	(कां)	पर्वत, पहाड़।
परमल	पु०	(कां)	एक बेलि विशेष जिस पर पंडोल की किस्म के फल लगते हैं जिन्हें सब्जी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
परमल	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान।
परमेसरां दा वेला	पु०	(कां)	प्रातःकाल, ब्रह्ममहूर्त।
परूसोड़ी	स्त्री०	(कु)	पीढ़ी, सन्तति।
परसन	पु०	(कां)	ज्योतिष का प्रश्न।
परसाण	स्त्री०	(कां)	सीढ़ी।
परसानी	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव में वह संस्कार जब दूल्हा का केश मुण्डन किया जाता है।
परसोरी	स्त्री०	(कां)	पीढ़ी, सन्तति।
परस्हाई	स्त्री०	(कां)	विवाह करने के लिए जाने से पूर्व विवाहित हो रहे लड़के को अच्छे अच्छे वस्त्राभूषण आदि पहना कर तैयार करने की प्रक्रिया।
पराक	स्त्री०	(कां)	मीठा समोसा जिस में "कसार" डाला जाता है।
पराड़	पु०	(कां)	एक प्रकार का कपोत।
पराणा	क्रि०	(कां)	मिलना, प्राप्त करना, तलाश करना। प्रयोग—तुसाँ परावे केतरी हांडी मारी। आप को ढूंढते ढूंढते कितने चक्कर लगाए।
परातमी	स्त्री०	(कां)	बूढ़ी, स्त्री।
पराल	पु०	(कु, कां)	धान का सूखा घास।
परिबन्द	पु०	(कां)	कलाइयों में पहने जाने वाले चांदी के आभूषण।
परियाशा	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष।
पर्ह	अ०	(कां)	पिछले साल।
परेड़ै	अ०	(कां)	दूर, परे।
परै	स्त्री०	(कां)	दो मुट्ठी भर अनाज।
परैण	स्त्री०	(कां)	हल में जुते बैलों को हांकने के लिए एक छड़ी विशेष।
परैरा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष। इस के पत्तों का चारा भैंसों के दूध को बढ़ाता है, इस की लकड़ी का ढोल के लिए खोल बनता है, इस की कोंपल कान की दर्द के लिए लाभकारी होती है।
परौः	पु०	(कां)	रास्ते के किनारे यात्रियों को पानी पिलाने के लिए किया गया प्रबन्ध विशेष।
परोका	वि०	(कां)	पिछले वर्ष का।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
परोड़ी	अ०	(कां)	आने वाले कल से अगला दिन।
परोरा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
परोलणा	क्रि०	(कु, कां)	लेप करना, लिपना, मिलाना। पं०—परोला।
परोड	पु०	(कां)	पांव।
परोली	स्त्री०	(कां)	मकान की छत के दोनों पक्षों का वह हिस्सा जहां से वर्षा आदि का पानी नीचे गिरता है।
परोली	स्त्री०	(कां)	देखो "छनियार"।
परोले	पु०	(कां)	ऐसे खपरे जो मकान की छत के "परोली" वाले हिस्से में डाले जाते हैं।
पलेटना	क्रि०	(कु कां)	लपेटना।
पलसेटा	सं०	(कां)	चलते चलते गिरने की अवस्था।
पलहृदा	पु०	(कां)	देखो "रे ड़"।
पला	पु०	(कां)	विशेष भाजी, जिस में अन्न का प्रयोग नहीं होता।
पल्ला	पु०	(कां)	एक प्रकार का वनस्पति रोग।
पलारू	पु०	(कां)	कटी हुई गेहूं की फसल का एक झुंड।
पलेंजा	पु०	(कां)	अनाज को हिलाने के लिए लकड़ी का एक उपकरण विशेष। देखो "त्रोंगल"।
पल्ली	स्त्री०	(कां)	छोटा सा मकान, कुटिया।
पलोसना	क्रि०	(कां)	पालना।
पश्वाज	पु०	(कां)	बारीक सूती कपड़े का चोगा जो अधिकांशतः उच्च घराने की स्त्रियां पहनती हैं।
पांहंद	पु०	(कां)	खेत का निचला किनारा जहां से पानी खेत से बाहर निकलता है।
पांघी, पांघा	स्त्री०	(कु)	वृक्ष का तना।
पांधै	अ०	(कु)	ऊपर।
पाऊ	पु०	(कां)	मुजारा।
		(कु)	डाला।
पाक	स्त्री०	(कां)	पीक, किसी फोड़े फिन्सी से गन्दा मवाद।
पाचें, पोचें	सं०	(कां)	पत्ते।
पाज	स्त्री०	(कां)	जंगली चैरी।
पाठा	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की छोटी मछली।
पाठू	पु०	(कां)	एक मछली विशेष जो गिड की तरह छोटी होती है तथा ऊपर से हरे रंग की एवं नीचे से सफेद रंग की होती है; इसका पेट अपेक्षाकृत चौड़ा होता है।
पाण देना	क्रि०	(कां)	लोहे के हथियार को गर्म करके पानी डालना जिससे उसके गर्म तन्तुओं में जमाव के कारण अधिक बल आ जाए। पं०—पाण देना।
पाणी बग जाणा	क्रि०	(कां)	हुक्म चलना। प्रयोग—ग्रांदी सारी शामलात पुर सरकारा दा पाणी बगि गया, जिसा जो दफा ३८ चे लई ल्या। गांव की सारी शामलात पर सरकार का हुक्म हुआ (कब्जा हुआ है) जिसे धारा ३८ के अधीन ले लिया है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पाणवां	पु०	(कां)	एक बुर्श विशेष जिस से काहुरग में ताने के धागों को साफ किया जाता है।
पाणी लौड़ना	क्रि०	(कां)	थप्पड़ मारना।
पातका	पु०	(कां)	ग्राम देवताओं की पूजा आदि के लिए बनाए गए स्थान जहां पत्थर की छोटी छोटी शिलाएं रखी रहती हैं।
पातला	क्रि०	(कु, कां)	कमज़ोर, निर्बल, पतला।
पात्ती करना	क्रि०	(कां)	जंगली पौधों के पत्तों को (छोटी छोटी टहनियों समेत) काट कर पशुओं के नीचे बिछाना ताकि उन से खाद का काम लिया जा सके।
पात्ती	स्त्री०	(कां)	ऐसे वृक्षों के पत्ते और टहनियां जिन्हें पशु नहीं खाते और जिन्हें रात को पशुओं के नीचे बिछाया जाता है जिस से वे गोबर के साथ मिलकर अच्छी खाद बनाएं।
पाथा	सं०	(कां)	दो सेर भर अनाज का लकड़ी या मिट्टी का बरतन।
पादका	पु०	(कां)	मन्दिर, किसी हिन्दु सन्त की समाध।
पादका	सं०	(कां)	किसी धातु के बने हुए देवता के चरण।
पाधुरा, पधरा	पु०	(कां)	समतल, मैदान।
पानतोड़	पु०	(कां)	घराट की कुल्ह से पानी तोड़ने का स्थान।
पानी लगना	क्रि०	(कां)	खेत में पानी देना।
पापड़	पु०	(कां)	गेहूं के खेत में पैदा होने वाला एक प्रकार का घास।
पारड़ी	स्त्री०	(कां)	सरसों का तेल डालने के लिए मिट्टी का छोटा सा पात्र।
पारखी	स्त्री०	(कां)	स्त्रियों के पहाड़ी नमूने के सैंडल।
पा'रा	पु०	(कां)	खेतों में फसल का पहरा देने के लिए बनाया हुआ अस्थायी निवास स्थान।
पारू	पु०	(कु, कां)	मिट्टी का छोटा सा पात्र जिस में दूध, घी अथवा सरसों का तेल रखा जाता है।
पाल	वि०	(कां)	लम्बा।
पालसरा	पु०	(कां)	कोठी का नम्बरदार, मण्डी के कुछेक इलाकों में आजतक नम्बरदार के लिए पालसरा ही कहते हैं, परन्तु कुल्लू में नेगी शब्द प्रचलित हो चुका है।
पाला	पु०	(कु)	सेब की एक घटिया किस्म।
			समय, बारी, अवधि। वह व्यक्ति जो कुल्लू में बगार के लिए अपनी बारी पर तैयार रहता था।
पाल्ला	पु०	(कां)	पौधे का एक रोग विशेष।
पाली	पु०	(कां)	पंक्ति।
पालु	पु०	(कां)	छोटी, कमज़ोर, पथिष्ट।
पाहरना	क्रि०	(कां, कु)	बालों में कंघी करना।
पाहुड़	पु०	(कां)	१—विवाह की सगाई के अवसर पर बिरादरी को दी गई धाम। २—माघ के महीने में चावलों के आटे की बनाई रोटियों की भेंट।
पाहू	पु०	(कां)	गुजारा।
पिंड	पु०	(कां)	जौ के आटे के पेड़े जो किसी धार्मिक उत्सव में सिद्धों अथवा जोगियों के नाम दिए जाते हैं।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पिंडी	स्त्री०	(का)	छोटा सा लम्बूतरा पत्थर जिसे लोग देवता की मूर्ति अथवा किसी सिद्ध आदि का प्रतीक समझ कर पूजते हैं।
पिआर	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की चपाती।
पिऊला	वि०	(कु)	पीला।
पिऊलू	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान जिसकी तासीर बहुत खुश्क होती है।
पिछांह	अ०	(कां)	पीछे।
पिठा	पु०	(क, कां)	आटा।
पिणपिणी	स्त्री०	(कु)	कनपटी, कान और आंख के बीच का भाग।
पिद्दू	पु०	(कां,कु)	एक पक्षी विशेष।
पिप्पल, पिपली	स्त्री०	(कां, कु)	लाल मिर्च।
पिपलें फेरना	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में नवविवाहित दम्पत्ति द्वारा पीपल वृक्ष की पूजा करवाना।
पिम्हां	पु०	(कां)	बसन्त ऋतु में खिलने वाले पीले रंग के फूल विशेष।
पियाणा	क्रि०	(कु, कां)	पिलाना।
पियाशा	पु०	(कु)	प्रकाश।
पिलियाना	क्रि०	(कां)	तेज करना।
पिल्लीं	स्त्री०	(कु)	घुटने से टखने तक की जंघा का मांसल हिस्सा, पिंडली।
पिस्सु या बिस्सु	सं०	(कां)	हिन्दुस्तानी (भोपल) और योरुपी नस्ल का कुत्ता।
पिढ़ना	क्रि०	(कु)	तैयार होना, देवता के रथ में आभूषण, कपड़े आदि लगाना। प्रयोग—(१) मेरी पालकी जो पीढ़ा (कां) मेरी पालकी को तैयार करें। २—एलरी धेरै देऊ लाहुरा पीढ़ना (कु) इस समय देवते के रथ पर आभूषण लगाए जा रहे हैं।
पीड़ना	क्रि०	(कां)	दबाकर रस अथवा पानी निकालना, निचोड़ना।
पीपनी	स्त्री०	(कां)	शहनाई, वाद्य यंत्र।
पीड़	पु०	(कां)	हल का निचला मोटा हिस्सा।
पीहू	पु०	(कां)	पपिहा।
पुंग	पु०	(कु)	किनारा। प्रयोग—खेता रा पुंग चूटू। खेत का किनारा टूट गया।
पुंगड़ा	पु०	(कां)	बच्चा।
पुम्बा	पु०	(कां)	ऊन साफ करने वाला कमीन व्यक्ति।
पुक्का	पु०	(कां)	चुम्बन।
पुक्करना	क्रि०	(कां)	सहायता के लिए आना। प्रयोग—मुंजों बक्ता पुरनी पुक्करेया। उस ने मेरी समय पर सहायता न की।
पुगना	क्रि०	(कु)	समाप्त होना, पूरा होना।
पुछ	पु०	(कां)	जानकारी।
पुछगिछ	स्त्री०	(कां)	पूछताछ, जांच पड़ताल।
पुजियारा	पु०	(कु)	पुजारी।
पुटोई जाना	क्रि०	(कां)	उखड़ जाना।
पुट्ठी	स्त्री०	(गा)	पहाड़ी। उलटी।
पुड़ना	क्रि०	(कां)	आभास होना। महसूस होना। पूरा होना।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पुड़ाना	क्रि०	(का)	टिका कर रखना, जमाकर रखना।
			प्रयोग—पैर पुड़ाई कन्ने रख, दिख्यां पेई जोदा।
			पांव जमा जमा कर रख, देखना गिर न पड़ना।
		(कु)	उलीकना।
			प्रयोग—मूंता तेरा फोटो पुड़ाना।
			मैंने तेरा फोटो उतारना है।
पुलकारना	क्रि०	(कां)	सहायता करना (देना)।
पुतली	स्त्री०	(का)	"छाणी"।
पुनना	क्रि०	(कु, कां)	अनाज को हवा के झोंको से भूसे से जुदा करना।
पुनू	पु०	(कु)	पूर्ण चन्द्रमा। पूर्णमाशी
पुनाई	स्त्री०	(कां)	भूसे और अनाज को पृथक करना।
पुरल्ल	पर:	(कां)	पश्चात्।
पुर	पु०	(कां)	इतने व्यक्तियों का समूह जो किश्ती में बिठा कर नदी के पार ले जाए जा सकें।
पुलची पौणा	क्रि०	(कां)	झगड़ पड़ना।
पूला	स्त्री०	(कु)	घास की जूतियां।
	पु०	(का)	घास का छोटा सा गट्ठा।
पुल्सो	स्त्री०	(कां)	प्रेयसी, प्यारी, प्रियतमा।
पुहाल	सं०	(कु)	गड़रिया, भेड़ बकरियां चराने वाला।
पू	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की बूटी जिस के पत्तों का पानी दाद चम्बल आदि रोगों के लिए लाभदायक होता है।
पेड़	पु०	(का)	रोटियां रखने के लिए तंग मुंह वाली एक टोकरी विशेष।
पेड़ू	पु०	(कु, कां)	दाने रखने के लिए बांस का बना हुआ सिलंडरनुमा बड़ा भारी टोकरा जिस में लगभग बीस पच्चीस मन दाने आ जाते हैं।
पेतरिय	पु०	(कां)	पिता का छोटा भाई।
पेपीआ	पु०	(कां)	चातुक, एक पक्षी विशेष।
पेरना	क्रि०	(कु)	एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना।
पलना	क्रि०	(कु)	तेल निकालना, कुचल देना, पीसना।
पेशणा	क्रि०	(कु)	अन्दर घुस आना।
			प्रयोग—मेरी जहोंधा न कौंडा पेठा।
			मेरे पांव में कांटा चुभ गया।
पेखड़ा	पु०	(कु, कां)	महीने के पहले पन्द्रह दिन।
पेहलीना	क्रि०	(कु)	कुचला जाना, कुचल देना।
			प्रयोग—बोहू लोका मोंझे एक शोहरू पेहलूआ।
			बहुत लोगों के बीच एक लड़का कुचला गया।
पैआ	पु०	(कां)	पैना।
पैखु	पु०	(कां)	देहान्त संस्कार के अवसर पर छोटे मोटे काम करने के लिए नियुक्त किया गया डागी जाति का व्यक्ति।
पैड़	स्त्री०	(कां)	पावों के निशान। देखो "नाऊ"।
पैंड़ा	पु०	(कां)	गन्ना पीड़ने के बेलने के ईद-गिर्द बैलों के चलने का स्थान।
पैड़िया	पु०	(कां)	पदचिन्ह, पैरों के निशान।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
पैना	वि०	(कां)	तीक्ष्ण, तेज़।
पैर	पु०	(कां)	काहरग का पैडल।
पैह	स्त्री०	(कां)	बकरी।
पैहट	पु०	(कां)	दलील, पोआइंट।
पोआर	अ०	(कु)	उस ओर।
पोऊड़ा	पु०	(कु)	घर के मकान का बाहर का कमरा।
पोना	पु०	(कां)	एक प्रकार का गन्ना।
पोरे धीरे	अ०	(कु)	उस तरफ, परली तरफ।
पोहलू, पोहलड़ू	पु०	(कां)	सूखी घास का ढेर।
पोली	स्त्री०	(कां)	एक विशेष प्रकार की चपाती या केवल आटा जो किसी ग्राम देवता के उपलक्ष में बनाई जाती है। कच्ची।
पौंत्री	स्त्री०	(कां)	कलाई में पहनने के सोने के आभूषण।
पौट	पु०	(कु)	घराट का पाट, चौड़ा पत्थर।
पौण	स्त्री०	(कां)	पवन।
पौधना	क्रि०	(कु)	दबाना, दफ़न करना।
पौर	अ०	(कां)	पर, परन्तु।
		(कु)	पिछले साल, खमीर।
पौरडू	पु०	(कां)	बच्चों के जूते।
पौरमेसर	पु०	(कां)	परमेश्वर।
पौरशी	अ०	(कु)	परश्व: अगला परसों।
पौहर	स्त्री०	(कां)	ताकत, शक्ति।
पौरहना	क्रि०	(कु)	रखवाली करना।
प्रसन	पु०	(कां)	काता हुआ धागा।
प्राम	स्त्री०	(कां)	खेत अथवा घास की "खुराट" में एक सिरे से दूसरे सिरे तक उतनी जगह जिसमें एक बार में एक व्यक्ति कटाई अथवा लवाई करते समय कार्य निष्पन्न करते। पं०—प्रान्त, पात।
प्रीत आना	क्रि०	(कां)	कामेच्छा का उद्रेक होना।
प्रेत	पु०	(कां)	प्रेतल।
		(कु)	भूत-प्रेत।
प्रेतना	क्रि०	(कु)	पलटना।
प्रेतडू	पु०	(कां)	काहरग में एक उपकरण विशेष जिस पर सूत उतारा जाता है।
प्रेतड़ू	पु०	(कां)	"जंदीड़ू" काहरग के साथ का दूसरा उपकरण।
प्रेतल	पु०	(कां)	कछुए की जाति का एक जलजन्तु जिस का बोझ एक मन के लगभग होता है।
प्रेम	पु०	(कां)	प्रेम।
प्लेथ	सं०	(कां)	चौकड़ी (पं० लत्थी)।
प्लेथ करना	क्रि०	(कां)	चौकड़ी मारना (पं० प्लत्थी मारना)।
प्यारना	क्रि०	(कां)	समझना, हृदयंगम करना।

फ

फंगेरणी	स्त्री०	(कां)	बांस की बनी हुई एक छोटी सी नफीस टोकरी जिस में हैंडल भी लगा रहता है। इसमें सीने पिरोने, कातने तुंबने का छोटा छोटा सामान रखा जाता है।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
फण्ड	स्त्री०	(कां)	मारपीट ।
फण्डर	स्त्री०	(कां)	बांझ गाय भैंस ।
फंडमार	पु०	(कां)	प्रसिद्ध काम करने वाला व्यक्ति ।
फन्चारी	पु०	(कां)	पुरोहित, उपाध्याय ।
फंदे	पु०	(कां)	मांस के पोटों के बाल ।
फक्का	पु०	(कु, कां)	सूखे दानों की उतनी मात्रा जो एक बार मुंह में डाली जा सके ।
फकाहुका लागना	क्रि	(कु)	जोर की बर्फ पड़ना ।
फगनू	पु०	(कां)	एक प्रकार का बांस ।
फगूड़ा	पु०	(कां)	अंजीर ।
फटनर	क्रि०	(कां)	तलवार आदि से जख्म करना ।
फड़फड़ाट	पु०	(कां)	दिखावा ।
		(कु)	फड़-फड़ करता हुआ ।
फड़ाकना	क्रि०	(कां)	धोना, धोकर झाड़ना ।
		(कु)	छाज द्वारा अनाज साफ करना ।
फनार	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष ।
फनियर	पु०	(कां)	भयंकर साप ।
फर्काड़ू	पु०	(कां)	देसी अनार ।
फर्जं, फौज़	अ०	(कु)	व्यतीत कल से पिछला दिन ।
फरड़ू	पु०	(कां)	शशक, खरगोश ।
फरना	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, फालसा ।
फर्शं	अ०	(कां)	देखो 'फर्ज', व्यतीत कल से पिछला दिन ।
फरेंडू	पु०	(कां)	खरगोश ।
फलांगड़	पु०	(कां)	विवाहोत्सव में विवाहिता लड़की द्वारा पहनी जाने वाली एक विशेष 'परांदा' ।
फला	पु०	(कां)	गेहूं के गाहने का उपकरण विशेष ।
फलाई	स्त्री०	(कां)	वृक्ष विशेष ।
फली	स्त्री०	(कां)	देखो "कुआई" ।
फल्लई	स्त्री०	(कां)	चर्मकारी में काम आने वाला लकड़ी का एक अड्डा विशेष ।
फलिया	पु०	(कां)	फाटक, घर के बाहर का द्वार ।
फलूर	पु०	(कां)	धान का पराल ।
फलौहरी	स्त्री०	(कु)	छोटी झण्डी जो ग्राम देवता के साथ लहराई जाती है ।
फहाजत	स्त्री०	(कां)	हिफाजत, सुरक्षा ।
फाओ	पु०	(कां)	चुम्बन ।
फाओड़ा	पु०	(कां)	लकड़ी का कस्सी नुमा उपकरण जिससे गोबर इकट्ठा किया जाता है या जमीन समतल की जाती है ।
फाकु	पु०	(कां)	चौकीदार, तरखान अथवा लोहार आदि को फसल की कटाई के समय दी जाने वाली फसल की गड्डी ।
फाकू	सं०	(कु)	खांसी ।
फागू	पु०	(कां)	जंगली अंजीर, एक खाने का फल ।
फाट	स्त्री०	(कु)	जंगल में वह खुली सी खाली जगह जहां कि घास पैदा होती है ।
फाट	स्त्री०		चरागाह ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
फाटना	क्रि०	(कां)	तलवार आदि से मारना ।
फाटी	स्त्री०	(कु)	गांवों का समूह जो कोठी से छोटा हो।
फाडी	वि०	(कु, कां)	अन्तिम, निकृष्ट ।
फापसना	क्रि०	(कां)	अन्धेरे में हाथों से टटोलना ।
फाफ	स्त्री०	(कु)	एक प्रकार का खमीर जिससे देसी शराब बनाई जाती है।
फाल्ही	स्त्री०	(कां)	ऐसा पुराना कपड़ा जिससे बच्चे की टट्टी आदि साफ करते हैं ।
फिज़ू	सं०	(कु)	जुट्टू-धागों की डोरी जिससे स्नान के बाद सिर के बालों को बांधते हैं ।
फिम्फरी	स्त्री०	(कु)	तितली ।
फिरि ईणा	क्रि०	(गा)	वापिस आना ।
फिल	स्त्री०	(कां, कु)	एक प्रकार का कीट जो बरसात में मकई और कीचड़ आदि पर होता है।
फिसड़ना	क्रि०	(कु)	फिसलना ।
फी	अ०	(कां)	फिर ।
फूक	स्त्री०	(कां)	आत्मा, चेतन ।
फूक पोहलू	पु०	(कां)	ज़मीन मालिक का ऐसा मुज़ारा जो केवल मृत्यु पर्यन्त ही मुज़ारागिरी का हक रखता हो, अर्थात् जिसकी सन्तान को उस ज़मीन पर मुज़ारागिरी का अधिकार न हो ।
फुकोई जाना	क्रि०	(कां)	जल जाना ।
फुखिना	क्रि०	(कु)	जल जाना ।
फुटकंडा	पु०	(कां)	एक बूटी विशेष ।
फुमणू	पु०	(कां)	मकई की 'मिञर' ।
फुलनू	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष जिस पर बरसात के दिनों में लाल फूल खिलते हैं, इस पौधे के पत्ते और फूल पशुओं के लिए ज़हर होते हैं ।
फुलपतास	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान जो सफ़ेद और पतला होता है ।
फुल्ल पौणा	क्रि०	(कां)	शक्कर बनने के लिए उबल रहे रस में से मैल निकल जाने के बाद बन रही शक्कर से आ रहे निखार की क्रिया ।
फुलियां	स्त्री०	(कां)	चांदी के दो छोटे छोटे आभूषण जो चौंक के साथ सिर में दोनों ओर पहने जाते हैं ।
फुली	स्त्री०	(कु)	नाक में लगाने के आभूषण विशेष ।
फेंवड़ा	सं०	(कु)	पांच छः अनाज डाल कर पानी में पकाया हुआ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।
फेरावेरा	पु०	(कां)	मकलावा, विवाह के पश्चात् पत्नी का पहली बार पति घर में जाना और एक दिन रह कर वापिस आ जाना ।
फोटका	पु०	(कां)	एक प्रकार की बकरियों की बीमारी
फोफोकुट्टणी	स्त्री०	(कां)	कुलटा, भोमोठगिनी ।
फो-फो	स्त्री०	(कां)	लूमड़ी ।
फोरस	अ०	(कु)	पिछला परसों ।
फोह्ला	पु०	(कु)	लकड़ी का तख्ता ।
बंगड़ी	स्त्री०	(कां)	सिराज में ब्राह्मणों द्वारा पहनी जाने वाली सूच्याकार सूती टोपी ।
बंगत	स्त्री०	(कां)	ज़मीन के लगान की नकद अदायगी ।
बंज	सं०	(कां)	बहिष्कार, बहिष्करण ।
बंडना	क्रि०	(कां)	बांटना। मं० बंडना ।
बन्द	पु०	(कु)	औरतों की कलाइयों के चांदी के बने आभूषण ।
बन्दरी, भन्दरी	सं०	(कु)	घासफूस की बनी हुई चटाई ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बई	स्त्री०	(कां)	बही, दुकानदार की रोकड़ पुस्तक ।
बई जाणा	क्रि०	(कां)	बैठ जाना ।
बईलै	क्रि०	(कां)	बैठ लीजिए ।
बंकार	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष, रक्ताजली निकलने पर इसके पत्तों को पानी में उबालकर उन पतों और उस पानी को शरीर पर मलते हैं ।
बक्खी	अ०	(कां)	की ओर, दिशा, पं० बक्खी ।
बकनोली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की बिल्ली । एक प्रकार की बेलि जिसके पतों का पानी आंख के फोले के लिए लाभदायक होता है ।
बख	सं०	(कां)	जुदा, अलग । पं० बक्खा ।
			प्रयोग—भाऊए गलाया तू बख होई क क्या लेनो ।
			भाई ने कहा तू ने अलग होकर क्या लेना ।
[illegible]	पु०	(कां)	कमर का पक्ष । पं० बक्खी ।
			प्रयोग—मेरी बक्खी च दाह् ऐ ।
			मेरी कमर में दर्द है ।
बखा	अ०	(का)	पहलू में, दिशा में ।
बखान	पु०	(कां)	समाचार, हालचाल ।
बखारटा	पु०	(कां)	बड़ी टोकरी ।
बखारना	क्रि०	(कां)	बिखेरना, अलग-अलग करना ।
बगड़	सं०	(कां)	एक प्रकार की घास जिस से रस्से बनाए जाते हैं ।
बगड़ो	सं०	(कां)	खेत ।
बगड़ूरी	सं०	(कां)	बगड़ (घास) का एक छोटा गट्ठा ।
बगड़ूली	स्त्री०	(कां)	बगड़ घास का एक पूला ।
बगना	क्रि०	(कां)	बहना, प्रवाहित होना । पं०—वगणा ।
बगल	स्त्री०	(कां)	वह बस्ता जिस में नाई अपने औजार डालता है। पं० बगली ।
बगलू	सं०	(गा)	गद्दियों के पास एक प्रकार का बटुआ जिसमें तम्बाकू रखा जाता है ।
बगा	पु०	(कां)	देखो "बगोटू" सूट ।
बगाड़	पु०	(कां)	नुकसान, झगड़ा ।
(मरला) बगा	पु०	(कां)	छोटा बगा जो ससुराल गई दुलहन को "दतियालू" के साथ भेजा जाता है ।
(जेठा) बगा	पु०	(कां)	दुलहन के माता पिता की ओर से दुलहन की सास को दिया गया बड़ा बगा।
बगोटू	पु०	(कां)	दहेज में दिया जाने वाला एक कपड़ा विशेष जिससे स्त्रियों की घाघरा और चोली (अंगी) बन सके ।
बघियाड़	पु०	(कां)	चीता, भेड़िया । पं० बघियाड़ ।
बघियाल	सं०	(कां)	बड़ा भाई या बड़ा चचेरा-ममेरा भाई ।
		(कु)	खानदान के व्यक्ति ।
बघेर	पु०	(कां)	लड़का ।
बछाण	पु०	(कु, कां)	बिछौना बिस्तर । पं० बछाण ।
[illegible]	क्रि०	(कां)	किसी वाद्य यंत्र का आवाज़ करना । पं० वजना ।
बजन	पु०	(कां)	वजन, भार ।
बजलोथर	सं०	(कु, कां)	नदी के बहाव के सख्त पत्थर ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बजा	वि०	(कां)	समानता, सादृश्य । पं० बजा ।
बजिया	पु०	(कां)	मालिक, स्वामी ।
बजीणू	पु०	(कां)	बिच्छू ।
बजीरी	स्त्री०	(कु)	परगने का एक छोटा हिस्सा जो माल बन्दोबस्त के लिए किया जाता है।
बजोग	पु०	(कां)	वियोग । पं० बजोग ।
बट्ट	सं०	(कां)	चक्की या घराट का पाट । पं० पट्ट ।
बट्टह	पु०	(कां)	धान बीजने की एक विधि जिस के अनुसार धान के बीज का छींटा खेतों में देकर सुहागा दे दिया करते हैं ।
बटनू	पु०	(कां)	पटसन कातने की तकली ।
बटरा:	पु०	(कां)	पत्थर घड़ने वाला ।
बटराह	पु०	(कां)	ब्याज की ५० प्रतिशत वार्षिक दर ।
बटवाल	पु०	(कां)	गांव का चौकीदार ।
बटाण	पु०	(कां)	खेतों में मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिये एक हथौड़ा विशेष ।
बट्टी	स्त्री०	(कु)	दो सेर का वजन । पं० बट्टी ।
बटोलना	क्रि०	(कां)	इकट्ठा करना, बटोरना ।
बठालना	क्रि०	(कां)	बैठना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप बिठाना ।
बड़	स्त्री०	(कां)	वट वृक्ष ।
बड़का	पु०	(कां)	बड़ा भाई ।
बड़का आगत	पु०	(कां)	बड़ा लड़का ।
बड़छुरा	पु०	(कां)	एक प्रकार की जड़ी बूटी इसकी जड़ बिच्छु-डसे जख्म को आराम देती है।
बड्डना	क्रि०	(कां)	काटना । पं० बड्डणा ।
बड्डा	वि०	(कां)	बड़ा । पं० बड्डा ।
बढ़ाई देना	क्रि०	(कां)	कटवा देना ।
बड़ेरा	पु०	(कां)	बड़ा भाई ।
बण	सं०	(कां)	जंगल, वन, पं० बण ।
बणटौली	स्त्री०	(कां)	एकपक्षी विशेष ।
बणहा:	पु०	(कां)	एक छोटा वृक्ष जिस की छाल की दातुन की जाती है ।
बत	स्त्री०	(कां)	रास्ता, पथ ।
बते	स्त्री०	(कां)	कचालू के पत्तों और मकई के आटे के मिश्रण को पका कर बनाया गया एक खाद्य पदार्थ ।
बत्क	स्त्री०	(कां)	बत्तख । पं० बत्तक ।
बत्तर	स्त्री०	(कां)	जमीन को जोतने के योग्य बनाने के लिए उसे सींचना । पं० बत्तर ।
बतरा	सं०	(कां)	५० प्रति शत वार्षिक दर का ब्याज ।
बतरनी	स्त्री०	(कां)	मृत्यु के समय दान करवाई जाने वाली गौ जो नरक की नदी (वैतरणी) को पार करने में सहायता देती है ।
बतरी	वि०	(कां)	बत्तीस, तीस और दो । पं० बतरी ।
बतरीड़ा	पु०	(कां)	रेंगने वाला एक जंतु विशेष जिस की बत्तीस टांगें मानी जाती हैं ।
बतूंघना	क्रि०	(कां)	किसी वस्तु के साथ छेड़ छाड़ करना, किसी वस्तु का अंग भंग करना, अनुशीलन करना ।
बतोबत	अ०	(कां)	रास्ते–रास्ते ।
बधना	क्रि०	(कां)	बढ़ना, अधिक होना । पं० वधना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बद्दल	पु०	(कां)	बादल । पं० बद्दल ।
बदान	पु०	(कां)	लोहार का बड़ा हथौड़ा । पं० वदाण ।
बदार	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष ।
बदायगी	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव के कामों में लगे कमीन लोगों के मजदूरी के पैसे जो विवाह सम्पन्न होने के दिन दिए जाते हैं ।
बदारे	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जो चारा और ईंधन के काम आता है।
बदारने फेरना	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में नवविवाहित दम्पत्ति द्वारा 'बदारन' वृक्ष की पूजा करवाना
बधा	पु०	(कां)	राजाओं के काल में जमीन के लगान में वृद्धि ।
बन्न	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष जिस की लकड़ी बहुत मजबूत होती है परन्तु इमारती कामों में बहुत कम इस्तेमाल में आती है क्योंकि लकड़ी सीधी नहीं होती ।
बछाया	पु०	(कां)	पक्षी विशेष ।
बनेर खड्ड	स्त्री०	(कां)	ब्यास नदी की एक सहायक उपनदी जो चम्बी, खोली बनोई, मांझी मनूनी और नराहली खड्डों को साथ लेकर ब्यास में बनेर के नाम से मिलती है ।
बनेरू	पु०	(कां)	चर्मकारी में काम आने वाला एक वृक्ष विशेष ।
बन्हणा	क्रि०	(कां)	बांधना ।
बफ	पु०	(कां)	भाप ।
बयार	सं०	(कां)	ठण्डी हवा ।
बर्हा	स्त्री०	(कां)	वर्षा ।
बरतन	पु०	(कां)	विवाह आदि उत्सवों पर शामिल बिरादरी का लेनदेन ।
बरतन	पु०	(कां)	ऐसी जमीन जिस के इस्तेमाल का अधिकार राज्य का नहीं, बल्कि ग्रा लोगों का हो ।
बर्तना	क्रि०	(कां)	इस्तेमाल करना ।
बर्यू-या	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष, इस के पत्ते मछलियों वाले तालाब में फेंकने से मछलियां मर जाती हैं ।
बरमू	सं०	(कां)	सफेद रीछ ।
बरसीर	पु०	(कां)	कांगड़ा में एक पर्वतमाला का नाम ।
बरंज	पु०	(कां)	मकान की छत का बड़ा शहतीर ।
बरसालना	क्रि०	(कां)	बढ़ना ।
बरसाला	पु०	(कां)	बरसात का मौसम ।
बरसोंध	पु०	(कां)	अनाज का वह हिस्सा जो राजपूत यजमान हर वर्ष ब्राह्मण को देता है
बर्हना	क्रि०	(कां)	बरसना । प्रयोग—अज राती मिह बर्हेया । आज रात वर्षा हुई ।
बर्हो	सं०	(कां)	वर्षा ।
बराघ	पु०	(कां. कु)	चीता ।
बराड़	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा जो काटने से अधिक फैलता है कहा जाता है कि इस पौधे को रावण का वरदान है ।
बराली	स्त्री०	(कु)	बिल्ली ।
बराह	पु०	(कु)	एक प्रकार का वृक्ष जिस के लाल रंग के बड़े बड़े फूल होते हैं।
बरियाह	पु०	(कां)	ऐसी जमीन जिस में साल में एक फसल हो ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बरिये दे कट्टुए को बमार	लोकोक्ति	(कां)	छोटे से काम के लिए बड़े आदमी बुलाना।
बरी भेजना	क्रि०	(कां)	विवाह की मंगनी का एक उत्सव विशेष जिस को लड़के वाले लड़की वालों के घर जाकर लड़की को थोड़े से वस्त्राभूषण आदि देते हैं।
बरूआ	पु०	(कां)	एक प्रकार का जवास जिसे हाड़ महीने में पशु खालें तो उन्हें जहर चढ़ जाता है परन्तु सावन अथवा भादों में उसका जहर नहीं चढ़ता।
बरूठी	सं०	(कां)	मकान का आंगन।
बरेंश्रा	पु०	(कां)	एक फसली जमीन जो बरसात के मौसम में खाली रखी जाती है और बाद में गेहूं और चने बोए जाते हैं।
बरेस	स्त्री०	(कु, कां)	अवस्था, आयु।
बरेही	स्त्री०	(कां)	ऐसी जमीन जो एक साल से बिना काश्त के रखी हुई हो।
बरोट्	पु०	(कां)	बट का छोटा वृक्ष।
बरोलर	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान विशेष जो मोटा और सफेद होता है परन्तु लम्बा नहीं।
बलई	स्त्री०	(कां)	हल्दी और नमक डालकर छाछ में पकाए हुए चावल।
बलटऊ	पु०	(कां)	पीतल की छोटी गागर।
बलटोही, बटलोही	सं०	(कां)	पानी भरने के लिए पीतल का एक बरतन।
बलड़ा	पु०	(कां)	चरागाह।
बलड़ू	पु०	(कां)	खेतों में बन्जर भूमि का छोटा सा टुकड़ा।
बलद	सं०	(कु, कां)	बैल।
बल्लम	स्त्री०	(कु, कां)	बरछा, भाला।
बल्लह्	पु०	(कु, कां)	दरिया के किनारे की उपजाऊ जमीन।
बलाऊ	पु०	(कां)	पत्थरी जिस पर नाई अपना उस्तरा तेज करते हैं।
बलाक	पु०	(कु, कां)	नाक का आभूषण।
बल्ला	पु०	(कां)	दरिया के दोनों ओर की समतल भूमि।
बल्लाना	क्रि०	(कां)	बल देना, धागे को बाट देना।
बलेदी	पु०	(कां)	गन्ने के बेलने में बैलों को हांकने वाला व्यक्ति विशेष।
बलेल	पु०	(कां)	ब्यूल वृक्ष का छिलका सेल।
बलोएं	स्त्री०	(कां)	एक बूटी जिससे दाद और चम्बल की दवाई बनती है।
बलोटू	पु०	(कां)	छोटा बट वृक्ष।
बलिहआठी	स्त्री०	(कां)	ब्योल वृक्ष की सूखी टहनियां जिन्हें एक दम आग लग जाती है रात को पैदल सफर करते समय पहाड़ी लोग मिशाल के रूप में इन्हें जला कर चलते हैं।
बशाड़ा	सं०	(कां)	बछड़ा।
बसदी	सं०	(कां)	बस्ती।
बस्त	स्त्री०	(कां)	चीज।
बसबसात	स्त्री०	(कां)	कमी, किल्लत।
बसाह्	सं०	(कां)	विश्वास।
बसिंदा	पु०	(कां)	निवासी।
बसूटी	स्त्री०	(कां)	एक छोटा सा सुंदरी पौधा।
बसोंआ	सं०	(कां)	विश्राम।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बहवोल	सं०	(कां)	वह भूमि जिस पर काश्त की गई हो।
बहसना	क्रि०	(कां)	झगड़ना। बहस करना।
बहुणा	पु०	(कां)	एक पौधा विशेष इस के पत्ते और फल कीटाणु विनाशक होते हैं।
बही	सं०	(कां)	बही, रुपया उधार देने वाले महाजनों की वह पुस्तक जिसमें वे उधार और ब्याज का लेखा रखते हैं।
बां	सं०	(कां)	बावली।
बांका	वि०	(कु, कां)	सुन्दर।
बांकी	वि०	(कु, कां)	विलक्षण सौन्दर्य वाली।
बांडा	पु०	(कु)	सन्तान-हीन पुरुष।
बांडी	स्त्री०	(कु)	संतान-हीन स्त्री।
बांठा	पु०	(कु)	छत की बड़ी धरन।
बांदरू	पु०	(कु, कां)	छोटा वानर, वानर का बच्चा।
बांसी	स्त्री०	(कां)	बांसुरी।
बांसी	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने के जाल का एक डंडा विशेष।
बान्नु कोयला	पु०	(कां)	चील वृक्ष के अलावा अन्य वृक्षों के कोयले।
बांह	पु०	(कां)	बाजू।
बा	सं०	(कु)	पिता, बाप।
बाक	पु०	(कां)	वाक्, भाषणशक्ति।
बागर	स्त्री०	(कु)	हवा, वायु।
बाहसणू	पु०	(कु)	गीत का एक चरण।
बाहसना	क्रि०	(कां)	बहस करना, वाद विवाद करना।
बाबो	पु०	(कु)	पिता, बाप।
बाबोली	स्त्री०	(कां)	बावली।
बाकना	क्रि०	(कां)	बोलना, व्यर्थ की बात चीत करना (बिना पर्याप्त कारण के), रोकना।
बाकरा, बौकरा	वि०	(कु, कां)	बकरी से सम्बन्धित।
बाचना	क्रि०	(कु, कां)	पढ़ना।
बाछ	स्त्री०	(कां)	ज़मीन के लगान का दर।
बाजी	स्त्री०	(कां)	मिठाई, भोज्य।
बाजे	वि०	(कां)	कोई, कुछ।
बाड	सं०	(कां)	सावनी फसल को काट चुकने के पश्चात् वह भूमि जिस पर हल चलाया जा चुका हो।
बाथ	पु०	(कां)	हल जोत कर नर्म की गई ज़मीन।
बाझि	सं०	(कु, कां)	सिवाय, अतिरिक्त।
बाठिडू	पु०	(कां)	देखो "भठिडू"।
बाड़ख	स्त्री०	(कां)	दो खेतों के मध्य हदबन्दी जिस में वृक्ष और झाड़ियां आदि उगी रहती हैं और जोकि साधारणतया "बीड़" से ज़्यादा चौड़ी होती है।
बाणक	स्त्री०	(कां)	गेहूं की बिजाई।
बाणा	सं०	(कां)	वेशभूषा, रिवाज।
बात	सं०	(कां)	हवा।
बापू	पु०	(कां)	छोटा देवता।
बाद्दल	पु०	(कां)	बादल।
बाम्हणू	पु०	(कां)	बांध, आर्जेन्द।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बाफिर कोला	पु०	(कां)	वह जमीन जिस में धान बोया जाता है।
बाबरू	पु०	(कां)	आटे में खमीर डाल कर घी अथवा तेल में तल कर बनाए गए गोलाकार की छोटी परन्तु मोटी चपातियां।
बाघु	पु०	(कु)	बाघ।
बामी	पु०	(कां)	चींटियों द्वारा इकट्ठा किया गया मिट्टी का ढेर, जिस में सांप घर बना लेता है।
बारम्बार		(कां)	बार बार, कई बार।
बाहो	पु०	(कां)	गन्ने के रस के कड़ाह में से गर्म हुए पदार्थ को निकाल लेने के बाद उस में पानी डाल कर जो गर्म सा शर्बत बनता है, वह जुकाम के लिए बहुत अच्छा होता है।
बालचढ़ाना	पु०	(कां)	मामूली कष्ट देना। प्रयोग—मैं अपने मुणुए दे बच्चे ताईं बाल बी नीं चढ़ाया। मैंने अपने बच्चे को अभी मामूली सा कष्ट भी नहीं दिया।
बालना	क्रि०	(कां)	जलाना।
बालू	सं०	(कु, कां)	सोने का गोलाकार कड़ा जो नाक में पहना जाता है।
बाशक	पु०	(कां)	एक नाग देवता।
बास	पु०	(कां)	रिहायश।
		(कु)	मुश्क, बू।
बांसद	सं०	(कां)	वह भूमि जिस पर हल चलाया गया हो।
बासण	पु०	(कां)	बरतन, हुक्के का बरतन जिस में पानी डाला जाता है।
बास्त	सं०	(कु, कां)	बसंत।
बासमती	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार के चावल।
बासा	सं०	(कां)	किसी पहाड़ी के ऊपर रहने के लिए बनाया हुआ एक छोटा मकान।
बा:छन	स्त्री०	(कां)	एक सांप विशेष जो मनुष्य की गर्दन से लिपट कर डंक मारता है।
बाहुणा	क्रि०	(कु, कां)	हल चलाना, बीज बोना। प्रयोग—हाली ऐ खेत लाइया बाहुणा। हाली खेत में हल चला रहा है।
बा:णा	क्रि०	(कु, कां)	पीटना, मारना। प्रयोग—कजो लगेया तू मुण्णु दे बा:णे। क्यों लगा है तू बच्चे को मारने।
बाह्मण भात	पु०	(कां)	चावल की एक किस्म।
बा:स	सं०	(कां)	पास, निकट।
बाही	स्त्री०	(कां)	छोटी पहाड़ी।
बिकट	वि०	(कां)	कठिन।
बिचकड़	पु०	(कां)	खेतों के मिट्टी के मोटे मोटे ढेले तोड़ने के लिए लकड़ी का बना हथौड़ा विशेष।
बिखड़ा	वि०	(कां)	विषम, कठिन।
बिच	अ०	(कां)	बीच, अन्दर, भीतर।
बिचु	पु०	(कां)	एक प्रकार का आभूषण।
बिज	सं०	(कु, कां)	बिजली का वह रूप जो भूमि की किसी वस्तु के साथ टकरा कर उस वस्तु को तहस नहस कर देता है।
बिजा	पु०	(कां)	अबुद्धि।
बिसाई	पु०	(कां)	काश्त योग्य जमीन का मालिक।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बिझ जाणा	क्रि०	(कां)	लैंगिक सम्बन्ध स्थापित हो जाना ।
बिट्टी	स्त्री०	(कां)	बेटी, लड़की ।
बिड़ी	सं०	(गा)	वह भेड़ जिसके एक बार बाल उतारे गए हों ।
बिमगर्णू	पु०	(कु)	रोशनदान ।
बितर जाना	क्रि०	(कां)	गलत रास्ते पर चले जाना, बहक जाना ।
बित्थू	पु०	(कु)	एक अनाज विशेष ।
बिदमाता	स्त्री०	(कु, कां)	विधि माता ।
बिधुवा	स्त्री०	(कां)	विधवा ।
बिन्ना	पु०	(कां)	धान के पराल अथवा गन्ने के छोई के गूंथ कर बनाई गई छोटी सी चटाई ।
बिन्नू	पु०	(कां)	ईंडी, छोटी ईंडवा, केले के पत्ते और नर्म रस्सी की बनी हुई वह गोलाकार वस्तु जिसे सिर पर रखकर स्त्रियां पानी का घड़ा उठाती हैं ।
बिनवा खड्ड	स्त्री०	(कां)	धंगाल की पर्वतमाला से निकल कर थोई और हरोई खड्ड को साथ लेकर संधू के स्थान पर ब्यास में मिलती है, यह खड्ड सिंचाई के लिए उपयुक्त नहीं ।
बिनाग	स्त्री०	(कां)	किसी मकान के साथ, कानी बरांडे के ऊपर की एक लम्बी तरफ ।
बियाहू	सं०	(कु)	पति ।
बिरठी	पु०	(कु, कां)	ऐन्द्रजालिक जो व्याघ्र की शक्ल धारण कर के मनुष्यों का रक्त पीता है ।
बिरली तोड़नी	क्रि०	(कां)	धानों के खेतों में से जंगली धान के पौधों को उखाड़ना, अथवा उन के फूलों को तोड़ लेना, जिससे उन का बीज खेत में न पड़े ।
बिरलो	पु०	(कां)	लकड़ी की बनी हुई खिड़की चौखट जिस में शीशे आदि जड़े जाते हैं ।
बिरला	वि०	(कां)	बिखरा हुआ । जो घना न हो ।
बिरला निरला	वि०	(कां)	असाधारण, विशेष, दुर्लभ ।
बिर्हीं	स्त्री०	(कां)	मछलियां पकड़ने का कुम्भा ।
बिल्ल	पु०	(कां)	१—एक फल विशेष ।
		(कु, कां)	२—मिट्टी के बरतन का मुंह जिसे बरतन बनाते समय कुम्हार सबसे पहले बनाता है ।
बिलङ्ग	स्त्री०	(कां)	बिस्तर के भारी कपड़ों को लटकाने के लिए बांस के डंडे को छत से अनुप्रस्थ रूप में लटका कर बनाया गया उपकरण ।
बिलिंगन	स्त्री०	(कु)	देखो "बिलङ्ग"
बिलमर	स्त्री०	(कां)	बिल फल के बीच खेत ।
बिल्लड़ा	पु०	(कां)	मिट्टी के बरतन का नीचे वाला हिस्सा ।
बिली	स्त्री०	(कां)	किसी कन्दरा का छोटा सा दरवाजा ।
बिसका	वि०	(गा)	खाली ।
बिशत, बिशट	पु०	(कां)	राजे का प्रधान मंत्री, वजीर ।
बिशली	स्त्री०	(कु)	बांसुरी ।
बिसरना	क्रि०	(कु)	भूल जाना ।
बिशाऊं करना	क्रि०	(कु)	विश्राम करना ।
बिस खप्पर	स्त्री०	(कु, कां)	एक पौधा विशेष ।
बिस्सर खप	स्त्री०	(कां)	एक जड़ी बूटी ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बिस्टर	पु०	(कां)	आसन विशेष जो विवाहोत्सव में वर को बैठने के लिए दिया जाता है ।
बिसोआस	पु०	(कां)	विश्वास ।
बिहाणा	क्रि०	(कु)	प्रातः काल होना । प्रयोग-रात बिहाई-रात खुल गई, प्रातः काल हो गया ।
बी	अ०	(कां)	भी ।
बींडी	स्त्री०	(कां)	कुदाली का दस्ता ।
बींड़	स्त्री०	(कां)	दो खेतों को अलग करने वाला विभाजन जो मिट्टी को उठाने से बनाया जाता है ।
बीड़ी	स्त्री	(कां)	चरखे का एक उपकरण विशेष ।
		(कु)	दातुन ।
बीनना	क्रि	(कां)	चुनना ।
बीह	सं०	(कां)	मकान के बाहर दीवारों के साथ दो फुट ऊंचा और दो फुट चौड़ा प्लेटफार्म, इसे अटली भी कहते हैं ।
बुग	पु०	(कां)	नील कमल ।
बुंदा	स०	(कां)	सामान्य आभूषण । एक प्रकार का आभूषण जो स्त्रियां पहनती हैं ।
बुआ-शक्ति	अ०	(कां)	एक नाग देवता ।
बुगदियां	स्त्री०	(कां)	गले के लिए पौंडों का बना हार ।
बुछकू	पु०	(कां, कु)	बोझ, गठड़ी ।
बुछका	पु०	(कां, कु)	गठड़ी, भार, बोझ ।
बुझणा	क्रि०	(कु)	समझना ।
बुटना	पु०	(कां)	चने का आटा और सरसों का तेल मिला कर बनाया गया एक पदार्थ विशेष जिसे विवाहित हो रहे लड़के और लड़की को मल कर नहलाया जाता है ताकि उनका रंग निखर जाए तथा जिल्द के रोग का संक्रमण न हो ।
बुड़कना	क्रि०	(कां)	बैल आदि पशुओं की आवाज ।
बुड़ियां	स्त्री	(कां)	चौकली के डंडे ।
बुड़ी	स्त्री०	(कां)	चक्की का डींगा ।
बुढ़ी	स्त्री०	(कां)	बुढ़ी ।
बुदान	पु०	(कां)	मस्ती । पं० मस्तानी ।
बुन्हे :	अ०	(कु)	नीचे ।
बुन्ह धीरे	परः	(कु)	निचली तरफ ।
बुई	स्त्री०	(कु)	बुआ ।
बुमणी	सं०	(कु)	दो बड़ी बड़ी सूईयां जिन्हें कुल्लू प्रदेश की स्त्रियां 'पट्टू' के साथ लगाती हैं ।
बुरजी	स्त्री०	(कु, कां)	गांव, जिला आदि की सीमा पर बनाया गया बुर्ज ।
बुल	क्रि०	(कां)	क्या, कहां । प्रयोग—तिनाजो बला बुल राती बी छिंज घुलादे रांह णा ऐ । उनको कहो कि रात को भी पहलवानों की कुश्तियां करवाते रहना है ।
बुस्सो	वि०	(कां)	आभूषण रहित ।
बुहाल	वि०	(कां)	निम्न ।
बुहुला	वि०	(कां)	हलका ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
भूहूसर	पु०	(कां)	उपद्रव करने वाला बालक । (संस्कृत) भूसुर, भूमि का देव ।
बूटा	सं०	(कु, कां)	वृक्ष ।
बूटी	स्त्री०	(कां)	याद, स्मृति । प्रयोग—मिंजो तेरी बूटी लगीओ । मुझे तेरी याद सता रही है ।
बेआ	पु०	(कां)	एक पक्षी विशेष जिस का घोंसला बहुत मजबूत होता है । बैठे।
बेचा	पु०	(कां)	व्रत का मोक्ष करते समय किसी ब्राह्मण को दी जाने वाली वस्तुएं ।
बेंई	स्त्री०	(कां)	नदी अथवा नाले की छोटी सहायक उपनदी ।
बेउड़, बेउड़ी	स्त्री०	(कां)	खेत का बाहर का किनारा ।
बेओल	सं०	(कां)	एक वृक्ष, धम्मण ।
बेओफा रखना	क्रि०	(कां)	विवाह का दिन निश्चित करना ।
बेकणु	सं०	(कां)	चार वर्ष की पुल्लिंग भेडा ।
बेग	अ०	(कां)	शीघ्र, तुरन्त । प्रयोग—जी लिखि लिखि पत्तियां रानी रुकमणी भेज, बेग खबर लीजा मोरी । रानी रुकमणी ने पत्र लिख लिख कर भेजे कि मेरी शीघ्र ही खबर लें ।
बेगमी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का धान ।
बेटकी	सं०	(कु)	औरत, स्त्री ।
बेहू	पु०	(कां)	हल चलाने वाला ।
बेठू	पु०	(कां)	कनैत जाति का डागी नौकर ।
बेहड़ा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष । भांगन ।
बेड़ी	स्त्री०	(कां)	१—बड़ी किश्ती । २—कैदियों के पाद बन्धन ।
बेड़ू	पु०	(कां)	ऐसी नौका जिस में छोटे पशु भी बिठाए जा सकते हों ।
बेतरनी	स्त्री०	(कां)	मृत्यु के समय दान में दी गई गाय ।
बेती	अ०	(कां)	ऊपर ।
बेद	स्त्री०	(कां)	लकड़ी की चौखट जोकि विवाह आदि उत्सव पर प्रयोग में लाई जाती है, बेद से घिरी हुई जगह पर ही सनातन पद्धति का विवाह मंडप स्थापित किया जाता है ।
बेदो	पु०	(कां)	सरपत नाम का एक वृक्ष विशेष जिसकी टहनियां बहुत लचीली होती हैं ।
बेदन	स्त्री०	(कां)	याद, स्मृति ।
बेदना	क्रि०	(कां)	याद करना, आमंत्रित करना ।
बेदी ब्याह	पु०	(कां)	हिन्दू धर्म के अनुसार सनातनिक रीति का विवाह ।
बेदी	स्त्री०	(कां)	विवाह मंडप ।
बेदो	सं०	(कु)	बहिन ।
बेरला	वि०	(कु)	चौड़ा ।
बेल	स्त्री०	(कां)	लता ।
बेलण	स्त्री०	(कां)	गन्ना पीड़ने के लकड़ी के बेलने का उपकरण विशेष जो गन्ने को पीड़ने का प्रत्यक्ष काम करता है ।
बेला	पु०	(कां)	बढ़ई का एक औजार ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बेली	पु०	(कां)	बली, सरपरस्त, संरक्षक ।
बेली बेली फूल	मुहावरा	(कां)	सन्तान का अपने अनुकूल होना ।
बेलू	पु०	(कां)	रुई बेलने का बेलना ।
बेसणा	क्रि०	(कु)	बैठना ।
बेसकों बेसकु	स्त्री०	(कां)	अवेक्षा, देखभाल, फसल को काटने के बाद से लेकर उससे दाने निकलने के समय तक इस बात की देखभाल करना कि मालिक और मुजारे का हिस्सा ठीक बना रहे ।
बेसना	क्रि०	(कां)	बैठना, "बैठाना" ।
बेसर	स्त्री०	(कां)	नाक का आभूषण ।
बेसवा	स्त्री०	(कां)	वेश्या, बाजारी औरत ।
बेहड़ा	सं०	(कां)	कुछेक घरों का इकट्ठा, एक से अधिक मकानों द्वारा घिरा हुआ खाली स्थान जो आंगन का काम दे ।
बैःक	स्त्री०	(कां)	बरसात के मौसम में खेतों में पशुओं का अस्थायी वास ।
बैंज	पु०	(कु, कां)	बांस ।
बैंजी	स्त्री०	(कु, कां)	एक प्रकार का बांस जो कम मोटा और बीच से ज्यादा खोखला होता है।
बैठकू	पु०	(कां)	बैठने का आसन विशेष जो किसी मोटे कपड़े पर कढ़ाई करके बनाया जाता है ।
बैणी	स्त्री०	(कां)	खच्चर की जाति का एक जंगली चौपाया ।
बैर	पु०	(कां)	मित्र ।
बैर	पु०	(कां)	बेर, बेरी वृक्ष, बदरिका फल ।
बैरी	पु०	(कु, कां)	शत्रु ।
बैहड़ा	सं०	(कां)	तीन चार साल का बैल ।
बैहल	पु०	(कां)	घोड़ा, खच्चर आदि वाहन ।
बैहद	सं०	(कां)	वह भूमि जो काश्त के योग्य हो।
बैंहियां भरना	क्रि०	(कां)	देहांत के पश्चात तेहरवें अथवा, सोलहवें दिन क्रियाक्रम के प्रसंग में एक संस्कार विशेष जिस में मृत व्यक्ति के निमित्त मिट्टी के कूजों में पानी आदि भर कर अन्य वस्तुओं के साथ संकल्प किया जाता है ।
बोआणा	क्रि०	(कां)	"बाणा" क्रिया का प्रेरणार्थक रूप ।
बोजा	पु०	(कां)	काहरण द्वारा कपड़े की बुनाई में लम्बाई के रूप में धागे का फैलाव, ताना ।
बोटी	पु०	(कां)	ब्राह्मण रसोइया ।
बोदक	स्त्री०	(कां)	बतख की जाति का एक पक्षी विशेष ।
बोन	पु०	(कु)	एक वृक्ष जिसके पत्ते भेड़ बकरियां खाती हैं तथा लकड़ी जलाने के काम आती है ।
बोला	क्रि०	(कां)	उठाना ।
बोगू	पु०	(कां)	सूखी घास का ढेर ।
बोबी, बोबो, बोबू	स्त्री०	(कां, कु)	बहिन ।
बोरना	क्रि०	(कां)	भेड़ के बाल उतारना ।
बोल	पु०	(कां)	समूह ।
बोलना	क्रि०	(कु, कां)	बताना, कहना, बात करना ।
बोलि देना	क्रि०	(कां)	बता देना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
बोलदा	क्रि०	(कु)	बोल रहा है ।
बोलूंरा	क्रि०	(कां)	बोल रहा है (जादू आदि में) ।
बोसल	स्त्री०	(कां)	वस्तु, चीज ।
बौंकरी	स्त्री०	(कां)	बगड़ घास के सिवाय किसी अन्य लम्बी घास का झाड़ू ।
बौंछ	स्त्री०	(कां)	घनी छायादार जगह ।
बौंजलि जाणा	क्रि०	(कां)	पगला जाना, लगभग अस्सी वर्ष की अवस्था में पहुंच कर बेतुकी बातें करना ।
बौंगा	पु०	(कु)	फालतू पानी के निकास के लिए छोटी कुलव। दो खेतों के बीच सीमा।
बौड़ना	क्रि०	(कां)	आ पहुंचाना ।
बौत	स्त्री०	(कु)	रास्ता, मार्ग ।
बौःल	पु०	(कां)	गाय-भैंस का कृत्रिम 'लेवा' ।
बौहड़	स्त्री०	(कु, का)	मकान की दूसरी मंजिल ।
बौःणा	क्रि०	(कां)	बैठना ।
व्यास	पु०	(कां)	व्यक्ति ।
ब्यांग	स्त्री०	(कु)	लाहुल की भेड़ की नस्ल ।
ब्यांगी	पु०	(कु)	लाहुल की एक भेड़ की किस्म ।
व्याकुड़	पु०	(कां)	व्याकुल ।
ब्याहकुल	स्त्री०	(कां)	विवाह की तिथियां ।
			प्रयोग—इस महीने दिया मतिया ब्याहकुलां थियां ।
			इस महीने बहुत सी विवाह की तिथियां थीं ।
ब्याड	स्त्री०	(कां)	कुएं पर रखी हुई लकड़ी पानी भरते समय जिसके ऊपर पांव रखा जाता है ।
ब्याहता	स्त्री०	(कां)	विवाहिता ।
ब्याद	स्त्री०	(कां)	व्याधि ।
ब्याना	स्त्री०	(कां)	बर्फानी हवा जो तेरह चौदह हजार ऊंची जोतों के आस पास सर्दियों में चलती है । तेज हवा ।
व्यापप	पु०	(कां)	व्याप्त ।
ब्यार	स्त्री०	(कां)	हवा ।
ब्याहल्ना	क्रि०	(कां)	बिठलाना । बिठाना ।
ब्याली	स्त्री०	(कु)	रात का खाना ।
ब्यून	अ०	(कां)	नीचे ।
	स्त्री०	(कु)	भेड़-बकरी का गोबर ।
ब्यूःल	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिसका चारा गाय भैंसों का दूध बढ़ाने के लिये अच्छा समझा जाता है ।
ब्यूंसरी	स्त्री०	(गा)	बांसुरी, नड़ का नलगोज़ा ।
ब्योतड़	वि०	(कां)	वह लड़का जिसका विवाह हो रहा है ।
ब्योत्री	स्त्री०	(कां)	वह लड़की जिसका विवाह हो रहा है ।
बंज	पु०	(कां)	विवाहोत्सव में आखिरी धाम में बनाए गए मीठे चावल ।
बूटटो जाणा	क्रि०	(कां)	किसी देवता का रुष्ट हो जाना ।
बाती	स्त्री०	(कां)	पालतू बिल्ली ।
बेस्ती ब्याड़ी	स्त्री०	(कु)	वीरवार के दिन ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ब्डी	स्त्री०	(कां)	मिट्टी का छोटा कुज्जा ।
ब्हां	पु०	(कां)	विश्राम करने का स्थान ।
ब्हां करना	क्रि०	(कां)	विश्राम करना ।
ब्हांल	पु०	(कां)	गन्ना पीड़ने के बेलने की म्हाल के ऊपर फिट किया जाने वाला लकड़ी का उपकरण विशेष ।
			भ
भंगण	स्त्री०	(कां)	एक मछली विशेष ।
भंगरू	पु०	(कां)	पुदीने की जाति का एक खुशबूदार पौधा ।
भंकगर	पु०	(कां)	एक प्रकार का पत्थर जिसमें 'काल्नी' पत्थर की अपेक्षा रेत और मिट्टी का मिश्रण अधिक होता है ।
भकड़ारी	स्त्री०	(कां)	खेतों के मिट्टी के ढेले तोड़ने वाला लम्बे दस्ते का हथौड़ा, मुंगरी ।
भगियाल	पु०	(कु)	सम्बन्धी, रिश्तेदार, शरीक, बिरादरी का आदमी ।
भगोड़ा	पु०	(कु)	भेड़ के बच्चों के लिए बनाया बाड़ ।
भज्	पु०	(कां)	ऐसा ढलान वाला स्थान जहां हरी घास अधिक रूप में होती है ।
भंटड़ा	वि०	(कां)	बुरा, कुटिल ।
भटड़ी	पु०	(कां)	दूसरे गांव से आया हुआ भुजारा ।
भटिद्द्	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा जिसके पत्ते पशुओं के "छिब्बर" रोग को दूर करने के लिये किसी खाद्य चारे के साथ मिला कर पशुओं को दिए जाते हैं ।
भटोरा	पु०	(कां)	खमीर वाली गेहूं की चपाती जो सामान्यतः गर्मियों में पकाई जाती है ।
भड़कणा, भौड़कणा	क्रि०	(कु)	बुड़बुड़ाना ।
भड़ारा	पु०	(कां)	भेड़ों का बाड़ा ।
भड़ौटा	पु०	(कां)	खेत के ढेले तोड़ने का उपकरण विशेष ।
भतोना	क्रि०	(कां)	पागल हो जाना । उन्मादी होना ।
भतोटी	सं०	(कां)	मद, मस्ती ।
भनेज	पु०	(कां)	स्वभाव । प्रयोग—बच्चा एक महीने ते बाद अपने सरीरे दा भनेज बन्नदा है । बच्चा एक महीने के पश्चात् अपना स्वभाव प्रकट करने लगता है ।
भनौर	सं०	(कु,कां)	जंगली शहद की मक्खियां ।
भब्ब	स्त्री०	(कां)	झिझक ।
भर	पु०	(कां)	एक प्रकार की ऊनी चादर जिसके किनारों पर लाल डोरा हो ।
भरजाई	स्त्री०	(कां)	भाई की पत्नी ।
भरम	पु०	(कां)	भ्रम ।
भराही	स्त्री०	(कां)	मकान के छत की धरन ।
भराड़ बड़	सं०	(कां)	ऐसा बट वृक्ष जिसके बहुत ज्यादा तने हों ।
भरामू	पु०	(कां)	लाल रीछ ।
भरंखाना	क्रि०	(कां)	देखो 'दबाना' ।
भरिगणी मारनी	क्रि०	(कु)	बहुत तेज दौड़ना ।
भरियानी	स्त्री०	(का)	मकान के छत की धरन (कड़ी) ।
[illegible]	क्रि०	(कां)	बर्फ पड़ना ।
भरुख	सं०	(कां)	भूख ।
भरेसा	पु०	(कु)	एक अनाज विशेष ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
भरो	पु०	(कां)	लम्बे रास्तों पर गर्मियों के मौसम में वह स्थान जहां पथिकों को पानी पिलाने का प्रबन्ध किया हुआ होता है ।
भरोई जाना	क्रि०	(कां)	भर जाना, संभारित हो जाना ।
भरोटा	पु०	(कां)	खेतों के ढेलों को तोड़ने के लिए लम्बे दस्ते वाला हथौड़ा, मुंगरी ।
भरोटू	पु०	(कु)	भार, लकड़ी अथवा घास का बोझा ।
भरौंआं	सं०	(कां)	भौं ।
भरोजी, भराउजी	स्त्री०	(कां)	भरजाई, भाई की पत्नी ।
भरौंठा	पु०	(कां)	खेतों के मिट्टी के ढेलों को तोड़ने का उपकरण विशेष ।
भरौन	पु०	(कां)	मालिक और मुजारे में उपज बांटने वाले को दिया गया हिस्सा ।
भलाल	स्त्री०	(कां)	पानी की कुल्ह ।
भलेल	सं०	(कां)	बेम्रोल वृक्ष की छाल के तन्तु ।
भसूलड़ी	स्त्री०	(कां)	बच्चों की खेल, ढलान वाली जगह से किसी लकड़ी के तख्ते पर पालथी मार कर नीचे लुढ़कते आना ।
भांडा, भांडे	पु०	(कु)	बरतन ।
भांह्‌डा	पु०	(कु)	छत की बड़ी धरन जिस पर छत का सारा भार होता है ।
भाऊ	पु०	(कु)	छोटा बच्चा ।
भाकड़ारी	सं०	(कां)	ढीमों को तोड़ने वाला लकड़ी का एक हथौड़ा ।
भाकराण	सं०	(कां)	मिट्टी के ढीमों को तोड़ने वाला ।
भाटी	स्त्री०	(कां)	नई फसल पर राजपूत यजमानों द्वारा ब्राह्मणों को दिया गया भोज अथवा भोज के लिए सूखा अन्न ।
भाटी	स्त्री०	(कां)	किसी ग्राम देवता की याद में किसी ब्राह्मण-कुमार को खिलाया जाने वाला भोजन ।
भाटू	पु०	(कु)	ग्राम देवता के मन्दिर में एक नौकर ।
भाड़	पु०	(कु)	कटी हुई फसल या घास आदि को जमा रखने का बाड़ा ।
भाड़ा	पु०	(कां)	दुधारू गाय भैंस को दूध लेने से पहले दिया जाने वाला चारा ।
भात	पु०	(कां)	पके हुए चावल ।
भानना, भौनणा	क्रि०	(कां)	तोड़ना ।
भाख्य लैणा	क्रि०	(कां)	वचन लेना । प्रयोग—पण्त जी, असां तां तुसां दे मुह् दी भाख्या लैणी है । पण्डित जी, हमने आपसे ही वचन लेना है । या (आप के ही मुख से कहलाना है) ।
भार	पु०	(कु)	एक माप विशेष जिसमें सोलह 'पथे' अनाज आता है ।
भाल	स्त्री०	(कां)	काले रंग की मिट्टी वाली जमीन ।
भालना	क्रि०	(कां, कु)	देखना, ढूंढना ।
भालू	सं०	(कु)	लाल रंग का रीछ ।
भाहफुल	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष जिसकी टहनियों की टोकरियां बनाई जाती हैं ।
भाहिड़	पु०	(कु)	धर्म भाई ।
भाहिड़ी	स्त्री०	(कु)	धर्म बहन ।
भिड़लि जाणा	क्रि०	(कां)	गुम हो जाना, मेले आदि में चलते चलते किसी आदमी का अपने साथियों से भीड़ के कारण अलग हो जाना ।
भंज जाना	क्रि०	(कां)	टूट जाना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
भिड़िना	क्रि०	(कु)	टक्कर लगाना, बैलों या भैंसों का लड़ना ।
भित	पु०	(कां)	दरवाजा । प्रयोग—भितां दई देमां, दरवाजा बन्द कर दो ।
	स्त्री०	(कु)	दीवार ।
भियाणू तारा	सं०	(कु)	प्रातः काल का तारा । भोर का तारा ।
भियाल	पु०	(कां, कु)	हिस्सेदार । खुली जगह ।
भिरडू	स्त्री०	(कां)	एक पौधा विशेष, इसके पत्तों को पीसकर फर्श की लिपाई करने के लिए गोबर में डाला जाता है । फोड़े फिन्सी पर इसका पत्तों का लेप लाभदायक रहता है ।
भिरल	स्त्री०	(कां)	एक पक्षी विशेष ।
भिरियाल	पु०	(कु)	गर्मियों का मौसम ।
भिरी	अ०	(कु)	तत्पश्चात्, फिर ।
भिहाळना	पु०	(कु)	उतराई ।
भी	अ०	(कां)	फिर ।
भीषा रोग	पु०	(कां)	बकरियों की बीमारी ।
भुम्हणू	पु०	(कां)	मक्कई की भिजर ।
भुकना	क्रि०	(कां, कु)	राख से जूठे बरतनों को साफ करना । आटे या मिट्टी से मांजना ।
भुक्का	पु०	(कां)	सूखा आटा जिसे चपाती पकाते समय गीले आटे के पेड़े के साथ लगाते हैं ।
भुजनू	पु०	(कां)	सूखी घास का कुन्नू ।
भुड़कना	क्रि०	(कां)	क्रोध में बुड़बड़ाना ।
भुबला	पु०	(कां)	एक प्रकार का जंगली फल ।
भुर्ज	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
भुरस	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा । गाभिन भैंसों की गर्मी को शान्त करने के लिए इसके पत्तों का काढ़ा पिलाते हैं ।
भूं	सं०	(कां)	भूमि ।
भूंपला	पु०	(कां)	बांस का बना हुआ फूक मारने का एक उपकरण विशेष जो कि रसोई घर में प्रयुक्त होता है ।
भुआलू	पु०	(कां)	घास फूस का बना हुआ ऐसा शैड जिसमें भूसा जमा रखा जाता है ।
भून्जा	सं०	(कु)	भूमि पर । प्रयोग—भून्जा ई बैठि जाआ । भूमि पर ही बैठ जाइये ।
भूड़ी	सं०	(कु)	नौकरी-चाकरी, घर से दूर जंगलों में लकड़ी का काम कर के रोजी कमाना ।
भूतड़ पशु	पु०	(कां)	गाय आदि जंगली पशु जो आदमी को देखकर उसे मारने के लिए पीछे भागते हैं ।
भूरंदक्षणा	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव में कन्यादान के समय कन्या के पिता की ओर से पुरोहित को दिया गया दान ।
भेंटना	क्रि०	(कां)	मिलना ।
भेठ	स्त्री०	(कां)	पर्वत या चट्टान की खड़ी दीवार ।
भेड़ा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
भेर	पु०	(कां)	माल बन्दोबस्त की सुविधा के लिए खेतों की पलाटमेंट जिनका क्षेत्रफल लगभग ६० घुमाओं होता है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
भैम्पला	पु०	(कां)	गला, व्यर्थ बात करना । रोना । प्रयोग—मुन्नी, तें भैम्पला बाकी'ता।बच्ची तू ने व्यर्थ ही रोना शुरू कर दिया ।
भैंटी	पु०	(कां)	नीला श्वेत पक्षी ।
भोगी	पु०	(कां)	सांसारिक व्यक्ति । दुनियां के सामान्य मामलों में आसक्ति पूर्वक उलझा हुआ व्यक्ति ।
भोन	पु०	(कां)	असन्तुलित ।
भोनणा	क्रि०	(कु)	फाड़ना ।
भोमली	स्त्री०	(कां)	काली मिट्टी की जमीन जिसमें अच्छी उपज होती है ।
भोरना	क्रि०	(कां)	टुकड़े टुकड़े करना ।
भोड़	स्त्री०	(कां)	गोलाकार टोकरी ।
भौंदू	सं०	(कां)	मूर्ख ।
भौंह	पु०	(कु)	एक पद्यांश, एक कविता का एक चरण ।
भौकना	क्रि०	(कु)	आग की लपट निकलना ।
भौरल्	पु०	(कु)	एक छोटी बंद टोकरी जिसमें ऊन कातने वाले ऊन आदि रखते हैं ।
भौस	पु०	(कु)	राख ।
भृष्त	पु०	(कां)	बृहस्पति, वीरवार ।
भ्याग	स्त्री०	(कु, कां)	प्रातः काल ।
भ्यागड़ा	पु०	(कु, कां)	प्रातः काल गाया जाने वाला गीत विशेष ।
			म
मंगल	पु०	(कां)	प्रसन्नता ।
मंज्जा	पु०	(कां)	चारपाई ।
मंजोल्	पु०	(कां)	छोटी चारपाई जो किसी महा ब्राह्मण को दान में दी जाती है ।
मंझ	अ०	(कां)	में ।
मझला बागल	पु०	(कां)	बड़े से छोटा लड़का ।
मंडना, मोंडना	क्रि०	(कु)	नए बुने कपड़े पर माया चढ़ाना ।
मंबे:ल	पु०	(कु)	आटे या मिट्टी का ढेला ।
मंद बा:ण	क्रि०	(कां)	किसी बीमारी को अथवा सर्प, बिच्छू आदि द्वारा डसे जाने पर मंत्र के बल से उसके प्रभाव को दूर करना ।
मंझीण्	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान ।
मंहैरा	पु०	(कां)	एक प्रकार का लम्बा धान ।
मण्डण	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
मण्डल	पु०	(कां)	विवाह मण्डप ।
मन्बोहल	पु०	(कु)	खाद का गड्ढा ।
मंदरी	स्त्री०	(कां)	धान के पराल की चटाई ।
मंदल	पु०	(कां)	घटिया प्रकार का बाजरा ।
मन्धरा	पु०	(कां)	मूंगी की दाल, दही और मेवा डाल कर बनाया गया एक विशेष प्रकार का भोजन पदार्थ ।
मन्थेरि देना	क्रि०	(का)	देखो "झोली" देना ।
मंपी	स्त्री०	(कां)	चुम्बन ।
मश्	स्त्री०	(कां)	छाती ।
मई	पु०	(कां)	सोहागा ।
मक्कड़ी	स्त्री०	(कां)	चरखे का दस्ता जिसके साथ हाथ लगाकर घुमाते हैं ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
मकी	स्त्री०	(कां) एक पौधा विशेष जिसके पत्तों का शाक खाने से हाथ पांवों की सोजश दूर हो जाती है ।
मकोड़ी	स्त्री०	(कां) एक बूटी जिसके पत्तों से कल्लर वाले पानी से सड़ी पांवों की अंगुलियां ठीक हो जाती हैं । (कु) बूटी ।
मकोल	पु०	(कां) सफेद रंग की मिट्टी जो दीवाली के दिनों पर पहाड़ी लोग अपने मकानों की कच्ची दीवारों पर लगाते हैं ।
मखर	पु०	(कु) शहद की मक्खियों का झुण्ड । शहद ।
मखीर	पु०	(कां) शहद ।
मगढ़	पु०	(कां) एक प्रकार का बांस ।
मगर	पु०	(कां) एक प्रकार का बांस ।
मच	पु०	(कां) दलदल वाली ज़मीन का समतल करने के लिए खेती बाड़ी का एक उपकरण ।
मचला	वि०	(कां) जानबूझकर अनजान बनने का स्वभाव ।
मचियाऊ	पु०	(कां) हुक्का ।
मच्छले	पु०	(कां) कंधे और कोहनी के मध्य के बाजू का मांसल हिस्सा ।
मछरना	पु०	(कां) लाड-प्यार में बच्चों का इधर उधर उछलना कूदना । प्रयोग—मुन्नू पिता दे सामने मछरि गया ए । बच्चा अपने पिता के सामने (लाड प्यार के कारण) उछलने कूदने में मस्त है ।
मछरा	सं०	(कां) मांसपेशी ।
मछलू	पु०	(कां) छोटी मछली ।
मटोटड़ (मटाटर)	पु०	(कां) वह भाजी जो पकाने पर भली भांति न गले ।
मटोटरा	पु०	(कां) मनमुटाव ।
मटोबी	स्त्री०	(कां) देखो "पलियार" ।
मट्ठा	पु०	(कां) घी अथवा तेल में तल कर बनाई गई गेहूं की एक विशेष प्रकार की चपाती जो लकड़ी के ऐसे चकले पर बेलकर बनाई जाती है जिस पर कुरेद कर फुलकारी की हुई होती है ।
मट्ठिगाल्ना	पु०	(कां) बरतनों के लिए मिट्टी उखाड़ने की जगह ।
मड़िगली	स्त्री०	(कां) मुट्ठी भर चीज़ ।
मड़हाम	पु०	(कु) मक्खियों का छत्ता ।
मड़ासा	पु०	(कां) खद्दर की चादर का ईंडवा, जिसे पुरुष भार उठाने से पहले बांधते हैं ।
मड़िआसा	पु०	(कां) देखो "मड़ासा" ।
मण्हाणी	स्त्री०	(कां) मथानी, दही बिलोड़ने का उपकरण ।
मता	वि०	(कां) महत्, ज़्यादा ।
मताला	वि०	(कां, कु) मतवाला ।
मतीबरी	पु०	(कां) बहुत बार । प्रयोग—मैं तिज्जो मती बरी गलाया । मैंने तुझे बहुत बार कहा ।
मदद़	स्त्री०	(कां) मदद ।
मधुमालती	पु०	(कां) एक प्रकार का धान, बढ़िया बासमती ।
मनसणा	क्रि०	(कां) दान में देना ।
मनाहा	स्त्री०	(कां) एक प्रकार की लोमड़ी ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
मनुख	पु०	(कां) मनुष्य ।
मन्नोमां	स्त्री०	(कां) पशुओं का एक भयंकर संक्रामक रोग ।
मरक	पु०	(कां) मामे का घर, ननिहाल ।
मरखोड़ करना	क्रि०	(कां) गाय आदि पशु का रस्से के जोड़े से सिर निकाल कर बन्धन मुक्त हो जाना ।
मरेगँज	पु०	(कां) एक प्रकार का बांस जो स्थानीय परिभाषा में "बँस' से बड़ा परन्तु 'मगार' से छोटा होता है ।
मराड़ी	पु०	(कां) एक प्रकार का बाज की तरह का पक्षी ।
मरूद	पु०	(कां) अमरूद, एक फल विशेष ।
मरोकना	क्रि०	(कु) मरोड़ना ।
मरोल	पु०	(कां) एक प्रकार की बूटी जिस के पत्तों के पानी को मुह के छाले अथवा जले पर लगाने से आराम आता है ।
मरोली	स्त्री०	(कां) एक बूटी विशेष जिस के पत्तों के खाने से कै-दस्तियां आदि बन्द हो जाती हैं ।
मलवा	पु०	(कु, कां) मिट्टी और छोटे पत्थरों का ढेर ।
मलेशा	पु०	(कु) खमीर ।
मलूई	स्त्री०	(कां) मैल का ढेर ।
मलूरी	स्त्री०	(कां) एक प्रकार का छोटा पौधा इसके पत्तों का खट्टा सा साग बनता है और यदि इसके पत्ते किसी फोड़े-फिन्सी पर मले जाए तो जहर का शोषण कर लेते हैं ।
मलेड़ा	पु०	(कु) खमीर डाले हुए आटे की पानी के बीच पकाई रोटी विशेष । खमीर ।
मलेरना	क्रि०	(कां) खाद डालना, खेत में मैल डालना ।
मलह्यार	पु०	(कां) बेरी की जाति का एक वृक्ष विशेष ।
मल्हास	स्त्री०	(कां) खेतों में लगा हुआ गोबर की खाद का ढेर ।
मल्हो	पु०	(कां) बेरी की जाति का एक वृक्ष विशेष ।
मल्ही	स्त्री०	(कां) भट्ठी पर उबलते हुए रस पर आने वाली पहली मैल ।
मल्होणा	क्रि०	(कां) आटे में खमीर उभरने देना ।
ममर	पु०	(कां) देखो "मो:र" ।
मसान्त	पु०	(कु, कां) मासान्त, मास का अन्तिम दिन ।
मसांजन	सं०	(कां) दवात ।
मांई	सं०	(कु) स्तन ।
माघी	स्त्री०	(कां) मिट्टी का बरतन विशेष जिसका मुह तो तंग होता है, परन्तु पेट चौड़ा होता है ।
मांज	स्त्री०	(कां) चांदी का बना हुआ एक आभूषण जो छोटे बच्चे को उसकी नानी अथवा दादी पहनाती है ।
मांजा	सं०	(कु) चारपाई ।
मांझ	स्त्री०	(कां) लकड़ी की सीढ़ी ।
माहुना	पु०	(कां) एक प्रकार का प्रीति भोज जो बिरादरी अथवा पड़ोसियों द्वारा उस परिवार जिसमें कोई विवाह उत्सव हो रहा हो, के सभी सदस्यों को विवाह से एक दिन पहले खिलाया जाता है ।
माई	पु०	(कां) जमीन को समतल करने के लिए कृषि का एक उपकरण, सुहागा ।
माऊ	स्त्री०	(कु, कां) माता ।
माऊला	पु०	(कु) मामा ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
माकड़ू	पु०	(कां) उड़द की जाति का एक जंगली अनाज ।
माट	पु०	(कां) मट्ट, मिट्टी की बड़ी गागर जिसमें तीन चार पानी के घड़े आ जाते हों ।
माड़ा	वि०	(कु, कां) बदसूरत । कमजोर ।
माणू	पु०	(कु) आदमी ।
माणहो	सं०	(कां) वानर ।
माधपरक	पु०	(कां) मधुपरक, शहद, दूध और दही को मिलाकर तैयार किया गया एक द्रव्य विशेष जो लगनों में बैठने से पूर्व वर को पिलाया जाता है ।
मानस	पु०	(कां) मनुष्य ।
मानू	पु०	(कां) छोटी अवस्था का सुकोमल बांस ।
माम	सं०	(कु) मामा, मां का भाई ।
माएण्डा	वि०	(कां) एक गाली ।
माल	पु०	(कु, कां) पशुधन ।
माहू	सं०	(कु) शहद की मक्खी ।
माहूठा	सं०	(कु) मबका ।
माःल	स्त्री०	(कां) चरखे का एक उपकरण ।
माही	स्त्री०	(कां) भैंसों का समूह ।
माहूरी	स्त्री०	(कु) एक धान विशेष ।
मिजर	स्त्री०	(कां) मकई के पौधों का फूल ।
मिजरां	स्त्री०	(कां) चम्बा में मनाया जाने वाला एक त्यौहार विशेष ।
मिओ	सर्व०	(कां) मुझे ।
मिकी (मेकी, मीकी)	सर्व०	(कां, नूरपुर) उत्तम पुरुष, एक वचन । सम्प्रदान कारक में मैं ।
मिच, मीच	स्त्री०	(कु, कां) मादा ।
मिनकली	स्त्री०	(कां) एक छोटा पौधा इसके पत्तों की पिन्नी बनाकर नलुआ की बीमारी वाले पशुओं को देते हैं ।
मिमा	पु०	(कां) छोटे सींगों वाला बैल ।
मिर्ग	पु०	(कां) भेड़िया, चीता, जंगली दरिंदा जो विशेषतः कुत्ते और बकरी का शिकार करता है ।
मिर्गसनाह	स्त्री०	(कां) जेठ महीने में अत्यधिक गर्मियों के दिन ।
मिरगू	पु०	(कां) चीते (मिरग) का छोटा बच्चा ।
मिरगोला	पु०	(कां) मृग, जंगली पशु ।
मिश लगाना	क्रि०	(कु) क्रोध आना ।
मींजू	सं०	(कु) दिमाग ।
मीड़	पु०	(कां) नाइयों के पास एक औज़ार विशेष जिससे वे दांत आदि उखाड़ते हैं । (कु) एक प्रकार का छोटा कीट जो शरीर के अन्दर घुस जाता है ।
मीनी	स्त्री०	(कां) कुएं की मडेर ।
मीम	स्त्री०	(कु, कां) योरुप के फैशन में सजी धजी स्त्री ।
मीसणा	पु०	(कां) वह व्यक्ति जो अपनी वास्तविकता प्रकट न होने दे ।
मुगरा	पु०	(कां) चर्मकारी में काम आने वाला एक हथौड़ा ।
मुगरी	पु०	(कां) लकड़ी की मुंगली ।
मुंगली	स्त्री०	(कां) बगड़ आदि घास को कूटकर नर्म करने के लिए बनाया गया लकड़ी का एक लम्बा सा हथौड़ा ।

सं०	शब्द	व्याकरण	अर्थ
मुंजो	सर्व०	(कां)	देखो "मिजो" (मुझे) ।
मुंझ	पु०	(कु)	सिर ।
			प्रयोग—मुंडा न दाहू लागो । सिर में दर्द हो रही है ।
मुंडर	पु०	(कां)	एक प्रकार का गेहूं जिसके सिल्ले पर बाल नहीं होते ।
मुंडबन	स्त्री०	(कां)	पैतृक जायदाद को बराबर हिस्सों में बांटना ।
मुंदिग्टी	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव में वर और कन्या की आपस में मुह दृष्टि ।
मुंदरौ	स्त्री०	(कां)	मुद्रा, अंगूठी ।
मुंदरू	पु०	(कां)	एक प्रकार की जड़ी बूटी ।
मुके	सर्व०	(कु)	मुझे, मुझको ।
मुकनां	क्रि०	(कां)	समाप्त हो जाना ।
			प्रयोग—घड़े च पानी मुकी गेआ ।
			घड़े में पानी खत्म हो गया ।
मुकला	अ०	(कां)	पर्याप्त ।
मुक्लोआ	पु०	(कां)	विवाह के पश्चात पत्नी का पहली बार पति गृह में औचारिक रूप में जाना ।
मुछना	क्रि०	(कु)	रगड़ना, गूंदना, मलना ।
			प्रयोग—सो पीठा मुछदी लागी री ।
			वह आटा गूंद रही है ।
मुत्पू	सं०	(कु)	गरदन ।
मुहा	स्त्री०	(कां)	स्त्री, पत्नी ।
मुगा		(कां)	कलाई ।
मुनना	क्रि०	(कां, कु)	भेड़ों की ऊन उतराने की किया, बाल उतारना, केश काटना ।
मुनियादी	वि०	(कु, कां)	मयाद वाली, अवधि वाला ।
मुन्नू	पु०	(कां)	छोटा बच्चा, छोटा लड़का ।
मुरकी	स्त्री०	(कु)	कान का एक आभूषण विशेष ।
मुरूद	पु०	(कां)	अमरूद ।
मुलख	पु०	(कां)	पांच छः गांवों का वह समूह जहां ब्याह-शादियों के रीति रिवाज और जीवन शैली के अन्य उपकरण एक जैसे हों, तथा भौगोलिक समानता भी हो ।
मुलणा	क्रि०	(गा)	मिलना ।
मुलमां	स्त्री०	(कां)	जननी, मां ।
मुश्क देव	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान ।
मुसना	क्रि०	(कां)	चुराना, किसी से कोई वस्तु जबरदस्ती अथवा छल से लेना ।
मूः	सर्व०	(कु)	मुझे । मैं ।
मूत	पु०	(कु)	पेशाब ।
मूतना	क्रि०	(कु)	पेशाब करना ।
मूना	सं०	(कां)	कलाई ।
मूर्चा	पु०	(कां)	हवा और नमी के कारण लोहे पर लगने वाला जंग ।
मूःल	पु०	(कां)	मूसल
मकौ	सर्व	(कां)	मुझे
मेघ		(नूरपुर)	बादला मेघ ।
मेंट	स्त्री०	(कां)	मकान की दीवार का वह हिस्सा जो पत्थरों से पक्का किया गया हो ।
मेख	स्त्री०	(कां)	चरखे का एक उपकरण विशेष ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
मेरू, मीरू	सं०	(कां)	हुक्के के नरेल और नली के जोड़ वाला हिस्सा
मैंसना	क्रि०	(कां)	मिटा देना, किसी बात को दबा देना ।
			प्रयोग-मुन्नुए जेहड़ा लिखेआ था मेसी ता ।
			लड़के ने जो कुछ लिखा था मिटा दिया ।
मेह	पु०	(कां)	वर्षा ।
मेहां (म्हेआं)	पु०	(कु)	भैंसा ।
मैंजर	पु०	(कां)	बातचीत का सिलसिला ।
मैंदड़ू	पु०	(कां)	एक जंगली पौधा जिसे कोई पशु अथवा भेड़ बकरी आदि नहीं खाते ।
मैंटली	स्त्री०	(कां)	देखो "चल्हैणा"
मैंढा	पु०	(कां)	देखो "सोहागा" ।
मैं:रू	पु०	(कां)	भैंस से सम्बन्धित ।
मैंल	पु०	(कां)	खाद ।
मैंला पड़ना	क्रि०	(कां)	भैंसों को निमोनिया होना ।
मैं: सा (मैं रस्सा)	अ०	(कां)	मैं बताऊं ।
मैंहर	पु०	(कु,कां)	गुजर
मैंहरू	पु०	(कां)	भैंस से उत्पन्न भैंस परिवार का पशुधन ।
म्हैरम	पु०	(कां)	परिचित,वाकिफ ।
मोछा	पु०	(कां)	इमारती लकड़ी का टुकड़ा ।
मौज की, मौजी	पु०	(कां)	स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छा से काम करने वाला ।
मोड़ी	पु०	(कां)	वह व्यक्ति जो गन्ना पीड़ने के लकड़ी के बेलने में एक बार पीड़े गए गन्नों को फिर बेलने में देता है ।
मोरसा	पु०	(कां)	एक घास विशेष ।
मोहुब, मोहड़ू	स्त्री०	(कु, कां)	स्तम्भ ।
मोहणा	क्रि०	(कां)	वशीकरण करना ।
		(कु)	रात को सोए हुए दबाव पड़ना ।
मोहर	स्त्री०	(कां)	मसूर जैसे अनाज का पौधा और उस का फल ।
मोहरू	पु०	(कां)	एक प्रकार का पत्थर ।
		(कु)	एक प्रकार का वृक्ष जिस की लकड़ी मजबूत होती है ।
मोहल	पु०	(कां)	मूसल, ओखल में धान कूटने का उपकरण ।
मोम्रल	पु०	(कां)	मौ महुए वृक्ष के फलों का तेल जो साबुन में इस्तेमाल होता है ।
मौका	सं०	(कु)	मचलाने वाला ।
मौंजिबा	पु०	(कां)	प्रतिकर । मुआवजा ।
मौथू	सं०	(कां)	देखो "मुथू" ।
मोर	पु०	(कां)	एक प्रकार का बांस ।
मौहू	पु०	(कां)	एक विशेष प्रकार का वृक्ष जिसके फलों से तेल निकलता है जो कि जोड़ों की पीड़ा के लिए लाभदायक होता है ।
म्यारा	पु०	(कां)	खेत के ढेले तोड़ने का एक उपकरण ।
मण्डल	पु०	(कां)	गेहूं की जाति का एक अनाज विशेष । जिसका रंग काला और दाने बहुत बारीक होते हैं । कुलूकी में इसे "कोबरा" कहते हैं ।
म्हुड	पु०	(कां)	भैंसों के समूह को चराने वाला ।
म्हरंसू	पु०	(कां)	एक कांटेदार झाड़ी जिस पर बेर के प्रकार के फल लगते हैं ।
म्हारी मीरे रौहा	वाक्यांश	(कु)	हमारे यहां रहो ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
म्हालती	स्त्री०	(कु कां)	विनाशकारी स्वभाव वाली स्त्री सामान्यतः यह शब्द गाली के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।
म्हास्ती	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की जंगली बूटी ।
म्हाल	भ०	(कां)	पास । साथ ।
म्हाल	स्त्री०	(कां)	लकड़ी का एक फ्रेम विशेष जिसे गढ़े में गाढ़ कर लकड़ी का बेलना फिट किया जाता है।
म्हिर्ए	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
म्हीन भीनी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का धान जो बहुत लम्बा और पतला होता है ।
म्हूरे	पु०	(कां)	देखो "परौसे" ।
म्हेल	स्त्री०	(कां)	चांदी के रुपयों का गले के लिए हार ।
म्है	स्त्री०	(कां)	भैंस ।
म्है	स्त्री०	(कां)	एक बेल विशेष जिसके फलों की सब्जी बनाई जाती है ।
रंगाड़	संज्ञा स्त्री०	(कां)	काले से रंग की बड़ी भिड़ ।
रंगड़ी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का धान ।
रंडोल	स्त्री०	(कां)	विधवा ।
रम्बी	स्त्री०	(कां)	देखो "गारू" ।
रम्भाना	क्रि०	(कां)	गाय का अपने बच्चे के लिए आवाज करना ।
रक्कड़	स्त्री०	(कां)	पथरीली जमीन ।
रखराड़	स्त्री०	(कां)	रखैल स्त्री । दाश्ता औरत । पत्नी जैसे सम्बन्ध वाली पत्नी से अन्य स्त्री ।
रखोई जाणा	क्रि०	(कां)	गलती से किसी चीज का कहीं रखा जाना ।
रगड़ोई जाना	क्रि०	(कां)	रगड़ लगना ।
रत	स्त्री०	कां)	रक्तिका, रत्ती ।
रघोड़ी	स्त्री०	(कां)	दूध उबालने के बरतन के साथ लगी हुई दूध आदि की साव आदि ।
रजैण	पु०	(कां)	वृक्ष विशेष ।
रड़कना	क्रि०	(कां)	महसूस होना ।
रड़त	पु०	(कां)	शोर, रड़ाना (शोर करना) क्रिया से संज्ञा ।
रड़ाना	क्रि०	(कां)	चीखना, चिल्लाना । प्रयोग—मैहीं सवेरे दी रड़ाया करदी । भैंस सवेरे से चिल्ला रही है ।
रढ़ना	क्रि०	(कां)	गुस्से होना । प्रयोग—तू मिंजो पुर कजो रढ़ा दा । तू मेरे ऊपर क्यों गुस्से हो रहा है ।
रत्का	स्त्री०		देखो "रखत" ।
रम्ब	पु०	(कां)	आरम्भ, शुरुआत ।
रवाना	क्रि०	(कां)	बोना ।
रव	पु०	(कां)	रवि, सूर्य ।
रसैंन	स्त्री०	(कां)	मिलावटी अफीम ।
रसो	स्त्री०	(कां)	पके हुए भोज्य पदार्थ ।
रहाणा	क्रि०	(कु)	गुम करना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
रहिणाणा	क्रि०	(कु)	गुम हो जाना ।
रांढ	स्त्री०	(कां)	पहाड़ की चोटी ।
रांगड़ी	स्त्री०	(कां)	देखो "रंगड़ी" ।
रांघड़	सं०	(कां)	ततैया, भिड़ ।
रांड	पु०	(कां)	पति को पत्यन्तर द्वारा व्यभिचार के बदले दिया गया मुआवज़ा ।
रांवड़ा	वि०	(कु)	१—कुशलपूर्वक । २—सुन्दर ।
राम्बर	पु०	(कां)	घास आदि की जड़ों को उखाड़ने के लिए एक कृषि उपकरण ।
राह	स्त्री०	(कां)	ऐसी ज़मीन जिस पर हल चलाया गया हो ।
राए	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
राख	सं०	(कां)	देखो "भाल" ।
राच	पु०	(कां)	बुनकर की कंघी के दंदे ।
राची	स्त्री०	(सि०)	रात ।
राछ	पु०	(कां)	"काहरग" में एक उपकरण विशेष जो ताने के धागों को दबाए रखता है ।
राजनौण	पु०	(कां)	राजा के नहाने के लिए बना हुआ सरोवर विशेष । २—धनेटा के पास एक तालाब विशेष जो बहुत प्राचीन कहा जाता है ।
राज़	अ०	(कां)	कुशल, राज़ी ।
रड़क, रड़क	स्त्री०	(कां)	शत्रुता ।
राड़ा	पु०	(कां)	एक कांटेदार वृक्ष जिस के फल कपड़े धोने के काम आते हैं ।
राढ़ना	क्रि०	(कां)	गुस्सा दिलाना, खिझाना ।
राणा	पु०	(कु, कां)	राजा, स्पित्ति ठाकुरों में प्रमुख ।
रानी	स्त्री०	(कु, कां)	शहद की मक्खियों में से सब से बड़ी मक्खी ।
राफड़	पु०	(कां)	झंझट ।
राब	पु०	(कां)	सीरा ।
रामजुआइन	स्त्री०	(कु, कां)	एक प्रकार का धान जो लम्बा, सफेद और पतला होता है ।
रामड़ा	वि०	(कु)	देखो "रांवड़ा" ।
रास गिनाणा	क्रि०	(कां)	बच्चे के जन्म के पांच छः दिन बाद ज्योतिषविद्या के अनुसार बच्चे के भविष्य के बारे में कथन करने के लिए पुरोहित्य संस्कार ।
राःणु	पु०	(कां)	एक औजार विशेष जिसके साथ घराट के बाटों को छिद्राते हैं ।
राःणा	क्रि०	(कां)	घराट के बाटों को छिद्राणा ।
रिबड़	पु०	(कां)	ततैया, भिड़ ।
रिग्राटर	पु०	(कु, कां)	धान की ऊरी लगाने की क्यारी ।
रिक्स	स्त्री०	(कां)	शत्रुता ।
रिछिया	स्त्री०	(कां)	रक्षा ।
रिजक	पु०	(कां)	रिज़्क, निर्वाह ।
रिझना	क्रि०	(कां)	उबलना, झाग निकलना ।
रिड़की जाणा	क्रि०	(कां)	किसी पहाड़ी से घास आदि काटते समय गिर पड़ना । गिर जाना ।
रिड़ी	स्त्री०	(कु, कां)	पहाड़ी की चोटी ।
रित	स्त्री०	(कां)	मौसम ।
रिध	स्त्री०	(कां)	भेड़ ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
रिन्हणा	क्रि०	(कां)	उबालना, पकाना ।
			प्रयोग—चूले च क्या रिन्हणे भरेया ।
			चूल्हे पर क्या उबाला जा रहा है ।
रिस्याल्	पु०	(कां)	रसोई घर ।
रिह्राणा	क्रि०	(कु)	बिछाना ।
रींगना	क्रि०	(कां)	आवाज़ करना, शोर करना ।
रींगना लागना	क्रि०	(कु)	चक्कर लगाना, चक्कर खाना ।
रीख	स्त्री०	(कां)	रेखा ।
रीठण	स्त्री०	(कां)	वृक्ष विशेष जिसके फल कपड़े धोने के काम आते हैं ।
रीठड़	पु०	(कां)	एक प्रकार का फल जिसका छिलका कपड़े धोने के काम आता है ।
रीना	स्त्री०	(कां)	पहाड़ की चोटी की खड़ी चढ़ाई ।
रीस करना	क्रि०	(कां)	स्पर्धा करना ।
रहीड़ा	पु०	(कां)	विवाहोत्सव के लिए विवाहित हो रही लड़की के लिए उसके ससुराल की ओर से सोहाग का एक दुपट्टा विशेष जिसपर गोटा किनारी की होती है ।
रुम्बल	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
रुग्राज	पु०	(कां)	रीति रिवाज ।
		(कु)	आवाज़ ।
रुग्राणा	क्रि०	(कु)	रुलाना ।
			प्रयोग—माठा बै मोता रुग्रादें ।
			बालक को मत रुलाओ ।
रुएचड़ा	पु०	(कां)	धान की ऊरी लगाने की क्यारी ।
रुक्ख	पु०	(कां)	वृक्ष ।
रुक्खड़	पु०	(कां)	कठोर हृदय का व्यक्ति ।
रुजिगाना	पु०	(कां)	आजीविका, रोज़ी ।
रुट्टी	स्त्री०	(गा)	रोटी ।
रुट्टू	पु०	(कां)	छोटा सा खेत ।
रुढ़ना	क्रि०	(कां)	फिसल जाना, बह जाना ।
रुढ़ू	पु०	(कां)	अनाज के रूप में दिया जाने वाला ज़मीन का लगान ।
रूढ़ू	पु०	(कां)	निश्चित लगान ।
रुणका	सं०	(गा)	आग जलाने का एक यंत्र विशेष जिसे गादी लोग हर समय अपने पास कमर में बांध कर रखते हैं ।
रुति मनाई	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का विवाह जिसके अनुसार वर के साथ चार पांच आदमी जाते हैं और वधू को नए कपड़े आदि पहना कर साथ ले आते हैं ।
रुनका	पु०	(गा)	अग्नि उत्पन्न करने वाले पदार्थ रखने का सन्दूक ।
रुपरूप	अ०	(कां)	सन्ध्या समय ।
रुभन	स्त्री०	(कां)	दलदल ।
रुसाना	क्रि०	(कु)	रूठना ।
रे:	पु०	(कां)	एक प्रकार का पत्थर ।
रेख	स्त्री०	(कां)	रेखा ।
रेख चोख	स्त्री०	(कां)	हदबस्त, सीमांकन ।
रेगो	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
रेटू	पु०	(कु)	सूत की अट्टियों की शृंखला ।
रेडे	अ०	(कां)	निकट । देखो "नेड़े" ।
रेडणा	क्रि०	(कु, कां)	वृक्ष पर से घास काटना ।
रेढा-रोढ़ा	पु०	(कां)	घराट सम्बन्धी एक उपकरण विशेष, लकड़ी का मोटा टुकड़ा जो घराट के "बट" को उतारने के काम आता है ।
रेढू	पु०	(कु, कां)	छाछ को गर्म करके बनाया गया एक भोज्य पदार्थ ।
रेतड़	स्त्री०	(कां)	रेतीली जमीन ।
रेलणा	क्रि०	(कु)	गिरा देना ।
रेली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी फलियों का अचार बनाया जाता है ।
रेण	पु०	(कां)	एक प्रकार का पत्थर ।
रेहाड़, रेहुड़	स्त्री०	(कां)	जिद्द ।
रैण बसेरा	पु०	(कां)	रात कटी ।
रोई	स्त्री०	(कां)	गर्मी का मौसम ।
रोगन	स्त्री०	(कां, कु)	बीमार स्त्री ।
रोड़ना	क्रि०	(कां)	छाज द्वारा भूसे से अनाज को दूर करना । तंग करना ।
रोड़ा	पु०	(कां)	घटिया प्रकार के चावल ।
रोढा	पु०	(कां)	एक प्रकार का धान जो "बरोतर" से भी छोटा और घटिया होता है परन्तु यह खेत में जल्दी पक जाता है ।
रोढ़ी	स्त्री०	(कां)	दो इलाकों की सीमा पर बनाया गया बुर्ज ।
रोपा	पु०	(कु)	मेंड बनाकर बनाया हुआ पहाड़ी खेत जिसमें पहाड़ी खड्ड के पानी से सिंचाई की जाती है ।
रोलिया	पु०	(कां)	एक प्रकार की बूटी विशेष जिसके पत्तों का पानी आंख की गंडियाली फिन्सी को खत्म करता है ।
रौंआ	स्त्री०	(कां)	ख्याली की किस्म की एक बेल । इसकी जड़ गुर्दे के दर्द के लिये लाभदायक है ।
रौता	पु०	(कां)	गूढ़ा लाल ।
रह्यन	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष । कमर के पुराने दर्द के लिए इसके छिलके का "गद्दर" बनाकर बांधा जाता है ।
			ल
लंगचोला	पु०	(कां)	विवाहित हो रही लड़की के पहनने के लिए ननिहाल की ओर से लाया गया पीले रंग का वस्त्र विशेष ।
लंघाणा	पु०	(कां)	देखो "खड़ोला" पार करना ।
लम्बू	पु०	(कां)	एक प्रकार का घास ।
लक्ठ	स्त्री०	(कां)	वृक्षों की टहनियां जिनसे पत्ते झाड़ लिए हों ।
लम्बरू	पु०	(कां)	एक घास विशेष ।
लईआ	क्रि०	(कां)	ले आओ ।
लव	पु०	(ग, कु)	वह भेड़ा जो प्रजनन के लिए रखा गया हो ।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
लक	पु०	(कां) कमर, कटि ।
लकड़	पु०	(कां) जलने वाली लकड़ी, ईंधन ।
लकोला	सं०	(कां) १—दीवार में सामान रखने के लिए बनाई गई छोटी सी गोलाकार अलमारी । २—रोशनी और हवा आने के लिए गोलाकार झरोखा ।
लच्छण	सं०	(कु) लक्षण ।
लज्जन	स्त्री०	(कां) कुएं से पानी निकालने की रस्सी ।
लटका	पु०	(कां) लड़का ।
लटकी	पु०	(कां) लड़की ।
लड़	स्त्री०	(कां) आटे का लचीलापन ।
लड़ना	क्रि०	(कां) डंग मारना ।
लड़ी	स्त्री०	(कां) मकान के दोनों पार्श्वों और मध्य में बनाया गया मिट्टी का वह भारी भरकम स्तम्भ जो मकान का बुनियादी ढांचा होता है ।
लद्दा	पु०	(कां) मकान के छत के ऊपर का वह हिस्सा जहां छत के दोनों पक्ष आपस में मिलते हैं ।
लदाए	पु०	(कां) ऐसे लपरे जो मकान की छत के 'लद्दे' पर डाले जाते हैं।
लप	स्त्री०	(कां) अंजली (अंजलि) प्रयोग—तिसा सीता मंगतियां जो इक लप दानेंया की देइ दे। सीता उस मंगती को एक अंजलि दानों की दे दो ।
लपेटना	क्रि०	(कु, कां) लपेटना ।
लफ	स्त्री	(कां) लहर ।
लफना	क्रि०	(कां) आग से झुलसना ।
लबटेरना	वि०	लपेटना ।
लल्ल	स्त्री०	(कां) झिड़क ।
लल्लो चप्पो	स्त्री०	(कां) खुशामद ।
लसूड़ा	पु०	(कां) एक वृक्ष विशेष जिसके फलों की खट्टी सी सब्जी बनती है।
लहत	पु०	(कां) शहद की मक्खियों का छाता ।
लहोवर	सं०	(कु, कां) हथियार, अस्त्र-शस्त्र ।
लाख	स्त्री०	(कां) बेरी के वृक्ष के छिलके से बनने वाली वस्तु विशेष ।
लाग	पु०	(कां) कर, टैक्स ।
लाज	स्त्री०	(कां) लज्जा ।
लाज	पु०	(कु, कां) इलाज, बीमारी का उपचार ।
लाज लुआणा	क्रि०	(कां) कलंक लगवाना ।
लड़की	स्त्री०	(कां) श्येन पक्षी को पकड़ने के लिए पर्वत माला के सीधे वृक्षों के साथ बनाए गए एक प्रकार के जाल ।
लाडो	स्त्री०	(कां) वह लड़की जिसका विवाह निश्चित किया गया हो ।
लाड़	पु०	(कां) भेड़ का दो साल का बच्चा ।
लाणा	क्रि०	(कु) पहनना ।
मा : ना	वि०	(गा, कु) महीन, बारीक ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
लाबद	पु०	(कां)	भेड़ के रोम ।
लाबर	सं०	(कु)	नितंब भाग से नीचे का मांसल भाग ।
लावें	वि०	(कां)	आंखों से ओझल, थोड़ी दूरी पर ।
लाम	स्त्री०	(कां)	युद्ध क्षेत्र, लड़ाई का मैदान ।
लार	पु०	(कां)	भेडू, भेड़ का छोटा बच्चा ।
लारकी	स्त्री०	(कां)	कपोतों को पकड़ने के लिए एक प्रकार का दाम ।
लारथी	स्त्री०	(कां)	वह स्त्री जो प्रसव अवस्था के कारण प्रसव अवधि में हो ।
लास्	पु०	(कां)	पशुओं की बीमारी ।
लासन	स्त्री०	(कां)	वर्षा के कारण गिरी हुई जमीन ।
लाहड़	पु०	(कां)	आबादी के घर के पास की वह उपजाऊ भूमि जिस में मकई बीजी जाती है । धान नहीं बीजे जाते ।
लाहड़ी	स्त्री०	(कां)	आबादी के घरों के साथ बढ़िया उपज वाले खेत ।
लाहड़	पु०	(कां)	आबादी के साथ छोटा सा खेत ।
लाहुला	पु०	(कां)	पुत्र, लड़का ।
		(कु)	लाहुल प्रदेश का निवासी ।
लिहुणा	क्रि०	(कां)	दुम काटना ।
	सं०		बिना दुम के ।
लिगट	पु०	(कां)	पशु की पूछ ।
लिगटी	स्त्री०	(कां)	चैत महीने का पहला दिन ।
लिगणी	स्त्री०	(गां)	पशु की पूंछ ।
लिछक	पु०	(कु)	पशु की पूंछ ।
लिचकना	क्रि०	(कां)	चमकना ।
लिआ	क्रि०	(कां)	ले आ । प्रयोग—इसा पोथिया त्हां जो लिआ । इस पुस्तक को यहां ले आ ।
लिबणा	क्रि०	(कां)	दिखाई देना । महसूस होना ।
लिसरी	स्त्री०	(कु)	एक फल विशेष जो एक कांटेदार झाड़ी में लगता है ।
लिहाड़ी	स्त्री०	(कु)	हल का दस्ता
ली या	क्रि०	(कां)	ले आ ।
लुग	पु०	(कां)	जहर, घास विशेष की कोंपलें जिसमें जहर होता है ।
लुज	स्त्री०	(कां)	कपास चुनने की मजदूरी ।
लुक	स्त्री०	(कां)	वारिश, लुकणी ।
लुकना	क्रि०	(कां)	छुपना, गुप्त रखना । (सकर्मक क्रिया) (पं० लुकाना) ।
लुगड़ी	स्त्री०	(कु, कां)	चावलों की मांड से बनाई हुई मदिरा ।
लुचपों	पु०	(कां)	भ्रष्टाचार ।
लुड़कना	क्रि०	(कां)	गिर पड़ना ।
लुड़ना	क्रि०	(कां)	गिर पड़ना, पहाड़ी रास्ते में फिसल जाना ।
लुहाल	सं०	(कु)	हल का लोहे का उपकरण जिससे हल चलाते समय जमीन कुरेदी जाती है ।
लुदड़े	पु०	(कां)	शीतला रोग के प्रकार का एक रोग ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
लूप	सं०	(कु)	लपट ।
			प्रयोग—ग्रौगी री लूप निकली ।
			आग की लपट निकली ।
लेट	पु०	(कां)	देखो "लीरा" ।
लेर	स्त्री०	(कु, कां)	शोक, मातम, चीख (पं० स्यापा) ।
लेर	स्त्री०	(कु, कां)	गीत की लय ।
लरा कचौचा	सं०	(कु)	चीख-पुकार ।
लेरा मारनी	क्रि०	(कु)	चीखना, चीख मारना ।
लेसणा	क्रि०	(कु)	लिपाई करना ।
लेह	पु०	(कां)	एक प्रकार का पौधा ।
लेन	स्त्री०	(कां)	लाइन ।
लैरा	वि०	(कां)	१—वह पशु जो दूध देता हो और जिसे प्रसूत हुए पांच छः महीने हुए हों ।
			२—गन्ने की वह फसल जो ताजी बीजी हुई हो ।
			३—सावन मास ।
लैहरा	पु०	(कां)	बावरी ।
लो	स्त्री०	(कां)	रोशनी, प्रकाश ।
लोआद	स्त्री०	(कु, कां)	सन्तान, औलाद ।
लोगड़	स्त्री०	(कु, कां)	छड़ी, बांस आदि का पक्का डंडा जो पहाड़ी लोग चढ़ाई चढ़ते समय अपने हाथ में रखते हैं ।
लोटकी	स्त्री०	(कां)	पानी का छोटा लोटा ।
लोड़ना	क्रि०	(कां)	आवश्यकता अनुभव करना, किसी चीज का मुहताज होना । चाहने वाला । चाहना, इश्क़ ।
लोणाई	स्त्री०	(कां)	फसल की कटाई ।
लोथा	पु०	(कु)	पशु का लहू (रक्त) ।
लोनावा	पु०	(कां)	फसल की कटाई करने वाला मजदूर ।
लोभ निभना	क्रि०	(कु)	प्यार खत्म होना ।
लोहांग	पु०	(कां)	लाल रंग, लाल कपड़ा । विवाहिता का लाल दुपट्टा ।
लोहांग मारनी	मुहावरा	(कु)	झूठ बोलना, बे पर की उड़ाना ।
लोहड़ी	पु०	(कां)	हल का एक पुर्जा विशेष ।
लोहाल्	पु०	(कां)	जुताई के समय हल चलाने वाले का हिस्सा ।
लौकट	पु०	(कां)	चांदी अथवा सोने का गले में पहनने का आभूषण ।
लौका	वि०	(कां)	छोटा ।
लौका जागत	पु०	(कां)	छोटा लड़का ।
लौज	स्त्री०	(कु)	लज्जा ।
लौनो	स्त्री०	(कां)	हरी घास का छोटा गट्ठा जो सूखने के लिए किसी वृक्ष के साथ लटकाया हो ।
लौह	पु०	(कां)	लहू, रक्त ।
लौहणा	क्रि०	(कां)	उतरना ।
लहफ	सं०	(कां)	रफ्तार । लहर ।
			प्रयोग—ब्यासा अपणियां पूरियां लहफां पुर है ।
			व्यास अपनी पूरी रफ्तार में है ।
ल्हा:	पु०	(कां)	गिरी हुई पहाड़ी की जगह अथवा गिरी हुई पहाड़ी का तोदा ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
ल्हाड़ी	स्त्री०	(कां)	हल का दस्ता ।
ल्ही	स्त्री०	(कां)	गोलरू का पौधा ।
ल्हीसा	वि०	(कां)	दुर्बल, बीमारी के कारण कमजोर ।
ल्होई जाना	क्रि०	(कां)	आगे बढ़ कर उतराई वाला रास्ता उतरना ।

श

शब्द	व्याकरण		अर्थ
शकेणा	क्रि०	(कु)	सुकाना प्रयोग—मैं टोहले शकेणे लाहूँ । मैं कपड़े सुखा रहा हूं ।
शताना	सं०	(कु)	लोहे का तीन टांगो का स्टैंड । घड़ोची (घट-संमचिका), घड़े रखने का स्टैंड ।
शधाणा	क्रि०	(कु)	बुलवाना ।
शयाल	स्त्री०	(कु)	लोमड़ी ।
शलिहकी	स्त्री०	(कु)	सीटी ।
शलोह	पु०	(कु)	टिड्डी दल ।
शणहूी	स्त्री०	(कु)	शाखा, टहनी ।
शांउला	वि०	(कु)	श्यामल, सांवला ।
शाखरू	सं०	(कु)	तीन चार साल का चढ़ती उमर का बैल ।
शांज	सं०	(कु)	हल का एक उपकरण ।
शाड	पु०	(कु)	घर के साथ छोटा सा खेत जिस में सब्जी बोते हैं ।
शाड़ी	स्त्री०	(कु)	साड़ी ।
शाधणा	क्रि०	(कु)	बुलाना ।
शाखा	सं०	(कु)	हल का लकड़ी का एक छोटा सा उपकरण ।
शिवबूटी	स्त्री०	(कु)	भांग का पौधा ।
शिमो	पु०	(कु)	नाक का गंदा मादा ।
शियारी	स्त्री०	(कु)	फाख्ता, एक पक्षी, घटारी ।
शियाच्चा, शोना	सं०	(कु)	सर्दी ।
शिराल	पु०	(कु)	बाल, देखो "सराल" ।
शिल	स्त्री०	(कु)	एक समतल पत्थर जिस पर नमक पीसा जाता है ।
शिलपारू	पु०	(कां)	बकरी के बालों का बना हुआ एक दोशाला ।
शिबरात	स्त्री०	(कां)	बरसात ।
शीढ़	स्त्री०	(कु)	सीढ़ी ।
शुंभणा	क्रि०	(कु)	झाड़ देना ।
शुंह	पु०	(कु)	मुंह ।
शुगा	सं०	(कु)	तोते की किस्म का एक पक्षी ।
शुजना	क्रि०	(कु)	दिखाई देना, नमूदार होना, प्रकट ।
शुड़क	वि०	(कु)	खामोश । प्रयोग—शुड़क बेश । चुप बैठ, खामोश बैठ ।
शूरू	पु०	(कां)	पानी की छोटी कुल्ह जिस से खेतों को पानी दिया जाता है ।
शुई	अव्यय	(कु)	अगला कल ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
शूप	पु०	(कु)	सूप, छाज ।
शूल लागना	क्रि०	(कु)	पेट दर्द होना ।
शेटका	पु०	(कु)	छिलका, लकड़ी का छोटा टुकड़ा ।
शेटना	क्रि०	(कु)	फैंकना ।
शेता	वि०	(कु)	सफेद ।
शेला	सं०	(कु)	सर्दी ।
शेश	स्त्री०	(कु)	देखो "सेस" ।
शैल	वि०	(कां)	सुन्दर ।
शोख लागना	क्रि०	(कु)	प्यास लगनी ।
शोटना	क्रि०	(कु)	फैंकना ।
शोभला	वि०	(कु)	सुन्दर ।
शोभ निभना	क्रि०	(कु)	सुन्दरता उतर जाना ।
शोखे माई कोकड़ी	पु०	(कु)	अधिक प्यास के कारण कलेजा फट जाना ।
शोहरू	पु०	(कु)	लड़के ।
शोहरी	स्त्री०	(कु)	लड़की ।
शौचना	क्रि०	(कु)	फंस जाना ।
शौर	सं०	(कु)	छेद । प्रयोग—नाका रे शौर । नाक के छिद्र ।
शौरू	पु०	(कु)	ओले ।
शोल	पु०	(कु)	गाए-भैंसों आदि के गर्भाशय की वह झिल्ली जिसमें गर्भास्थित बच्चा रहता है ।
शहौड़ना	क्रि०	(कु)	सड़ जाना ।

स

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सख्ती	स्त्री०	(कां)	सख्ती ।
सकथ	पु०	(कां)	सख्त ।
संग	अ०	(कां)	साथ ।
संगट	पु०	(कां)	संकट ।
संग संगेल करना	क्रि०	(कां)	बिखरी हुई वस्तुओं को तरतीब में रखना ।
संगट चौथ	पु०	(कां)	संकट चौथ, एक व्रत विशेष जो स्त्रियां अपने पति और भाई के संकटों के निवारणार्थ पौष मास की कृष्ण चौथ को रखती हैं ।
संगड़ा	वि०	(कां) (कु)	सांकला, कम चौड़ा ।
संगल्प	पु०	(कां)	संकल्प ।
संगारना	क्रि०	(कां)	सिंगारना, बनावट-सजावट से किसी चीज़ को बनाना ।
संगाह	पु०	(कु)	सीढ़ी ।
संगी	अ०	(कां) (कु)	साथ ।
संगेलना	क्रि०	(कां)	संग्रह करना, इकट्ठा करना ।
संगरी	स्त्री०	(कां)	एक मछली विशेष ।
संगोआ	पु०	(कां)	एक मछली विशेष ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
संघटोना	क्रि०	(कां)	गले में ऐसी तकलीफ होना जिस के कारण गला बन्द सा हो रहा महसूस हो ।
सघे	अ०	(कु)	साथ ।
संझ	सं०	(कां)	सांयकाल ।
संझियालू	पु०	(कां)	शाम का हलका सा खाना ।
संफिया	सं०	(कां)	योग्यता, काबलीयत ।
सन्दली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की लता विशेष ।
संसा	पु०	(कां)	डर ।
सकल	स्त्री०	(कां)	शक्ल सूरत ।
सकौरना	क्रि०	(कां)	बुहारना, झाड़ू देना ।
सग	स्त्री०	(कां)	फसल की कटाई के बाद परन्तु जुताई से पहले खेत में की गई सिंचाई ।
सगन	पु०	(कां)	मछलियां पकड़ने का एक जाल विशेष ।
सगवार	स्त्री०	(कां)	सींची हुई जमीन ।
सगरांद	स्त्री०	(कां)	संक्रांति, मास का पहला दिन ।
सगला	पु०	(कां)	पीतल की बड़ी गागर ।
सगलें	पु०	(कां)	टखनों के आभूषण ।
सगलोटू	पु०	(कां)	छोटा सगला ।
सचना	पु०	(कु) (कां)	चिमट जाना, फंस जाना ।
सचैते जाना	क्रि०	(कां)	शौच करने के लिए जाना ।
सटना	क्रि०	(कां)	फेंकना ।
सढना	क्रि०	(कु)	पकाना ।
सट्टी	सं०	(कां)	बाजार, दुकान, "हट्टी" ।
सटसटा	वि०	(कु)	सख्त ।
सट्ठू	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की मकई जो साठ दिन में तैयार हो जाती है, इसका दाना हल्दी रंग का होता है, पौधा अधिक ऊंचा नहीं होता, गुल्ली भी छोटी होती है परन्तु झाड़ अधिक होता है ।
सठ	पु०	(कां)	खेती बाड़ी की उपज का वह हिस्सा जो इलाके का राजा जमीन मालिकों से अथवा जमीन मालिक मुजारों से लेते हैं ।
सठोल	पु०	(कां)	वह व्यक्ति जो "सठ" का निर्धारण करता है ।
सड़कू	पु०	(कां)	सड़क बनाने वाले मजदूर ।
सण कोकड़ा	पु०	(कां)	एक प्रकार का पौधा जिसके छिलके के तंतुओं से रस्सियां आदि बनाई जाती हैं ।
सतत्री	वि०	(कां)	सैंतीस ।
सतपुड़ा	सं०	(कु)	फेफड़ा ।
सतवा	पु०	(कां)	निद्रा, अल्पनिद्रा, निद्रा में बुड़बड़ाना ।
सतरात	पु०	(कां)	विवाह समय आत्म-पूजन से पहले का स्नान ।
सतराता न्हौणा	क्रि०	(कां)	विवाह संस्कार के पश्चात् लड़के के घर आकर विवाहित दम्पति का स्नान विशेष ।
सतावरी	स्त्री०	(कां)	देखो "सहुसपा" ।
सतावी	अ०	(कां)	शीघ्र, जल्दी । प्रयोग—सतावी आई जायां । जल्दी आ जाना ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सया	अ०	(कां)	सदा, हमेशा ।
सयरा	पु०	(कां)	विवाह ।
सयरी	स्त्री०	(कां)	धानों का छोटा सा बण्डल जो काट लिया हो परन्तु बांधा न गया हो ।
सदलाला	पु०	(कां)	गाव का मेला ।
सद्दना	क्रि०	(कां)	बुलाना ।
सदावरी	स्त्री०	(कां)	किसी देव स्थान पर साधुओं के लिए दिया अन्नदान ।
सधेरणा	क्रि०	(कु)	सीधा करना, सुधारना ।
सन्नण	स्त्री०	(कां)	एक वृक्ष विशेष ।
सनसघरा	पु०	(कां)	व्यभिचार ।
सनारना	क्रि०	(कु)	सूई में धागा पिरोना । बीच में डालना ।
सनियू	पु०		शल्यकी । साही नामक जन्तु ।
सप्पड़	पु०	(कां)	चट्टान ।
सपसफाए	स्त्री०	(कां)	सहसबूटी, इसके हरे पत्ते कीटाणु-नाशक होते हैं ।
सपिंडी	सं०	(कां)	देहान्त के बाद ग्यारहवें दिन का संस्कार ।
सफ	स्त्री०	(कां)	चटाई ।
सवाक	पु०	(कां)	एक गहरे प्रकार का बाजरा ।
सबाना	पु०	(कां)	गुजरों की भैंसों को चराने की जमीन जिस पर गुजरों का तीन चार महीने के लिए पूरा अधिकार हो ।
सभाना	क्रि०	(कां)	पत्नी को पति के घर भेजना ।
सम्मस्तणी	स्त्री०	(कां)	समस्या ।
समाद	पु०	(कां)	सन्देश ।
समला	पु०	(कां)	खाना, भोजन ।
समलू	पु०	(कां)	भोजन ।
सम्मा	पु०	(कां)	एक छोटा पौधा जिसके पत्ते दांतों की पायोरिया आदि बीमारियों के लिए लाभप्रद होते हैं, इसके पत्ते ददासे की तरह रंगीन होते हैं ।
सम्मां	स्त्री०	(कां)	पंजाली में लगाई जाने वाली लकड़ी विशेष ।
सम्मा	स्त्री०	(कां)	शरण । प्रयोग—बाबा जी, असां तेरिया सम्मा आए थां । हे देवता, हम तेरी शरण आए हैं ।
समाद	सं०	(का) (कु)	सन्देश ।
समाई देना	क्रि०	(कां)	समाप्त कर देना ।
समाहना	क्रि०	(का)	समाप्त करना ।
समूहत	पु०	(कां)	विवाह संस्कार से एक दो दिन पहले एक संस्कार विशेष जिसमें गांव की स्त्रियों को विवाह के गीत गाने के लिए बुलाया जाता है और उन्हें 'बावरू' तथा भिगोए हुए चने दिए जाते हैं ।
समोसे	पु०	(कां)	आम के पापड़ ।
सरगस्त	पु०	(कां)	गन्ना पीड़ने के लकड़ी के बेलने का बड़ा चक्र ।
सरभंग	स्त्री०	(कां)	भंग । जंगली पटसन ।
सर्त	स्त्री०	(कां)	शर्त ।
सरलाह	पु०	(कां)	देखो "सदनाऊ" ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सर्पछल्ली	स्त्री०	(कां)	सांप की छल्ली ।
सरकंड़	स्त्री०	(कां)	एक घास विशेष जिसे सलेटों आदि की जगह मकान की छत पर डालते हैं ।
सरधारा	पु०	(कु)	एक अनाज विशेष, बथवा ।
सरधाकरना	क्रि०	(कां)	पहचानना ।
सरभार	पु०	(कां)	ठण्ड ।
सरलू	पु०	(कां)	बरसात के दिनों में पशुओं का भूठा घास जो सुखाकर सर्दियों के लिए रख लिया जाता है ।
सरी	स्त्री०	(कां)	वृक्ष विशेष ।
सराल	सं०	(कां)	बाल, केश ।
		(कु)	बड़ा सांप ।
सराल	स्त्री०	(कां)	मटियाले रंग का बड़ा सांप ।
सरिल	स्त्री०	(कां)	रखैल स्त्री, पत्नी जैसे सम्बन्धों वाली पत्नी से अन्य कोई स्त्री ।
सरू	पु०	(कां)	ओले ।
सरूधा / सरूंगा	पु०	(कां)	सरू वृक्ष ।
सलधर	स्त्री०	(कां)	दरवाजे के ऊपर वाला दीवार का हिस्सा ।
सल्ल	स्त्री०	(कां)	गाय-भैंस के गर्भाशय की वह झिल्ली जिसमें गर्भ स्थित बच्चा रहता है ।
सल्हणा	पु०	(कां)	एक घास विशेष ।
सल्हौर	पु०	(कां)	जेठ महीने के पहले दिनांक को किसी देव स्थान पर फूलों की भेंट ।
सलीट	पु०	(कां)	एक विशेष प्रकार का पत्थर जिसकी खानें कांगड़ा में धनियारा और मागसू के स्थान पर विशेषत: है इस पत्थर को घड़ कर टीन आदि की जगह मकान की छत के ऊपर डाला जाता है ।
सलोःठ	पु०	(कां)	एक बेल विशेष जो घोड़ों का चारा होता है, इसकी जड़ में मूली के आकार का एक खाद्य गट्ठा होता है ।
सलोह	स्त्री०	(कां)	टिड्डीदल ।
ससलाह लेना	क्रि०	(कां)	प्रतीक्षा कर लेना ।
ससु	स्त्रीलिंग	(कां)	सास ।
सस्सड़ रोट	पु०	(कां)	दहेज में दुल्हन की सास के लिए दिया एक रुपया और एक पीतल की थाली ।
सह	पु०	(कां)	क़ैदी ।
सहंस पाई	पु०	(कां)	हजार पैरों वाला ।
सहंसर पाए	पु०	(कां)	सहस्रपाद ।
साई	वि०	(कां)	भला, अच्छा, समभाव से चलने वाला । प्रयोग—कुनाह खड्ड साई है । कुनाह खड्ड का प्रवाह सम है, विषम नहीं ।
सांग	स्त्री०	(कां)	सीढ़ी ।
सांगा	पु०	(कां)	लकड़ी का बना हुआ एक हथ्यार विशेष । कांटेदार झाड़ियां काट कर उन से खेत में बाड़ देने के समय इस हथ्यार से सहायता ली जाती है ।
सांजो	सर्व०	(कां)	हमें । "असां जो" ।
सांट	स्त्री०	(कां)	सूर की खाल ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सांद	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव से एक दिन पहले का संस्कार विशेष जिसमें वर कन्या के सिर पर धार लगाकर सरसों का तेल डाला जाता है ।
सांप की खल्ली	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का छोटा सा पौधा जिस पर मकई के दाने की तरह दाने लगते हैं जिनमें विनाशक ज़हर होता है । इसकी जड़ आदि को गड्ढा फोड़े आदि को फुटाने में काम में लाया जाता है ।
सां: रूपा	स्त्री०	(कां)	सहस्रपाद नामक बूटी ।
सा	पु०	(कां)	किसी देव स्थान के साथ वह खुली जगह जहां देव-दिवस पर मेला लगता है, इस स्थान को पवित्र समझा जाता है ।
साऊगी	पु०	(कु)	साथी ।
साका, सका	पु०	(कां)	सगा, एक ही माता से उत्पन्न सन्तान, सगा भाई, सहोदर भाई, सगी बहिन, सहोदरी बहिन ।
साकाई	स्त्री०	(कां)	सगाई, मंगनी, कुछेक छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का वह सम्बन्ध जो विवाह के तुल्य समझा जाता है ।
साकी	सर्व०	(कां)	हमें ।
साख	पु०	(कां)	रिश्ता, सम्बन्ध ।
साजन	पु०	(कां)	विवाहोत्सव का महमान ।
साजा	पु०	(कु)	महीने का पहला दिन ।
साथ	पु०	(कां)	खेतों की उपज में राजा का हिस्सा ।
सादा देना	क्रि०	(कां)	बुलाना, विवाहोत्सव में गांव की स्त्रियों को गीत गाने के लिए विशेष व्यक्ति भेज कर बुलाना ।
साद्रू	पु०	(कां)	एक फल विशेष जो एक बेल की जड़ में आलू जितना मोटा परन्तु गाजर जितना लम्बा होता है ।
सान	पु०	(कु)	एहसान, आभारी ।
सार	पु०	(कां)	रसाल, आम ।
सार	स्त्री०	(कां)	राख ।
सारफड़	स्त्री०	(कां)	मकानों की छत पर डाला जाने वाला एक घास विशेष ।
साल	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष ।
सालरी	स्त्री०	(कां)	किसी नीची जगह यथा नाला आदि में बहुत लम्बे परन्तु कम चौड़े खेतोंकी लम्बी पंक्ति ।
सालरू	पु०	(कां)	काले रंग का सांप ।
सालू	पु०	(कां)	स्त्रियों के ओढ़ने का लाल दुपट्टा ।
सासड़ रोट	पु०	(कां)	विवाहोत्सव में कन्या की माता की तरफ से वर की माता को भेजी गयी एक बड़ी रोटी जिसमें बादाम, दाख और शक्कर आदि डाली हुई होती है ।
सासन	स्त्री०	(कां)	बिना लगान के किसी व्यक्ति को दी गई ज़मीन ।
सा हेदा बां:मण	सं०	(कां)	वह ब्राह्मण जो लड़की वालों की ओर से लड़के वालों के घर जाता है ।
साह्र भेजना	क्रि०	(कां)	विवाह के निकट लड़की वालों की ओर से ज्योतिष के अनुसार विवाह के विभिन्न संस्कारों के समय निश्चित करके किसी ब्राह्मण के हाथ कागज़ पर लिखकर लड़के वालों के घर भेजना ।
साहदेवी	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की बूटी विशेष जो कच्च कुथा होती है और च्यवनप्राश में इस्तेमाल होती है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सिदी चिणना	क्रि०	(कां)	विवाहोत्सव में "सिरगुन्दी" के समय दुल्हन की मांग को दुल्हे द्वारा रुपयों-पैसों से भरना। प्रथानुसार नौ पैसे और एक रुपया रखा जाता है।
सिऊण	स्त्री०	(कु)	सुई।
सिख	स्त्री०	(कां)	शिक्षा।
सिकना	क्रि०	(कु)	हिलना, चलना।
सिज्जा	वि०	(कां)	गीला।
सिटक	स्त्री०	(कां)	वृक्ष का छिलका। "शेटका"।
सिट्ठ (सीठ)	सं०	(कां)	सृष्टि, संसार।
सिटना	क्रि०	(कु)	पकना, पक जाना।
सित		(कां)	साथ।
सिताक	स्त्री०	(कां)	वृक्ष की छाल।
सिधु	स्त्री०	(कां)	मक्की और जौ मिलाकर बनाई हुई रोटियां।
सिनक	स्त्री०	(कां)	सींके, सफेद कीड़ियां जो मिट्टी और लकड़ी को खाकर खोखला कर देती हैं।
सिन्ना	वि०	(कु)	गीला; नमीदार।
सिमना	क्रि०	(कां)	नाक का गंदा माद्दा बाहर निकालना।
सिम्मल (सिंबल)	पु०	(कां)	एक वृक्ष।
सिमला	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
सिमलीज	पु०	(कां)	सिम्मल वृक्ष के बीज, इनका काढ़ा पीने से रुकी हुई चेचक बाहर आ जाती है।
सियापा	सं०	(कु)	झंझट, टंटा।
सिरगुंदी	स्त्री०	(कां)	विवाहोत्सव में केश-गुंथन।
सिरस	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष।
सिरन	पु०	(कां)	फसल के सवगाहन में काम आने वाला त्योंगल।
सिरा	स्त्री०	(कां)	गेहूं की चपाती।
सिरान	स्त्री०	(कां)	पानी के रिसने का स्थान।
सिराल	पु०	(कां)	सिर का बाल।
सिरिगना	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार की शहद की मक्खी।
सिरींह	पु०	(कां)	एक प्रकार का वृक्ष।
सिरेओवा	पु०	(कां)	चारपाई की चौखट का सिरहाने वाला डंडा, सेरुआ।
सिरोठा	पु०	(कां)	सिरेओवा।
सिल्ल	स्त्री०	(कां)	पत्थर का एक समतल टुकड़ा। "शिला"
सिल	स्त्री०	(कां)	ब्राह्मण पति की कलंक पत्नी।
सीं, सीऊं	स्त्री०	(कां, कु)	सीमा।
सीह	पु०	(कु, कां)	चीता।
सीठ, सिट	क्रि०	(कु)	पक गया।
सीडी	स्त्री०	(कां)	सुसरी, गेहूं आदि अनाज की घुन।
सीड़ू	सं०	(कु)	एक चपाती विशेष जिसे पानी में उबाल कर पकाते हैं।
सीत	स्त्री०	(कां)	ठण्ड, जाड़ा।

शब्द	व्याकरण	अर्थ
सींगू	पु०	(कां) एक प्रकार का कीट जिसका बाहर आना जाड़े का आगमन समझा जाता है ।
सीना	वि०	(कां) देखो "सिआ" ।
सीर	स्त्री०	(कां) झरना पानी की छोटी सी धारा जो किसी जमीन से फटती है ।
सीरा	पु०	(कां) हुक्के में पिया जाने वाले तम्बाकू में डाले जाने वाला शक्कर का शराब ।
सुथणा	क्रि०	(कां) कटी हुई फसल को एक ढेर में तरतीब से लगाना ।
सुई, सुद्दी	स्त्री०	(कु) एक प्रकार की प्रथा जिसमें नव-विवाहिता पति–घर के परिजनों के माथे पर टीका लगाती है ।
सुई कदाली	स्त्री०	(कां) धानों की नलाई करने के लिए एक औजार विशेष ।
सुकाड़	पु०	(कां) घर के साथ का छोटा सा खेत जिसमें सब्जी आदि बोते हैं ।
सुखाण	पु०	(कु) घर के आंगन से कमरे की दहलीज तक की पत्थर की "चनाट" या सीढ़ी ।
सुआरना	क्रि०	(कां) निर्माण करना, सृजन करना ।
सुकामन	स्त्री०	(कां) आम आदि वृक्ष पर उगने वाली पराश्रयी लता ।
सुकाभन	पु०	(कां) बच्चे या बालवृक्ष के सूखने की अवस्था ।
सुक्खन	स्त्री०	(कु, कां) किसी देवता के स्थान पर की गई मनौत ।
सुकोई जाना	स्त्री०	(कां) वर्षा न होना, बड़ चौहड़ों अथवा नदियों का पानी सूख जाना ।
सुखाना	क्रि०	(कां) किसी व्यक्ति से घृणा करना ।
सुखाला	वि०	(कु, कां) आसान ।
सुच, सुचा	स्त्री०	(कां) पवित्रता ।
सुतराजन	पु०	(कां) विवाह के समय नहाकर पहने जाने वाले वस्त्राभूषण ।
सुतरांजी	पु०	(कां) चटाई ।
सुथन	स्त्री०	(कां) स्त्रियों के पहनने वाली सलवार ।
सुतियागर	पु०	(कां) सौदागर ।
सुथरा	अ०	(कु) चुप, खामोश, ठीक । प्रयोग—"सुथरा बैश" । चुप बैठ ।
सुदर	स्त्री०	(कां) एक छोटी प्रकार की मच्छली ।
सुदियागर	पु०	(कां) सौदागर ।
सुन्ना	क्रि० वि०	(कां) खाली ।
सुनां	स्त्री०	(कां) सूई ।
सुना देना	क्रि०	(कां) चूमना ।
सुनियांद	सं०	(कां) स्वप्न ।
सुप्प	पु०	(कां) सूप, छाज ।
सुब्बर	पु०	(कां) विवाहोत्सव के लिये विवाहित हो रही लड़की के लिये उस के ननिहाल द्वारा लाया गया खादी का एक विशेष दोपट्टा जिस पर विशेष कढ़ाई की हुई होती है ।
सुम	पु०	(कां) दाल का छिलका ।
सुर्ग	पु०	(कां) स्वर्ग ।
सुर्गण	स्त्री०	(कु) इन्द्रधनुष ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सुर्गणी	स्त्री०	(कां)	चोल पक्षी ।
			वशीकरण जानने वाली स्त्री ।
सुर्गल	पु०	(कां)	नाग देवता ।
सुलताजन	स्त्री०	(कां)	एक प्रकार का फूल, छोटा, सुलताज ।
सुल्हें सुल्हें	क्रि० वि०	(कु)	धीरे धीरे ।
सुहू.ण	स्त्री०	(कु)	एक प्रकार की घास, लकड़ी की नाली जिससे घराट को पानी आता है ।
सुहाट्.	पु०	(कां)	घी में तली हुई चपाती ।
सुहाणा	क्रि०	(कां)	गाय-भैंस का दुबारा होना ।
सुहाल्.	पु०	(कां)	गेहूं की मीठी रोटी ।
सूंजा मछली	स्त्री०	(कां)	लम्बी चोंच वाली एक मछली विशेष जिसके कांटे दुगाड़ी की तरह होते हैं । और आदमी के मांस को काट लेती है ।
सूंदणा	पु०	(कां)	एक वृक्ष विशेष जिसकी फलियों की सब्जी वायु के रोगों को दूर करती है ।
सूहा	वि०	(कां)	गहरा लाल ।
सूही केरना	क्रि०	(कु)	स्त्रियों द्वारा माथा टेकने (प्रणाम करने) की क्रिया ।
सूणा	क्रि०	(कां)	सोना ।
सूतक	पु०	(कु, कां)	बच्चे के जन्म पर उस परिवार में पांच छः दिन के लिए अपवित्रता ।
सूतना	क्रि०	(कां)	झाड़ू देना, झाड़ना ।
सूर	स्त्री०	(कु)	एक प्रकार की मदिरा जिसका प्रयोग गद्दी लोग किया करते हैं ।
सूरन	स्त्री०	(कां)	जमीकन्द ।
सूहड़ा	पु०	(कां)	पानी का चश्मा ।
सूहा	वि०	(कां)	लाल ।
से	स्त्री०	(कां)	हजामत, क्षौर कर्म ।
सेंहिसा	पु०	(कु)	फिकर, चिन्ता ।
सेईरा	सर्व०	(गा)	इसका ।
			प्रयोग—सेईरा दब्बू ।
			इसका लड़का ।
सेउ	पु०	(कु)	पुल ।
सेओ	पु०	(कां)	सेब ।
सेज	स्त्री०	(कां)	शय्या ।
सेठ	पु०	(कां)	गन्ने का छिलका ।
सेड़ना	क्रि०	(कां)	सींचना, गीला करना ।
सेती	पु०	(कां)	साथ ।
सेती	स्त्री०	(कां)	विवाहिता स्त्री ।
सेन	स्त्री०	(कां)	नमी ।
सेपो	स्त्री०	(कां)	फसल की कटाई के समय थोड़ा सा अनाज देकर चमार आदि कमीनों से साल भर मुफ्त काम लेने की प्रथा ।
सेफ	स्त्री०	(कां)	कुलथ की चपाती ।
सेबै, सेबरै	वि०	(कां)	सब ।
सेर कर्णा	पु०	(कां)	रोटी कपड़े के गुजारे के लिए रुपया ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सेरी	स्त्री०	(कां)	सिंचाई ।
		(कु)	फसलों से भरे खेतों का समूह ।
सेल	स्त्री०	(कां)	ब्यूल वृक्ष की टहनियों का छिलका ।
सेलरा	पु०	(कु)	चील वृक्ष का बरोखा ।
सेला	वि०	(कां)	हरा ।
सेला	सं०	(कु)	बकरी के बालों का एक पट्टू, जो दरी की तरह इस्तेमाल किया जाता है ।
सेख	पु०	(कां)	हवन अग्नि में डाले गए नारियल के गोले की राख ।
सेह	पु०	(कां)	बेमोल वृक्ष का छिलका ।
सेहल	स्त्री०	(कां)	शल्य की । एक जानवर विशेष ।
सैन	पु०	(कां)	बैसाख की पहिली तारीख को गांव देवता को पुष्प भेंट ।
सैर	स्त्री०	(कां)	कांगड़ा का एक प्रसिद्ध मेला जो असूज संक्रांति को बड़ी धूमधाम से होता है ।
सैंरी	स्त्री०	(कां)	रब्बी फसल, सावनी फसल ।
सैरोपत्त	पु०	(कां)	(पालमपुर में) ऐसा खुला सा स्थान जहां सैर का मेला मनाया जाता है ।
सैल	वि०	(कां)	देखो "सैल" ।
सैली	स्त्री०	(कां)	सैलों (पक्की चट्टानों) वाली ।
सैहल	स्त्री०	(कां)	एक जानवर विशेष, इसके बहुत तीखे और लम्बे पख होते हैं ।
सौंझ	सं०	(कां)	सायंकाल ।
सौंचना	क्रि०	(कां)	देवता को प्रसन्न करना ।
सो	सर्व०	(कु)	वह ।
सो, सौह	पु०	(कु)	देखो "सा", देव स्थान के साथ खुली जगह ।
सो (सु)	स्त्री०	(कां)	पशुओं के दूध देने की अवस्था ।
सोआड़ा	पु०	(कां)	घर के पास का छोटा खेत ।
सोआणी	स्त्री०	(कां)	लकड़ी का एक डंडा जिस से घराट का ऊपर वाला वट उठाना जाता है ।
सोई	पु०	(कां)	गांव का दर्जी ।
सोग	पु०	(कां)	मृत्यु के पश्चात् दसवें दिन किया गया बलिदान ।
सोधना	क्रि०	(कां)	शुद्ध करना ।
सोतना	क्रि०	(कां)	सफाई करना, झाड़ू देना ।
सोहरी	स्त्री०	(कां)	पुत्री, लड़की, "शोहरी" ।
सोहा	पु०	(कां)	हल्की सी वर्षा ।
सौंध	स्त्री०	(कां)	सूंड ।
सौंदी	स्त्री०	(कां)	एक जड़ी बूटी विशेष जिसके पत्ते गर्म करके फोड़ा आदि फुटाने के काम आते हैं ।
सौंपणी	स्त्री०	(कां)	कोई व्यक्ति अथवा कोई वस्तु किसी को संभाल कर सौंपना, विवाहोत्सव में कन्यापक्ष की ओर से कन्या को वरपक्ष को सौंपना ।
सौकण, सौकण	स्त्री०	(कां, कु)	सौत ।
सौका,सौंकका	पु०	(कां, कु)	सौत बनकर जाने की अवस्था ।
सौकन्तरू	पु०	(कां)	सौत का पुत्र ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
सौगण देना	क्रि०	(कां)	विवाह के सम्बन्ध के लिए टिपड़ा मिलाने के पश्चात् सगाई पक्की करने के लिए लड़की वालों की ओर लड़के को पुरोहित्य संस्कार के साथ कुछ रुपये, कपड़ा, नारियल और मिठाई आदि पदार्थ देना ।
सौगी	अ०	(कां)	साथ, इकट्ठे ।
सौर	पु०	(कां)	सरोवर ।
सौरग	पु०	(कु)	आकाश, स्वर्ग ।
सौल	स्त्री०	(कां)	देखो "डौल" ।
स्यान	स्त्री०	(कां)	सिंचाई करके खेत में दूसरी बार हल चलाना ।
स्यारा	पु०	(कु)	एक प्रकार का अन्न जिस का रंग सफेद और दाने छोटे छोटे होते हैं ।
स्याली	स्त्री०	(कां)	देखो "तरडी" ।
स्सहानू	पु०	(कां)	सेल जानवर का पंख ।
स्वान	पु०	(कां)	ऐहसान । उपकार । कृतज्ञता ।
		(कु)	मिंजो इसा गल्लारा कोई स्वान नई । मेरे ऊपर इस बात का कोई ऐहसान नहीं ।
स्वंहूण	स्त्री०	(कां)	सौभाग्यवती स्त्री जिसे विवाहोत्सव में सांव संस्कार के समय कंगन बांधते हैं ।
स्होल्ल	सं०	(कां)	दुधारु गाय, भैंस ।

———

"ह"

हुण्डू	पु०	(कां)	चावलों के खेत में हलोड़ देना ।
हंडना	क्रि०	(कां)	चलना ।
हण्डू	पु०	(कां)	मिट्टी का बरतन जिस में दाल आदि पकाई जाती है ।
हंडूर	पु०	(कां)	(१) वह व्यक्ति जो पानी की कूल्ह में खेतों की सिंचाई के लिए पानी की बांट पर नियंत्रण रखता है । (२) बिलासपुर का प्रदेश ।
हगणा	क्रि०	(कां)	टट्टी करना ।
हखरी	सं०	(गा)	आंख । प्रयोग—इंदी हखरी पीड़ है । मेरी आंख में दर्द है ।
हट्टी, हाटी	स्त्री०	(कां, कु)	दुकान, बाजार ।
हठबंगा	पु०	(कां)	जिद्दी आदमी ।
हत्थतोप करना	क्रि०	(कां)	हाथ से टटोलना ।
हत्थड़	पु०	(कां)	खेत का छोटा सा हिस्सा जिसमें कम पैदावार होती है ।
हफ्ता	पु०	(कां)	सप्ताह, हफ़्ता ।
हमारा	सर्व०	(कां)	हमारा ।
हरणी	स्त्री०	(कां)	गांव में बिरादरी को दी जाने वाली "धाम" विशेष ।
हल	सं० स्त्री०	(कु, कां)	(१) भूमि खोदने का उपकरण । (२) उस उपकरण का वह भाग जिसके साथ पंजाली लगती है ।

शब्द	व्याकरण		अर्थ
हल	सं०	(कां)	हल का वह भाग जिसके साथ लोहे का फाल लगता है ।
हलचुक	पु०	(कां)	दूसरे गांव से आया हुआ मुजारा ।
हलण्ड	स्त्री०	(कां)	अवैध सन्तान ।
हला	अ०	(कां)	अच्छा, अच्छा ऐसी बात है ।
हलाड़ी	स्त्री०	(कां)	हल की हत्थी जिसे पकड़ कर किसान हल चलाता है ।
हलेतर	स्त्री०	(कां)	एक दिन की बेगार (मुफ्त किया गया काम), जो मुजारा जुताई के दिनों जमीन मालिक के लिए किया करता था ।
हलोड़	पु०	(कां)	मकई की दस बारह दिन की खेती में हल चलाना जिससे उसमें विरलता आ जाये ।
हांगी	स्त्री०	(कां)	लकड़ी और चमड़े की चलनी ।
हांड़ी	सं०	(कां)	फेरी ।
हांडी	सं०	(कु)	लालटैन की चिमनी ।
हांडी	पु०	(कां,कु)	मिट्टी का बरतन ।
हाथीधौर	स्त्री०	(कां)	तहसील नूरपुर में एक पर्वतमाला जो जिला कांगड़ा को जिला चम्बा से पृथक करती है ।
हाथ	स्त्री०	(कां)	धर्मपत्नी ।
हाल	अ०	(कां)	पास "बाल" । प्रयोग—तेरी मुरकी मिथा हाल नईएं । तेरी मुरकी (कानों का आभूषण) मेरे पास नहीं है ।
हाली	सं०	(कां)	हल चलाने वाला ।
		(गा)	गादी इलाके में एक नीच जाति जो चमारों के बराबर समझी जाती है । वह चमड़े का काम नहीं करती, बैलों को खस्सी करने का काम वही जाति करती है ।
हालड़ा	पु०	(कु)	अवैध संतान ।
हासल,	पु०	(कु)	जमीन का लगान ।
हिंगरी रंगी	वि०	(कु)	बहुरंगी ।
हिंयु	पु०	(कु)	हिम, बर्फ ।
हियुंद	पु०	(कु)	हेमन्त, शीत ऋतु ।
हिमुवात		(कु)	हिम अंधराता, अधिक बरफ पड़ने पर उसकी चमक से आंखें चुंधिया जाना और कुछ भी न दीखना ।
हिकजोर	सं०	(कां)	शारीरिक बल, हठ ।
हिज	अ०	(कु)	पिछला कल ।
हिशना	क्रि०	(कु)	बुझ जाना ।
हीऊंद	सं०	(कां)	हेमन्त ऋतु ।
ही	अ०	(कां)	पिछला कल ।
हुड़ना	क्रि०	(कां,कु)	अन्दर बन्द करना, कैद करना ।
हुकना (होड़ना)	क्रि०	(कां,कु)	बंद करना, रोक रखना ।
हुरना	क्रि०	(कां)	पशुओं का एक दूसरे को मारने के लिए तैयार होना ।
हुंड़ा	सं०	(कु)	आखेट, शिकार ।
हुणना	क्रि०	(कु)	सींग से मारना । प्रयोग—बौल्द हुणदा ता नी । बैल मारता तो नहीं ।
हेरना	क्रि०	(कु)	देखना ।
हेरी लेना	क्रि०	(कां)	प्रतीक्षा करना ।
हेसी		(कां)	शहनाई बजाने वाला ।
होआड़ी मारना	क्रि०	(कु)	कहकहा लगाना । जोर से हंसना । लम्बे स्वर से गीत गाना ।
होड़ करना	क्रि०	(कां)	आठ दस दिन के मकई के पौधों में हल चलाकर मकई की जड़ों के आसपास की जगह को खोखला करना ।

लोक साहित्य

(तीसरा भाग)

लोक गीत, लोक कथाएं आदि

गीत १

कांगड़े दा टिल्ला[1] वो अड़ेया[2] कांगड़े दा टिल्ला,
हिमालय वसदे पास वो अड़ेया, कांगड़े दा टिल्ला,
ज्वाला[3] माई इत्थू बसदी कुल्लू वसदे महेश,[4]
वो अड़ेया, कुल्लू वसदे महेश,
दूर होई जांदे कलेस[5] वो अड़ेया,
वो अड़ेया, दूर होई जांदे कलेस ।
बरफा[6] री टोपी पैंदे लड़ोती,
खड़ी है धौलाधार[7] वो अड़ेया,
सबजो दसदी प्यार वो अड़ेया,
सब जो दसदी प्यार,
कांगड़े दा टिल्ला वो अड़ेया, कांगड़े दा टिल्ला ।
उच्चे पर्वत अम्बर चुम्मदे,
उच्चे खड़े दयार वो अड़ेया,
नदियां नाले इत्थू वसदे,
कुल्लू वगदी ब्यास वो अड़ेया,
चमकी चुमदी प्यास वो अड़ेया ।

गीत २

वो कांगड़े देशा[8] देसा[9]
ज्वाला जी देआ बैहरा[10]
ऊप्पर तेरे बरमा लगेया
लाटां[11] जगदियां अंदर वो
मकैनिक सारे रैहंदे सप्पड़ी[12]
रोशनिए सारे ठाणे[13] वो
दूर दूर से मकैनिक आए
दूर दूर से रोशनिए वो
सांझे सवेरे तिन शिफ्टां[14] विच
ड्रिलंग पुआइंट[15] जो जांदे वो
ओथू[16] जाके दिल लगाके
अपनी ड्यूटी निभांदे वो
इब असां[17] सारे मिलके
माताजी दे गुण गांदे हो
देस प्यारा भारत म्हारा
जग जो फिर जगांदे वो ।

---

[1] टीला
[2] संबोधक शब्द "अरे" (सांस्कृत भाव)
[3] माता ज्वाला-मुखी
[4] महेश
[5] क्लेश, दुःख
[6] बर्फ, हिम
[7] धौलाधार पर्वत ।
[8] के
[9] देश
[10] बाहर
[11] ज्वाला, लपट
[12] जगह का नाम
[13] थाना (थाने के निकट)
[14] तीन शिफ्टों में
[15] Point
[16] वहां
[17] हम

गीत ३

उजड़ि गया हुण सारा
पहाड़ी देश हमारा ।
दुनिया सारी पढ़ि पढ़ि चली,
पर न चाने असां अभागी,
अस्त होया साड़ा तारा, ओ तारा—
पहाड़ी देश हमारा ।
उजड़ि गया हुण सारा
पहाड़ी देश हमारा ।
सिक्के दे लोक ओ बड़े बड़े अफसर,
पहाड़ू हमारा लाले दा नौकर,
मांजे ही मांजे विचारा, ओ विचारा—
पहाड़ी देश हमारा ।
उजड़ि गया हुण..........
कारखाने खोले लोकां ने भारी,
साड़े लोकां दी गई अकल मारी,
पानी गुआंदे नकारा, ओ नकारा—
उजड़ि गया हुण..........
अपू पढ़ो कनां कुड़ुए जो पढ़ाओ,
पढ़ाई कराइके अमल कराओ,
होवेगा पार उतारा, ओ उतारा—
पहाड़ी देश हमारा ।
उजड़ि गया हुण..........
हाथ बन्ह के 'राम' अरज गुजारे
कांगड़े की रूढ़दे लाओ किनारे,
भला होवेगा तुम्हारा, ओ तुम्हारा,
पहाड़ी देश हमारा ।
उजड़ि गया हुण सारा,
पहाड़ी देश हमारा ।

गीत ४

चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा ।
चल दिखा पहाड़ियां रा रहणा, सहणा, खाणा बो ।
संसाला रे गासा[1] गासा, चोटियां रे कर्शं कर्शं[2] ।
रिड़ुए[3] रे गभ्भे[4] गभ्भे लाहूं के बसे बर्शं ।
स्योकां[5] रे मोलू पां, मवीषां रा लाणा बो ।
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।
शिकारे री मौज मोलू, लकड़ू[6] कतेरे बो ।
रहणे जो चलि पौंगे, कागीए रे डेरे बो ।
गल्पां[7] जो लानी मिश, बड़ा ई स्याणा बो ।
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।
लंगड़ू[8] का भुज्जू कशे पाणी कुहाणी[9] बो,
जौआं किया टिकड़ां[10] नैं निसरे जवानी बो,
भटूकआं कशे फफरे का भुज्जू चल खाणा बो,
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।
भोले भाले चालिए, जदूं नगरां जो चांदे बो,
शाहरिए बचारेआं जो, ठगीठगी खांदे बो,
सफ्फड़ डंगरां जो माहणू बणाणा बो,
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।
भीड़े[11] भीड़े टापरू कशे छप्पू नाहिआं पांदरियां,
मोलणे लुण्डोल्[12] कशे सौने जो बंदरियां[13]
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।
खाणे जो खोड़ां[14] रियां भरी जरुयां बोरियां,
दिखणो जो पराटुआं च गोरी गोरी छोरियां,
चल दिखा स्योकणां का नाचना भर गाणा बो,
चल मेरे मित्रा चालिया जो जाणा बो ।

---

[1]ऊपर ऊपर [2]साथ साथ [3]पहाड़ों की चोटी [4]बीच में
[5]सेवक [6]जलाने की लकड़ी [7]बातें [8]एक प्रकार की जंगली सब्जी
[9]चश्मे का पानी [10]जौ की रोटियां [11]तंग तंग
[12]ऊनी फटे कपड़े [13]एक प्रकार की चिटाई [14]अखरोट ।

गीत ५

पाधरे[1] मदाने[2] च बांगलू पुघाणा ।
कर्नी बगीचड़ी[3] लगाणी वो ।
सी पल[4] सो पल पलंग बछाणा[5] ।
हूवा ठंडड़ी[6] खाणी वो ।
सुक्केयां[7] टुकड़ेयां आई करि भुख ।
बाजे स्कूले भी जांदा मो मदरसे जो जांदा ।
दई दे तू मेरेआ गहणेआं वो बन्ने ।
मैं मापेयां[8] दे चलि जाणा वो ।
लांहगी[9] कमांहगी[10] कर्नी मुन्नए[11] पढांगी ।
जाण[12] दुखां च तीह् पाणी वो ।
घड़ीए[13] दुधे भाली गागो[14] ले आणी ।
गड़गड़ रिड़के[15] मधाणी[16] वो ।
पुट्ठियां[17] बाड़ियां[18] न कर मुन्नए रेसमो ।
गड़गड़............

गीत ६

मैंनी जाणा चम्बे दिया धारा[19] यो जी
मैंनी जाणा चम्बे दिया धारा ।
चम्बे दिया धारा ओ पौन फुवारां
सोर्जी[20] जान्दा चोलू[21] भारा,
मैंनी जाणा............. ।
हाम्बड़ू तां गोरिया[22] दे ठरी[23] जे जान्दे
पैरां वो लगी जान्दा पाला[24] वो जी
मैंनी जाणा............ ।
घर घर टिकलू घर घर बिन्दलू[25]
घर घर छैल[26] छैल नारां[27] वो जी......
चम्बे दिया धारा भी छौलणू जे बजदा
चम्बोया बजदा नगारा वो जी
मैंनी जाणा............
मैंनी जाणा चम्बे दिया धारा यो जी
मैंनी जाणा चम्बे दिया धारा ।

---

[1]समतल [2]मैदान [3]बगीचा [4]कोमल, नर्म [5]बिछौना [6]ठंडी
[7]सूखा, बिना दाल भाजी के [8]माता पिता के घर [9]खाऊंगी [10]काम करूंगी [11]लड़के को
[12]जीवन [13]घड़ी भर में [14]गागर [15]मथना [16]छाछ का बर्तन
[17]उल्टी, बेकार की [18]जिद्दें, हठ ।
[19]पर्वत की चोटी । [20]गीला हो जाता है । [21]ऊन का बना हुआ कुर्ता । [22]प्रेयसी ।
[23]ठहर जाते हैं । [24]ठंडक लगना । [25](मुहावरा) घर घर खुशियां मनाई जा रही हैं ।
[26]सुन्दर । [27]नारी, स्त्री ।

गीत ७

काइए[1] रे बेले[2] चाढ़ण छेलुआं[3] जे चारे
ओ भेड़ुआं जे चारे मेरिए बांकिए गादणी
छड़ि देणा गाटो छेलुआं दा चारना[4]
ओ भू भेड़ुआ दा चारना नी मेरिए बांकिए गादणी
छेलुआं रा चारना कदी नी छड़ना
कदी नइओ छड़ना एहतो म्हारे बुजुर्गा रा पेशा
ओ मेरे देसा रेआ हाकमा, ओ बांके आ राजेआ

छड़ि देणा गाटो वो पहाड़ां दा रहणा
ओ पहाड़ां दा जीणा,
पाधरे[5] मदानें जो जाणा वो, मेरिए बांकिए गादणी
गदी तां गाढ़ण पहाड़ां च साजदे
पाधरे च रहंदे राजे लोग
ओ मेरेआ देसेरे आ हाकमा ओ बांकेआ साबा[6]
छड़ि देणा गाटो वो चोले दा

पाणावो डोरे दा लाणा वो
रेसमी सूट सिआणा वो मेरिये बांकिए गादणी
लाठा करदे रेसम राणियां जो साजदा ओ
राणियां जो बणदा
गद्दियों जो चोला प्यारा वो
मेरे देसे रे आ हाकमा ओ बांके आ साबा
छलि छलि राजा गादणी जो पुछदा
किसदी वो तिज्जो लगदी बुरी ओ
थोड़ी थोड़ी बुरी राजा देरे री लगदी वो
जेठे री लगदी वो
थोड़ी थोड़ी बुरी राजा छेलुआं री लगदी
भेड़ुआं री लागदी
गद्दिए री बड़ी आंदी बुरी वो
मेरे देस रे आ हाकमा ओ बांकेआ राजेआ ।

---

[1]एक प्रकार का घास [2]चरागाह [3]बकरी का बच्चा [4]चराना [5]समतल
[6]साहिब ।

गीत ८

गायक — ओ गद्दिया, ओ गद्दिया ।

गायी — ओ गद्दणी, गद्दणी ।

गायक — कांगड़े रा देस म्हारा बड़ा-बड़ा बढ़िया

गायी — इम्हू[1] साई धौल धरत,
हो कुछ मिलणी,
ओ गद्दणी ।

गायक — ऊंचे-ऊंचे शिखरां पुर चीटी-चीटी बरफां,
ओ चीटी चीटी बरफां ।

गायी — निक्की[2]-निक्की धारां मंझ चित म्हारा लगीरा,
ओ चित म्हारा लगीरा ।

गायक — छल्लियां री रोटी कने लूण्हा साईं रा,
ओ लूण्हा साईं रा ।
खाई-खाई थकि गई नी खाया कादी रज्ज नी,
ओ गद्दणी ।
ओ गद्दिया, ओ गद्दणी ।

गायक — असारे देस मंझ बड़े-बड़े मन्हूरू,
ओ बड़े मन्हूरू ।

गायी — रहणे जो टापरू घर सौने जो बन्दरू,
ओ सौने जो बन्दरू ।

गायक — पिट्ठी पुर नाजेरा[3] बुझका[4] जो लदेआ,
ओ गद्दिया ।

गायी — ओ गोरा-गोरा मुख तेरा निक्का-निक्का कद नी,
ओ गद्दणी ।
ओ गद्दिया, ओ गद्दणी ।

---

[1]इस जैसी [2]छोटी छोटी [3]अनाज का [4]बोझा ।

गीत ६

गायक
चल मेरे पिया नदौणे जो जाणा,
उत्थू ई नागरी बसाणी वो,
अमतरे जाइ कन्नैं डेरा ज लाणा,
पीणा ब्यासा का पाणी वो ।

गायकी
कीआ[1] करि चालना नी बांकिए गादनी,
कीआ करि डेरा जकाना[2] वो,
अपणा देस अपणा ई हुन्दा नी,
देस पराया बगाना वो ।

गायक
ना कर घड़िया भोलेआ गादिया,
जिन्दड़ी[3] उत्थू ई बताणी वो,
रिढुआं कुआलुआं[4] च नांहिओ आसना,
कुटिया चुगाने लगाणी वो ।

गायकी
उत्थू कुत्तू चारणियां चाकरियां गादणी,
भेडां भुखे मरि जाणा वो,
असां गरीबां जो डेरे ई लारे वो,
असां नांहिओ टापरू बसाणा वो ।

गायक
टिल्लुए रे रिढुए भेडां चराणियां,
कन्नैं मुरली बजाणी वो,
मेहलां के संघै टापरू बसाणा वो,
हवा ठंडड़ी खाणी वो ।

गायकी
निक्कड़े[5] न्याणे बिगड़ी तां जांदे वो,
नगरां जो असां नी जाणा वो,
चोला तां डोरा लुआई करि गादणी,
भेड़ां चराणे लगाणे वो ।

गायक
निक्के न्याणे स्कूले जो भेजने,
हे मुन्नी भी अपनी पढ़ाणी वो,
साणू[6] भर सूथण[7] सुआई कन्नैं गादिया,
बी० ए० पास कराणी वो ।

---

[1]कैसे [2]बनाना [3]जिंदगी [4]पर्वत की ऊंचाई [5]छोटे [6]ऊन का बड़ा कुर्ता [7]पाजामा ।

गीत १०

छोटीए देइए राधिके
    तैं कौं राम बुलाए ?
मिली तां सी बाबल दी,
जे मैं आप बुलाए ।
बाबे ने तीमदे देई भेजे,
नौमदे जीवन आए ।
सूहीयां पगड़ियां चकमक जी,
तुसां काएते आए ?
सौहरे ने कागद भेजे जी,
असां लगनों जो आए ।
साडे आ साडे आ वे नौलिया साजना,
तनियां खोल धोती ला वे
    नौलिया साजना,
गड़ुआ लै पैरा धो वे
    नौलिया साजना,
पंग दा चौंके वो वे
    नौलिया साजना,
चौंके दा पत्तल मैं वो
    नौलिया स   ा,
पत्तल पई जूना मैं
    नौलिया साजना,
कालिए बदलिए तूं वर इत अंगनें
बावल दा लड़िया माना था
सिजिया मैं लैणा इत अंगनें ।
बड़ियां पटारिया होइयां तैयारियां
पज छोड़ि जावना बाबल जी
    दा देस ए ।
मेरीए राधिके, तैं बड़ी देर लाई
राधिका इतना ही कह पाती है—
हे महाराज माता जी मिलन दिआं

गीत ११

बोल नी मेरीए रणबण कोयले,
रणबण छोड़ि तूं कहां चलि ए ?

सुण वे सुण वे मेरे हिया पुत्ता,
अर्थ बन्दो दी सुणियों जी ।
जे म्हारी बेटी कम्म न जाणे,
अन्दर बहि के समझायो जी ।
थे म्हारी बेटी मोटा कत्ते,
रेशम करिके आणियां जी ।

तेरियां महलां के विच विच जी,
बाबल मेरा डोला अड़िया ।
अग्गे अग्गे चालदी पीछे मुड़ि देखदी,
नजरी न आमदा
बाबल-जी दा देस जी ।

गीत १२

गल सुणीजा, मेरी गल सुणीजा,
ओ अड़िया गल सुणीजा,
ओ अलिया गल सुणीजा ।
चोली फटे तां मैं टांकीयां पावां
अम्बर फटे कीहां सीणा ।
दिसदियां दिसदियां गुजरियां रातां
पता नहीं लिखो कुण देइयां रोका
चंदरियां जात कुजातां
गल सुणी जा ।

गीत १३

ऊंचे ऊंचे बांगले की
ऊंची ऊंची बैठकां,
खरा दिहा लागदा कि
बाप जी का देस ओ।
नीठे नीठे बांगले की
नीठी नीठी बैठकां,
बुरा दिहा लागदा कि
सौहरियां दा देस ओ।

जलि जाए सौहरिआं दा देश ओ,
अम्मा जी मैं नहिओं बसना।
भांडे मांजी-मांजी हत्थ घसी जांदे,
ओथु कदी मिजो मूहे नहीं लांदे।

कच्चिआं कलियां न तोड़,
भुरला माणूआं ओ,
पकने दे दिन चार
रसे भरी डालियां ओ।

मैं चलिया नी माए,
नौकरी नी चाकरी नी,
तूहां जो सुखी रखियां।

बापू तां आयां माए हथियां सुखियां
तूहां जो पुरिया तनाइयां।

नी जम्मुआ दे राजे
लिखि कागद भेजिया
लिखि कागद भेजिया
जम्मुआं दी नौकरी जो पौणा

सौहरा न गया जेठ न गया,
दांमां दे कारण भेजिया लाल मेरा।

इक दिल बोलदा जी
नदियां 'च डुब्बी मरां,
दूआ दिल बोलदा जी
बालड़ो बरेस ए।

अम्मां मेरी रोमदी
कि बापू मेरा झूरदा,
भाई मेरा तोपदा
कि नदियां दे फेर ओ।

गीत १४

अजी मजामल गजमल
गजमल कहीए छैल
राजे दे नौकर छैल
दम्मां दे लोभी छैल
पींघां दी रुत आई है।

रामा थम गडाई दे
रस्से बटाई दे
पींघां पुआई दे,
पींघां दी रुत आई है।
अजी कहीए ता कहीये
दिल दी सहेली नाल
मन दी सहेली नाल
एह दुख मने विच सहीए राम।
सामन सामन करि गया जी सावना
सामन हब आई गया जी
किब घर आमणा
मैं लिखि भेजां कोरियां कागदा जी सावना
घर तुम्हारी मांमां दा मंदा हाल
तुसां घर आमना।

दम्मां दीआं बोरियां,
देई भेजां नी गोरिये
करि लैणी मांमां जी दी कार जी
म्हारा आमना न होवे।

मैं लिखि भेजां कोरियां
कागदा जी सावना
घर तुम्हारी नाजो दा,
मंदा हाल तुसां कर आमना।

गीत १५

हीं तां गलाश्रीग्रां[1] सच ग्रो
मेरे बांकुरेग्रा[2] चाचुग्रा
　　कजो कमरांदी एं ग्रा भज्जबो
　　मेरे बांके दिये भाभिये
ग्राप् तां चला जांदा नौकरी चाकरी
मिजो दई जांदा जूरपा[3] ग्रो पातरी[4]
छोटा देग्रा नौकर तु रख बो
मेरे बांकुरेग्रा चाचुग्रा
　　नौकरे दा स्यापा नवाग्रो
　　कम्मां दे ताले[5] ग्रोर कर दे
　　रुपइये तां मंग दे दस बो
रोटियां पकांदिग्रा गर्मी ग्रो लागदी
भांडे मांज दिया सर्दी ग्रो लागदी
छोटा देग्रा नौकर तु रख बो
मेरे बांकुरेग्रा चाचुग्रा
　　बाहर तो जाइ करि रुपइये लेग्रौंगा[6]
　　तेरे नके ग्रो नथ बनुग्रांगा
　　गले जो ले ग्रौंगा हार बो
　　मेरे बांकु दिये भाभिये—
गल्लां तां कर भावें लख बो
मेरे बांकुरिया चाचुग्रा
मिजो तां लई चल कख[7] बो—

गीत १६

माय नी मेरिये चम्बु दे रस्ते, चम्बा कितनी की दूर ।
उड़ेयां उड़ेयां कागा पैहुरा दे तड़के, सजना ने मिलना जरूर ॥
माय नी मेरिये चम्बु दे रस्ते, चम्बा कितनी की दूर ।
ऊंची ऊंची रौढ़ियां[8] तां, डुगी डुगी[9] नदियां, दिल होई जांदा चूर ।
माय नी मेरिये चम्बु दे रस्ते, चम्बा कितनी की दूर ॥

मंडीया नी बसणा सकेता नी बसणा, चम्बे जाई बसणा जरूर ।
माय नी मेरिये चम्बु दे रस्ते, चम्बा कितनी की दूर ॥

---

[1]कहती हूं　[2]सुन्दर　[3]कृषि के औजार विशेष　[4]झंझट　[5]टालना
[6]ले आऊंगा　[7]साथ ।
[8]पर्वतों की चोटियां　[9]गहरी

गीत १७

इक बरक खाई लिया
　　　　जने लियां जलोकियां,
इक बरक रहि गया
　　　　गप्पड़े दे हेठ भी ।
भरखी मरदी बोलदी
　　　　हां माये मेरिये,
हुण मत धीयां दे दे
　　　　चंगर गुलेर जो ।

'जम्मू रैया राजेआ
　　　　अड़िया नौकरां जो घर भेज',
नौकरां जो घर कियां भेजां,
　　　　सांजो पई जांदी भट लोड़ ।

पिपले हेठ खड़ोती नारे
　　　　तू इकली नीह खड़ी,
क्या तेरे पियोके दूर
　　　　क्या घर सस बुरी ।

गीत १८

(विवाहोपरांत कन्या को पहली विदाई के समय विवाहिता की ओर से उसकी सहेलियों द्वारा)

खड़े होएओ हेसियो,[1] खड़े होएओ ढोलियो[2]
　　रति भरि[3] दिखणा देओ—
　　　　बापुए रा देस जीओ
　　　　अम्मा रा पड़ोस जीओ
　　　　साथणा[4] रा साथ जीओ
　　　　पीपले री पींघ जीओ
　　　　　　गुड़ियां रा खेलणा
　　　　　　रति भरि देखणा
　　खड़े होएओ हेसियो भी ।

---

[1]शहनाई बजाने वाले जो वधू की डोली के आगे २ शहनाई बजाते हुए चलते हैं ।
[2]ढोलक बजाने वाले, जो शहनाई वालों के साथ-साथ चलते हैं ।
[3]तनिक, थोड़ी देर के लिए ।
[4]सहेलियां, बचपन में साथ खेलने-कूदने वाली ।

गीत १६

हरनी बोलूरी[1] रानी सुनो मेरी बात,
चुगदा[2] हिरन तै मोरेया[3] बनें न पई गई उजाड़,
केआ खादा तेरे बेहतै[4] केआ होए आ बिगाड़[5],
समझि चलो राजा भरथरिया।
ऐसी विरागन मैं फिरां, ऐसी फिरैं तेरी नार[6],
रानी बोलुरी गोली सुनो मेरी बात।
रात का सुफना[7] होए आ जे कहत न जाव,
नक्के[8] की बेसर[9] डिगि पई रलि गई माटी के साथ।
नैण का काजल रुढ़ि गया मिल गया नदिया के साथ।
माथे का बिन्दना[10] डिगि[11] गया रलि[12] गया माटी के साथ।
गोली कहन्दी रानी सुनो मेरी बात।
एहो देरा[13] सुफनें नित हुंदे,
हुंदे बारो बार, समझि चलो रानी राधिके,
हरनी बोले राजा जी सुनो मेरी बात।
खल्लड़[14] देखो कुर्सी जोगिए जो जेहड़ा हेठ-बछाग।
सिग देखो उस जोगिए जो जेहड़ा बीण बजाय।
नैण देखो नैणावन्ती जो,
　　　　जेहड़ी करे गी सिंगार,
　　　　दंद[15] देखो कुर्सी पणते जो,
　　　　जेहड़ा दातन लागा।

---

[1]कहने लगी। [2]घास खाता हुआ। [3]मारा। [4]खेत, आंगन। [5]नुकसान, हानि।
[6]नारी, स्त्री। [7]स्वप्न। [8]नाक। [9]एक आभूषण विशेष। [10]बिन्दी। [11]गिर गया।
[12]साथ मिल गया। [13]इस प्रकार के। [14]खाल। [15]सिंगा।

गीत २०

मस्त बहार आई रुत खेलने की,
सुन्दर सांवल ने बृज विच रास पाई,
घर त्याग के राणियां सुणन आइयां,
तेरी बांसुरी की आवाज़ सुन के सुध पाई।
इक गलांदियां हासविलास करि कै,
राम ने दुनि बरिष्ट पाई,
राधिका गुमान जी करि बैठी,
ओ रुसड़ी[1] अपने घर आई।
इक सांवले ने दिलों दलील कीती,
राधा लैण महाराज आप आए,
वेहड़े[2] बड़देयां[3] राधिका हस पई,
सांजो लैण महाराज जी आप आए।
सोच विचार कै तू दस्स प्यारी,
बड़े बिखड़े बोल न बोल प्यारी,
सारी हकीकत[4] खोल कै दस्स प्यारी,
जिन्हां गल्लां रा कीता तैं रूस्स प्यारी।
शौक[5] नईं सांजो[6] दासने[7] का,
सारी चाह नईं सांजो खेलने की,
जिन्हां राहीं सांजो सांवला याद करदा,
तिन्हां राहीं सांजो कालड़ा[8] नाग डसदा।
मेरी सौं बेगमे तू चल प्यारी,
तू छोड़ दे बांह, मैं नइयों जाणा।

---

[1]रुठ कर। [2]आंगन। [3]आते ही, घुसते ही। [4]हकीकत, सचाई। [5]शौक, इच्छा [6]हमको। [7]बताने का। [8]काला।

गीत २१

जीवने की किश्ती मेरी तेरे सहारे वो,
डुबदी जो तार माता लाइ दे किनारे वो,
पच्छां[1] वी निराशा गांह[2] वी सुझ नी सुज्जदा[3] वो।
सुनि लेआं मेरी माता, देवी चामुण्डा वो,
हत्थ जोड़ी चित्त लाया तेरे दुआरे[4] वो,
जीवने की किश्ती मेरी तेरे सहारे वो,
तैं पुर जिस आस रक्खीं होई गई पूरी वो,
सुनी मेरी आशा अम्मां रहे न अधूरी वो।
नैणां चों वगा करदी छम-छम धार वो,
जीवने की किश्ती मेरी तेरे सहारे वो।
लाज रक्खी लेआं माता करमां दा मारे वो,
जिओ वी तार माता लक्खां जो तारे वो।

गीत २२

सच दस्स तू श्याम निकेआ
चोरी करनी तूं कहांते सिखेआं
इक दिन श्याम ने माखन खाया
छिक्का तोड़ के भुजें[5] गिराया
सारा माखन मुंह च पाया
गुस्से होई के जसोदा पुच्छेआ
चोरी करनी तूं कहांते सिखेआ
इक दिन श्याम नै माटी खाई
माता जसोदा मारने जो आई
बां पकड़िकें जसोदा पुच्छेआ
चोरी करनी तूं कहां ते सिखेआ
श्याम ने मुखड़ा खोल दिखाया
त्रिलोकी का दर्शन पाया
परना च पई के जसोदा पुच्छेआ
लीला करनी तूं कहां ते सिखेआ।

---

[1] पीछे। [2] आगे। [3] दिखाई देता। [4] तेरे दरबार में।
[5] भूमि पर।

गीत २३

सोधे[1] राम मिलादे————————
आगे आगे लसकर[2] पिछे पिछे डेरे,[3]
उसते पिछे राम मेरे,
खो गए राम, खो गए राम,
सोधे राम मिलादे।
मारि लेया लसकर लुटि लए डेरे,
छलि[4] लए राम मेरे,
खो गए राम, खो गए राम,
सोधे राम मिलादे।
गोरी गोरी बाहें हरी हरी चूड़ी,[5]
उसजो पावे मेरा अन्तर्जामी,[6]
भजि गई चूड़ी पलट गई चूड़ी,
छलि खो लए राम पावन[7] वाले।
कोरा कोरा कलस[8] ठंडा जल पानी,
उसजो पीवे मेरा अन्तर्जामी,
भीज गया कलस पलट गया पानी,
छलि खो लए राम पीवन वाले, सोधे राम मिलादे।

गीत २४

राम चले लछमण चले बनवास,
सीता जी जो छोड़ि गए मांवां दे पास,
विपता पई ए गुजराण करो,
बारहां कोहां की पई ऐ उजाड़,
सीता जी आखदी अरजी सुणो मेरी बात,
नई जो नई रहंदी मैं मावां के पास,
जिधर जावोगे आप उधर साथ चलां,
चकवा अर चकवी करदे ने विचार,
दोवां भाइयां दी इको ए नार,
विपता पई गुजराण करो।

---

[1] मिलोवा। [2] लसकर। [3] मकान, घर। [4] छल, कपट। [5] चूड़ियां (हाथ में लगाने का आभूषण)। [6] अन्तर्यामी। [7] पावन हार। [8] घड़ा।

गीत २५

भादों महीने किया न्हेरिया[1] राती
सरवन बेटे के जरम[2] जे सेआ
तिन दिनां का सरवन जे होएआ।
तां पाखें चांगी रास बनाया ।
दसां दिनां रा सरवन जें होएआ।
तां पाखें गूंते रा छिट्टा दुआया।
पंजां बरसां रा सरवन जें होएआ।
तां पोथी पांधे पढ़ने जो पाया।
दसां बरसां रा सरवन जे होएआ।
तां ब्याई ती उसजो इक चंचल नारी।
नारी नारी चंचल नारी।
माता पिता की कोई सेवा करनी।
उठी नारी कुम्हारे कै गई ऐं।
भांडा सै घाई दो बिल्ल[4] वासा।
इकीस[5] विच पकाया लूण बलूणा।
दुजे विच बनाया सप्त[6] सलूणा।
बारहां बरसां रा सरवन होएआ।
नारां नैं कोई सगुन मनाया।
तिसा[7] उठि भोजन थालिया[8] पाया।
सरवन नैं चुकि मां जो पुआया।
सै मामां वे चुकि मुंह च पाया।
नैणां का नीर थालिया आया।
क्या माए तिज्जो[9] नारैं सताया।
क्या माता तिज्जो मंदा[10] चे बोलें
ना बेटा मिंजो मन्दा बोलै
ना बेटा मिंजो तिसा सतावा
नारी नारी असल गुआरी
तै फुल्ल निस्कल गुआया
उठेआ सरवन तखानं[11] कै गया
बहंगी इक ले आए भो कीमत बाली
आगें बैठालां[12] मैं माता प्यारी
पिच्छें बैठालां मैं पिता प्यारा
बारहां कोसों की घाई उजाड़ि।
माता पिता जो कोई प्यासां जे लगिया
ना माता इत्थी लुआ न बौड़ी[13]
ना माता इत्थी कुन्ही ताल[14] लुगाया
है बेटा इत्थी लुआ बौड़ी
तेरें मामें दसरथ ताल लुआया
उठेआ सरवन पाणिए जो गेआ
मामें दसरथें बाण चलाया
मैं जाने कोई मिरग मिरगौला
मामे दसरथें बाण चलाया।

---

[1] अन्धेरी। [2] जन्म। [3] गौ के पेशाब, गोमूत्र। [4] मूढ़। [5] एक में। [6] सात भाजियां। [7] उस। [8] थाली में। [9] तुझे। [10] बुरा। [11] तहखानों। [12] बिठाऊं। [13] व्याऊं। [14] तालाब।

गीत २६

सांमा बी होइयां संझेलां बी होइयां,
गोविन्द नजरी नी आवे समुजी ।
गोविन्द तोपणा [1]जाणा ए,
गाईं बी आइयां [2]म्हईं बी आइयां ।
दुहने वाला नी आया समुजी,
गाईं बी दुहतियां म्हईं बी दुहतियां,
पीने वाला नी आया समु जी ।
इक बण ढूंढेओ दूआ बण ढूंढओ,
तीजे बण गोविन्द मैं पायो समु जी ।
कुब्जा जाति री मोछी,[3]
तिन्ही मेरा गोविन्द मोहिआ समु जी ।
कुब्जा मल्हेटड़ी चारखा कातदी,
गोविन्द मेरा पूणियां बाटदा समु जी ।

गीत २७

अद्धिया[4] राती बड़े सवेरा,
मुरली किन्हीं[5] थी बजाई ।
बर्जे[6] न समु पुत्ते अपने जो,
तिन्हीं[7] म्हारी नींद गुआई ।
उठ नी माए पकादे रोटियां,
आसां तो दूरे जाणा ।
रोटी पाकदी नें क्या चिर लाया,
जांदा नजरी नी आया ।
सांजो[8] छोड़ि गए न बिच हवेली,
ना कोई वारिस न कोई बेली,
सांजो हद दुख लाए थे,
सांजो छोड़ि गए बिच सरीकां,
दिंदे बदियां कर्में लांदे लीका,[9]
सांजो एह दुख लाए ।
बर्जे रही मैं मलाहां जो तुसां बेड़ा न पाएओ,
मरन[10] मल्हां ने माये नी जानि, पार लंघाऊ ।

---

1. तलाश करना । 2. भैंसें । 3. नीच जाति की स्त्री ।

4. आधी रात को, । 5. किस ने, । 6. रोकना, । 7. उस ने, । 8. हम को, । 9. व्यंग, । 10. जान बूझ कर ।

गीत २८

फुलम

गाड़ुए-पन्छाड़ए [1]टू कँजो[2] झाकदी,
झाकां कँञो मारदी, इक हाथ नुटणे[3] रा ला ओ--
जानि गल्लां होई बीतियां,
बड्डुणा लुआण तेरीयां ताइयां चाचियां,
बो ला : ण सबकी मामियां, मेरे मर्न रा बाश---
बो जानि गल्लां होई बीतियां।
कुनीबो [4]परोहिते तेरा व्याह भी रचेआ,
कुनी बो कीति कुड़माई ओ--
जानि गल्लां होई बीतियां।
मेलूए परोहिते मेरा व्याह भी रचेआ,
फुलमो व्याह भी रचेआ, बाबल ने कीती जोरा जोरी ओ--
जानि गल्लां होई बीतियां।
जहर बो खाहकै मरि ओ जा राझणु,
दोस लाऊं नट्टूक, गल्लां होई बीतियां।
ओ-आर [5]ओ-आर राझूए री पालकी बो,
पार पार फूलम री लास ओ जांदी, ओ--
जानि गल्लां होई बीतियां।
राखो बो कहारो मेरिया पालकिया,
फुलमो जो दाग लगाया, ओ--
जानि गल्ला होई बीतियां, ओ परीतां होई बीतियां।
बाएं हाथ रांझए सिखा भी छिणी,
दाएं हाथ आग लगाई, ओ---
जानि परीतां होई बीतियां ओ यारां होई बीतियां।
सारि कै आग रांझु विच जे पेआ,
जलि के होई गोई राख, ओ--
जानि गल्लां होई बीतियां, ओ परीतां होई बीतियां।

---

1 (मकान के) आगे पीछे। 2 बर्फो। 3 उबटन। 4 किस। 5 इस ओर।

गीत २९

तू नीं दुसदा[1] वो मोहना तू नीं दुसदा,
तीला-तोला खून मेरे रोन्न सुकदा ।
काजो लुकीरा[2] वो काजो लुकीरा,
इस फुल्लां रिया बाड़िया काजो लुकीरा ।
हार गुंदना वो लाको हार गुंदना,
तिस राजे रिया धदधा[3] जो हार गुंदना ।
आया मरना वो मोहना आया मरना,
माइए रिया लोभी आया मरना ।
गाड़ी फांसी वो मोहना गाड़ी फांसी,
तिस सांडूए हारे थी गाड़ी फांसी ।
आई दुनियां वो मोहना आई दुनियां,
तेरी फांसी देखने जो आई दुनियां ।
चढ़ि जा फांसी वो मोहना चढ़िआ फांसी,
सांडूए रे हारे थ चढ़िया फांसी ।
रोंदी दुनिया वो मोहना रोंदी दुनिया,
तिज्जो तां दिनी कन्ने रोंदी दुनिया ।

गीत ३०

कैंजो[4] रोन्दी धरमू री माता धरमू नींह खांदा मार वो
नढ़ कोठे पुर धरमू जे सूता हुआ नीं खांदा मार वो
सक्के[5] भाइये चुगली जे लाई, सदी[6] ने पाया ठाणेदारे वो
इकनी [illegible] डाडा पकड़ेआ, दूजे पाकड़ी तलवार वो
ठाणेदार ने दरवाजा जे ठोरेआ[7], निकल वो धरमुआ बाहर वो
धरमिया तानिकें धरमू जो निकलेआ गुस्सा बेसुमार वो
पच ता बहु पुलिसी सिपाही लेवां चढ़ेआ ठाणेदार वो
[illegible] सिपाही गोलीं जे मारी देशा मूह दे भार वो
दूजी गोली आनिया मारी करि गई सीने पार वो
धरमू चुकि के [illegible] न पाया गड्डी गई मझदार वो
गड्डी जाइ [illegible][8] जम्मू ए मचि गई हड़ताल वो
जम्मू ए राजा [illegible] सगाई
नाम दित्ता तिन्न हजारे वो
पञ सेर [illegible] कलेजा निकलेआ
[illegible] बेसुमार वो
ए कैंजो रोन्दी धरमुए माता
धरमू नीं खांदा मार वो ।

---

1 दिखाई देता है । 2 छुपा है । 3 राजे की लड़की । 4 क्यों । 5 सगे भाई । 6 बुला भेजा 7 दरवाजा खटखटाया । 8 खड़ी हुई ।

गीत ३१

कोक तां गलांदे चुड़ैल चंचलो,
तू तां नागर बेल।
ओ मेरिये जिन्दे तू तां नागर बेल।
इनें पुर लहोह कढि गल्लां जे कीतियां,
लोकां नें करि लैया शक लोको,
रसिया रा बणि गया सप्प लोको।
जम्मू कश्मीरे दा शक लोको,
पेटी सिपाहिए रे लनक लोको।
भरियां बन्दूकां मूंहडें पुर धरियां,
मारि जैणी तित्तरां री जोड़ी लोको।

गीत ३२

मैहला दे हेठां जांदेया[1] जुआना,[2]
मैहलां विच अयां ज़रूर,
तेरी सो महलां विच आयां ज़रूर।
मैहलां विच किहां औणां [3]गोरिये नी,
मैहलां विच खड़े पैहरेदार,
तेरी सो मैहलां विच खड़े पैहरेदार।।
मैहला दे हेठ जांदेया जुआना,
मैहलां विच आयां ज़रूर,
तेरी सो मैहला विच आयां ज़रूर।।
मैहलां विच औणा किहां गोरिये नी,
नीले [4]जो लई जांदे चोर,
तेरी सो नीले जो लई जांदे चोर।
नीले जो तेरे जो चुरी भेजां,
नाले भेजां पहरे दार, ओ जुआना नाले भेजां पहरेदार।
कीनी कढ़या[5] तेरा रुमाल ओ जुआना,
किनी रंगी तेरी पगड़ी।
ओ जुआना किनी रंगी तेरी पगड़ी।।
भाबो रंगी मेरी पगड़ी ओ गोरिये,
नारें तां कढ़या रुमाल,
ओ गोरिये नारें कढ़या रुमाल।
किहो जही तेरी भाबी ओ जुआना,
किहो जही तेरी नार,
ओ जुआना किहो जही तेरी नार।।
तेरे साई[6] मेरी भाबी ओ जानी,
तेरे तें डयोडी मेरी नार,
ओ जानी तेरे तें डयोडी मेरी नार।

---

[1] जाने वाला। [2] युवक, नौजवान,। [3] आऊं। [4] नीला घोड़ा। [5] निकाला। [6] तुम जैसी।
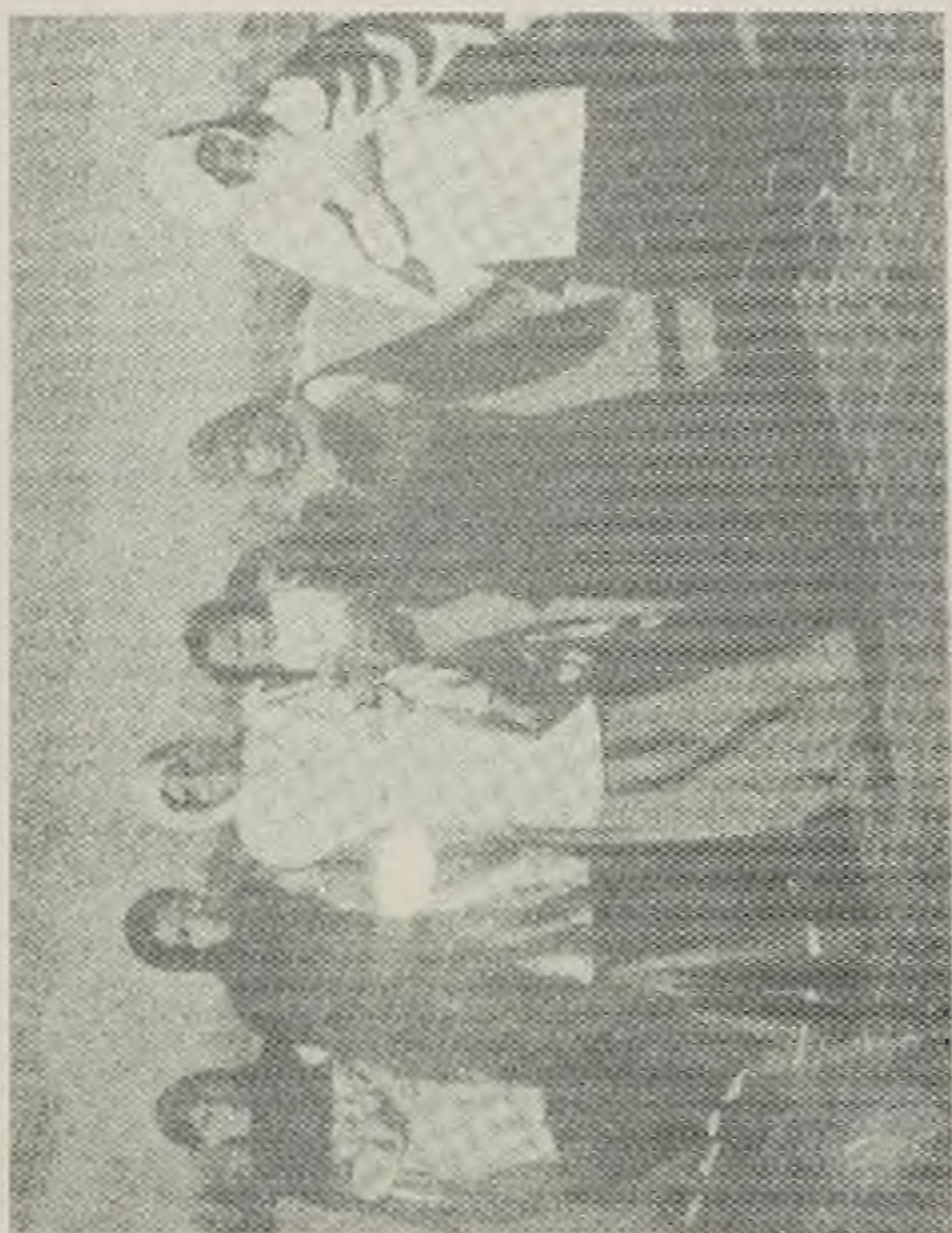
गीत ३३

राम कभी लछमण चले बनवास मेरे रामा जी,
सीता जी को लै चले साथ,
भजो ओ सीता राम हरे।
बारहो कोहां दी पई ऐ उजाड़, मेरे राम जी,
सीता जी जो लागीए प्यास,
भजो ओ सीता राम हरे।
मारे ओ चिमटा काढ़े ओ बजार, मेरे राम जी,
चज्रे ने बरखें दा गलाप,
भजो ओ, सीता राम हरे।

गीत ३४

बई[1] लैणा, बई लैणा, बई लैणा ओ।
ओ इस बड़ोटुए[2] रिया छौंआ छौंआं[3]।
पल भर बई लैणा ओ।
छल्लियां री रोटी मोठां री दाल
एओ ऐ गरीबां रा खाणा ओ
खाणा।
छोटे छोटे टापरू[4] ककड़ां[5] ने छायें ओ छाए।
ए ओ ए गरीबां रा रहणा ओ रहणा।
पलभर बई लैणा ओ इस बड़ोटुए रिया
छौंआं ओ छौंआं।
कनकारे फुल्के ओ गोभी सलूणा[6]
ए ओ ऐ अमीरां का खाणा ओ खाणा।
उच्चे उच्चे मैहल हो होए नुबारे
ए ओ ऐ अमीरां का रहणा ओ रहणा।
पल भर बई लैणा ओ इस बड़ोटुए रिया छौंआ
छौंआं।
खादरा दे कपड़े टल्लियां जे पाइयां
ए ओ ऐ गरीबां रा पाणा ओ पाणा
मलमल[7] रे कपड़े दूर जे पाए
ए ओ ऐ अमीरां रा रहणा ओ रहणा
पलभर बई लैणा ओ इस बड़ोटुए रिया
छौंआं ओ छौंआं
चिटड़े[8] चौल कढ़ाइयां कढ़दे
ए ओ ऐ बोलीचां दा खाणा ओ खाणा
पल भर बई लैणा ओ इस बड़ोटुए रिया
छौंआं ओ छौंआं।

---

1. बैठ लेना। 2. बट का वृक्ष। 3. छाया। 4. झोंपड़ी। 5. घास। 6. भाजी तरकारी।
7. कपड़े के छोटे टुकड़े। 8. सफ़ेद चावल।

गीत ३५

पहाड़ी दोहरे

१. फुल फुली कनैं सुकी बो गईरा नी बो,
फुल फुली कैं सुकी बो गईरा,
दान पुन कर छोरिये लो तेरा,
अब जल मुक्की बो गइरा, धारा रौ ये झलबेलिए ।
२. फुन फुली कनैं झली बो गईरा नी बो,
फुल फुली कनैं झली बो गईरा,
मंझिया रा बन्ना टप्पी रा, हुण बैठी के बले निहालदा क्यों ना,
डेरा दीये बन्द बोतले, लो जानी ।
३. पाणी भरना लो गागरू कनैं नी लो,
पाणी भरना लो गागरू कनैं,
झड़कां रे मोड़ टुटी रे लो, तेरे हरे पीबले चादरू कने,
डेरा दीये बन्द बोतले लो जानी ।
४. पाणी भरना लो कोलिया कनैं, नी लो,
पाणी भरना लो कोलिया कनै,
मुझा तेरे गर्मी पईरी, इस पूजी लैले तौलिये कने
उड़ी जा लो प्रेम चिड़िये ।
५. हरि बोतला रा काग देई जा,
नठ के न जायां बैरिया, मेरी गला रा जवाब देईजा ।
६. काले रंग जानी तितरां रे,
धोखा देई मारिया छोरूआं, ए भी कम नाई मित्रां रे ।
७. काले बादलां च इल घुमदी,
मेरी तेरी इक जिंदड़ी, जेहड़ी सुपने च नित मिलदी ।
८. तेरे कोठे ते पई रा अधिया,
मानदारो रखयों छोरूआ बेड़ा डुबणा लो बिच नदिया ।
९. काला रंग तेरे बंगड़ुआं रा,
इक लख जानी रा देणा, दो लख देणा ददड़ुआं रा ।
१०. तेरी हटिया ते जो बिकदे,
ऐड़े छोरू कई देखीरे, जेड़े पैसे रे भी बिकदे ।
११. खट्टा भरि रा खट्टाइयां कनैं,
काला रंग तेरा छोरिए, मर्दो मरदी बड़ाईया कनैं ।
११क. कोरे कागदा रा बनेया बस्ता,
जलि रा जलाणा छोरूआ, तेरे अंगणां चे लाणा रस्ता ।
१२. चिटे चादरू जो लाणी किनारी,
दूरा ते न मारी रमजां, नेड़े आई के मनाणी जिन्दड़ी ।
१३. फून फुली रा हरी चीला रा,
खानबानी कोई न देखदा, सभां चलि रा प्रेमी दिला रा ।
१४. चिट्टा चादरू जो नीला चोको रा,
तू तै छोरू दिल न रूकेआ, असां नदिया रा नीर रोको रा ।
१५. आटा गुन्नी कें पकाणे लो फुलके,
अज छोरू तेरे पलंगे, कल जाणा पराये मुलखे ।

१६. फुल फुलीरा ओ काइया रे बेले,
अज कणे बिछड़े छोरो, हुण मिलांगे नवाईया रे मेले ।

१७. तेरे खेतरा तै बहियां गानियां,
अच्छा जानि फिर मिलगे राजी रहुण जिदगानियां ।

१८. फुल फुली रा ओ तोरीआ रा,
दोनों भैणां सीतावन्तियां ओ,
मुल करी लैणा जोड़िया रा ॥

१९. गडी आई कटाल करी के,
अपी छोक भरती होइया,
छोरी रोंदी बखाण करी के ॥

२०. चिटा तौलिया रंगाला दिलिया
मेरे मन जिद बसी री वो,
तेरा कालजू टंगाआ कीतिआ ॥

२१. आटा गुआंही करी पलट कीती रा,
आलां केहड़े खून कीती रे लो जेहड़ी,
गला रा तें नह कीती रा ॥

२२. गडी आई री लो फेरा पाई के,
छः महीने ठहर घोरिये लो फेरी,
लई जाणी मेहरा लाई के ॥

२३. गडी आई री लो थारां ते,
अगे छोरी रोज मिलदी,
हुण मिलदी करारां ते ॥

गीत ३६

पतभर बई बावां वो मेरे भा वजीरा,
अड़ेआ पर अपते[1] रिया छोआं,
रोटी खाई लेआ मेरे आ वजीरा ।
अड़ेआ व्हामण[2] खाई बिची रसोई
रोटी किआ[3] खां मैं मेरिए सुभद्रो,
अड़ो ए जात कुजात न पुच्छो ।
अणी सच्च दस्स मेरिए सुभद्रो,
अड़ीए जाति री हुन्दी[4] ऐं तू कुण[5] ।
वै मैं सच्च दस्सां मेरे भा वजीरा,
अड़ेआ जाति री हुन्दी ए चमारी ।
अणी तू मरि जाया मेरिए सुभद्रो ।
अड़ीए मेरी वो जात गुआई ।
गंगा न्होई आवां वो मेरे भा वजीरा,
गंगा दिर्गी[6] पापां जो मिटाई ।

---

1. एक वृक्ष विशेष । 2. ब्राह्मण । 3. कैसे । 4. होती है । 5. कौन । 6. दे देगी।

गंगा न्हौण

मतेयां दिना दी गल है । पहलां लोग गंगा जी न्हौणा जांदे थे । तां हुटी नैं कोई कोई औंदा था ।

इक बरी इकी बाह्मण इक भी चिरथ कन्नै गंगा जी जाणे दी सलाह कीती । चिरथै गलाया, मैं नीं जाणा । बाह्मणे सोचेया कि कल्ल कल्लेजो मिजो डर लगणा चिरथ तगड़ा है, होए ना इस जो गड़ के लई चलां । बाह्मणैं इक तरकीब सोची ।

तिनी चिरथे ते इक सुआल पुछेया । बोलेया इकसी बणे बिच इक मुंडू हड्डुआं चुगी कन्नै छातिया कन्नैं लाए रोंदे । "सैं मुंडू कैसजो रोंदे ।" चिरथे जो इस सुआलेदा जवाब नीं आया ।

बाह्मण बोलेया, सुण–इक राजा कुथी राज करदा था, तिहदा इक मुंडू था, इक मुंडू बजीरे दा वी था । तिन्हां दूई दी अपूचियां मती भारी मित्रता थी । बजीरे दे मुंडुए राजे दे मुंडुए जो बोलेया तेरा ब्याह फुल्लां रानियां कन्नै कराई देयां, सैं ऐसी है जो हासे तां तिसदे मुंए भों फुल किरदे ।

राजे दे मुंडुए बोलेया सैं कहां है ?

फिरी सैं बजीरे दा मुंडू औरिया कन्नै मिली गेया । तिनी तिसाजो थोड़े दे पैसे पगड़ाईते । औरिया बोलेया अच्छा तू जानाना दे कपड़े पहनी लैं । तिनी तिआं ई कीता । औरिया ते परन्तु कोईको फुल्लां रानियां दे कमरे बिच नी था जांदा । रानियां पुछेया, औरिये यह कुण है ?

औरिया बोलेया ऐ मेरी बिट्टी है । हां-तां तिस मुंडुए दी पौहच तिस रानियां ताई होई गई । फुलां रानी तिस रनियां दी बिट्टी थी ।

चिरथे बोलेया, ग्हां क्या होएया ।

बाह्मणैं गलाया, ग्हां दी गल तां सुणानी, जे तू मेरे कन्नै गंगा जी जाणे जो तैयार होई जाए । चिरथे जो रानियां वाली कथा मती खरी लगी थे, बाह्मणे कन्नैं गंगा जी जाणे जो तैयार होई गेया । सैं दोए गंगा जी न्हौणा चलि पए । इत्थु कांगड़े ते चलि के इकसी म्हीने बाद गंगा जी जाइ पुज्जे । गंगा जी न्हौई करि सैं दोए बिरागी होई गए । तुहि कन्नै घरे जो सैं नईं आए ।

बेवकूफ

इकी ग्रैआं बिच इक पुट्ठ रहदा था । तिस दे मां प्यो कोई नहीं थे । इक दिन से माला चाल्ला गई रा का तां इक जनैत चली रो थी । तां लाड़े जो तिनी पुट्ठुएं बोलया "भई तू मेरे माला जो चार हत्थ पालकीया चिच बई जांदा । पुट्ठु पालकियां बिच बई गया तां लाड़ी अप्पु जो ब्याही लयंदी ।

ग्रौआं औले हैरान होई गए, भई इन्हें अप्पु जो जनाना भी लई थंदी । पर ग्रौआं ओलेयां कुच्छ नी बोलया । पर ग्रौआं तिस्सुन बैर रख दे थे । इक दिन ग्रौआं ते पुट्ठु बाहरा जो चली गया जगला बिच रात पई गई । सै इक टयाले गास सई गया । राती जो चोर आये तां तिन्हें टयाले जो अथा टेकिया भई इे असे चोरी करी नै औंग तां अद इथी चढ़ाई दिंगे ।

मै चोरी करी न आई गै तां दे सह चोर स्याले पास बैठी गए तां पुट्टुएँ पत्थर मारना सुरु करीते। चोर पैसेया छडी ने नठी गए। पुट्टू पैसेयां लई ने घरा जो आई गया। श्रौमां श्रौलेयां पुच्छया जे तैं सह पैसे कुती ते ल्यंदे। पुट्टुएं बोल्या भई एकें भुजों दरयौमां विच मिले। तिने बोलयां भई तां असां भी ल्याणे। पुट्टुएं बोलया जे तुसा ल्याणे तां सारे श्रौमां दे चली जाने एह जे बुडी इसा दे गला बिच इक छज बन्नी देणा। एक दरयौमा बिच सटी देणी। दे फेरी छज हिलो जांगा तां तुसं सारे छाल दरयौमा विच मारी दिनीं। फेरी तुसा जो रैसेंटी मिली जाणें। श्रौमां श्रौलेयां ऐड़ा ही कितया। से बुडिया दा छज हिलो गया ने श्रौमां श्रौलेया छाल दरयौमा विच मारी ती। से पैसे कुती मिलनें थे पर अप्पु भी मरी गए। हुण पुट्टू सुखा ने श्रौमां बिच रैण लगया। इसा कथा ते असां जो पता चलदा भई कदी भी सोचणें ते बगैर कोई भीं कम नी करने चाहीदा ने कदी भी शरारती आदमीयें ते सलाह नी लैंणी चाहीं दी।

कुरबानी

इकी राजे रा इक लड़का था। छिंबियां रा इक मुंडू तिसरा बड़ा मित्र बणी गया। सह दोनों संजा कठे ही रहंदे थे। इक दिन सह धुमां दे थे तिनहां जो तरया लगी फेरी इकी खूहा ते पानी पीता कने ओथी बैठी गये।

इक कुड़ी पाणिये जो आई तांजे सह पानी भरी कने चली गई तां छिंबियां रा मुंडू राजेरे लड़के जो बोलना लगिया इसा कने मेरा व्याह कराई दे। राजेरा लड़का तिसा कुड़िया कनेकने चली गया। तिसें कुड़िये घेरे जाइ ने अपने बापूए ने गलाई ता। तिसा कुड़िया रे बापूए देखिया भई राजेरा लड़का असां दिया कुड़िया पिछे कजो हुंगा दौड़िरा। फेरी तिनी पुछी लिया। राजेरे लड़के सारी गल दसी दिती। सहभी छींबे थे थो व्याह रखी दिता। तिथी जे छिंबियां रा मुंडू बैठोरा था तिथि इक देवी दा मन्दिर था। सह मंदरा च गया फेरी तिनी सुखना किती भईं जे मेरा व्याह होई जांगा तां अऊं अपने सिरा भी चढ़ाई दिगा।

इसदे बाद सह राजेरे लड़के कने घरा जो आई गया। व्याहिया दा जे व्याह रखीरा था त्याड़ी व्याणा चली गये। तांजे हटी कने तिस मन्दरा में पुजे तां तिनी बोलिया पालकिया रखी दया। सह मन्दरा च गया श्रो तुआरी कने अपना सिर कटोता।

तांजे बड़ी देर होई गई तां राजेरा लड़का अन्दरा जो गया। तिनी सह दिखीया फेरी सोचना लगी पिया। भई जे लाड़िया कनें गलाई दिती तां इसा बोलना भई इनी मारिया। यह सोची कने राजेरें लड़के भी अपना सिर कटी दिना।

इसते बाद लाड़ी भी ही मन्दरा च चली गई। तिसें तांजे दिखिया तो सोचना लगी भई मैं भी कजो जिन्दीया रहना सह भी अपने सिरा कटना लगी भई तां देवी निकली। तिसें अमृत दिता। कने बोलया भई इन्हां दे सिरां जो इन्हां दे धड़ा कने मेलो कने अमृत छिड़गी दे फेरी इनहां राजी होई जाना। लाड़िये छोड़ छोड़ क्या किता भई तिनहा दे सिर बदली कने लाई दिते श्रो अमृत छिड़की दिता। सह राजी होई गए।

फेरी सह सोचना लगी पए भई लाड़ी कुसजो देना चाहीदी। कोह भई इकी जो राजेरे लड़के रा सिर था तो छिंबियां दे लड़के दा धड़ था। कने दूसरे जो राजेरे लड़के रा धड़ था तो छिंबिया रे लड़के रा सिर था।

बन्दर और मगरमच्छ

इक दरियावे दे कंडे जमनी दा रुक्ख था। उस रुक्खे पर इक बन्दर रहिंदा था। तौंदिया दा वक्त था, जमनी बड़े भारी जमनू पकम्रो थे । बान्दरों रोज जमनू खाने। इक मगरमच्छ रोज ही उस रुक्खे हेट भाऊंदा था। बान्दरे रोज ही मगरमच्छे जो जमनू सटेने कने मगरमच्छे खाई लैने। इक दिन मगरमच्छ थोड़े देये जमनू अपनियां मगर-मच्छनी जो लई गीते। जद मगरमच्छनी ने जमनू खा:दे, तालू बड़ी खुशी हुई, और मगरमच्छे जो पुछिया ये जमनू कुते लैंदे, उसने बोलिया पई जमनी पर दरिया दे कंडे एक बन्दर रहिंदा है, से मींजो रोज जामनू दिंदा है।

तालू फिरी मगरमच्छनियां बोलिया पई जमनू इतने मिठे हुन, पता नहीं तां उस बन्दर दा कालजा कितना मिठा हुंगा । तू काल अपने मित्र जो हेथू जो लई आवो, मैंने उस दा कालजा खाना है। मगरमच्छ बोलया, से तां मेरा मित्र है। मैं उस जो किईयां लिआओआं। मगर मच्छनियां बोलिया, मैं उस दे कालजे जो खाई करी बची सकदी। फिर मगरमच्छ उस जमनों दे रुक्ख नालेओ चला गया और बन्दरे जो बोलया अज तां तेरिया भाबीया ने तौंजो सदिया है। बन्दर बोलिया, मैं दरिया विच कीहंया जाणा। मगरमच्छ ने बोलया तू उतर मैं तौंजो पिठी पर बिठियाली ने लई चलणा । बन्दर रुक्ख परा उतरी के मगरमच्छ दिया पिठी पर चढ़ी गया, और मगरमच्छ तालू जे अधे दरियाये जाई पुजेया तालू तीनी बोलियां अज तेरिया भाभिया तेरा कालजा खाना है। तालू बन्दरे बोलिया यह तो बुरा कम होइया, कालजा तां रुक्खे पै ही लटकेया रही गिया चल लई आईये । मगरमच्छ बन्दरे जो लई कने रुक्खे हेट आई गिया, बन्दर सताबी उतरी कने रुक्खे पर चढ़ी गिया, और बोलिया, कदी भी कलेजा भी रुक्खां पर रिहा बेवकूफा ।

शिक्षा:—मतलबी दोस्तां ते बची कने रहणा चाहिदा ।

दो शरारती भाऊ

पुट्ठु जुट्ठु अपुचियां दो भाऊ थे । इक दिन पुट्ठुएं बकरियां चरने छड़ियां थीयां। यह जुआड़ा जो घड़िये घड़िये जादीयां थीयां ।

तिनी तिथा ता बकरियां इकी ठहरी वनीतीयां तिनां दियां चौकिनरियां झिल देइते। बिच अता भारी घाह भरीता। फिरी तिथु तिनी अग लाइती । बकरियां जलीइयां ।

जालू तिसियो घरें पुछिया तां तिनी गलाया जे बडीया भारी रज्जइयां जे तुसां दिखन तां तिन्हां दे पेट ही फुटी चलयो जां जे तिन्हा दिखया तां तिन्हां जो बड़ी भारी जलनी चड़ी । तिन्हा पुट्ठु घरे ते निकालीता ।
दुएं दिने हिदा भाऊ जुट्ठु घरोटयो गिया । पुट्ठु ने आइ करी घराटियों गलाया जे मिजो इस थैलुए बिच बन्द करी दिया कने आटेओ तुसां ही रखी लिया । घराटियां भी उस जो थैलुए बिच बन्द करीता ।

सै तिदे भाऊएं दा ही थैलू था। उस दिन तिदा भाऊ भी नसी चलिया था। जालू तिन्ही गलाया मैं एथू रोटी पकाई करी खाई लैथा। तो फिरी पुट्ठुएं गलाया अजी तिआं मत करदा ।

तिनी सोचिआ भई मिजो धकड़ना ही चलियों । तिनी बड़ी खिट दिती। फिरी तिनी थैलू खोहीता। तां जे फिरी तिथी या तिदा भाऊ तिनी गलाया "भाऊ तू कुथु चलिया" जुट्ठुएं गलाया "जिथु जे भाऊ तू चलिया"। पुट्ठुएं गलाया भाऊ असां आइता भए पर रोटी कुत्ते खानी। तां पुट्ठुएं गलाया भाऊ रोटी मैं तोपी औंदा। सै तोपदा तोपदा इकी जंगलियों चला गया । फिरी सह राक्षसं दे घरे बिच पुचिआ।

तिथु इक काना राकस था। तिनी खीर रीनियो थी सह राकसे दौंआ कानीआ आंखी दे पासे बैठीया। तिन्हीं अधी खीर खाई भी और अधी अपने भाऊयों ये अंदी। जालु राकसे खीर दिखी तां तिसीयों बडा दुख होईया ।

दूएं दिन पुट्ठु और जुट्ठु दोयां भाऊ तिस राकसे दे घरे चले गए। और सारी खीर खा करी आईए ।
तिन्हीं राकसे दूसरो राकसां जो गलाया जे मेरे घरे बिच खीर बनाइयो है। तिन्हाने इक बड़ी भारी पालटी बनाई। तिसा पालटीया बिच बड़े भारी जबरे राकस थे।

इकी रुक्खे हेठां राकसा दी सभा लगी हुई थी। तिन्हां दे पहिलां वह रुक्खे पर चढ़ीयो थे । तिनां इक खलड़ु घलियो हुकिया कने गलाया खड़खड़ांदी आई। राकसा भी हल्ला कीता । सारे राकस नसीए ।

पुट्ठु कने जुट्ठु तिस राकसे दे घरे बिच रहने लगे कने खूब खाना पीना लगे।

ब्राह्मण कनै गिदड़

इक ब्राह्मण था । स घराट चलांदा था जितना सेर सः आटा पीवा था, तिस जो सेर ही आटा बचदा था । इक दिन उनी सोचआ कि मैं दिखणा है कि मेरा आटा कुति जांदा है । सः उस दिन घराटे दिया कूपिया बिच लुकी गया । आधी रात होई तांह इक गिदड़ आया, कनै आटे जो खाणा लगी पेआ, ब्राह्मणे ने तिस जो पकड़ी लया कनै मारना लगी पया ।

गिदड़े बोलिया तू मिन्जो मत मारें, मैं तेरे कम बणाई लया । गिदड़ चली पेआ कनै बामणे जो भी बोलेआ, मैं तेरा विवाह करना है, तू मेरे नाल चली पौ । गीदड़ उस जो अपणे घरे जो लेई गया । उस जो बोलिया कि तू ऊनां दे पंज सत्त गलोटे लेई आ कनै दो चार किस्मां दे रंग भी लेई आईयां । बामणे तिआई कीता । गिद्दड़े उह गलोटे रंगे कनै बामणे जो बोलिया तू थै इन्हांजो तां मैं चलिया ।

गिदड़ जांदा २ इक राजे दे महलां हेठ जाई रिहा । उत्थे राजै दियां कुड़ियां रोटी खीआं खा कर दियां । उनें आपणे जूठे टुकड़े उन्हां पर सुटी दिते । गिदड़ बड़ा नाराज होया कनै तुम्हारा राज सारा ही छिकी लैणा ।

कुड़ियां नै राजे नै गलाई ता कि इक पुराजे दा मन्त्री गिदड़ इत्थी आया था । सेः असां उदे पुर जूठे टुकड़े ते पाणी सिटेआ था । सो बड़ा नराज होया । कनै तिनी गलाया कि मैं हुण आपणे पुराजे नै कहणा कनै तुम्हारा राज पाट छिनी लैणा ।

राजे नै ए सुणी कनै आपणा मन्त्री भेजिया । कनै बोलेआ । उस मन्त्रीये जो सदी लिआ । मन्त्रीये उस जो बुलाई अंदा । तां राजा पुछण लगा कि क्या गल है तुसां रुस्सी नै चली गए । कुड़ियां दी गलती है । मैं उस दी माफी मंगदा । तुसां माफ करी देया । गिदड़ बड़ा अकड़ना लगी पेआ । फिर बोल्लिया जे तुसां अपणिया इकसी कुड़िया दा ब्याह मेरे पुराजे नैं करी देआं, तां मैं माफ करी दिगा, राजे बोलेआ तिआंई सई ।

भागे री गल

मतेआ दिनारी गल ऐ, जुद्धिया रा इक राजा अपणे राजे को हारि कनै कुलू देसे को आया । तित्थी आइ कनै सै इकसी कुम्हारे बाल नौकर होई गया । इक दिन सै मंडेआ रा भरोटू चुकि करि इकसी कुम्हाले चड़ि के बिजली म्हादेवे रे मंदरा जो था जा कर दा । तित्थी तिसजो इक बुढेड़ी मिली, तिनी बुढ़िड़या तिसको गलाया कि मैं भी मंदरा को जाणा, पर मेते चलोंदा नी । तू मिजी चुक्कि लै, अपणे भरोटुए पुर रखि लै । तिनी तिआंई कीता । मंदरा आइ करि तिनी बुढिड़या तिसजो इक गल सुणाई क थोड़ियां क बरे इयां होइयां स्पितियारे आकर कुलुए पुर राज करदे थे, सै बड़े जालम थे, सै जन्मदेयां बच्चेआ को मारि दिंदे थे कनै जानाना रा दुध मंगाइ करि पींदे थे । इसा गला ते तिस जो बड़ा रोह चा चढ़ेआ, तिनी कुलुए रे कनेतां की किट्ठा कीता कनै तित्थी रामचन्द्र रा इक मंदर बनाया कनै अपणा राज बनाइ लेआ ।

पदा कनै इसा

कोई दो भाऊ थे । सैजे इकसी ग्रां बिच रहंदे थे । बड़ा भाऊ समझदार था कनै छोटा भाऊ सिधा देआ था । इक दिन बड़े भाऊएं छोटे बाल सत्त बटिट्यां दाणे दित्ते, कनै हटिया जो बेचना भेजी ता । बणिये दाणे तोले कनै बोलेआ ३५ सेर होये । छोटे भाऊएं सूकी डांग कनै बोलया जे सत्त बटिट्यां घरे तोली लियंदे इत्थू सारे सेर सेर होई गये, बट्टी इक भी नी रही । तू बेईमान है । बणी तिसजो मनांदा ही रह्या पर सै नी मनोएआ । दाणयां सुको नै घरा जो ही लई आया ।

दुऐ दिन बड़ा भाऊ बोलदा मैं अपणे मौरिया दे जाई आऊंदा, तेरिया भाभिया सद्दी नै लई आऊंदा, छोटा बोलेआ मेरिया भाभिया नू किआ सदी नियाऊंदा । अपणीया भाभिया सद्दणा मैं आपु भी जाणा । बड़े भाऊएं बोलेआ, तू ही जाई औ, पर दिलेआ सैंजे गल सै पुछो हां भी जी हां बोलेआं, छोटे बोलेआ हच्छा ।

बड़े भाइए दे सौरियां दे छोटा जालू पूजेआ, तां तिनी पुछेआ, भई घरोणी तां राजी खुशी है ? छोटा बोलेआ हां जी, तिने पुछेआ बीमार ता नी ? छोटा बोलया "हांजी", ज्यादा बमार तानी जी ? छोटा बोलेआ "हांजी" बड़ा ही खतरा तानी जी ? से बोलया "हांजी" मोया, से जांदे ही तानी रहे ? छोटा बोलेआ "हांजी" बड़े भाइए दोऐ सस् कनैं जनाऐ रोणा शुरु करी ता। सस बोले मेरी तां धी रंडोई गई सारे लोक कट्ठे होई गये, छोटे बहू-भाऊए भी सौगी, रोणा शुरू करी ता। कुड़िया दी मा बोले, मेरी धी रंडोई गई ।

भियागा छोटे भाइए बोलेआ, मैं भाभिया सदणा आएआ। बड़े दियें सस् बोलेआ बारा धियाड़ी भेजेंगे छोटा घरें आई गया। घरें बड़े जो बोलेआ, जे बारा धियाड़ी भेजगे इजा तिनें बोलेआ। बड़े बोलेआ मोया बार कुदां होणा मैं तां जींदा बैठया। छोटे बोलेआ "नीं भाऊ मैं बाहर बोया पुर बैठया था, कनै अन्दर धी रंडोई गई।" "मोया तू क्या बकी आयाँ मैं तां जींदा ही है, से किञां रंडोई गई ? छोटे बोलेआ मैं बाहर बैठया ही था कनै अन्दर तेरी सस बोले जे मेरी धी रंडोई गई। बड़े बोलेआ मोआ पता नी तू क्या २ बकी आया मैं अपू सदी लियाऊंदा। छोटे बोलेआ मैं तां हांजी हांजी, बोलेदा रहेआ।

बड़ा जाली सौरियां पूजेआ तां सारे घरा तिसजो भूत समझी कनै दुआजे दे भित् बन्द करी लये। सैं गलांदा ही रेआ "का मेरा छोटा भाउ तुसां ने झूठ झूठ ही गलाई गया, मैं तां जींदा ही हैं।" अपर तिने भित नी खोले। भियागा तक मैं सैं बाहर बोया पर बैठी रेआ कुनी नी पुछेया। भियागा प्रादे जालू झाड़े पशाब बैठणा उठे तां तिन्हें बाहर बड़े भाऊए जो कंगड़ोइयां सीताविच बाहर दिखेआ तां घरा आलयां जो समझाया ने भित खुलाए। तां छोटे री भाभी घर जो नीती।

घरें छोटे जो हल बाहणा बड़ा भाऊ दस्सी गया था। घरें आया ता छोटा अजी तईयें खेत्रा ते ही नी था आया। बड़ा जालू खेत्रे पूजया ता बलद बड़े थकयो कने घबराये थे। तिजो पुछया भई तें बलद की भुक्खे कनें घबराये मारे। छोटे बोलेआ "तैं बोलेआ था ना। मैं इञों ही छुडी देणे थे।" बड़े बोलेआ मोया तू चल हुण घर जो मारी ते बलद घबराये नाराणी भियागा त था मारेआ। चल हुण घरा जो।

॥ ० ॥

फीमी रा हाल

इक था ब्राह्मण तां इक थी तिसदी ब्राह्मणी। सैं बड़े गरीब थे। सैं मंगी करि खांदे थे। जितना मंगदे थे तिस कन्नें तिन्हांदा गुजारा नीं था हुन्दा। ब्राह्मण हर वक्त फीमें च मस्त रेहुंदा था। ब्राह्मणीयां जो बड़ा दुख हुंदा था। मैं ब्राह्मणे जो हर वक्त तंग करदी रहंदी थी। बोलदी थी ब्राह्मणा कमाणा जा। ब्राह्मणिया दिया टका टकाते ब्राह्मण दुखी होई गया। फिर सै बोलेया, भागवाने मिजो रोटियां पकाई दे, हौं चला जांदा।

ब्राह्मणिया जो बड़ी खुसी होई कि हुण ब्राह्मण कमाणा चलि पेया। ब्राह्मणिया तिसजो रोटियां पकाईतियां। ब्राह्मण भ्याग उठेया, तिन्हीं चायो कन्ने फीम खाधा, कन्ने रोटियां चुकि करि चलि गेया। दस बारह मील रस्ता हंडी करि सई गेया। भ्यागा उठि करि तिस जो कोई चेता नीं रेहा कि मैं कैस तांईं आया था।

नतीजा ए हैं कि फीम खाण वालेयां दा बता भारी बुरा हाल हुंदा है।

करमा रा फल

पुराणे जमाने दी गल है कि इक घना जंगल था। उस जंगल विच दो साधु रहंदें थे। वह धूनी लगाई करी के अपणे कुटिये विच बैठे रहंदें थे। कदी भी अपणे कुटियेते बाहिर नहीं जांदे थे। उस विच ग्वालू भी डंगरा चारदे थे। वे सारे ग्वालू इकठे हो कर उनां साधुआं दे पास आई करी बैठी जादे थे और उनांह ते ज्ञान दियां गलां सुणदे थे। प्रतिदिन ग्वालू तिनाह साधुओं जो बोलदे थे कि बाबा जी तुसां अग्गें विच हडणा फिरना कहुंदी चांदे हो।

इस पर साधुआं उन्हां ग्वालुआं जो जबाब दिता कि बच्चो हमारे अग्गें विच जाणे ते कई गलां भलियां बुरियां होई जादियां हन। कई असां जो चंगा बोलदे हन ते कई बुरा।

ग्वालुआं फिरी उन्हां जो बोलया कि तुसां कभी असां दे प्रायें आई जानेओ। साधुओं ने उन्हां जो बोलिया कि अच्छा बच्चो कभी तुसां दे प्रायें भी जाई आंहगे। ग्वालू बड़े खुशी होए और अपणयां अपणयां डंगरां घरे जो लेई करी चले गये।

उन वणें दे नेड़े ही इक पिंड था। उस पिंडे विच दो ऐसे घर थे जिन्हां दे घरां विच सन्तान न थी।

इक दिन दोनों साधुआं ने सोचिया कि इस पास (नेड़े) वाले पिंड विच भज जांदे न। उन्हां सलाह कीती कि जाणे ते पहलो असां उस रूप को धारण कर लेंदे हन जिसा विच कि असां जाणा है। असां दोहा ही कुत्ते दा रूप बणजांदे हन। उस पिंडे विच जाई करी के इक ने इक घर चले जाणा ते दूजे ने दूजे घर विच। ओह उन्हां घरां विच गये जिन्हां दी सन्तान न थी। जां जे घरां विच गये ता ओह क्या दिखदे कि दोनों घरां विच दूध दुह कर अन्दर रखा है और घरें कोई भी नही है क्योंकि उन्हां घरां दियां औरतां पशुओं को घास पाणे गई थीं। जब वह वापिस आई तो उन्होंने देखा कि कुत्ते दूध को पी रहे हैं। पहले घर वाली औरत ने कुछ भी नहीं सोचया चूल्हे विच आग जल रही थी उसने एक मियालू बलदा चुकिया और जोर से कुत्ते दिया पिठ पटाका मारी दिता। कुत्ता विचारा ढेरिया पिठी करी के टऊं टऊं करदा चला गया।

दूसरे घर वाली औरत ने कुत्ते जो दुध पींदे दिखया तां उनें उसी जो मारियां नि पर बोलिया कि विचारेया इस दूधे सारे ही पीलियां छडी मत जांदा। कुत्ता दुध पीता फिरी चला गया।

जाने दोनों ही डेरे पुजे तां अपूचो बोलणा लगे अज कैसा दिन बीता। पहले घर वाले कुत्ता बोलिया भाई मेरा तां बुरा हाल है। मैं जांजे उसघरें गया तां अग्गे दूध दुह कर रखा था और घर कोई भी न था। मैं दूध पीने लगो पिया। मैं दूधे जो पिया था करदा कि उस घरे दी औरत घास पा कर वापिस आई रही। उन्हें मिजो इक बलदे मियालुए दा जोरे दा पटाका मारी दिता। मेरी पिठ ढेरी हो गई और जख्म पई गया है।

दूसरे कुत्ते ने बोलिया भाई मैं जे गया तो दुध दुहकर अन्दर रखेया था। घरें कोई नहीं था। मैं जांदा ही दुधे पीणा लगो पिया। दूधे पींदे पींदे जो उस घरे दी मालकिन आई रही। उनें मेनू कुछ भी किता पर बोलिया कि भला कुत्तेया दुध तां तू पिया करदा है पर तां नीह पर छड़ी मत जांदा। मैं दुध पीता फिर चला आया।

उनांह साधुआं अपुचि फिरी सलाह करी ने फिरी उन्हां औरतां दे घरां असां जन्म लेणा और इसदा फल उन्हां जो देणा है।

हुण ओह साधु उन्हां औरतां दे घरां विच जाई करी ने जन्म लिया। पहले घर में तां बड़े रंग राग हुए। बधियां खुशियां मनाईयां गईयां पर कुछ दिनां दे बाद उस लड़के ने बोलिया कि माता जी मैं हुण मर जाणा है तां तुसां मेरा दाह संस्कार अपने दरवाजे के सामने देना। कुछ दिन दे बाद ओह लड़का मरी गया और उस दी मां ने उस दा दाह संस्कार अपणे दरवाजे दे सामणे अंगणे दे विच दबाया। हुण हर रोज ओह औरत उस जगाह को देख कर दुःखी हुंदी थी। उस दी पिठ भी झुक गई थी और पिठी पर जख्म भी पई गया। वह बडी दुखी थी। इक दिन उसा दे घरे पंडित आया और उनी औरता जो पुछया कि तू इतनी दुःखी क्यों है। उनें अपणी दुःख की गल दसी दित्ती। पंडित जी बोले तू पागल थी। तें अपणे पुत्र को दरवाजे के सामणे दाह संस्कार क्यों दबाया। इससे तेरा मन दुःखी हो रहा है। और तैं इक दिन कुत्ते जो बलदे मिआलुए दी पिठी विच थाई थी, उस कुत्ते दी पिठ पर जो जख्म पेई गया था वैसा जख्म तेरी पिठ पर पेई गया है। वह तेरी करनी का फल है।

साधु ने जिस घरे विच जन्म लिया। उस घरे वालियां कुछ भी न किता। लड़का अच्छी तरह पालया। जां जे छः साल दा होई गिया तां उन्हां स्कूले पड़ना छडी दिता। पढ़ने दे बाद उसदा उन्हां ब्याह करना सिया तां उन्हीं लड़के ने अपणे माता पिता को बोलिया कि मैं १४ साल दे होकर मर जाणा है पर उस दे माता पिता ने उसदी शादी कर दित्ती। अभी विवाह को होये कुछ दिन हुए थे कि उसदे मरने दे दिन आ गये।

इक दिन उस दियें औरतें पुछिया अगर तुसां मैंनू छडी के असे जाना या तो फिर मिजों ब्याह् कर कजो लैई आये । हुण पता तुसा इथू रही या मिजो अपणे साथ में चलो । उनी अपणियां पत्नियां जो बोलिया कि इस बात दा इक उपाय है। जद मैंनू मरदे नक्त लैण वासते भगवान खुद औणगें तां तूं उनांह् दे पैरा पर अपणा सिर रख देईं । ओह् तिजो पुत्रवती होने दा आशीर्वाद दिणे तां तूं बोलियां जे मैं पुत्रवती किआ होणा है, मेरे पती जी को तां आप ले चले हैं। अब भगवान जी को अपणा बचन या आशीर्वाद पूरा करना था। इस वास्ते उनांह् ने उस भिखारी को बोलिया कि जाँ बेटी अब तुसां दोयां दी उम्र १०० वर्ष हुंगी ।

उसदा पती जिन्दा रिहा और ओह् बड़े सुख रहते रहे उनांह् दा बंस बड़ा शोभा को प्राप्त होया । यह् बंश बधदा गया पर पहला बंश खत्म हो गया। हुण ओह् और जिसने कुत्ते जो दुध पीणा दिता था और अपणी नूह् पुत्र जो दिली करी उन्हां बड़ी खुशी हुन्दी थी और सुख विच थी ।

करमां रां फल

इकी ग्रांएं बिच चमार कने चमारी रहंदे थे। चमारे दियां छे बिटियां थियां सतइयां वारी फिरी चमारीया जो पुत्र होणा था तां चमारें बोलया जानू जे बक्त होणा हुंगा तानू चिका दे मठैने जो चली जाणा । चमारीइएं इहां ही किता तां भी बिटि ही होई। चमारी उसा बिटिया जो गरने दे झुड़े हेठ रखी आई। घरे आई कनें चमारें पुछो चमारिये क्या होया चमारीएं बोलया बिटि । तिलती इक हिरन कने हिरनी लघें हिरनीए बोलया दिख हिरना ये क्या है। हिरनीएं उसा बिटिया जो चुकीलिया कने अपणेया बिचूआं कने लाई लई कने हिरनियां दियां चीचूआं ते दुध निकली पिया। इहां ही उसा बिटिया हिरन कने हिरनीएं पाली लिया । जालूजे बिटि बड़ी होई तां हिरन कने हिरनीएं बिटिया जो इकी दरख्ते दे ढोडे बिच पाई ता बिटिया हिरन कने हिरनीयां जो बोलया मिजो कपड़ा कनें सूई धागा लई आंआ। हिरने कपड़ा कने सूई धागा लई अंदा फिरी तिने बिटिएं बडीयां छैल छैल टोपियां बणाईयां ।

इक दिन बिटिया दी सूई हथे ते टिरी गई। तिथु हां इक राजा रहंदा था उसदे चार लकड़ारे लकड़ूयां बढ़ण जांदे थे। जालू जे लकड़ारे तिनची लघे ता बिटि बोलया औ माञ्ओ मेरीया सूईया पकड़ाई दिगे तां मैं तुसा जो इक टोपी दिगीं । तिन्हां सूई पकड़ाई तो कने तिने इक टोपी दित्ती तां आपू लिए चारां लकड़ारे लड़ी पै इक बोले मैं लाणी दुआ बोले मैं लाणी तरीया बोले मैं लाणी चौथे बोलया मैं टोपी कुनी भी नहीं लाणी असां दे टोपी राजे जो दसणी है। जालू सह् गै तां सह् टोपी राजे जो दसी राजा इसा टोपीया दिखी कने बड़ा खुश होआ कने बोलया तुसां कुते मेह् टोपी अंदी तां लकड़ारेयां बोलया जी असा इकी ढोढे बिच बिटियी बैठिओ तिसा दी सूई थी टिरी गिओ असां तिसा दी सूई पकड़ाई कने तिने असाजो इक टोपी दित्ती । राजे बोलया चला मिजों दसा सह् राजे जो लई आए। राजे हिरने जो पुछिया हिरना तूं मिजो इसा बिटिया जो बिआई दे हिरने बोलया बड़ी खरी गल है जे तुसां अपणे महले बिच इसाजो पाई लेणा । राजे डोला मगयां कने तिसा बिटिया जो अपणे महले जो लई आ । पेहली राजे री पैलकी राणी थी सह् राक्षणी थी। राक्षणी पता लगी गया यही हुण ता राजे इसा कने प्यार करना कने मिजों कने नीं।

इक दिन राक्षणीए राजेदा बड़ा छैल कुता खाई लया कने हुड़ सूड दुइया राणी दें सरहाणे रखी ते पिआगा राजे ने राक्षणीयां गलाईता राजा राणी ना तेरी हेल पर अज तेरा कुता खाई लिया है राजे बोलया कोई बात नी। दुएं दिने फिरी तिने राजें दा सवारी दा घोड़ा खाई लिया फिरी तिने पिआगा बोलया राजा राणी ता तेरी देल पर अज तेरा सवारी दा घोड़ा खाई लिया है राजे बोलया कोई बात नीं। तरीए दिने राजे दा हाथी खाई लिया कने हड्डहुड राणीये सिराणों रखीते कने पिआगा फिरी बोलया राजा राणी तां तेरी बांधी पर अज तेरा हाथी खाई लिया राजे बोलया कोई गल नी । चौथे राजे दा टिका जे था सह् खाई लिया पिआगा बोलया राजा राणीयां तां तेरी बाथी पर अज तेरा टिका खाई लिया। राजे बोलया "टिका खाई लिया" राजे ते ये गल सहारी नी होई कने लहान खोर सदे कने बोलया इसा बडे घने जंगले लईज कने तिथू बलनी दियां । लहान खोर लई गैं तां तिसा जो लहालखोर बढणा नी चहान । तिने बोलया तुसां मिजों बढ़ली दिया । मेरें सार ठेठले फग्नेयो कने हाथों जो कढी कने पथरें पर रखी दिनयो तिना बढ़ीती कने लड़ी कने चले आए ।

मतयां दिना बाद राजे जो याद माई की मेरी राणी बांकी थी थलों में तिसा जो तोपदा ता सही तां जिथू जे सह् बड़ी थी तिथु हाखों दे मैंना कने तोता बनी गे खूनें दे तलाब कने बड़े छैल छैल फुल कने टियाले बनी गे। फिरी सह् राजा तिस जंगले बिच पुजी गया कने राजे रात पई जए राजे घोड़ा बनी ता जां जे अधी रात चली ता मैंने बोलया तोता कोई बात बोल। मैंना क्या बात बोलनी राजे बड़े अभिमानी-हुंदे हन। इसा जगहा बिच इक बढ़ाई थी। तिसा दियां हाखीं दे असां मैंना तोता बने कने खूनें दे तलाब कने फुल बणे। तां जेहड़ी हुई राणी थी सह् राक्षणी थी तिनें इक दिन कुता खाया दूजे दिन घोड़ा खाया तरीए दिन हाथी खाया चौथे दिन राजे दा टिका भी खाई लया तां। कोई मुनदा होए तां असां जो इकी तीरें ने बढ़े फिरी भूनी कनें खाए ता रानी जीवित होई सकदी। राजे बला तीर कमान था राजे मारया तीरें कने भूनी कने खाये कने राणी खड़ी हो गई फिरी ढोले पाई कने महलें चलइयां। राक्षसी थम्बे ने बन्नी करी कुतयां ते खुआई। फिरी से सुखे कने रहना लगे।

कुछ उपदेश

इक ब्राह्मण बड़ा गरीब था तेसरी जनाना पढ़ दी थी। इक दिन तिसे जनाने इकी कागदा पर लिखेया— "पिता लोभी, माता दयावती! बिन मुल की बहिन! सत का भाई। पीठ पिछे नार पराई, उज्जैन नगरी बसे राजा-सोवेगा सो खोवेगा। जागेगा सो पावेगा।" फिर खसमां जो बोलेया कि इस कागदा वेची आ। इसदा मुल्ल २,००० रु० है। हुण ब्राह्मण तिस बेचणे राजे बल चली गया। राजें उसदा मुल्ल कुछ पट दस्सेया। इस पर तिणी से कागद ढाई नें लई आंदा। अगें उस राज्जे दा मुंडू मिली गया। ब्राह्मणे सै कागद तिस बल दखाया। तिनी मुंडुएँ इक हजार रुपइये देई ते कणे कागद लई लेया। इस पर राजा अपणे मुंडुए पर गुस्से होया, कनें तिस जो बारां सालां ताईं घर ते कढी ता। इसते पता लगदा कि पिता लोभी हुंदा। हुण तेस दिया माऊ जो दया आई जांदी कनें सैतिस जो पैसे दिंदी मौके पर कमें आउंगे। हुण सै मुंडु आपणियां बैहणी बल खाली आइ के अपणियां कहाणियां सुणाइयां इहां घरा तें कढी 'ता। इस पर बैहणी उसतो सुक्की रोटी देई नें बोलेंया क इत्थी ते चली जा। इस पर सै उत्थो ते चली गया।

हुण सै अपणे धर्मा दे भाऊए बल जांदा। थोहर्या सद पंज-छः महीने सुखा नै कढ़दा। फिरी सै अगी सोहरियां दे घरा जो चली पया। तित्थी तिनी सैं 'सां दिया पर्चौलिय साधू बणी ने धूणा लाई ता। तित्थीं तेसरी राणी रहंदी थी तिसा पास राती जो वजीर आया। सै तिसा कनैं गप्पां मारने लगी पेया। थोड़िया दर बाद वजीर बाहर आया कनैं तिनी तिस साधुओ जो पैसे दित्ते क तू रोटी राटी खाई आ कनैं वर्फी लई आया। हुण साधू तिस लुहाईये बाल गया, सै जे तेसदे ब्यार जो था लगेया। लुहइयें तिस जो पछाणी लेया। हुण मुंडू लुहाईये जो बोलया क किसी नैं भेत दिखयां दिदा। कनैं तदे-ई वर्फी जे ब्याए जो बणाई थी, तदे-ई इक सेर बणाई लुहायें तदेई वर्फी बणाई ती। हुण सैं वर्फिया लईने वजीरा बाल आया। तचंजे वजीर कणे तिस मुंडुए दी लाडी वर्फिया खाएगा लगें तां तिस वर्फी पछैणी लई। तां तिसे वजीरा जो बोलेया क एह साधु कोई मेतिया एँ, इस जो मुगाई देआ। वजीरे जलादां जो बोलेया क इस जो मारी देआ। जलाद तिसजो मारने लई गये। तिनी जलादां जो पैसे दिते कनैं आपणी जान छुडाई। हुण सैं उज्जैन नगरिया जो चली पेया तित्थो राजे दिया चिट्टिया बोई था ल या क सैजें मेरे नैं इक रात कढगा तिसने ब्याह कराना। तिसा बाल जितणे भी राजकुमार आदें थे सह् राती जो मरी जादें थे। हुण तिनी मुडडुएं कपाट कढी नें लिखेआ कि "जागे गा सो पावेगा"। इस बाद सैं मुडू मंजे पुर बई गया कनैं राजेरी सै चिट्ठी सई गई। थोड़ी क देर होई तो तित्थी दो सर्प तिलणा लगे। सर्प पहले छोटे २ थे कनै फिरी सैं बड्डे होण लगे। इस पर तिनी से सर्प तुनरीने मारी ते। इहणे च ब्याह भी होई गई। राजधानियां च खुशियां मनाइयां गइयां। कनैं तिनक दोयां दे ब्याह करी ते। कनैं फौज भी दित्ती। हुण सह् राजकुमार अपणे सोहरियां दे जो चलया तां तेसरी लाड़ी भी भेजणे जो बोलेया। राजकुमरें बोलेया क भेजी देया कनैं कने वजीरा भी भेजी देआ। हुण सै अपणिया राजधानियां जो चली पेया मैंना च तिनी पें जाणे दा हुक्म दिता। ताऊजे वजीर आहुण लगेया तां तिनी ल्यूणी च अग बाली ती कनें वजीर तित्थी फूकी ता। कनें सै जे वजीरा कनें तिस राजकुमारा दी राणी थी। तिसा जो खाई अपणी नैं कुंडेआ ते तुडाई ता कनैं तिसा दइया ब्याए दिया नैं सुखा तैं रहणा लगी पेया।

कांगड़े की पहेलियां

सं०	पहेलियां	उत्तर
१	ठई पर ठई, पढ बड़ा चौंढ़ नहीं ।	(ऐंकलणी) रोटी
२	असमान बजी ढोलकी पतारुण लगीया विआह, इआणें सीयाणें पुछणों लगे, बाली बीया क्या ।	(सुख)
३	टक टक टैंओ बरल पढंजो सिना जों तिन मुण्डियां दस पैर चलोजों ।	(हल, बैल, किसान)
४	धमचक धमचक दस अंघा पंज तक ।	(पालकी, कहार)
५	इतना क रूखड़ू चढ़ने जो बड़ा दुखड़ू तिल नवें धुगें कढियां जो हुंगे ।	(केले का वृक्ष)
६	चिट्टी चादर चार किनारे, ऐढ़ो दिल्ली दो बणजारे ।	(सूर्य, चांद)
७	इतनी क छोकरी पींघां झूलदी, साऊरा देखदा मुण्डिया भेकदी ।	(काकड़ी)
८	दो भाऊ बाटा गलांदे आये घरे चुप ।	(जोड़ा)
९	चार लड़ियां, चार फेंटियां, चार सुरमा पांणियां, निस्संग तोता बोलदा, कल फोजां आउणियां ।	(वेद, विवाह के दिन)
१०	अलस मलस का बिन्नां, अगी बले न पानीऐं सिन्ना ।	(परछाया)
११	डिगा पर बौ डांगां ।	(सींग)
१२	इतनी क छोकरी सिरा दे मीहूरे, मीहूरे रंग ति आंपणां सिआयेणों कुआई जांदी मरे नेभराई रंड ।	(लाल मिर्च)
१३	चोहू गई, चोहू आई ।	(नजर)
१४	काला भेडू जिन्हीं कुली चाई चढ़ियो तुसां दियां चुली	(भरत)
१५	गासे आये गासें जाये, बाजी अगी रोटियां पकाये ।	(शहद की मक्खियां)
१६	काली गाय कमान्दीया साम अगें अगे छेरे पिछें र जाये ।	(दरांती)
१७	पातलिया भेठो पर दो कुड़ियां भालें अलारी करी बैठियां ।	(बगड़)
१८	बण में जमी बण में आई सिरा गुदाई ने घरा जो आई ।	(बगड़)
१९	असीं थम चौरासी दुआरियां, अज्जन मांडे रोन कुम्हारियां ।	(दीपक)
२०	एक चीज सह पैसा भर जगह रोकदी जांदी ।	(सोंटी, लाठी)
२१	चौसठ घोड़े एक सवार ।	(रुपया)
२२	लड़ाच लड़कनू बोले टिम्पी टिह पुकारदा जिस बाबे दा में कम कमांदा कोई मिजों मारदा ।	(पिंजन)
२३	हरा था सह हरे साई काला था सह काने माई ।	(पेठा)
२४	ठेवक बेवे पत्त बड़ा ता किंडू नहीं ।	(रोटी)
२५	मलस पलस का दिना अगी जाग्ने ना पाणीया सिना ।	(बौर)
२६	बूलिया चोई था गड़ाहू रड़ाया, तीहवा हुणेआ सारयां आधा ।	(घराट)
२७	इक दाना बलिया, सारा अंबर भरिया ।	(सूर्य)
२८	हंडांन तां नवां, न हडांन तां पुराना ।	(रास्ता)

सं०	पहेलियां	उत्तर
२९	जगी जगी लकड़ी जगाने वाला कौन, भागी भगी पेके हटाने वाला कौन ।	(मौत)
३०	घारा तें आया लभाओ तेली, तोहदी तवल सुसी लंगेगी ।	(मधु मक्खियों का छत्ता) छत्ता ।
३१	पारलीया धारातें आया कोकड़ा, तठो रंको मेरे छिबे चोपड़ा ।	(परात या परातड़ा)
३२	इक राजा इक रानी, एक घड़े दो रंगा पानी ।	(अंडा)
३३	पंज कबूतर पंजो रंग, दबड़ मचाके इक भी रंग ।	(पान)
३४	कांबल कुजा चाढ़या अग लगी मुलतान, दिल्ली फूंका मारीयां धलोका पाकिस्तान ।	(हुक्का)
३५	अन्दरा रा खाई लैणा, तां बाहरा दा सटी देणा बाहरा रा खाई लैणा अन्दरा दा सटी लैणा ।	(बादाम और छुआरा)
३६	लकड़ खाए मुंड खाए, पानी पीए मरी जाए ।	(आग)
३७	पोहलणी चाऊं पौलणी सुण भाइया हकीमां, लकड़ुआ रा पानी कढ़ू वणई देऊं बीमां ।	(गन्ना, चाशनी)
३८	मरोड़ी मराड़ी नै सिधा कीता, पुक लाइने विच दित्ता ।	(सुई धागा)
३९	निक्का जेहा रुखड़ू, चढ़ने जो दुखड़ू ।	(केला)

परिशिष्ट

कुल्लूकी बोली की पहेलियां

सं०	कुल्लूकी	हिन्दी अनुवाद	उत्तर
१	दुई घोड़े एक सवार काल् घोथा हाऊं भी तियार।	दो घोड़े और एक सवार सवार उतरा तो मैं तैयार।	चूल्हा और चावल का पतीला
२	तराई भाई री एक ऐ पगड़ी	तीन भाइयों की एक ही पगड़ी।	(चताना) लोहे का तीन टांगों वाला स्टैंड जिस पर बरतन आदि रखते हैं।
३	तराई भाई री एक ऐ गुली	तीन भाइयों की एक ही जड़।	त्रिसूल-कांटा।
४	हाथ एक छोकरा, मुंडा पांघे टोकरा	हाथ भर कुल लम्बाई का व्यक्ति, जिस के सिर पर बहुत बड़ा टोकरा।	कचालू।
५	होरखे बोथा गाश चूंछक बोथा नी गाश।	शेष जंगलों में वर्षा, परन्तु गुच्छियों के जंगल में वर्षा नहीं।	गाय का थन।
६	एक चीड़ी मेरी चुरचरादी, आंजा पोठा रा घुघड़ पांदी।	एक चिड़िया मेरी चहचहाती, भाल्तड़ियों और भेड़ों का घर बनाती।	ऊन की तकली और उस के ऊपर लगा धागा।
७	आंदर जाहर लागी लड़ाई, तुफका माकली चहाकंदी भाई।	अन्दर बाहर लड़ाई होवे, सिर वाले कोई जुदा करें।	ताला और चाबी।
८	माऊ फीहुटी पुत ठैंसा।	मां थामे जैसी दुबली पतली, परन्तु बेटा तने जैसा बहुत बड़ा।	कद्दू और उसकी लता
९	पारा घोरिख आई नलाई, लाणी पी घोड़ी तोली।	दूर देश से रोटी आवे, खानी भी पर तोड़ी न जावे।	नमक।
१०	धला रा धमका नीदें रा धंगका सोहरा रा बजीर पोहरा रा सकीर।	पर्वतों में धमाका होवे, नदियों में फुंकार शहर में वजीर बैठे, शहर में शिकार।	बन्दूक और शिकारी और शिकार।
११	नाला झाऊ राई आई एक बेटी सठ जुआई।	नालों में राई के फल उपजें एक बेटी और साठ जुवाई उसके।	घराट और उस का चरखा।
१२	तुमड़ तोता हेरना, खोमता खाना कौड़ा।	तुम्ब तौड़ा (केवल तुक है) देखने को सुन्दर खाने को कड़वा।	डोरा।
१३	थोली पोथी घोरे पोरे जाणा ता मूंबें भी बोली।	थोली पोती (केवल तुक है) जब इधर उधर जाओ, मुझे भी कहो।	दरवाजा।
१४	धारा पोरा न आई लूहोधलूहो बाहुड़ी एची आ केरली सूही।	पर्वत की दूसरी ओर से धुआं सा आए, फर्श पर आ कर पैर बन्दे।	झाड़ू
१५	ढलनी सिलनी चुण चुणन्दी, बाड़े जे होईया राजा रुआंदी।	तनिक सी वस्तु, परन्तु सुन्दर चूं चूं करे, बड़ी होवे तो राजे को रुलाए।	मिर्च
१६	काठे रीहांडी काठे री ढोई दुई हांदरीए मीठी सरोई।	काठ की हंडी काठ की ढोई, उसके अन्दर मिट्ठी रसोई।	अखरोट फल
१७	आगा न पौलें चिकर चाभड़ पीछा न चौली रा गारा साठ महाराजनी पानी बें चौली नगर तोलहाला सारा।	आगे आगे तो पानी और कीचड़ है और पीछे गारा है साठ महारानियां बैठी हैं और सारा शहर हिल रहा है।	मोटर

सं०	कुल्लूकी	हिन्दी अनुवाद	उत्तर
१८	चीणी ए कोई छापरी चंगे लागे दार शठ महाराजनी बैठी फूला देई नी भार ।	जोड़ जोड़ कर छत बनाई उस में अच्छी शहतीरियां लगाई । साठ महारानियां बैठी हैं परन्तु भार कोई नहीं ।	छती और सलाखें ।
१९	हौरी डंडी लम्बा पत्र, सूने री खोरी रूपे रा छत्र ।	हरी डंडी , लम्बे लम्बे पत्ते, सोने की कटोरी और उस पर चान्दी के छत्ते ।	बोदी का फूल ।
२०	एक कोठडू मेरा, बुप बुढ़िया सा ता टुप गुआड़िया सा ।	मेरा एक ऐसा संदूक है जो अपने आप बन्द हो जाता है और खुलता भी है ।	आंखों के पर्दे ।
२१	एक छोहरू कोमे रे बोकता सोया रौहासा मेने बकठा खड़ा ।	एक ऐसा लड़का है जो काम के समय सोया परन्तु बेकारी में खड़ा रहता है ।	घराट के पानी को रोकने का तख्ता ।
२२	बाहर आए पंज पीकल तेरे बाबा बै बोलना बाहर निकल	बाहर आए हैं पांच पीकल (एक प्रकार के पंछी) तेरे बाप को कह "बाहर निकल" ।	पांच उंगलियां और नाक की गंदगी (सिनक)
२३	नाखू री बेटी होथुए ब्याही पार फाटा चौरती बाही ।	नाक की बेटी का हाथ से विवाह हुआ और उस ने उसे पर्वत पर फैंक दिया ।	(शीघ्र) सिनक
२४	सीरी गढा चोर निकता, नैणगढुए हेरू पौंच गढुए पकड़ू, पट गढुए मारू ।	सिरी गढ़ (जगह का नाम) में चोर निकला, नैणू गढ़ वालों ने उसे देखा, पांच गढ़ वालों ने पकड़ा, और पट गढ़ वालों ने मारा ।	सिर, आंख, पांच अंगुलियां, नाखून और जूं ।
२५	सूना रा बाघनू फुटू सजेला कुण, सड़का मांजा ता सोना कुण ।	सोने का बरतन फटे तो उसे बनाए कौन सड़क पर चारपाई रखी हो तो सोए कौन ।	अंडा और पुल ।
२६	पार फाटा न बौगड़ै री मुछ लहोकर नी रौहू दौंदे कट ।	उस पार के पर्वत पर बगड़ (एक प्रकार की घास) मूछों की तरह उगा है, उपकरण न हो तो दांतों से ही काट लो ।	चूहा ।
२७	नागा री बागर पलंगा रा डेरा नाज सस्ता पानी बगैरा ।	नागों के बाग में पलंगों का डेरा अनाज सस्ता है पर बिना पानी के ।	कुएं ।
२८	माऊ ए हौगू होरी ए खाऊ मूबै धाका को बै लाऊ ।	बच्चा टट्टी करे सब कोई खाए फिर मुझे धक्का क्यों लगाए ।	छननी
२९	दुई बेहणी री एक ए आंज	दो बहिनों की एक ही आन्तड़ी	बमणी, एक उपकरण जिस से स्त्रियां पट्टू बांधती हैं ।
३०	लिथि बींदी की बै नाई	टेढ़ी-मेढ़ी पर कुछ भी नहीं ।	छाया
३१	एक छोहरू, ध्याड़ी दुम्बला ता राती खड़ा ।	एक लड़का ऐसा जो दिन को सोया हुआ और रात को खड़ा ।	गायें बांधने की रस्सी।

सं०	कुल्लूवी	हिन्दी अनुवाद	उत्तर
३२	एक शोहरू दुई चोलू बीचा न नांगा ।	एक लड़का ऐसा जो दो कमीज़ों के बीच नंगा ।	ढोल ।
३३	कालरे कुत्ती चार माईं पीठी बीठी हुच्छदी नाईं ।	काली कुत्ती चार स्तन, पीठ के बिना चले न ।	छाज ।
३४	ध्यान सिंह री लड़की, मान सिंह बै बलांदी, जल्दी आणा ता आ जा नी त शीतल गढ़ाबै जांदो ।	ध्यान सिंह की लड़की, मान सिंह को बुलाए, जल्दी आना हो आ जा नहीं शीतल पड़ जाए ।	चावल की पिच
३५	बड़ा बूटा बारा डाल पत्तरे री नी रौही सुध संभाल ।	बड़ा बूटा उस की बारह शाखें पत्तों की कोई सम्भाल नहीं ।	वर्षा का दिन ।
३६	एक गौम मेरा हुंब्दा २ रौबू ।	एक मेंढू मेरा ऐसा जो चलते २ तृप्त हो जाए ।	मशीन ।
३७	टेंगा बूटा धौ कौन	टेढ़ा वृक्ष के सैंकड़ों कान ।	कलोतर (आरी) ।
३८	कोडंजा पत्र फूल करेरा बूझ माहुआ बचन मेरा	कोमल पत्ते परन्तु फूल सख्त है भाटक मेरी बुझारत समझ ।	लीडरा (एक प्रकार का पौधा जिस के फूल कपड़े में फंसते हैं) ।
३९	उआरे भी ढोग पारे भी ढौग मुंझै पौनरा मैदान मागैं आये न शोहरू चौले पीछा न लड़े जुआन ।	इस ओर भी पर्वत उस ओर भी पर्वत बीच में समतल मैदान, आगे आगे छोटे जायें पीछे नौजवान ।	धूप और बादल
४०	अंधा बोटी बड़ा बरयाल पानी नी शूकू माची बैठा थाल ।	अन्धा रसोइया बड़ा अंदाव पानी सूखा ही नहीं सब्जी जला भी दी ।	हुक्का ।
४१	चर चर चौंचो तीन मुण्डी छोह होखी ।	चर चर की ध्वनि निकालती टेढ़ी रस्सी तीन सिर तथा छः आंखें ।	बैल तथा हल जोतने वाला हाली ।
४२	आईं दुआरे नौठी छापरे मेरी पखाऊंण बूझी सापरे ।	दरवाजे से आए और छत से निकले मेरी बुझारत कोई विद्वान (वृद्ध) ही समझेगा ।	धुआं ।
४३	उच्चड़ी कोठी न लोमी ढंगाह लोम्बड़ा बोला सा संघे कनाह ।	ऊंची भवन में लम्बी सोपान कद्दू कहता है मुझे साथ ले चलो ।	गिल्हड़ ।

२०५३८ डी. ओफ. एस.-६००-१२-५-६४—सि.पी. एड.एस., पंजाब, चन्डीगढ़ ।